बीकानेरीय जागृति के अग्रदूत

चौधरी हरिश्चन्द्र नैण

लेखक :

ठाकुर देशराज, जघीना, भरतपुर

प्रकाशक :

श्रीभगवान, गंगानगर, राजस्थान

प्रकाशक :
श्रीभगवान
पुरानी आबादी, गंगानगर (राजस्थान)।

प्रथमावृति : २०००
जनवरी १९६४
मूल्य : पाँच रुपया

मुद्रक :
भगवानदास यादव
कल्याण प्रिंटिंग प्रेस, आगरा।

स्वामी केशवानन्द जी के साथ

बीच में स्वामी जी बाईं ओर स्नेहलतादेवी दायें श्रीमती पार्वतीदेवी धर्म-पत्नी श्री श्रीभगवान अंतिम चौधरी साहब स्वयं
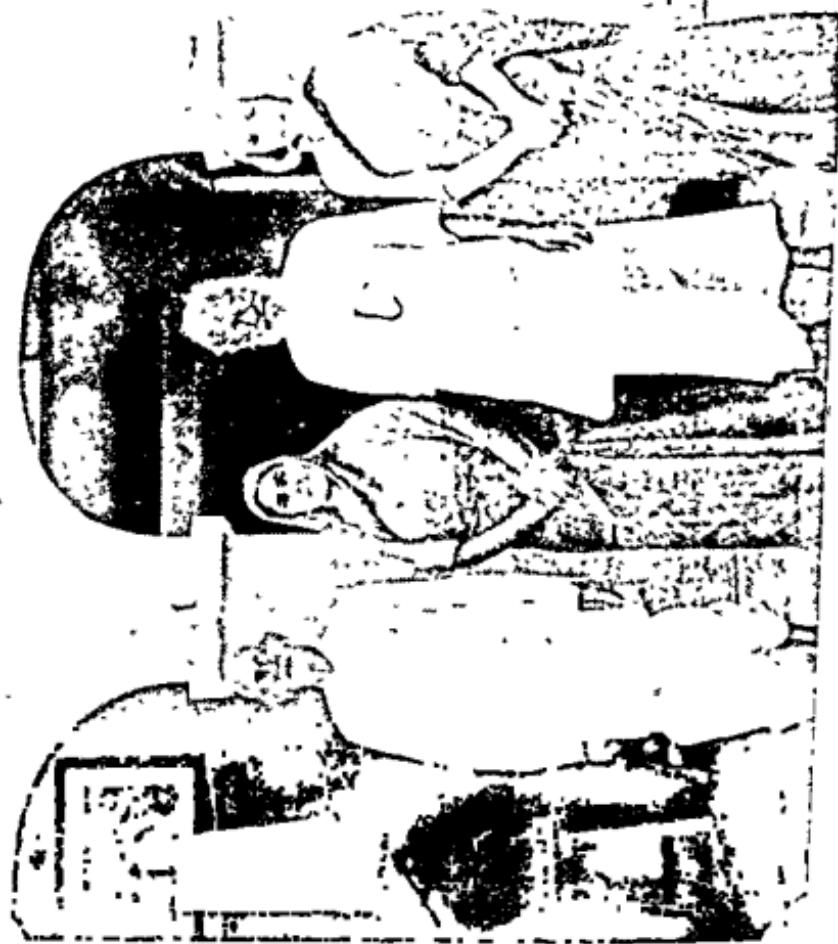
मरुभूमि में शिक्षा का बीजारोपण करने वाले चौधरी हरिश्च
और उनके साथियों के बोझ को हल्का करके शिक्षा अंकुर
को पूर्ण विकसित, पल्लवित और फलवान बनाने का श्रेय
जिन्हें प्राप्त है और जिनकी कि बीकानेर और उसके
निकटवर्ती पंजाबी जनपदों के निवासी भूरि-भूरि
प्रशंसा करते हैं तथा जिनके अनथक प्रयत्नों
से यह प्रदेश मरुभूमि का शिक्षा और
समाज उन्नति की दृष्टि से एक उद्यान
में परिवर्तित हो गया है। उन्हीं महा-
मानव श्री स्वामी केशवानंद जी
के कर कमलों में उन्हीं के एक
प्रिय साथी की यह जीवनी
सादर सप्रेम समर्पण।

—देशराज

चौधरी जी के ज्येष्ठ पुत्र
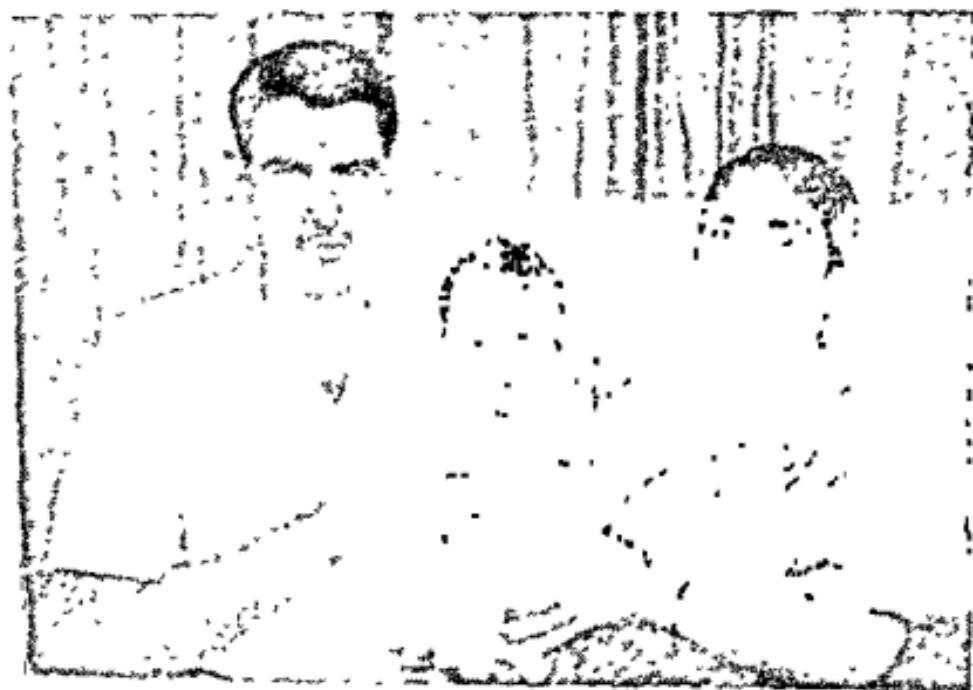
श्री श्रीभगवान अपनी धर्मपत्नी श्रीमती पार्वतीदेवी और
शिशु वीरेन्द्र के साथ

लेखक की ओर से

जब सारा ही जीवन चरित्र मैंने लिखा है तब विशेष चौधरी हरिश्चन्द्र जी के सम्बन्ध में क्या कहूँ। मैंने सन् १९२३ ई० से जबकि मैं इक्कीस साल का एक अनुभवहीन नौजवान था, सार्वजनिक क्षेत्र में प्रवेश किया है। सबसे पहला प्रभाव मुझ पर गुरुकुल भैंसवाल (हरियाणा) के आचार्य श्री हरिश्चन्द्र जी का पड़ा। मैं आर्य समाज के शनैः शनैः निकट आ गया किन्तु सन् १९२६ ई० से मुझे जाट महासभा के सम्पर्क में भी धमेड़ा जिला बुलन्दशहर के उत्साही नौजवान चौधरी रिछपालसिंह और उत्तर प्रदेश के जाटों के प्रमुख नेता कुँवर हुक्मसिंहजी ने खींच लिया। उन दिनों मैं आगरे में एक छोटे सामाजिक साप्ताहिक पत्र का संपादन करता था और साथ ही एक फर्म की मुनीम गिरी भी। जाट महासभा के सम्पर्क में आने पर उन सभी प्रमुख जाटों से परिचय हुआ जो भारत के भिन्न भिन्न क्षेत्रों में जात्योन्नति का कार्य कर रहे थे। चौधरी हरिश्चन्द्र जी बीका-नेर की ओर से जाट महासभा की कार्यकारिणी में सदस्य थे। उनसे इस नाते से परिचय हुआ। घनिष्ठता कब और कैसे बढ़ी ? यह मुझे याद नहीं किन्तु जब मैं 'जाटवीर'

का सम्पादक हुआ तो उनके कार्यों और न्यायपूर्ण जीवन के समाचारों से अवगत होने के कारण उनमें निरन्तर श्रद्धा बढ़ती गई। कोई समय था जब कि राजस्थान का प्रत्येक किसान सेवी कार्यकर्ता और विशेषतः जाट मुझे काफी अधिक महत्व देता था क्योंकि सीकर शेखावाटी के किसानों में जो आश्चर्य-जनक जीवन पैदा हुआ था और उन्होंने जागीरदारों के अत्याचारों से बचने के लिये जो साहसपूर्ण संघर्ष लिया था। उसका बहुत कुछ श्रेय लोग मुझे देते थे। इस कारण चौधरी हरिश्चन्द्रजी जो वर्षों से शान्ति और विवेक के साथ बीकानेर की सामन्तशाही से निबट रहे थे का मेरे ऊपर प्रेम बढ़ना स्वाभाविक था। उन्होंने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों ही तरीकों से मुझे और मेरे साथियों को सहयोग दिया। इसके बाद सन् १९४६ से तो वे स्वयम् खुले संघर्ष में आगये।

यह सब कुछ उनके इस 'जीवन चरित्र' में अंकित है। उनके कई विशेष गुणों की मेरे दिल पर छाप है, लोग कहा करते थे कि चौ० हरिश्चन्द्र अपने इरादे और सिद्धान्तों से जितना प्रेम करते हैं उतना किसी प्यारे से प्यारे व्यक्ति को नहीं। जवाब देने में भी वे बेलौस हैं। मेरे साथ भी यही गुजरी। सन् १९४८ ई० में महाराजा भरतपुर ने राजस्थान और राजस्थान से बाहर के कुछ प्रमुख जाटों को बुलाया। चौधरी हरिश्चन्द्र जी भी आये और उन्होंने मुझसे

पूछा । वात क्या है मैंने कहा महाराजा साहव शायद आप से संघ शासन में शामिल होने न होने के सम्बन्ध में कुछ परामर्श लेंगे । चूंकि मैं उन दिनों रेवन्यू मिनिस्टर था । मैंने कहा, आप महाराज का रुख देखकर उत्तर दें । आपने कहा, मैं तो वही कहूँगा जो मुझे उचित लगेगा । मैंने कुछ अच्छा जवाब उन्हें नहीं दिया किन्तु जव महाराजा से मिले तो उन्होंने यही कहा श्री महाराज अब रियासतें रह नहीं सकतीं आप इस समय को पहचानें । अन्यत्र भी यह चर्चा संक्षेप में इस पुस्तिका में आई है । लेकिन मेरे और उनके बीच कभी सद्भाव समाप्त हुये ऐसा मुझे याद नहीं पड़ता है ।

जैसा कि पाठक इस पुस्तक में पढ़ेंगे उन्होंने पिछले साठ वर्ष से अपनी दिनचर्या लिखी है । उसमें अपबीती और परवीती दोनों हो हैं । उन डायरियों का सद्उपयोग होना चाहिये ऐसी इच्छा उनके शुभचिन्तकों विशेषतः स्वामी केशवानन्द जी और चौधरी कुम्भाराम जी आर्य की थी । उन डायरियों का भारत का पिछले साठ वर्ष का इतिहास लिखने और भारत की प्रमुख घटनाओं के दिनांक जानने में बड़ा अच्छा सद्उपयोग हो सकता है किन्तु लगभग ६० वर्ष की डायरियाँ और हर डायरी के ३६५ दिन के विवरण, जिनमें कुछ तो फुलिस्केप साइज के विवरण-पृष्ठ हैं । इन्हें सम्पूर्ण पढ़ना और उनसे भारत में घटित

होने वाली साठ वर्ष की दैनिक घटनाओं का संकलन कोई एक दो वर्ष का काम नहीं।

मैंने इन डायरियों को लगभग दस दिन आठ-आठ घण्टे पृष्ठों को उलट पलट कर देखा और कुछ को अपने घर ले आया। उन्हीं के आधार पर चौधरी साहब का यह जीवन वृतान्त लिखा गया है इस कार्य पर तेरह महीने का समय लगा है। फिर भी यह जीवन चरित्र सर्वाङ्ग नहीं है किन्तु मैं यह कहने की स्थिति में हूँ कि उस बगीचे (डायरी उद्यान) में से बहुत से अच्छे सुमनों का चयन कर लिया गया है। जिनमें एक बड़ा भाग आपबीती से और अल्पांश परबीती से संबंधित है।

हिन्दी साहित्य के एक महारथी, हास्यरस के आचार्य और डाक्टर आफ लिटरेचर की उपाधि से सन्मानित पं० श्री हरिशंकर जी शर्मा ने इस पुस्तक की भूमिका स्वरूप जो 'दो शब्द' लिख देने की कृपा की है उसके लिए मैं हृदय से उनका कृतज्ञ हूँ।

विनीत
देशराज

दो शब्द

कोई व्यक्ति कितना ही विद्वान, बलवान एवम् धनवान क्यों न हो, यदि उसमें 'मानवता' का उदय नहीं हुआ तो उससे सर्व साधारण को क्या लाभ ? मानवता का अर्थ है—स्नेह, सद्भावना, सदाचार, सेवा, सहृदयता, सहयोग आदि। स्वार्थ-सिद्धि में ही सदैव रत रहना मानवता नहीं है। संसार में जितने मानव, महामानव और महात्मा हुए हैं, उनका प्रधान लक्ष्य जन-सेवा रहा है और इसी आधार पर वे अपनी कीर्ति अजर-अमर कर गये हैं। किसी ने ठीक कहा है—

जिन्दगी ऐसी बना जिन्दा रहे दिले शाद तू—
तू न हो दुनिया में तो दुनिया को आए याद तू।

चौधरी हरिश्चन्द्रजी जिनकी यह जीवनी है, साधारण पढ़े-लिखे है परन्तु उनमें मानव-भावना प्रारम्भ से ही उदय होने लगी। सेवा तथा सद्भावना का उन पर पर्याप्त प्रभाव है। सदाचरण एवम् कर्त्तव्य-निष्ठा के कारण ही वे सार्वजनिक सेवा-पथ पर अग्रसर हुए हैं। उन्होंने समाज-सुधार की प्रत्येक दिशा में अपनी शक्ति-सामर्थ्य-भर पूरा काम किया है। सामाजिक कुरीति-

निवारण में उन्हें अच्छी सफलता प्राप्त हुई है। राजनैतिक दिशा में भी आपने प्रशंसनीय प्रगति की है। ग्रामोत्थान के लिये भी आप सदैव प्रयत्नशील रहे हैं। ग्रामों की अशिक्षित जनता में किसी कल्याणकारी आन्दोलन को सफल बनाने में भयंकर कठिनाइयां होती हैं, परन्तु चौधरी साहब ने इन सब विघ्न-बाधाओं पर विजय प्राप्त कर अपना कर्त्तव्य-पालन बड़ी वीरता से किया है। वे बीकानेर की राज्य-सभा के सदस्य रहे है, गंगानगर की नगरपालिका के अध्यक्ष भी चुने गये है। इन सभी क्षेत्रों में आपके उद्योग द्वारा अनेक सुरुचिपूर्ण सुधार हुए हैं। किसानों की अवस्था तथा स्थिति के सुधार में भी आप सदैव संलग्न रहे हैं। गोरक्षा के लिये तो सोत्साह सक्रिय सहयोग दिया है। चौधरी साहब की इन सारी सफलताओं का कारण उनका उच्च चरित्र और पवित्र व्यक्तित्व ही है। आपके पिताजी भी अच्छे समाज-सेवक थे। वे अपने साथी-संगातियों की निःस्वार्थ सेवा करते रहते थे। उन्हीं का प्रभाव चौधरी साहब पर भी पड़ा।

बन्धुवर ठाकुर देशराजजी ने चौधरी हरिश्चन्द्रजी की यह जीवनी लिखकर सचमुच एक सच्चे समाज-सेवी का सम्मान किया है। उनके कार्य-कलाप से सबको अवगत कराया है यह बड़े सन्तोष की बात है। ठाकुर देशराजजी समाज-सेवी और साहित्यकार हैं। वे जनता की सेवा करने

में कभी पीछे नहीं रहे। आप अनेक ग्रन्थ लिख चुके हैं। कुछ काल पूर्व आपने 'राजस्थान-संदेश' नामक अर्द्ध साप्ताहिक पत्र का सम्पादन भी बड़ी योग्यता से किया था। ठाकुर साहब की लिखी इस जीवनी के पाठ से पाठकों को भलीभाँति ज्ञात होगा कि एक साधारण पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी अपनी सद्भावनापूर्ण क्रियाशीलता द्वारा सर्वसाधारण की कितनी प्रशंसनीय सेवा कर सकता है। चौधरी हरिश्चन्द्रजी को बीकानेर की जनता में जीवन-जागृति की ज्योति जगाने वाला नेता कहा जाए तो सर्वथा समुचित होगा। ऐसे कर्म्मवीर की जीवनी लिख कर ठाकुर देशराज जी ने वस्तुतः बड़ा प्रशंसनीय काम किया है; इसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं।

लोहामंडी, (डाक्टर) हरिशंकर शर्मा
२६ जनवरी '६४

चौ० हरिश्चन्द्र जी विभिन्न दृष्टियों में

पिछले पृष्ठों में चौधरी जी साहब के जीवन की घटनाओं और उनके द्वारा हुये जागरण, लोक सुधार और पैदा की हुई चेतना पर प्रकाश डाला गया है। कुछ हद तक उनके व्यक्तित्व का भी चित्रण किया गया है किन्तु यह जो कुछ भी है लेखक की समझ का किया हुआ कार्य है। वास्तव में चौधरी जी का व्यक्तित्व वैसा ही है या नहीं जैसा कि लेखक ने चित्रण किया है। उपरोक्त शीर्षक में विशेपतः बीकानेर और सामान्यतः अन्य स्थानों के कुछ विशिष्ट पुरुषों का दृष्टिकोण चौधरी जी साहब के कार्यों और व्यक्तित्व पर जो प्राप्त हुआ है, उसे ज्यों का त्यों दिया जा रहा है। इससे यह सहज ही समझ में आ सकेगा कि चौधरी जी की सेवाओं और व्यक्तित्व का मूल्य विशिष्ट लोगों की दृष्टि में उससे कहीं अधिक ऊँचा है जितना कि लेखक ने व्यक्त किया है।

प्रशासकों की दृष्टि में—

श्री जयपालसिंह जी बीकानेर के दबंग महाराजा गंगासिंह जी के समय में कालोनाइजेशन मिनिस्टर थे। अभी कुछ दिनों विहार में झारखंड पार्टी के नेता की हैसियत से मिनिस्टर भी रहे हैं, और इस समय भारतीय संसद के सदस्य हैं—ने चौधरी जी के प्रति अपने मनोभावों को इस भाँति व्यक्त किया है :—

"Chaudhuri Harish Chandraji of Ganganagar was one of my most reliable and valuable advisers while I was Colonisation Minister and Revenue Commissioner of the Ganganagar Division in Bikaner State. He led a simple and honest life. He was public-spirited and took a keen interest in education and, of course, agriculture was his main stay. What I admired most in him was his detachment from the usual politics and partisanship of the Court. I still remember his advising me what milch cow to buy for my own domestic requirements.

I am glad his biography is being compiled."

January 4th 1964. **Jaipal Singh**
6 Asoka Road,
New Delhi.

"जब मैं बीकानेर स्टेट में गंगानगर डिवीजन का कालोनाइजेशन मिनिस्टर और रेवन्यू कमिश्नर था उस समय चौधरी हरिश्चन्द्र मेरे अत्यन्त विश्वस्त और अनमोल नसीहत देने वाले परामर्शक थे। उनका जीवन सादा और ईमानदारी पूर्ण रहा है। वे सच्चे जनहित-चिन्तक और शिक्षा प्रचार के कार्यों में गहरी दिलचस्पी लेने वाले व्यक्ति है। निश्चय उनका उद्देश्य कृषि रहा। उनके साधारणतया राजनीति से भी संलग्न रहने और साथ ही न्याय दिलाने का भी कार्य करने के कारण मैं उनका अत्यधिक प्रशंसक रहा हूँ।

मुझे उनकी वह घरेलू काम में दी हुई नसीहत याद है कि दूध के लिये बढ़िया नसल की गाय खरीदनी चाहिये।

मुझे यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि उनका जीवन-चरित्र लिखा जा रहा है।"

४।१।६४ — जयपालसिंह

६ अशोकरोड, नई दिल्ली। — संसद सदस्य

राजस्थान के वर्तमान आई० जी० पी० श्री गोवर्धनजी ने लिखा है :—"चौधरी हरिश्चन्द्रजी के सम्बन्ध में कुछ विचार प्रकट करने के लिये उनके जीवन चरित्र के लेखक श्री देशराज ने मुझसे अनुरोध किया है। कार्य व्यस्त और कुछ दिन बाहर रहने के कारण जल्दी नहीं हो सकी,

चौधरी जी साहब के साथ मेरे व्यक्तिगत तौर पर बड़े घनिष्ठ सम्बन्ध रहे है। उनके लिये उनके सेवामय जीवन और उच्च विचारों के कारण मेरे हृदय में अगाध श्रद्धा है।

जनहित के लिये किये गये कार्यों वाला उनका जीवन-वृत छप रहा है। यह जानकर मुझे निहायत प्रसन्नता है

जयपुर **गोवर्धन**

१६ जनवरी १६६४

गंगानगर में बहुत दिन तक असिस्टेन्ट रेवन्यू कमिश्नर रहे हुए श्री गोस्वामी आशुकरण जी एम० ए० लिखते हैं :—

"सन् १६२६ की बात है। मैं बीकानेर राज्य के विधान विभाग (लेजिस्लेटिव डिपार्टमेन्ट) में अनुवादक के पद पर काम कर रहा था। विधान सभा के अधिवेशन की तैयारियों में हमारा दफ्तर दिन रात काम कर रहा था। अधिवेशन में अभी करीब एक सप्ताह बाकी था। रात्रि के करीब दस बजे थे। हम लोग दफ्तर में ही काम कर रहे थे। हमारे विभाग के सेक्रेटरी श्री दिलसुखराय मनसुखराय नानावटी ने मुझे अपने कमरे में बुलाया और कुछ झुंझलाहट तथा कुछ विनोद की मुद्रा से मेरे सामने एक पुलिन्दा डालकर कहा कि ये एक नये मेम्बर चौधरी हरिश्चन्द्र ने ४० प्रश्न असेम्बली में पूछे जाने के लिए भेजे हैं। इनका आज रात्रि में ही अंग्रेजी में अनुवाद कर डालो, सुबह इन्हें

सम्बन्धित मिनिस्टरों के पास जवाब के लिए भेजना होगा। मैंने सोचा ये खूब रही, रातभर के जागरण का सामान हो गया और सुबह तक भी इनका अनुवाद पूरा हो सकेगा या नहीं ईश्वर ही मालिक है।

प्रश्न अधिक मात्रा में राजस्व विभाग से सम्बद्ध थे। पटवारियों, गिरदावरों, नायब तहसीलदारों, तहसीलदारों आदि की गफलतों, रिश्वतखोरी, इन्तकालात के मामलों में ढिलाई, कर्त्तव्य में उपेक्षा आदि के विषय के ही अधिकतर प्रश्न थे। एक प्रकार से बड़ी सनसनी फैल गई। राजकीय विभागों में गहरी चिंता का एक कारण उपस्थित हो गया। चौधरी जी के प्रश्नों में सच्ची शिकायतें निहित थी।

मुझे इस इन्कलाबी जीव को देखने की बड़ी उत्कण्ठा हो गई और इसी वर्ष विधान सभा के अधिवेशन के अवसर पर मैंने पहली बार चौधरी हरिश्चन्द्रजी को देखा और उनका मेरा परिचय भी हुआ। एक दुबला पतला, आँखों में एक अजीब चमक लिए हुए, सफेद शेरवानी पहने, लाल (कसूम्भी) पगड़ी बाँधे हुए, होठों पर मुस्कान लिए हुए, बहुत शिष्ट सम्भाषण करने वाला एक जाट, गंगानगर का रहने वाला, वकील पेशा एक आदमी, बस यही चौधरी हरिश्चन्द्र जी का स्वरूप पहली बार मेरे सामने आया।

इसके दो वर्ष पश्चात मेरा गंगानगर तबादला हो गया और तब से चौधरी जी का और मेरा मिलना अक्सर होता

रहा और चौधरी जी के अधिक निकट आने और उन्हें देखने परखने का मुझे मौका मिलता रहा। बल्कि यों कहिए कि मेरी तथा चौधरी जी की मैत्री दिन प्रतिदिन बढ़ती गई और आज मुझे चौधरी जी की मैत्री पर गर्व है।

चौधरी जी को मैंने एक सादगी का जीवन व्यतीत करने वाला, कर्मनिष्ठ, सत्यप्रिय, विचारशील, सन्मित्र तथा गरीबों की तकलीफों से सहानुभूति रखने वाला, जातिवाद से अलग तथा ऊँचे विचार वाला व्यक्ति पाया। विनोद शीलता की मात्रा भी उनमें कम नहीं है। उनका एक बड़ा भारी गुण स्पष्टवादिता है। अपने स्वार्थ के लिए वे कभी किसी की खुशामद नहीं करते और जो उचित व न्यायसंगत हो उसे कहने में चूकते नहीं। मुझे चौधरी जी के प्रति बड़ा स्नेह व आदर है। ईश्वर उन्हें सुखी व समृद्ध रखे यही मेरी कामना है।"

बीकानेर — आशुकरण गोस्वामी
२४-१२-६३

रिटायर्ड अडिशनल कमिश्नर राजस्थान श्री मनोहरलाल जी बी० ए०, एल० एल० बी०, आर० ए० एस० ने अपने मनोभाव इस प्रकार व्यक्त किये हैं:---

चौ० हरिश्चन्द्रजी गंगानगर के रहने वाले हैं मगर

बीकानेर में पहिले जब कि बीकानेर एक रियासत थी बहुत आते थे क्योंकि यह बीकानेर लेजिस्लेटिव असेम्बली के व कई और कमेटियों के मेम्बर थे। मैं उन दिनों रेवेन्यू मिनिस्टर का परसनल असिसटेन्ट था। मेरा इन से मिलना होता था। मैंने इनको बहुत सीधे स्वभाव, नेक-दिल और सच्चा पाया। इनमें यह बहुत बड़ा गुण देखा कि यह अपने दुःख को नहीं मानते थे मगर वैसा ही दुःख दूसरों पर आ जाने पर उसे अपना ही दुःख समझते थे और दुखी की हर प्रकार से सहायता करते थे।

बीकानेर
२८-१२-६३

मनोहरलाल

राजस्थान हाईकोर्ट के रिटायर्ड जज माननीय श्री त्रिलोचनदत्त जी ने इन शब्दों में चौधरी जी के प्रति अपना प्रेम सन्देश भेजा है :—

चौधरी हरिश्चन्द्र जी श्री गंगानगर के एक गणमान्य प्रतिष्ठित प्रसिद्ध एवं कर्मठ सामाजिक कार्यकर्ताओं में हैं। सन् १६३३ में जब मैं पंजाब से वकालत छोड़कर श्री गंगानगर आया और यहाँ वकालत शुरू की तो चौधरी साहब से मेरा परिचय हुआ। उस वक्त चौधरी साहब श्री गंगानगर में केवल शुगल के तौर पर वकालत करते थे। वास्तव में वे अपना बहुत सा वक्त जाट स्कूल (अब ग्रामो-

स्थान विद्यापीठ) संगरिया और श्री गंगानगर की आर्य समाज के कार्य में लगाते थे। संगरिया स्कूल के [illegible] संस्थापकों में से हैं। और आर्य समाज श्री गंगानगर के [illegible] दाता, आर्य समाज के ट्रस्टी हैं। गंगानगर जब [illegible] के रूप में था उस समय आप यहीं पर [illegible] शाला का सुचारु रूप से संचालन का कार्य करते [illegible] में चल कर यही स्कूल दूसरे स्थान पर [illegible] गर्लस् हाई स्कूल बना और आज [illegible] चल रहा है।

के भी विरुद्ध ही क्यों न पड़ती हो। श्री गंगासिंह जी महाराजा बीकानेर जैसे खुद मुख्त्यार नरेश की स्टेट असेम्बली में खुली आलोचना करना इन्हीं का काम था।

त्रिलोचनदत्त
भूतपूर्व जज

जनसेवकों एवं जननेताओं की दृष्टि में-

बीकानेर राज्य में जब सन् १९४८ में महाराजा बीकानेर ने लोकप्रिय मंत्रीमंडल बनाया था तो आचार्य श्री० गौरीशंकर उसमें शिक्षा मंत्री थे और इससे पूर्व उन्होंने चौधरी जी के साथ कांग्रेस में कार्य भी किया है उन्होंने अपने उद्‌गार चौधरी जी के जीवन चरित के लिये इन शब्दों में भेजे हैं:---

आदरणीय श्री हरिश्चन्द्रजी वकील का जीवन चरित्र छप रहा है सुनकर प्रसन्नता हुई। मेरी दृष्टि में वे एक ऋषि हैं। उनका व्यवहार हमारे लिए आदर्श है। उनके विचार हमें हमेशा प्रेरणा देते रहते हैं। उनकी सेवाएँ सराहनीय रही हैं। समय की उनकी पाबन्दी बिना घड़ी के भी आज भी आश्चर्य का विषय है। सार्वजनिक संस्थाओं को दान देने में इन्होंने हमेशा पहल की है। सायंकाल में मैंने उन्हें अपने पशुओं को नहर पर पानी पिलाते देखकर हैरानी जाहिर की है। महर्षि दयानन्द के वे अनन्य भक्त हैं। आर्य समाज की विभूती हैं। राजनीति तथा रचनात्मक दोनों क्षेत्रों में उनकी महान देन है।

गंगानगर — गौ० श० आचार्य

राजस्थान प्रदेश कांग्रेस के भूतपूर्व अध्यक्ष और शेखावाटी की जागृति के प्रमुख सेनानी सरदार हरलालसिंह जी ने चौधरी जी के प्रति अपने आदरभाव इन शब्दों में व्यक्त किये हैं—

श्रद्धेय चौधरी हरिश्चन्द्र जी जैसे तपस्वी के बावत दो शब्द लिखने का अवसर दिया इससे मुझे खुशी है। शायद मै भूलता नहीं हूँ तो सन् १६२५ में पुष्कर जाट महासभा के अवसर पर या उसके बाद नजदीक ही चौधरी साहब से मुलाकात का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ था। तब से ही मुझ पर चौधरी हरिश्चन्द्र जी की गहरी छाप पड़ी है क्योंकि एक निर्लिप्त और अपने दायरे में विचार की परिपक्वता, निर्भयता, कर्मठता और निष्ठा के साथ आडम्बर रहित सेवा में रत रहने वाला विरला ही कोई दूसरा पुरुष होगा जो चौ० श्री हरिश्चन्द्र जी से तुलनात्मक हो। मैं श्रद्धेय चौधरी साहब से आग्रह करता हूँ कि वे खुद अपने जीवन सम्बन्धी घटनाओं का निःसंकोच वर्णन करें ताकि उनके जीवन चरित्र से देश की भावी पीढ़ियाँ सबक ले सकें।

जयपुर — हरलालसिंह

२०-१२-६३

राजस्थान असेम्बली के भूतपूर्व सदस्य और बीकानेर के एक युवक नेता श्री हंसराज जी लिखते हैं :—

मुझे यह जानकर अति हर्ष हुआ कि आप आदरणीय चौधरी हरिश्चन्द्र जी वकील की जीवनी लिखने जा रहे है। मैं भी अपनी ओर से उनके प्रति श्रद्धा के दो शब्द लिख रहा हूँ आशा है इन शब्दों को आप चौधरी साहब की जीवनी में कहीं स्थान देंगे।

भूतपूर्व बीकानेर राज्य के किसानों के मसीहा आदरणीय चौधरी श्री हरिश्चन्द्र जी वकील के दर्शन मैंने प्रथम बार सन् १६२६ ई० में संगरिया में किये थे, जब मैं उस समय के जाट हाई स्कूल (आज के ग्रामोत्थान विद्यापीठ) में पढ़ रहा था। शायद सितम्बर का महीना था, देश के क्रान्तिकारी वीर श्री यतिन्द्रनाथ दास गोरा शासन की लाहौर जेल में अपने जीवन की अंतिम घड़ियाँ गिन रहे थे।

आज के ग्रामोत्थान विद्यापीठ संगरिया में चौधरी श्री हरिश्चन्द्र जी एक ईंट बनकर लगे हुए है। जब विद्यापीठ का निर्माण हो रहा था तो उस समय के महाराजा श्री गंगासिह जी के चौ० साहब व विद्यापीठ दोनों कोप भाजन बने हुए थे, परन्तु चौ० साहब अपने स्थान से डगमगाये नहीं। चट्टान की तरह से अडिग रहे और उन्हें जो कुछ करना था उसे करते गए और अन्त में उसे करके रहे।

चौ० श्री हरिश्चन्द्रजी बीकानेर राज्य एसेम्बली के वर्षों तक गैर सरकारी सदस्य रहे। केवल एक ही व्यक्ति वह ऐसे थे जिन्होंने अपने तीखे शब्द रूपी वाणों से सामन्तशाही

का भेदन किया। महाराजा श्री गंगासिंह जी की ओर से शाम, दाम, दंड और भेद की नीति को अपनाया गया कि किसी तरह से वह राज्यसभा में इतने तीखे न बोलें परन्तु सब बेकार रहा परन्तु उन्हें जो करना था वह अविराम गति से करते ही गए।

चौधरी साहब का अधिकांश जीवन समाज सेवा में बीता। विशेषकर किसान और ग्रामीण जनों की सेवामें।

वे प्रारम्भ से अन्त तक कट्टर आर्यसमाजी रहे। मैंने जब से उन्हे देखा खद्दर के वेष में देखा और आज भी देख रहा हूँ। वह सच्चे समाज सुधारक चरित्रवान बहुगुणी और सादगी पसन्द रहे हैं, उनका जीवन देश के नागरिकों के लिए सदैव अनुकरणीय रहेगा।

स्वतन्त्रता संग्राम के समय भी उन्होंने जो सेवा की वह भुलाई नहीं जा सकती। स्वतन्त्रता के समय वह हमारे प्रेरणादायक रहे हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में जो कार्य उन्होंने किया है उसके लिए दक्षिणी पंजाब और पुराना बीकानेर राज्य उनका सदैव ऋणी रहेगा।

मैं हृदय से चाहता हूँ वह हमारे बीच चिरकाल तक प्रेरणादायक बन कर रहें।

बीकानेर
२१-१२-६३

हंसराज आर्य

बीकानेर के एक स्वतन्त्र विचारक और प्रमुख वकील श्री हरीसिंह जी जिन्होंने चौधरी जी के साथ कांग्रेस में भी कार्य किया है ने लिखा है—

पूजनीय चौधरी साहब का अनुभव विशाल व गहरा है। उन्होंने दुनिया को बहुत रंग-रूप बदलते देखा है। देशों, समाजों, व्यक्तियों, वर्गों में बहुत परिवर्तन उनके सामने हुए है।

वह प्रकृति से गभीर व धर्म-भीरु हैं। नैतिक व मानसिक सन्तुलन कायम रखने में वह बे-मिसाल हैं। भारतीय राज-मद-मत्त सामन्ती राजाओं से लेकर, गिरगिट की तरह रंग बदलने वाले राजरोग, ग्रस्त, प्रजातन्त्री धर्म-नीति हीन आकाओं तक सभी तरह के लोगों से उन्हें व्यवहार करना पड़ा है। किन्तु आपने किसी अनुकूल या प्रतिकूल परिस्थिति में अपना सन्तुलन नही खोया।

सद-चरित्र, दुर्व्यसनों से मुक्त कुरीतियों के कट्टर विरोधी हरिश्चन्द्र जी ने इस प्रदेश में, शिक्षा-प्रसार, समाज सुधार एवं राजनैतिक चेतना जाग्रति करने में सराहनीय कार्य किया है। महत्वाकांक्षी न होने से, सस्ती दम्भपूर्ण प्रसिद्धि के पीछे वह कभी नहीं भागे।

शारीरिक श्रम की महिमा में उनका अडिग विश्वास हैं। इस परिपक्व आयु में भी तन मन से स्वस्थ व आत्मालंबी, अपना सब कार्य वह आज भी आप करते हैं।

अपनी लम्बी जीवन-यात्रा में वह असंख्य लोगों के स्नेही सज्जन, दार्शनिक, दोस्त व पथ प्रदर्शक रहे है। उनका जीवन वृतान्त शिक्षाप्रद होगा इसमें संदेह नहीं।

पूजनीय हरिश्चन्द्र जी धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष सब साथ साथ साधने वाली हिन्दू परम्परा के सुन्दर नमूने हैं। उनमें आदर्श व यथार्थ में सन्तुलन समन्वय बनाये रखने की आर्य ऋषियों की सी क्षमता है।

मुझे ऐसे महानुभाव का स्नेह-पात्र होने का अभिमान है। जब भी उनके दर्शन करने का सौभाग्य मिलता है उनकी आत्मीयता मुझे प्रभावित करती है।

मैने यह सब आपके आग्रह पर लिखा तो है पर आप इसको कैसे उपयोग करेगे ? क्या जीवन-वृतान्त के अलावा श्रद्धांजली स्तंभ रखा है पुस्तका में आपने ?

खैर आप जाने आपका काम जाने। मैंने आज्ञा पालन कर दी है।

भादरा हरीसिंह

अखिल भारतीय जाट महासभा के पूर्व महामन्त्री श्री रिछपालसिह जी ने अपने प्रेम सन्देश में लिखा है :—

आज से तीस वर्ष पहिले मैने प्रजापति जाट महायज्ञ सीकर (राजस्थान) के शुभ अवसर पर भक्त शिरोमणि धनाजी का जीवन चरित्र राजस्थान के कर्मठ व तपस्वी

चौधरी हरिश्चन्द्र जी को भेंट किया था। चौधरी हरिश्चन्द्र जी पुराने वकील, शिक्षा शास्त्री, व समाज सुधारक हैं। मुझे याद है कि सन् १९२० ई० में ग्रामोत्थान-विद्यापीठ संगरिया (राजस्थान) के लिए विद्यापीठ के जन्मदाता चौधरी बहादुरसिंह जी भोमिया के साथ चौधरी हरिश्चन्द्र जी ने भी फकीर कौम की झोली डाल कर भारत में विद्यापीठ के लिए धन इकट्ठा किया था–एक जून सन् १९२४ ई० को त्यागमूर्त्ति चौधरी बहादुरसिंह जी स्वर्ग सिधारे और उनके अधूरे काम को पूरा करने वाले पाँच प्यारों में चौधरी हरिश्चन्द्र जी ने शिरोमणि बनकर अपने व्रत व प्रण का पूरा पालन किया–

आज से चौदह वर्ष पहिले भी किसानों के नेता ठा० देशराज जी भरतपुर ने छः सौ सफों का एक महान ग्रन्थ-रियासती भारत के "जाट जन सेवक" नामक भी इन्हीं राजस्थान के महारथी निःस्वार्थ राष्ट्रवादी जन सेवक चौधरी हरिश्चन्द्र जी को ही भेंट किया था।

मुझे बड़ी ही प्रसन्नता है कि राजस्थानी जागृति में कर्मवीर तपस्वी ठाकुर देशराज जी का सक्रिय महान भाग है और भारत के यशस्वी लेखक होने के नाते उन्होंने राजस्थान की आधुनिक जागृति के जनक चौधरी हरिश्चन्द्र जी के जीवन-चरित्र को लेख बद्ध करके और पुस्तक रूप में प्रकाशित करके चिरस्मरणीय महान कार्य किया है। यह

अनमोल ग्रन्थ हमारे गौरव को तो बढ़ावेगा ही, साथ ही हमारी वर्त्तमान पीढ़ी और आगामी पीढ़ियों में भी उत्साह और प्रेरणा का काम देगा और आने वाली सन्तान अपने पूर्वजों को सराहेगी जिन्होंने पिछले और इस जमाने में महान सेवा कार्य किया है। चौधरी हरिश्चन्द्रजी ने जीवन की चार-बीसी समाप्त कर दी हैं। शतायु होने के लिए एक बीसी और पार करनी है। परमपिता परमात्मा देश के कल्याण और उद्धार के लिए चौधरी हरिश्चन्द्र जी में वही पुराना अदम्य उत्साह और अनुराग बनाए रहें। ताकि वे जनता की और भी अधिक सेवा करने में सफल हों।

मैं चाहता हूँ कि चौधरी साहब के जीवन-चरित्र का पाठ भारत के घर घर में हो।

अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि इन कुछ पंक्तियों द्वारा ही भेंट करके अपना महान सौभाग्य समझता हूँ।

धमेड़ाकीर्त्ति रिछपालसिंह
१६-१२-६३

दीपक के यशस्वी सम्पादक और पंजाब के पूर्व एम० एल० ए० श्री तेगराम जी ने अपने आदरभाव इस प्रकार अंकित किये हैं :—

चौ० हरिश्चन्द्र जी नैण बीकानेर रियासत के पुराने

जन-सेवक हैं। इस रियासत की शोषित, पीड़ित ग्रामीण जनता में प्राण फूंकने के लिए किए गए उनके अनथक प्रयत्नों का महत्व तभी समझ में आ सकेगा, जब हम बीकानेर राज्य की आज से ५०-६० वर्ष पहले की अत्यन्त शोचनीय राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक व बौद्धिक स्थिति पर नजर डालें। उस समय बीकानेर में महाराजा गंगासिंह के अत्यन्त कठोर व निरंकुश सामन्तशाही शासन का दौरदौरा था। कितनी दयनीय हालत थी इस रियासत की ? एक ओर भीषण गरीबी, घोर जहालत तथा अनेकों रूढ़ियों, अन्ध विश्वासों, कुसंस्कारों व दुर्व्यसनों से जर-जर हुई वहां की जनता, दूसरी ओर उस समय के नरेन्द्र मण्डल के प्रमुख वे महाराज गंगासिंह जो अपने राज्य की जनता की हर प्रकार की स्वतन्त्रता को निर्दयता से पैरों तले रौंदने में, सभी देशी राज्यों में प्रमुख थे। उनके शासन में कोई भी प्रजाजन नित्य घोर अत्याचार सहते हुए भी 'अन्नदाता' 'घणी खमा' के सिवाय मुँह से दूसरा शब्द नहीं निकाल सकता था, यदि वह अपनी व अपने परिवार की खैर चाहता हो।

ऐसे दम-घुटने वाले वातावरण में, हर प्रकार से इतनी पिछड़ी हुई तथा सभी प्रकार की कुरीतियों से खोखली हुई, भेड़ से भी भीरू, अकर्मण्य व उत्साह-हीन जनता को जगाने, उठाने और अपने पैरों पर खड़ा करके देश की अन्य जनता

के साथ उन्नति के पथ पर चलाने का–'पंगु गिरि चढ़', सा असंभव दीखने वाला काम, संभव कर दिखाने का भगीरथ प्रयत्न चौ० हरिश्चन्द्रजी ने किया–साधारण ग्रामीण घर में जन्म ले, साधारण सी शिक्षा पा, अपने क्षीणकाय दुर्बल शरीर में अदम्य उत्साह, अटल निश्चय और महान मनोबल का सँबल सँजोकर।

दुनिया को भुलावे में डालने के लिए कि बीकानेर रियासत में प्रजातंत्रीय शासन है दिखाने को बनी, महाराज के इशारे पर चलने वाली बीकानेर राज्य की असेम्बली में महाराजा द्वारा मनोनीत देहाती जनता के प्रतिनिधि के रूप में बने असेम्बली के सदस्य के तौर पर चौ० हरिश्चन्द्र ही एकमात्र ऐसे सदस्य थे, जो उस पूर्णतः उत्तरदायित्व-रहित असेम्बली में स्वेच्छाचारी शासक के कोप भाजन होने से बचते हुए, अपनी बुद्धिमत्ता तथा नीति-निपुणता से सरकार के अनुचित कार्यों की आलोचना करने तथा जनता की माँगों व कष्टों को कहने से न चूकते थे। यह इनकी अद्‌भुत कार्य कुशलता का चमत्कार ही था।

मरुभूमि की कठोर प्रकृति के भीषण प्रहारों तथा जहालत व वैमनस्य में फँसी जनता द्वारा अपने ही उद्धारकों को दी गई यातनाओं को सहते हुए, धुन के धनी इस तपस्वी ने विपरीत परिस्थितियों से लगातार ५० वर्ष तक संघर्ष करते हुए अन्त में विजयश्री प्राप्त की। जिस स्वप्न को

मन में संजोकर इस कँटीले कार्य-क्षेत्र में पग रखा था, कि मेरी जाति व देश के बच्चे भी दूसरों की भाँति शिक्षित, सभ्य व सम्पन्न होकर अपना जीवन सुखी, सफल व यशस्वी बनाकर देश व जाति के प्रति, अपना कर्तव्य पालन करेंगे, वह स्वप्न साकार हुआ और साधक की साधना पूरी हुई। जिन लोगों को बीकानेर राज्य में आज से ५०-६० वर्ष पहले राजवंश तथा सरकारी कर्मचारी वर्ग असभ्य, गँवार, हीन तथा अछूतों से भी अधिक घृणा से देखता था, तथा उनके बच्चों को शिक्षा देना, साँप के बच्चों को दूध पिलाने के समान घातक समझता था, आज उन्ही ग्रामीणों के बच्चे सुशिक्षित होकर प्रत्येक क्षेत्र में उच्च तथा सम्मानित पदों पर कार्य कर रहे है। यह स्थिति लाने का श्रेय चौ० हरिश्चन्द्र जैसे कर्मठ जन-नायकों को है। जिन्होंने लम्बे समय तक अनथक कार्य कर, घोर कष्ट सहकर, बीकानेर जैसे अत्यन्त पिछड़े राज्य की इन ५० वर्षो में काया पलट दी।

जब कोई व्यक्ति चौ० हरिश्चन्द्र जी को प्रातः अपने घर के आँगन में झाड़ू देते तथा गोबर-कूड़ा उठाते देखता है, तो इस महापुरुष की अद्भुत शुभ-निष्ठा के प्रति नत-मस्तक हो जाता है। सादगी व सरलता की आप साक्षात् मूर्ति है। गर्व-गरूर तथा दिखावे से कोसों दूर, राज्य के उच्च सम्मानित पदों पर आसीन होकर भी आपने अपनी अत्यन्त सादी वेश-भूषा तथा नम्रता को नहीं छोड़ा।

बागड़ के गाँवों में घर-घर विद्या की ज्योति जगाने, ऋषि दयानन्द की अन्धविश्वासों तथा पाखण्ड खण्डिनी वाणी का अलख जगाने, अस्पृश्यता निवारण का शंख फूंकने, औसर-मौसर, वैवाहिक कुरीतियाँ व फिजूल खर्ची तथा शराबखोरी आदि दुर्व्यसनों के विरुद्ध जबरदस्त आवाज उठाने आदि समाज-सुधार का कोई ऐसा काम नहीं जिसमें चौ० हरिश्चन्द्र जी ने आगे बढ़कर भाग न लिया हो।

मरुधर के नव-निर्माताओं में अग्रणीय के रूप में चौ० हरिश्चन्द्र जी गणना होगी। सुलझे विचारों तथा सुधरे आचार-व्यवहार से युक्त, नियम-संयम में बँधा, धैर्य व सहनशीलता से पूर्ण उनका सेवामय जीवन भावी पीढ़ियों के लिए पथ-प्रदर्शक सिद्ध होगा। जिससे प्रेरणा लेकर हमारे अनेकों नौनिहाल अपने जीवन को सफल बनायेंगे।

मुझे चौ० हरिश्चन्द्र जी जैसे उज्वल-चरित्र व्यक्ति का स्नेह व आत्मीयता की भावना प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। मैं उनके महान गुणों व व्यक्तित्व के प्रति नम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हुआ, सदैव उनके स्वस्थ शरीर तथा दीर्घायु जीवन की कामना करता हूँ।

लोक-सेवक आश्रम,
अबोहर (पंजाब)
२१ - १२ - ६३.

तेगराम

शिक्षा मनीषियों और प्रेमियों की दृष्टि में -

स्वामी केशवानन्द जी भारतीय संसद के सदस्य
किन्तु इससे भी अधिक उनका महत्व इस बात में है कि
वे देहाती भारत के एक उपेक्षित भाग के भाग्य को उज्व
बनाने वाले शिक्षा मनीषी हैं। चौधरी हरिश्चन्द्र जी वे
लिये जो स्नेह उनके हृदय में है उसे उन्होंने इन शब्द
में व्यक्त किया है :—

आज दिन श्री चौधरी हरिश्चन्द्रजी की जीवनी श्र
ठाकुर देशराज जी द्वारा लिखी जा रही है।

किसी कारणवश आप मरुस्थल वासी और देहाती
होने पर भी आपने शिक्षा प्राप्त करली और उसी के साथ
ही कुछ महानुभावों का संसर्ग आपको हुआ कि जिससे आप
दैनिक कार्य्य-क्रम (प्रतिदिन का दिन चर्य्या) लिखनी
आरम्भ कर दी। जिसके साथ परबीती और घरबीती
दोनों ही आ जाती हैं। आपकी डायरी में १६०५ से
लगा बराबर भारतवर्ष का परिवर्तन और उसके साथ ही
फिर देशी राज्यों में रियासत बीकानेर एक महत्वपूर्ण
राज्य रहा है उसकी घटनायें भी और विशेष उस राज्य

की उत्तरीय सीमा पर जिसका नाम आज ग्रामोत्थान विद्यापीठ सगरिया है कि जिसकी विशेषताओं में और उसके निर्माण में आपका पूरा हाथ और परिश्रम रहा है। उसे स्थापन करने वालों में श्री चौधरी बहादुरसिंह भोभिया श्री ठाकुर गोपालसिंह, श्री चौ० आशाराम गाँव बोलावाली श्री हरजीराम जी मलोट आदि के अनेक सज्जन है कि जिनकी चर्चा इस डायरी में अवश्य ही मिलेगी। इस संस्था की जितनी बैठकें प्रवृत्ति में प्रचार और इस बीच जहाँ भी जाना आना था उनमें सर्वप्रथम स्थान श्री चौ० हरिश्चन्द्र जी का रहा है। मेरे आने के बाद भी (३२-३३ सन्) आप बराबर बाहर देहात में संस्था की बैठकों में रुपया पैसा के इकट्ठा करने में बराबर तत्पर साथ और चिन्ता में रहे है। तात्पर्य यही है कि भारत के विशेष परिवर्तन के यही दिन रहे हैं। यह सब इनकी डायरियों में मिलेगा। रियासत आर्यसमाज से भी घबराती थी तब श्री चौधरी जी और इनके साथ पड़ोसी पंजाब की अबोहर जैसी मण्डियों और काँग्रेस के अधिवेशनों में आपका सदा ही हाथ और साथ रहा है। आप जहाँ रियासत के वकील रहे हैं, वहाँ रियासत की कोंसिल से सदस्य भी सदैव ही रहे हैं। यहाँ के लोगों में सामाजिक बुराइयों के दूर करने में संस्था के उत्सव आदि के कार्यो में भी समाज की खोटी रूढ़ियों के दूर करने में आप का हाथ रहा है। कोई भी व्यक्ति चाहे आये चाहे न आये पर आपका आना तो अनिवार्य रहा है

समय पर उठना समय पर पहुँचना और अपने हाथ से प्रत्येक घरका काम अपने आप करना यह सब विशेषतायें श्री चौधरी जी मे रही हैं। जहाँ तक मेरा ख्याल है चौधरी जी अपने संयम के कारण शायद ही कभी वीमार देखे गये हों। आपका जीवन संयममय ही सदा बना रहा है। आप अच्छे पढ़े लिखे होने के साथ अरबी, फारसी के शेर दूसरी २ कहावतों और छन्दों के कन्ठस्थ रखने के साथ लिखते रहे हैं कि जिनका एक वड़ा पोथा वन सकता है। बाहर आप जहाँ मान्य एवं आदर सत्कार के पात्र रहे है वहाँ घर के काम काज पशुओं की सेवा सफाई आदि सभी काम अपने हाथ से करना ही कर्तव्य समझते रहे हैं। आप दूर-दूर की जन्म शताब्दियों आर्य्य समाज के वड़े २ उत्सवों में महत्त्वपूर्ण कांग्रेस के अधिवेशनों में फिर साथ लगते पंजाव के अवोहर जैसे स्थानों श्री लाला लाजपतराय के श्री स्वामी सत्यदेवजी जैसे राजनैतिक व्यक्तिओं के आने पर वहाँ पहुँचना और अपने साथियों के साथ साधारण आर्थिक सहायता भी देना अपना कर्त्तव्य समझते रहे हैं। सब विद्वानों भक्तों सत्संगों एवं समाज सुधार के वड़े से बड़े सेठ श्री रामगोपाल मोहता जैसे और श्री हरजीराम मलौट जैस चोंधरियों के साथ घनिष्ट सम्बन्ध जाना आना और चर्चा रहती थी। अपने परिवार और बच्चों को अच्छे योग्य एवं सम्पन्न वनाने में सब कुछ करते

रहे हैं और उनमें आपका एक पुत्र श्री वेदप्रकाश विलायत में प्रोफेसर हैं। आज चौधरी साहब का जीवन ओ३ममय जीवन है। उसी के गान में ध्यान में उच्चारण में और अर्थ में लीन हैं। किसी को पता न हो ऐसी रात्रि की वेला में ओ३म की उपासना गान और ध्यान बराबर घण्टों चलता रहता है। आप अब ८१वें वर्ष में चल रहे हैं स्वास्थ्य अच्छा है। —केशवानंद

डूंगर कालेज बीकानेर के प्रोफेसर श्री विद्याधर जी शास्त्री एम० ए० ने लिखा है :—

चौधरी श्री हरिश्चन्द्र जी के साथ मेरा प्रथम सम्पर्क संगरिया के वर्तमान ग्राम विद्यापीठ के प्राथमिक विकास काल में ही हो गया था। श्री चौधरी जी बीकानेर के इस भाग में मान्य स्वामी जी श्री केशवानन्द जी के साथ शिक्षा प्रसार में सब से अधिक अग्रगामी हैं। शिक्षा सुधार के साथ सामाजिक सुधार और राजनैतिक अधिकारों की मांग में भी आप किसी से पीछे नहीं रहे। वृद्धावस्था में भी वे युवकों से आगे बढ़कर काम करते रहे हैं और निरन्तर शान्त एवं चिन्तनशील रहते आये है।

परम प्रसन्नता है कि उनका जीवन चरित्र प्रकाशित होरहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि उनका यह चरित्र अनेक पाठकों के लिये प्रेरणायुक्त और मार्गदर्शक होगा।

बीकानेर विद्याधर शास्त्री एम. ए.
२३-१२-६३

मारवाड़ी किसानों में जागृति के आदि घोषक श्री चौ० मूलचन्द जी लिखते हैं :—

श्रीमान ठाकुर देशराज जी साहब सप्रेम नमस्ते ।

आपका कृपापत्र १२ । १२ । ६३ का मिला बड़ी प्रसन्नता हुई कि आप आगरा में श्री वकील हरिश्चन्द्र जी का जीवन चरित्र छपवा रहे हैं जिसमें मेरे विचार चाहते हैं ।

श्री चौधरी जी महोदय से मेरी जान पहिचान सन् १४ । १५ में सूरतगढ़ में हुई थी । तब आप और श्री बहादुरसिंह जी भोभिया दोनों जाट स्कूल संगरिया का चंदा वसूल कर रहे थे । तब ही वकील जी ने मुझको भी इस शुभ कार्य के लिए उत्साहित किया था, जिसके बाद समय-समय पर जलसे में मिलते जुलते रहे हैं, आप महान विद्या प्रेमी हैं । लग्न के भी आप धनी हैं, त्याग, तप में आप तन, मन, धन से इस कार्य में और साथियों के साथ जुटकर और श्रीमान स्वामी केसवानन्द जी महाराज को साथ लेकर अपने इलाके में विद्या प्रचार किया है और समाज की कुरीतियां हटाई हैं आपने अपने बड़े सुपुत्र की शादी श्री गुल्लारामजी जोधपुर की पोती से की है जिसमें बिलकुल दहेज नहीं लिया गया । आप मेरे पुराने साथियों में प्रिय सम्माननीय हैं ।

मैं आपके लंबे स्वस्थ जीवन के लिए ईश्वर से कामना करता हूँ ।

आज हमें संगरिया जाट स्कूल को कृषि कोलेज के भारी रूप में देखकर महान प्रसन्नता होती है।

नागौर — सूलचन्द चौधरी

१६ । १२ । ६३

मारवाड़ के लग्नशील कार्यकर्ता श्री चौ० शिवकरण जी ने लिखा है :–

श्रद्धेय चौ० श्री हरिश्चन्द्र जी साहब भी सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र के पद चिह्नों पर ही चल कर उनका अनुकरण करते रहे हैं जैसा कि भूतपूर्व बीकानेर नरेश श्री गंगासिंह जी के राजकाल में वहां की एसेम्बली में बेधड़क होकर अपने विचार सिंह गर्जना के समान रखने में किसी तरह का भय नही रक्खा, उस सामन्तशाही जमाने में किसान व दलित वर्ग के प्रतिनिधि के नाते आपने बड़ी सेवा की है। आपने स्वामी दयानन्द के अधूरे कार्य समाज-सुधार दलितोद्धार व धार्मिक संस्कार बढाने, कुरीतियों का बहिष्कार, सुरीतियों का प्रचार करने में कोई कसर नहीं रक्खी। मेरा सम्बन्ध उनसे सन् १६३२ से आजतक बराबर बना रहा है। जाट स्कूल संगरिया की स्थापना से लेकर आज कृषि कालेज बनने तक आपका पूरा सक्रिय योग रहा है। पूज्यनीय श्री स्वामी केशवानन्द महाराज ने जब जाट मिडिल स्कूल टूट रहा था उसको सम्हालने की

जिम्मेदारी ली थी उसमें स्वामी जी महाराज को सहयोग देने में आप सर्वप्रथम रहे। सारांश यह कि जिसको वचन दे दिया काम का, समय का, उसमें ठीक सत्यवादी हरिश्चन्द्र का ही पार्ट अदा किया। आप पूर्ण निष्ठावान रहे चाहे कितना ही कष्ट क्यों न झेलना पड़ा। पिछली साल अपनी पुत्र वधू जो इङ्गलेंड से व्याह कर गंगानगर आई तब भी सर्वप्रथम .आर्यसमाज मंदिर में अपने घर से नंगे पैर लेजाकर भारतीय सांस्कृति के संस्कार की छाप लगाई। मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने जो अच्छे कार्यो के नियम बनाये वह गुण आप में विद्यमान हैं। पिछले दिनों में ओपकी आँख की नजर कम होने की वजह से आपने आपरेशन भी करा लिया है। जिससे फिर अपने कार्य में व्यस्त रहते हैं। मैं थोड़े दिन पहले ता० २७-१०-६३ विजया दशमी के दिन उनके दर्शन करने हेतु गया, उस समय आप अपनी डायरी लिख रहे थे। भेंट होते ही कहा कि मेरे जीवन के सबके सब लिखे हुए कागज व डायरियाँ श्री केशवानन्द जी महाराज उठाकर ले गये और कुछ श्री ठा० देशराज जी को दे आये हैं मै उस समय घर नहीं था इच्छा न होते हुए भी मेरी जीवनी लिखवाने की चेष्टा श्री स्वामीजी महाराज कर रहे है। क्या करूँ। मैंने कहा कि आपके जीवन चरित्र से देश व जाति को वड़ा लाभ होगा क्योंकि आपका जीवन संघर्षमय रहा है। अतः आप इसके लिये अपनी स्वीकृति दें व अपने जीवन की घटना की पाण्डु-

लिपि खुद आगरा पधार कर देखें। कोई त्रुटि हो या लिखने से रह गई हो तो वह साफ हो जावेगी। आपने अपने सरल हृदय से स्वीकृति दी और आगरा जाने का निश्चय भी उसी विजया दशमी के दिन कर लिया था। आशा है कि आपने पाण्डुलिप देखली होगी। आप सदा सादा भेपभूपा एवं मिलनसार, मधुरभापी, सेवाभावी, अपनी वात के धनी रहे हैं। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि आप को शतायु करें। आज के युग के विचार अनुसार आपका जीवन श्रममय, एक सा रहा है आप पूरे कर्मयोगी रहे हैं, आज वृद्ध अवस्था में भी प्रगतिशील विचार वैसा ही बना हुआ है।

आशा है कि मैंने उपरोक्त कुछ पंक्तियाँ लिखी है वह शुद्ध करके छापने का कष्ट करेंगे। वाकी ज्यादा क्या लिखूं आपके पास उनकी जीवन डायरियों से पूरा सामान मिल ही गया है वाकी सव साथियों के विचार भी देने हैं।

नागौर राजस्थान शिवकरण चौधरी

जोधपुर प्रदेश के किसान छात्रावासों के सफल संचालक चौ० रघुबीरसिंह जी ने अपने आदरभाव इस प्रकार प्रकट किये हैं :---

चौधरी हरिश्चन्द्र जी को मैं सन् १९३७ से जानता हूँ। ज़व कि वे साँगरिया स्कूल के लिये धन संग्रह करने

के लिये जोधपुर पधारे थे। तब से बाद में मेरा उनसे समय-समय पर मिलना होता रहता है। जिस समय वे जोधपुर पधारे और करीब एक सप्ताह तक मेरे साथ रहे, उनसे मैंने दो शिक्षाएँ प्राप्त की। "एक तो यह कि पतले फुलके की बजाय मोटा पुलका जीमना चाहिये और दूसरी यह कि यदि आधे पुलके की भूख हो तो निस्संकोच होकर आधा पुलका ही लेना चाहिये। पूरा पुलका लेकर अधिक जीम लेना या थाली में झूठा छोड़ देना अन्न का बड़ा भारी अपमान है।" इन दो बातों को मैंने इसी वक्त धारण कर लिया और आज तक पालन करता आ रहा हूँ। वास्तव में इन दोनों शिक्षाओं को मैंने अपनी आदत में ढालकर बड़ा लाभ उठाया, वैसे बोलने में ये दोनों बातें बहुत मामूली सी लगती हैं।

आप बड़े निस्संकोची, तथा स्पष्टवादी हैं और निर्भयता से सच्चाई का पालन करते है। पहले आप बीकानेर राज्य में अहलमद रहे फिर वकील रहे और बीकानेर राज्य की ऐसेम्बली के मेम्बर भी रहे जिसमें आपने निस्संकोचता, स्पष्टता, निर्भयता तथा सच्चाई को पूरे ढंग से निभाया।

यह बात मुझे भली प्रकार ज्ञात है और बीकानेर इलाके के मुख्य-मुख्य सज्जनों द्वारा मालुम हुई है कि जाट स्कूल संगरिया मन्डी, जो बीकानेर, गंगानगर इलाके का एक बड़ा शिक्षा केन्द्र है, के आप मुख्य कार्यकर्ताओं में से

हैं और इस संस्था की जड़ों को मजबूत करने में आपने पूरा-पूरा हाथ बँटाया है ।

बीकानेर राज्य के राजनैतिक क्षेत्रों में भी आपने पूरा-पूरा भाग लिया और ग्रामीण जनता में राजनैतिक चेतना पैदा करने तथा कानूनी सहायता देने में आप बीकानेर इलाके में मुख्य सलाहकार रहे है ।

आपने अपने पुत्र-पुत्रियों को पूरा-पूरा योग्य बनाने में बड़ी कोशिश की है जो आज अपनी योग्यता के बल पर देश के उन्नतिशील क्षेत्र में सफलता पूर्वक कीर्तिवान जीवन व्यतीत कर रहे है ।

आप हिन्दी भाषा के अलावा उर्दू व फारसी भाषा के अच्छे जानकार है । सैद्धान्तिक विचारों पर जीवन नैया को चलाने वाले चौधरी हरिश्चन्द्र जी ने अपने जीवन की प्रत्येक घटना को अपनी डायरी में नोट किया है । मेरा ख्याल है कि उन्हीं के आधार पर आज उनका जीवन चरित्र पूरी सच्चाई को लिये हुए लिखा जा रहा है ।

आजकल आपका जीवन वानप्रस्थी की तरह बीत रहा है और गंगानगर का आर्य समाज तथा नगर की प्रत्येक लायब्रेरी आपका कार्य क्षेत्र है । दिन भर सेवा भावी विचारों को लिये हुए आप इधर उधर घूमते रहते हैं तथा जरूरत मन्दों को सहायता एवं सलाह देते रहते हैं ।

जोधपुर — रघुबीरसिंह

दूसरे संस्करण के लिए

चौधरी जी साहब की डायरियों में बहुत कुछ है किन्तु इस प्रथम प्रयत्न में हम इतना ही संकलन कर सके हैं। बीकानेर के नामदार महाराजा गंगासिंह जिन्हें कि उनकी रजत जयंती के अवसर पर पं० मदनमोहन मालवीय ने गंग नहर लाने की योजना पर मरुभूमि का 'भागीरथ' कहा था वे किस प्रकार के प्रजापीड़क, अहंभावी और निरंकुश शासक थे। तथा उनसे पूर्व के राठौर नरेशों ने भी इस नीरस भूमि के निवासियों का किस प्रकार शुष्क रस खींचा था ! यह बहुत कुछ चौधरी साहब की डायरियों में भरा पड़ा है।

किसानों विशेषतः जाट किसानों को न पनपने देने के षड-यंत्रों और कुकृत्यों का वर्णन जहां इनमें मिलेगा। वहाँ प्रसन्न होने पर अपने ही भाई बन्धुओं को आसमान पर चढ़ाने और अप्रसन्न होने पर धूल में मिलाये जाने की भी गाथायें मिलेंगी अजीतपुरा के पट्टेदार श्री भेरोंसिंह को उम्रकैद और पट्टे के सभी गाँवों की जब्ती, बीदासर के पट्टेदार श्री हुक्मसिंह का कैद में ही परलोक गमन और उसी के बेटे को राजा का खिताब देने की अनुकम्पा तथा अपनी रजत जयंती के

अवसर पर रेड़ी के पट्टेदार जीवराजसिंह जी को राजा की उपाधि देना और उसके कुछ वर्ष बाद ही उसे दाने दाने का मुहताज बनाकर निकाल देना और यहाँ तक कि बीकानेर का इतिहास तयार कराने के लिये तीस हजार रुपये बजट में मंजूर करा लेना किन्तु इतिहास न लिखाकर श्री के० एम० पन्निकर से अपना जीवन लिखा कर प्रकाशित करा लेना ऐसी गाथायें हैं जो अपने पीछे "लन्दन रहस्य" जैसी रोचकता एवं विभीषकता रखती हैं।

यह प्रस्तुत संग्रह अपबीती से अधिक और परबीती से कुछ कम संबंधित है किन्तु यह एक नमूना है यह बताने के लिये कि उनकी डायरियों में कैसी कैसी उपयोगी सामग्री भरी पड़ी है।

यह विभिन्न रसों और महक वाले फूलों की एक वाटिका है। जिसमें से कोई भी साहित्यक रूपी मधुमक्खियां शहद का छत्ता बना सकती है। इसलिये हमारी कामना है कि इतिहास तथा परबीतियों से रुचि रखने वालों की कृपा से हमें इस पुस्तक का द्वितीय संस्करण प्रकाशित करने का भगवान अवसर प्रदान करें।

मुख्य कार्य क्षेत्र

यों तो चौधरी हरिश्चन्द्र जी का कार्यक्षेत्र वहाँ तक रहा जहां तक उनकी महान् जाति फैली हुई है किन्तु खासतौर से उनका कार्य क्षेत्र रहा बीकानेर राज्य (अब-डिवीजन)। लम्बाई चौड़ाई के हिसाब से बीकानेर राज्य राजस्थान की बाईस रियासतों में दूसरे नम्बर का राज्य था। इस राज्य को एकरूपता तथा विस्तार दिया राठौर वंश के बीकाराव और उसके वंशजों ने।

राठौर राजस्थान में पन्द्रहवीं सदी में गुजरात की ओर से आये थे ; वह अपना निकास कन्नोज से मानते हैं। कन्नौज में उनका प्रसिद्ध पुरुषा जयचन्द था, जिसकी पृथ्वीराज चौहान से खटपट रही थी। राजस्थान में आने वाले राठौरों का नेता राव सीहाजी था जिसने अपनी विपत्ति के बहुत सारे दिन पाली में बिताये थे। उनके एक वंशज बीकाराव जोधपुर से सन् १४६५ में निष्कासित हुये थे।

राजस्थान जिसे कि राजपूताना भी कहते रहे हैं राजपूतों के कारण प्रसिद्ध हुआ। और जिनके कि कछवाहा, गुहलोत, हाड़ा, झाला और राठौर प्रसिद्ध खानदान हैं। इनमें से राजस्थान का लगभग एक तिहाई भाग राठौरों के पास सन् १९५० तक रहा है।

राठौर नरेश जोधाजी का एक राजकुमार बीकाराव पता द्वारा निष्कासित होकर अपने चाचा कांधल के साथ सन् १४६५ में बीकानेर की भूमि पर उतरा। और १४८८ में इस प्रदेश के एक खण्ड पाँडु राज्य का अधीश्वर बन गया।

जिन दिनों राव बीका के चरण इस भू-भाग पर पड़े उन दिनों यहाँ लगभग १४ कबीला राज्य थे, इनमें से सात जाटों के हाथ में थे। बीकानेर शहर जहाँ पर आबाद है उसके चारों ओर गोदारा जाटों का कुल (कबीला) राज्य था। इसके अधिपति का नाम पांडु था। इसकी अनबन रहती थी अपने पड़ौसी भांडंग के अधिपति पूला सारण से। राव बीका ने उनकी गृह कलह से लाभ उठाया और न केवल गोदारों अपितु थोड़े ही समय में सातों जाट राज्यों को जिनकी कि मातहती में लगभग दो हजार गाँव थे अपने अधीन कर लिया। इनके अधीन होने की गाथा बड़ी ही छल, प्रपंच, निर्दयता, दुस्साहस और करुणा से भरी हुई है। किन्तु उसके जिक्र से अब कोई लाभ नहीं क्योंकि अब न जालिम है और न मजलूम। दोनों ही जमीन पर बैठने वाले और जनता के प्रतिनिधियों द्वारा शासित होने वाले नागरिक हैं। जिन लोगों द्वारा यह दोनों ही शासित हो रहे हैं वे कितने अच्छे (!) हैं यह विषय हमारे प्रसंग के भीतर नहीं है।

इस भू-भाग का क्षेत्रफल जिसमें चौधरी हरिश्चन्द्र की

लगभग आधी शताब्दी तक कभी पैदल और कभी ऊँट की पीठ पर जागृति का संदेश देने एवं संघर्ष का मन्त्र फूंकने के लिये घूमना पड़ा है। २३,३१५ वर्गमील है। इतने लम्बे चौड़े (१५५×१५५) क्षेत्र में कुल आवादी दस लाख जन-मानस-की थी।

गाँव वहुत ही दूर-दूर तक बिखरे हुए थे। कही-कहीं तो एक गाँव का फासला दूसरे गाँव तक १२–१२ मील तक का था।

इन राठौर राजाओं द्वारा प्रजाहित का यदि कुछ भी काम था तो वह है गंग नहर, जिसे महाराजा श्री गंगासिंह ने सन् १९२७ में निकलवाया। जानबूझ कर और इरादे के साथ अपनी प्रजा और खासतौर से जाटों के लिये वीकानेर के इन शासकों ने कोई काम किया हो, यह वहुत सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर भी नजर नहीं आता।

"एक लख पूत सवा लख नाती" की लोकोक्ति के अनुसार इनका कुनवा वढ़ा भी खूब और उस बढ़े हुए कुनवे को राज्य की देहात वरावर खैरात होती रहीं। ये खैराती पट्टेदार (जागीरदार) के नाम से मशहूर थे। सन् १९४५ में इनकी संख्या एक सौ बत्तीस थी। इस प्रकार भूमि प्रवन्ध के लिहाज से राज्य खालसा और पट्टेदारी दो भागों में विभक्त था।

पट्टेदार अपने इलाकों में मालगुजारी लेने के ही हकदार नही थे उनमें से अनेकों को मजिस्ट्रेटों के अधिकार

भी प्रदान किये हुए थे। जिन्हें अधिकार प्रदान नहीं किये गये थे वे अपनी लाठी का शासन चला रहे थे। पट्टेदारों के अधिकार वाला इलाका ठिकाना कहलाता था। इन ठिकानों में भूमिकर के अलावा कई प्रकार के टैक्स लिये जाते थे। जो 'लागवाग' कहे जाते थे। पैदावार का प्राय तीन चौथाई भाग भूमिकर और लागवाग में ठिकानेदार छीन लेते थे।

यहाँ के लोगों का खानपान का स्टैन्डर्ड कैसा था? इसका परिचय बीकानेर शिक्षा विभाग द्वारा प्रमाणित भूगोल के लेखक डी० के० गुप्ता ने इन शब्दों में दिया है—"यहाँ के लोग फोगला, फोफलिया, खेलरा, काचरी और साँगरी को, जो यहाँ अधिकता से मिलती है, बड़े प्रेम के साथ शाक के स्थान पर काम में लाते हैं।" खेती के साधनों के बारे में यही महाशय लिखते है—यहाँ पर खेती कम होती है यहाँ पर न पानी का ही सुभीता है और न यह ऐसी जगह पर है जहाँ से होकर दूसरी जगह से व्यापार होता हो। यहाँ कुँए बहुत गहरे हैं, इसलिये उनसे सिचाई का काम नहीं लिया जा सकता। उनमें भी बहुत से कुँए खारी पानी के निकलते हैं (यह कुँए तीन सौ चार सौ फीट गहरे होते हैं) ऊँट या बैलों द्वारा इनका पानी (पीने के लिये) निकाला जाता है। यहाँ पर लोग तालाबों का पानी, जो बरसात में जमा हो जाता है पीते हैं।" यहाँ के लोग क्या खाते हैं इस विषय में

यही लेखक महोदय लिखते हैं--"यहाँ के लोग अधिकतर मोठ की दाल और बाजरे की रोटी खाते हैं।"

ऐसी थी माली और रहन सहन की हालत इस राज्य की। फिर भी इस हीन दशा के इन नौ लाख चौतीस हजार सात सौ तिरानवें मनुष्यों से यह राज्य कितना वसूल करता था ? वह बीकानेर राज्य को प्रशासन रिपोर्ट के १९४७-४८ बजटों से इस प्रकार सामने आता है--

सन् १९४७-४८ में तीन करोड़ उन्नीस लाख बाईस हजार आठ सौ इक्यानवें रुपये राज्य की आमदनी का बजट पेश किया गया। इसका अर्थ है कि इन भूखे नंगे लोगों से तीस रुपया प्रति व्यक्ति राज्य लेता था। ठिकानों में उसे पचास साठ रुपये देने पड़ते थे। जबकि उन दिनों प्रति व्यक्ति आमदनी सालाना चालीस रुपया थी। आमदनी से अधिक टैक्स देने के कारण किसान न तो समय पर भू राजस्व ही चुका पाते थे और न अपने लिये वस्त्र भोजन का ही प्रबन्ध कर सकते थे। कर्जे के भार से बराबर दबे रहते थे और इस कर्जे में कमी होती थी लड़कियों की शादियों में वर पक्ष से रुपये लेकर।

किसान का शोषण तो भरपूर किया जाता था किन्तु उसके स्वास्थ्य और पढ़ाने लिखाने के लिये कितना खर्च किया जाता था वह भी देखिये--सन् १९४४-४५ में राज्य भर में २२ मिडिल स्कूल थे। जिनमें १८ सरकारी थे ६ ऐंग्लो हिन्दी प्राइमरी स्कूल ८३ हिन्दी प्राइमरी स्कूल

थे। तहसीली मुकामों में से कुछ पर डिस्पेंसरियाँ थी। गाँवों में इलाज का सरकार की ओर से कोई भी प्रबन्ध न था।

यात्रा के लिये सड़कों का कतई अभाव था। हाँ, एक बहुत ही धीमे चलने वाली रेल अवश्य थी। जो राज्य के बत्तीस बड़े स्थानों के लिये सुविधा उत्पन्न करती थी। यह रेलवे लाइन चोटाला रोड पर पंजाब से और चीलो पर मारवाड़ से बीकानेर को जोड़ती थी। अकाल काटने और मजदूरी करने के लिये यहाँ के किसानो को पंजाब में शरण मिलती थी। एक पैर मे जूती कंधा पर अंगरखी और घुटनो से ऊँची धोती यह थी इस इलाके के किसानों की पोशाक।

चौधरी हरिश्चन्द्र जी नैण का यही इलाका प्रमुख कार्य क्षेत्र था। इसी में उन्होंने आधी शताब्दी तक "उठ, जाग और आगे बढ" का बिगुल बजाया था। और इसी इलाके के गाँव कुन्तलसर तहसील सरदारशहर में भादवा सुदी ११ संवत १६४० में उनका जन्म हुआ था।

वंश, जन्म और बाल काल

चौधरी हरिश्चन्द्र जी ने अपने वंश का परिचय देने और अपने जीवन पर प्रकाश डालने के लिये "मेरी जीवनी के कुछ समाचार", संक्षिप्त जीवनी" और "मेरी जीवन गाथा" नामों से तीन प्रयत्न किये हैं। यह प्रयत्न जिस उत्साह से आरम्भ किये गये हैं उससे पूरे नहीं किये गये। मानों यह काम उन्हें बोझिल सा जँचा। हमें उनका यह अधूरा प्रयास भी बहुत सहारा देने वाला सिद्ध हुआ है उनके लेखानुसार उनका गोत नैण है जो श्री नैणसी (एक पूर्व पुरुष) के नाम पर प्रसिद्ध हुआ है। नैण और उनके पूर्वज क्षत्रियों के उस प्रसिद्ध राजघराने में से थे जो तँवर अथवा तोमर कहलाते थे और जिनका अन्तिम प्रतापी राजा अनंगपाल तँवर था।

बारहवीं शताब्दी के अन्तिम चरण में भारत में भीम सोलंकी, भोज पँवार, जयचन्द राठौर, अनंगपाल तँवर और सोमेश्वर चौहान प्रसिद्ध शासक थे। अनंगपाल की एक पुत्री सोमेश्वर चौहान को और दूसरी जयचन्द को व्याही गई थी। सोमेश्वर का पुत्र प्रतापी पृथ्वीराज चौहान हुआ।

जयचन्द की पुत्री संयोगिता ने पृथ्वीराज को वरा। उससे जयचन्द और पृथ्वीराज में दुश्मनी हो गई। इससे

चौहान और राठौर दोनों ही वंशों के पैर दिल्ली और कन्नौज से उखड़ गये। राठौरों का एक राजकुमार सीहा मारवाड़ में पहुँचा। उसीका परपोता बीकाराव बीकानेर में दाखिल हुआ। चौहान, हाँसी हिसार और कोटा बून्दी की ओर खिसक गये।

तँवर इस संघर्ष से पहले ही देहली को चौहानों के हवाले कर चुके थे। कहा जाता है राजा अनंगपाल निःसन्तान थे। इसलिये उन्होने सोमेश्वर के पुत्र पृथ्वीराज को जो कि उनका दौहित्र था, गोद ले लिया था। तँवरों के लिए किसी कवि ने व्यंग कसा है, जिसमें कहा गया है- "दिल्ल तो ढिल्ली भई, तँवर भये मत हीन"। एक किम्वदन्ती है कि राजा अनंगपाल के किसी पूर्वज ने एक बड़ा यज्ञ किया। उसकी कीर्ति में एक लौह स्तम्भ खड़ा किया गया। पंडितों ने कहा, इस स्तम्भ की नीचे वाली नौक शेप के फन में गड़ गई है। इसी भाँति तँवर वंश का राज्य भी दृढ़ हो गया है। राजा को पंडितों की बात पर विश्वास नहीं हुआ, उसने स्तंभ को उखड़वाकर देखा, उसका नीचे का छोर खून में सना हुआ निकला। राजा पछताया और उसे फिर से गड़वाया, किन्तु वह ढीला रहा तभी से उनकी राजधानी का नाम ढिल्ली हो गया जो कालांतर में डिल्ली और डिलही अथवा देहली कहलाई। किम्वदन्ती सही हो अथवा गलत इसमें सन्देह नहीं कि तँवरों को गलती से उनका बलशाली राज्य तहस नहस हो गया।

हाँसी हिसार की ओर जो तँवर गये थे उनमें से कुछ ने राजपूत संघ में दीक्षा लेली और जो राजपूत संघ में दीक्षित नहीं हुये वे जाट ही रहे। नैणसी और उनके तीन भाई भी जाट ही रहे। ये चार थम्भ (स्तंभ) कहलाते हैं। नैणसी के वंशज नैण, नवलसी के न्यौल, दाडिमसी के दडिया और कुठारसी के कोठारी कहलाये। चौधरी हरिश्चन्द्र जी का कहना है कि मैंने इन तीन गोतों को पाया नहीं। हमने इनमें से न्यौला गोत के जाट खँडेला-वाटी में देखे हैं। वहाँ के लोगों का कहना है कि दिल्ली के तँवरों में से खडगल नाम का एक राजकुमार इधर आया था उसी ने खँडेला बसाया जो पीछे कछवाहों के हाथ चला गया।

नैण गोत के कुछ लोगों ने इन्द्रप्रस्थ से चलकर सरवरपुर बसाया और फिर भिराणी को आबाद किया सरवरपुर जिसे अब सरूरपुर कहते है बागपत तहसील में और भिराणी बीकानेर की तहसील भादरा में है। कुछ समय के पश्चात उन्हें भिराणी भी छोड़ना पड़ा। इसका कारण इस प्रकार बयान किया जाता है कि नैणों का एक युवक बालासर (बीकानेर इलाके) में व्याहा गया था। वह अपनी ससुराल गया। कुछ तरुण स्त्रियों ने मजाक में उसे सोते हुये को चारपाई से कस दिया और पाँवों में रस्सी का फंदा डाल कर रस्सी एक भैसे की पूँछ में बाँध दी और कांटेदार छड़ी से भैसे को बिझका दिया। भैसा

भाग खड़ा हुआ। युवक घिसटता पिसटता मर गया। बहुत दिनो के बाद भिराणी का एक नैण उसी गांव में होकर कहीं जा रहा था तो उस युवक की विधवा ने उसे ताना दिया कि नैण तो सभी मुर्दा है वर्ना अपने लड़के का बदला क्यो छोड़ते। वह नैण वापिस लौट गया और नैणों को बालासर पर चढा लाया। उन्होंने बालासर में भरपेट मारकाट की। जब वे लौट गये तो बालासर के बचे खुचे लोग पड़ौसियों को चढ़ा कर भिराणी पर ले गये। उन्होंने भी भिराणी को तहस-नहस कर दिया। तभी की यह लोकोक्ति मशहूर है---"छिम छिम मेहा बरसा, छीलर छीलर पाणी। नैण नैण उड़ि गये, खाली रह गई भिराणी।" इसी भाँति बालासर की बर्बादी पर एक लोकोक्ति है जो इस प्रकार है---

"महियाँ आवै रिडकदी, लस्सी होगई खट्टी।
शीस न गुँथावदी, बालासर की जट्टी।"

अर्थात् बालासर की जाटनियों ने माँग निकालना बन्द कर दिया। तात्पर्य यह कि वे सभी विधवा हो गईं।

यह घटना चौदहवी शताब्दी की है। बचे खुचे नैण भिराणी को छोड़ कर अनेक स्थानों पर जा बसे। चौधरी हरिश्चन्द्र जी का कहना है कि उनके पूर्वजों में से राजू लधासर, दूला बछरारा, कालू मालपुरा, हुक्मा केऊ और लालू बीझासर में आबाद हुये। इन गाँवों में केऊ तहसील

डूँगरगढ़ (बीकानेर डिवीजन) और बाकी तीनों गाँव रतनगढ़ तहसील (बीकानेर डिवीजन) में है।

चौधरी हरिश्चन्द्र जी ने लिखा है कि मेरे दादा का नाम चैनाराम था जो अपने पिता के एकलौते बेटे थे। चैनाराम जी के छः पुत्र हुये। (१) चेनाराम (२) टोडाराम (३) रामूराम (४) धन्नाराम (५) तेजाराम और (६) सुखाराम। इनमें रामूराम जी के दो पुत्र हुये। श्री हिमताराम और श्री हरिश्चन्द्र। रामूराम जी का जन्म संवत १९०५ वि० में हुआ और तिरेसठ वर्ष की उम्र मे संवत १९६८ में स्वर्गवास हो गया।

चौधरी हरिश्चन्द्र जी के पिताजी ने लालगढ़ में संवत १९६५ अर्थात सन १९०९ में खातेदारी पर जमीन ली थी उस जमीन का और रामनगर वाली, ढिगावाली, मनसावाली, चारजी छोटी जमीन का सन् १९०९ से सन् १९४६ तक राज्य में जो पैसा राजस्व, भेट, निछावर आदि में चौ० हरिश्चन्द्र जी को देना पड़ा उसका व्यौरा उन्होंने इस भाँति प्रस्तुत किया है--

माली रकम नजराना मौरूस खाला रेट आबियाना जोड़
७०६५॥।≈)॥ ९४२५।-)॥ २६०।-) ८३२०) २५०५१॥-)

महाराजाओं और राजकुमारों की भेट तथा न्यौछावरों में उन्हें ३१२६॥=) देने पड़े इस प्रकार उन्हें अट्ठाईस हजार से ऊपर रुपये अदा करने का भार वहन करना पड़ा है।

यह सबको विदित है कि गंगानहर सन् १९२७ में

आई और उससे केवल गंगानगर के आस पास वाले स्थानों की भूमि का सिंचन हुआ। एक एग्रीकलचरिस्ट को जमीन से कितना मोह होता है कि वह लगातार घाटे उठाते हुये भी उसको बचाये रखना चाहता है। यही बात गंगानगर जिले के नये आबादकार लोगों ने अपने एक स्मृति-पत्र में राजस्थान सरकार पर सन् १९५० में प्रकट की थी कि हमने अपने ढोर डंगर और स्त्रियों के कपड़े जेवर बेचकर यहाँ जमीन खरीदी थी और गंगानहर आने तक काफी नुकसान उठाये है। हमारे हकूक पर आँखें मींच कर कुठाराघात न किया जावे।

बीकानेर के राठौड़ राजाओं के जब पाँव जम गये और उन्होंने सम्पूर्ण जांगल भूमि पर अधिकार कर लिया तो उन्हें तीन बातों की सूझी। एक तो यह कि उनका राज्य कैसे सुरक्षित रहे केवल अपने ही बल पर अथवा किसी शक्तिशाली राजा रईस से दोस्ती करके। भारत में मुगल हुकूमत अकबर के समय तक खूब मजबूत होगई थी, एक मेवाड के राजा प्रताप को छोड़ कर सभी राजपूत राजा उसकी शरण में जा चुके थे। बीकानेर के राजाओं ने भी यही किया इस प्रकार बाहरी आक्रान्ताओं से वे निश्चिन्त हो गये। घर में खटका भाटी, जोहिया और जाटों से था। जोहिया और भाटियों से उन्होंने रिश्ते कर लिये अब केवल जाट थे जो लड़ाकू तो अवश्य थे किन्तु वे आपस में ही लड़ने झगड़ने में व्यस्त थे। पांडु गोदारा का और सारणों

का क्या झगड़ा था, एक औरत का जिसे लिखने में भी शर्म आती है। बालासर और भिराणी केवल औरतों के मूर्खाना हँसी मजाक के कारण बर्बाद हो गये। जाटों को दबाये रखने के लिये तीन उपाय बीकानेर के नवागत शासकों ने अमल में लिये—(१) उनके गाँवों के ब्राह्मणों को उदक देकर (२) राजपूत अफसर और अधिकारियों की भरती करके और यथा संभव सभी सरकारी नौकरियों से जाटों को वंचित रख कर (३) कुछ जाटों को चौधरत पटेलगिरी अथवा नम्बरदारी देकर। शेष जाटों पर उन्ही के द्वारा आर्थिक शोषण में सहयोग लिया। राजाओं के जो चार कर्तव्य साम (समझाना) दाम (लोभ देना) दंड (कष्ट देना) भेद (फूट डालना) है उनमें से साम को ताक पर रख दिया गया और तीन ही कामों से उन्हे दबा दिया गया। "जाकी धन धरती हरे, ताहि न लेवै संग। जो संग राखे ही बने तो करि राखे अपंग।" इस नीति वाक्य का बीकानेर के शासकों ने बीका से लेकर महाराजा डूँगरसिंह तक सोलह आने और महाराजा गंगासिंह तक पन्द्रह आने पालन किया।

ऐसी स्थितियों में कुछ ऐसे जाट भी थे जो पत्थर तले की अंगुली निकालने में चतुर थे। ऐसे लोगों में चौधरी रामूराम जी भी थे। वे अन्य जाटों की भाँति अशिक्षित नही थे। रतनगढ़ में उन्होंने एक साधु मोतीनाथ जी से शिक्षा प्राप्त की थी। रतनगढ़ का पहला नाम कोहलासर

था जोकि कुम्हारों की वस्ती होने के कारण मशहूर हुआ। मिहाग जाटो का जब यहाँ से स्वामित्व समाप्त हो गया तो गठौर नरेश सूरतसिंह जी ने अपने पुत्र के नाम पर रतनगढ़ रक्खा। इन राजाओं ने इसी भांति अनेक पुराने नाम वदल कर अपने पुरुपाओं और वणजों के नाम पर रख दिये। भटनेर जैसे इतिहास प्रसिद्ध नगर का नाम वदल कर हनुमान गढ और रामनगर का गंगानगर बना दिया।

चतुर रामूराम के एक पूर्वज भारुराम ने महाराजा करणसिंह का जिस समय देहली के मुगल दरवार की हाजिरी से वापिस लौट रहे थे वछराले में शानदार स्वागत किया। रुपयो का चौक पुराया गया, जिस पर वैठाकर महाराजा को भोजन कराये गये, उनके साथियों समेत। महाराज ने प्रसन्न होकर भारुराम की पुत्री को छः हजार वीघा जमीन का पट्टा दे दिया। इसी के आधार पर सन् १६३६ ई० में रतनगढ की अदालत में वछराला के ठाकुर सगतसिंह जी ने कहा था, चौधरी हरिश्चन्द्र जी के पुरुपा मेरे पुरुपों से भी कई पीढ़ी पहले से वछराला में आवाद हैं। इनके पुरुपों के नाम पर हमारे गाँव वछराला में कई जोहड़ है। जिनमें भारवाणा, नानगाणा, लालाणा अधिक मशहूर हैं। यह जमीन अव हमारे पास है जो पूरांवाली जमीन कही जाती है।

कहना नहीं होगा कि करणसिंह जी के वाद के राजाओं ने इस जमीन को जब्त कर लिया और संवत १८१७ में सगतसिंह जी राजपूत के पुरुपों को दे दिया। चौधरी

रामूराम ने यह किस्से सुने थे इसलिये उसने पहले शिक्षा प्राप्त की और अपने लड़कों को भी पढ़ाने बिठा दिया। लालगढ़ में कुछ जमीन भी ली। हिमताराम जी की तबियत तो पढ़ने में नहीं लगी किन्तु हरिश्चन्द जी ने न केवल ग्राम की पढाई समाप्त की अपितु खिवाली जाकर हिन्दी के साथ अंग्रेजी और उर्दू की भी शिक्षा प्राप्त की। चौधरी हरिश्चन्द जी हिन्दी से अधिक उर्दू जानते हैं और उर्दू में बहुत ही सही और साफ लिखते हैं। फारसी के अनेकों शैर वे बातचीत के दौरान कहावतों के तौर पर प्रयुक्त करते है। चौधरी हरिश्चन्द जी जिस जमाने पैदा हुये थे उस समय अदालतों में उर्दू का ही प्रचलन था और फारसी पढ़े लिखे लोग विद्वान समझे जाते थे। जाट एक तो स्वभावतः स्वदेशाभिमानी है उसे स्वदेशी भाषा, स्वदेशी वेश भूषा कही अधिक पसन्द हैं विदेशी भाषा और वेश भूषा की अपेक्षा फिर यदि जाट आर्य समाज का सदस्य बन जाय तो वह भरसक भारतीयता पर ही आरूढ़ रहेगा इसी दृष्टि से चौधरी हरिश्चन्द्र जी ने पंजाब में शिक्षा प्राप्त करते हुए भी इख्तियारी मजमून संस्कृत लेकर हिन्दी को नहीं भुलाया और उम्र भर उन्होंने हिन्दी के लिये प्रयत्न किया है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति के वे बरसों सदस्य रहे हैं और जिन्दगी भर उन्होंने हिन्दी पुस्तकों का ही पठन और संग्रह किया है।

चौधरी रामूराम जी ने महाराजा खड़गसिंह जी से

तहसील लूनकरनसर के गाँव शेरपुरा में जमीन पट्टे पर ली। और १९३३ वि० में वहां छीला नामक गाँव बसाया एक कुँआ भी बनवाया। महाराजा जसवन्तसिंह के रुई के अंगरखे मे आग लग गई जिससे वे जल कर मर गये। इसके बाद रामूराम जी ने उस गाँव को छोड़ दिया।

अपने हाथ से लिखी जीवनी में चौधरी हरिश्चन्द्र जी ने अपने पिता जी द्वारा जमीन छोड़ने की घटना पर कौतूहल पूर्ण प्रकाश डाला है। महाराजा खड्गसिंह की एक पासवान थी चूरू की निवासिनी चम्पा बनियाणी। बुढ़ापे में यह चम्पा दादी के नाम से मशहूर थी। इसी ने महाराजा डूँगरसिंह के हमारे पिताजी के खिलाफ कान भरे उन्होंने गिरफ्तारी का हुक्म दे दिया और पकड़वा कर किले में बन्द कर दिया, किन्तु पिताजी अपनी चतुराई से किले में से भाग आये, हमें शेरपुरा से रातों रात लेकर चल दिये। गंधेली के पास सरदारपुरा में जाकर निवास किया।

चौधरी हरिश्चन्द्र जी अपने पिता जी के स्वास्थ्य और पठन पाठन के सम्बन्ध में लिखते हैं--"मेरे पिता जी अपने बाप के छः बेटों में से सबसे अधिक लाड़ले थे। आजकल के लोग इसे आश्चर्य मानेंगे कि संवत् १९१७ से १९२५ तक के अकाल के दिनों में सात सेर घी नित हमारे घर में खाया जाता था। पिता जी तो दूध घी पर ही

अधिक निर्भर रहते थे। अन्न बहुत ही कम लेते थे। उनकी इन खुराकों का नतीजा यह था कि जब वे साठ वर्ष के थे तब भी हम दोनों भाइयों से अधिक बोझा उठा लेते थे। हम दोनों का बोझ उनके अकेले के बराबर होता था। जैसा कि मैने पहले लिखा है, उनकी शिक्षा बाबा मोतीनाथ जी के पास रतनगढ़ में हुई थी, बाबा मोतीनाथ जी का जन्म राजपूत घराने में हुआ था। रतनगढ़ में अब भी 'बाबा मोतीनाथ की बगीची' उनका स्मरण कराती है। उस समय की शिक्षा में धार्मिक ग्रन्थों का पठन पाठन और व्यवहारिक हिसाब किताब की जानकारी भी शामिल थे। मेरे पिताजी हिसाब किताब में बहुत चतुर थे। धार्मिक ग्रन्थों में वे गीता और शिवसहस्त्रनाम का पाठ नित्य करते थे। उच्चारण उनका शुद्ध और ध्वनि अत्यन्त मधुर थी। उस मीठी ध्वनि की याद मुझे अब तक आती रहती है। शरीर से पुष्ठ और कद के तगड़े थे। शरीर से वे जितने तगड़े थे मन और आत्मा भी उनके उतने ही तगड़े थे। हमें ऐसा लगता है कि वे चिन्ता और भय से मुक्त थे। बीहड़ जंगलों में वे रात के समय भी जाने और सफ़र करने से नहीं हिचकते थे। उनके साहस और पौरुष की अनेक कहानियाँ है, जिनमें से अनेक से हम परिचित थे और अनेकों को वे हमें समय समय पर सुनाया करते थे। उनके जीवन से मैंने जो सबक लिये उनमें कठिन परिश्रम एक है। जिन्दगी भर मैंने जो श्रम किया है

उसकी बदौलत अस्सी वर्ष की आयु होने पर आज भी मुझमें चलने फिरने और छोटे मोटे काम करने का दम है"।

चौधरी रामूराम जी का आरंभिक जीवन आनन्द से कटा था क्योंकि उनके पिता जी उन्हें बहुत प्यार करते थे। पूर्णयुवा होने पर शेष भाइयों को यह अखरने लगा कि उनका एक भाई ठाली रहे अतः आपस में कुछ कहा सुनी होने लगी। इसलिये वे बीकानेर जाकर रिसाले में नौकर हो गये। उनके पिताजी को इससे दुःख हुआ और उन्होंने बीकानेर की वह नौकरी रामूरामजी से छुड़ा दी। लेकिन घर करते भी क्या? बछराला में जमीन थोड़ी ही रह गई थी, जिस पर शेष भाइयों की ही पूर नहीं पड़ रही थी। इसलिये कुछ दिन के बाद घर से निकल पड़े और राणासर के पंवार ठाकुर गुलाबसिहजी से जिनके कि साथ रा॰मू॰रा॰ जी के अच्छे सम्बन्ध थे राणासर और सरदारपुरा मे जमीन ली। संवत १९२५ से सं० १९३१ तक बीकानेर में पैदावार बहुत ही हलकी हुई थीं किन्तु संवत १९३२ में अच्छी फसल हुई। जिसे उनके पिताजी ने संवत १९३३ में फिर कहत होजाने के कारण कर्जे पर बांट दिया।

छोटी भाभी के व्यंग बाणों से आहत होकर आप न्यारे हो गये। उनके पिताजी नहीं चाहते थे इसलिये उन्होंने सिर्फ २००) देकर न्यारा कर दिया। न्यारे होकर उन्होंने जैसा कि हम पहले लिख चुके हैं शेरपुरा की जमीन चौथर पर ली। साथ ही संवत १९४० तक निज की खेती से

भी खूब अन्न उपजाया, रामूरामजी की लोकप्रियता जाटों में बढ़ने लगी। इससे प्रभावित होकर जैतपुर के ठाकुर बीझराजसिंह और धांदू के ठाकुर खुमाणसिंह ने इनको पगड़ी पलट दोस्त बनाया। संवत १९३७ में श्री० हिमतारामजी का जन्म यहीं शेरपुरा में हुआ। तब ठाकुर लक्ष्मणसिंहजी ने शेरपुरा में हंसली कड़े हिमतारामजी के पहनने को चढ़ाये।

चौधरी रामूरामजी जब बीकानेर जाते थे तो महाराज खड़गसिंहजी की पासवान चम्पा बणियाणी से जरूर मिलते। वह इन्हें बड़े प्रेम से खिलाती पिलाती। राजवी जवानीसिंह मन में रामूरामजी से खटक रखते थे। उन्होंने मौका पाकर चम्पा पासवान के कान भरे कि यह चौधरी तुम्हारी निन्दा करता रहता है। चम्पा दबंग तो थी किन्तु व्यवहार कुशल न थी उसने बिना छानबीन किये महाराज डूंगरसिंह को भड़का दिया, रामूरामजी पकड़कर जूनागढ़ के किले में बन्द कर दिये गये।

शेखावाटी में लोटिया के गीत गाये जाते हैं इसलिये कि वह आगरे के किले में से कूदकर भाग आया था। चौधरी रामूराम ने भी ऐसा साहस का काम किया, वे जूनागढ़ के किले में से दीवार फांदकर भाग आये और रातों रात शेरपुरा पहुँचे। वहां से बाल बच्चों को लेकर चल दिये और शेरपुरा को अपनी उम्र भर के लिये नमस्कार करके गंधेली के पास सरदारपुरा में आगये। उस समय चौ० हरिश्चन्द्रजी

सिर्फ ढाई महीने के थे। कुछ दिन सरदारपुरा में रहकर पंजाब की सिरसा तहसील के खारिया गांव को उन्होंने अपना स्थायी निवास बनाया।

नेकी और बदी की कहानी साथ साथ चलती है। बछराला को नैणों ने बसाया, बीकानेरी राजा करनसिंह से छः हजार बीघे जमीन उस आव भगत के बदले में प्राप्त की जो उन्होंने देहली से लौटते हुये बछराले में राजा करणसिंह की गोठ की थी। यह जमीन उनके पास रहनी तो सदा सर्वदा चाहिये थी किन्तु करणसिंह के बाद राठौर नरेशों ने इस जमीन को किशनसिंहोत बीका को पट्टे पर दे दिया। ये पट्टेदार भोगता अर्थात निम्न श्रेणी के जागीरदार कहलाते थे। आरंभ में यह लोग तंग हालत के थे इसलिये नैण चौधरी हीराराम जी से कर्ज लेते रहे। ठाकुर उमेदसिंह रुघ जी की कर्जे लेने की लिखत चौधरी हरिश्चन्द्र जी के पास अब तक सुरक्षित हैं। कर्जा तो नैण इन भोगतों को देते ही रहे किन्तु अन्य मुसीबतों में भी इनका साथ दिया, एक साल जब ठाकुर सगतसिंह को पट्टे की रकम चुकता न करने के कारण हवालात में दे दिया गया तो टोडारामजी नैण उसे अपनी जिम्मेदारी पर छुड़ाकर लाये। इन सब अहसानों को सगतसिंह व उसके बेटे दोनों भूल गये और टोडाराम के पोतों को दुख देने लगे।

खैर चौ० रामूरामजी अपने पौरुष से ही मुक्त हो गये

और बछरारे और शेरपुरा को भी छोड़ आये। खारिया जहां वे आवाद हुये उसमें पहले से एक नैण सरदार रहते थे जो उस परगने के जेलदार भी थे। उन्होंने रामूरामजी को खारिया में बड़े प्रेम से स्थान दिया।

चौधरी हरिश्चन्द्रजी लिखते हैं कि "पिताजी हम दोनों भाइयों और तीनों बहिनो पर अत्यन्त स्नेह करते थे। खारिया में रहकर उन्होंने अपने कठिन परिश्रम से शीघ्रही अपनी आर्थिक स्थिति को सुधार लिया। दूध, घी के बगैर तो वे रह ही नही सकते थे इसलिये बैल और ऊंटों के अलावा उन्होंने गाय और भेंस भी खरीद ली। हमारी माताजी भी खूब श्रम करती थीं। वास्तव में किसान का धंधा ही ऐसा है जिसमें सभी कमाते है और घर में कितने ही आदमी हों थोड़े ही पड़ते है किन्तु हम दोनों भाई जब सयाने हुये तो उन्होंने हम से खेती करने व पशु पालन का काम नही लिया अपितु पढ़ाने के लिये बिठा दिया। भाई हिमताराम जी तो थोड़े ही दिन पढ़े उनके दिल ने उचाट ली और पिताजी के बहुत समझाने पर भी नहीं पढ़े किन्तु मैं पढ़ता ही रहा और लगातार बारह साल तक पढ़ा।"

"इसमें सन्देह नहीं कि चोधरी रामूराम निरे हट्टे कट्टे ही नहीं थे। समझदार भी काफी थे उनके बल और बुद्धि से लोग प्रभावित होते थे। खारिया गांव में तो उनका पूरा प्रभाव हो गया था। अतिथि सत्कार में भी वे खारिया

में अग्रणी होगये थे जान अनजान सभी लोग उनके यहाँ पहुंचते सबको भोजन और निवास का प्रबंध प्राप्त होता। जो आदमी दूसरों को खिलाने पिलाने में उदार हो, वह अपनी सन्तान को सुख देने में क्यों न अग्रणी होगा लड़कों की तरही वे लड़कियों को भी अच्छा खिलाते पिलाते थे उनकी शादियां भी अच्छे घरों में कीं और समय समय पर रिवाजों की पूर्ति भी वे दिल खोल कर अन्न वस्त्र देकर करते रहे। संतान के सिवा अपने अन्य सगे सम्बंधियों को भी उन्होंने सदा सहायता और सेवा सुश्रूषा की"।

उन दिनों मृतक भोजों में खूब अपव्यय किया जाता था। उनके पिता ने यद्यपि अपने जीवन में ही अपना मृतक भोज इस आशका से कर दिया था परन्तु जब रामूरामजी के पिताजी का देहान्त हुआ तो उनकी आत्मा की प्रसन्नता के लिये उन्होंने भी उनका मृतक भोज पूरे उत्साह से किया इसी भांति अपनी माताजी का भी किया किन्तु स्वयं जब उनका समय मरने का आया तो अपने लड़कों को बुलाकर कहा, ये मृतक भोज व्यर्थ हैं। सदियों से इस प्रकार के संस्कार लोगों के पड़ गये हैं कि मृतकों की आत्मा इन भोजों में खाने आती है तथा देखती है। मेरे पिताजी का यही विश्वास था किन्तु मेरा ऐसा विश्वास नहीं है, जब मैं मरजाऊं तो मेरे लिये मृतक भोज कतई न करना। यदि तुम लोग मेरे से वायदा करोगे तो मेरी आत्मा को आनन्द प्राप्त होगा। इन वातों को सुनकर

उनके छोटे लड़के हरिश्चन्द्र की आंखों में आंसू आगये। धीरज बंधाते हुये उन्होंने कहा था, मैंने करके देख लिया है उसी अनुभव के आधार तुम्हे नसीहत देता हूं कि इस गलत काम को करके मेरी अथवा अपनी कमाई को व्यर्थ ही वर्बाद न करना।

मृतक भोजों के बारे में जो उनका अनुभव था उसके आधार पर ही उन्होंने अपने पुत्रों को मृतक भोज का निषेध किया था, इसी भाँति वे बालविवाहों के भी विरोधी थे। दोनों लडको की उम् २२, १९ होगई तब तक उन्होने उनकी शादी नहीं की उनको चौधरिन उनसे कहा करती थी। "काढ़े कढ़ारा देवें उधारा, जांका जाया फिरें कुआंरा। अर्थात जिनको उधार भी न मिलता हो उनके लड़के कुआंरे फिरें तो ठीक भी है किन्तु जो भूखा नहीं मरता है दूसरों को देता लेता भी है उसके बच्चे तो कुंवारे न फिरने चाहिये, वे यह भी कहतीं सिर्फ दो लड़के हैं वे भी कुंआरे फिरते हैं, चक्की मेरे से जिन्दगी भर बंधी रहेगी किन्तु उन्होंने बच्चों की शादी सब कुछ सुनते हुये भी बचपन में नहीं की। इस प्रकार वे उस समय के रुढि ग्रस्त समाज के सदस्य होते हुये भी समाज सुधारक थे।

चौधरी हरिश्चन्द्रजी ने अपने पिताकी भांति ही माता जी के स्नेह का भी बड़े कृतज्ञतापूर्ण शब्दों में गुणगान किया है। उनकी माताजी का नाम मृगावती देवी था जो चौधरी तेजाराम जी जाखड़ निवासी भोगराणा तहसील

नौहर की पुत्री थी । वे कहते हैं "हम पर हमारी माता जी का भी पूर्ण स्नेह था । उनके स्नेह का एक उदाहरण देता हूं । जब मैं सिरसा में पढ़ता था तो मेरी मां मुझे देखने के लिये हर दसवें बारहवें दिन सिरसा पहुंचती थी। खारिया से सिरसा १२ मील की दूरी पर है। उन दिनों मोटर और तांगों का अभाव था उन्हे पैदल ही चलना पड़ता था बीच में घग्घर नदी को नौका द्वारा पार करना पड़ता सो भी खाली हाथ नहीं सिर पर आटा और हाथ में घी का डिब्बा होता था। हम से इतना प्रेम था उनका किन्तु जब पिताजी मर गये तो वे पतिवियोग के भारी दुख को न सह सकी और केवल नौ महीने ही जी सकीं। पिताजी का स्वर्गवास वैसाख संवत १९६८ वि० में हुआ था और वे माघ महीने में स्वर्ग सिधार गईं। यद्यपि पिताजी मृतक भोज की मना कर गये थे किन्तु उस समय मातृ-पितृ भक्ति का परिचय देने का आधार ही नुकता कारज अथवा मृत्यु भोज बना हुआ था। इसलिये हमने भी लोगों को यह बताने के लिये कि हम अपने माता पिता के श्राद्ध को उतना ही अच्छा कर रहे है जितने कि अच्छे वे थे। दोनों के नुकते में छब छब मन कनक का हलवा किया और खारिया तथा बाहर बहुत से लोगों को खिलाया इस प्रकार हमने माता पिता से उऋण होने के लिये तीन हजार रुपया बर्बाद कर दिया। आगे चलकर जब मुझे बोध हुआ तो मैं पछताया भी खूब और यह कह

हृदय को धीरज दे लिया कि यह फिजूल खर्ची रुढियों में ग्रस्त मानसिक दुर्बलता के कारण हुई है। और यह भी पता नहीं कि यह मानमिक दुर्वलता आजीवन भी बनी रह सकती थी अगर मैं आर्य समाज मे दीक्षित न हुआ होता"।

वास्तव में ऋषि दयानंद और उनकी आर्य समाज ने कितने ही लाख मनुष्यो को मानसिक दुर्बलता से बचाया है और उनके दिल और दिमाग को प्रकाश दिया है तथा कुरीतिग्रस्त समाज से संघर्ष करने का बल और साहस प्रदान किया है। लेकिन यह भी मानना पड़ेगा कि दीपक से वही दीपक प्रकाशित होता है जिसमें तेल बत्ती हैं यदि शुष्क दीपक में जलते दीपक से प्रकाश कराया जायगा तो नहीं हो सकेगा यही बात मनुष्यों की है वही व्यक्ति प्रकाश स्तंभ महापुरुषों से प्रकाशित होते है जिनमें निजका समझने और अच्छी बातों को धारण करने का माद्दा होता है। चौधरी हरिश्चन्द्रजी में ये माद्दे थे इसलिये वे आर्य समाज के प्रकाश से प्रकाशित हो सके और रूढियों से ग्रस्त समाज से संघर्ष लेने को उद्यत हो गये।

चौधरी हरिश्चन्द्रजी ने सुनाया कि उन्होंने अपने पिताजी से जो अनेकों बातें सीखी उनमें एक यह भी है कि "अपने पड़ौसी तथा गांव वाले से लड़ो मत। कुछ नुकसान उठा कर भी मत लड़ो," खारिया गांव के धन्ना व तिलोका नैण ने उनके पिता चौधरी रामूरामजी से तीन सौ रुपया इस वायदे पर लिये कि हम इस रुपये से जमीन खरीद

रहे हैं उसमें तुम्हें भी सांझी कर लेंगे किन्तु उन्होंने जमीन खरीदने पर रामूरामजी को सांझी नहीं किया और रुपये भी तीन साल के बाद सो भी बिना व्याज के लौटाये, तब चौधरी रामूरामजी ने उनसे कहा, तुम खुश रहो। हालांकि उनका इतना दबदबा गांव में था कि वे सख्ती से उनके सांझी भी हो सकते थे और रुपया भी तुरन्त उगलवा सकते थे किन्तु यही सोचकर रह गये कि यह भी तो अपने ही भाई बन्धु हैं इनका भला हो इनका ही सही। चौधरी हरिश्चन्द्र जी कहते है कि पिताजी के इन उदार भावों का मुझ पर यह असर हुआ कि मैने अपने भाई से कभी भी झगड़ा नहीं किया और न मेरा किन्ही दूसरों से कोई झगड़ा हुआ। पड़ौसियों से मैं इतना ही सम्पर्क रखता हूँ कि तन, मन से जो भी सेवा मुझ से हो जाय कर देनी। उनके घरेलू जीवन में न तो मैं दिलचस्पी लेता हूं और न अपने घरेलू जीवन में पड़ौसियो की दस्तन्दाजी मुझे पसन्द है। इसका फल यह हुआ है कि पड़ौसियों से झगड़ा करने या झगड़ा पैदा होने का अवसर ही कभी नहीं आया" चौधरी हरिश्चन्द्रजी कहते हैं कि पिताजी हमारे लिये चल अथवा अचल ऐसी कोई सम्पत्ति तो नहीं छोड़ गये जिस पर हम बिना कमाये गुलछर्रे उड़ाते रहते किन्तु हमें किसी के कर्जों में दबा हुआ भी छोड़ कर नहीं गये। अनाप शनाप पैदा करना सहज है किन्तु उसकी रक्षा के लिये संयम और समझदारी चाहिये। हमारे पिताजी हमें समझदारी

और संयम दोनों ही देकर गये। सबसे बड़ी सम्पत्ति वे हमें उच्च चरित्र की देकर गये। यह परमात्मा का धन्यवाद ही है कि हम दोनों भाइयों में किसी भी व्यसन ने अपनी नींव नहीं जमाई। सूझ बूझ के साथ कठोर परिश्रम की जो शिक्षा हमें अपने पिताजी से मिली थी उससे हमारा वर्तमान और भविष्य दोनों ही उज्वल और उत्तरोत्तर आशाप्रद रहे हैं। वे कहते है कि वफादारी और ईश्वर भक्ति हमारे यहां के सभी पारवारिक जनों में थी। यह जो थोड़ा बहुत मै ईश्वर स्मरण करता हूं यह मेरे लिये पैतृक दैन है"।

चौधरी हरिश्चन्द्रजी का यों तो सारा ही जीवन उतार चढ़ाव और निरालेपन से भरा हुआ है किन्तु उनके जन्म की कहानी भी कम दिलचस्प नहीं। उनके पिताजी अपने आरंभिक जीवन में शेरपुरा में रहते थे जो कि लूनकरनसर तहसील में है। यह तो हम पहले ही लिख चुके है। उनकी पत्नी शेरपुरा से अपने बड़े लड़के हिमतारामजी के झडूले को उतरवाने के लिये मालासी तहसील सुजानगढ़ को गईं। समस्त हिन्दुओं में बालकों का मुंडनसंस्कार किसी तीर्थस्थल अथवा देवता की स्थली पर होता है। मालासी भी एक ऐसा ही स्थल था जहां दूर दूर की स्त्रियां अपने बच्चों का मुंडन संस्कार कराने आती थीं राजस्थान की साधारण बोलचाल में मुंडन संस्कार का नाम जुडेल अथवा झडूलिया उतरवाना कहते हैं। रामू-

रामजी की पत्नी भी मालासी गईं । वहां से वे वापिस आ रही थीं तो उन्हें अपने जेठ चौधरी चतुराजी के गांव कुतलसर की याद आई जो सरदार शहर के उत्तर में १६ मील पर है । वे वहां पहुँचीं । ईश्वर की मर्जी की बात कि वहीं पर उनके दूसरे बेटे हरिश्चन्द्र जी का जन्म होगया । जांगल देश में उन दिनों ऐसा रिवाज था कि प्रसूती स्त्रियां दो तीन महीने तक घर से बाहर नहीं निकलती थीं और खुराक अच्छी खाती थीं उन दिनों ढाई महीने का तारा शुक्र अस्त था, इन दिनों स्त्री घर से बाहर नहीं जाती किन्तु रामूरामजी की पत्नी वहां बीस दिन भी न ठहर पाई क्योंकि उन्हें अपनी जिठानी का व्यवहार कुछ कड़वा सा प्रतीत हुआ । वे वहां से चल दीं । मार्ग में उन्हें महाराज डूंगरसिंह के वे सैनिक मिले जो महाजन के ठाकुर साहब को उनकी उदंडता का दंड देकर लौट रहे थे । ऊंट पर रामूरामजी की चौधरिन सवार थीं । अब सवाल यह पैदा हुआ कि ऊंट को चौधरिन रास्ते से अलग करें और सैनिकों को निकल जाने दे अथवा सैनिक चौधरिन के ऊंट को पहले निकल जाने दें । जब सैनिकों को मालुम हुआ कि यह चौधरिन चौधरी रामूराम की पत्नी है तो उन्होंने ही रास्ता दे दिया और चौधरिन का ऊंट निकल गया । उन दिनों चौधरी रामूराम का उस इलाके में नाम पुजता था क्योंकि महाराज डूंगरसिंहजी उनका मान करते थे । पड़ौस के बड़े २ ठाकुर उससे पगड़ी बदल चुके थे और

महाराज खड़गसिंह की पासवान चम्पा बनियाणी की उन पर महरवानी थी। प्रत्यक्ष में तो यह चौधरी रामूरामजी का प्रताप था और अप्रत्यक्ष में उस शिशु का था जिसके वड़े होने पर सहस्त्रों लोग उसका आदर करेंगे और चौधरी हरिश्चन्द्र के नाम से जो न केवल जांगल देश में ही अपितु सम्पूर्ण राजस्थान और कुछ अंशों में पंजाव, देहली और उत्तर प्रदेश तक रोशन होगा।

चौधरी हरिश्चन्द्र जी की शिक्षा

उन दिनों तक शिक्षा का प्रसार नहीं हुआ था। तहसीली मुकामों पर स्कूल थे। गांवों और छोटे कस्बों में निजी पाठशालाये चलती थीं। खारिया गांव में भादरा के एक पंडित आते थे। नाम उनका रामनाथ था। सात आठ महीने पढ़ा कर दो तीन महीने के लिये वे अपने घर भादरा चले जाते थे।

इन्हीं रामनाथजी के पास चौधरी रामूरामजी के लड़कों ने पढ़ना आरंभ किया। स्कूल जाने का शौक बालक हरिश्चन्द्र को कैसे लगा इसकी भी एक कहानी है। पं० रामनाथ जी ने अपनी पाठशाला के लिये गांव वालों से कच्ची ईंटे तैयार कराईं। उन्हें ढोने का काम उनके शिष्य करते थे। बालक हरिश्चन्द्र भी खेलता हुआ वहां पहुंच गया। पंडित रामनाथ के शिष्यों ने हरिश्चन्द्र से कहा, तुम भी ईंट ढोलो तुम्हें हम एक ईंट की ढुलाई में दो कौड़ी देंगे। जिस भांति आज सब से छोटा सिक्का नया पैसा है उसी भांति उन दिनों सब से छोटा सिक्का कौड़ी होता था। चार कौड़ी का एक दमड़ी और दो दमड़ी का एक अधेला दो अधेलों का एक पैसा होता था। नमक मिर्च खरीदने के लिये कौड़ियाँ भी प्रयुक्त हो जाती थीं। कौड़ियां

खेल के काम भी आती थीं। वड़ी कौड़ियों से चौसर वड़ी उम्र के लोग खेलते थे। वच्चे छोटी कौड़ियों से मन वहलाते थे। इसलिये वालक हरिश्चन्द्र ईंट ढोने को तयार हो गया। पं० रामनाथ ने उसके सिर पर प्रेम से हाथ फेरा और खाने को पीपल के पत्ते में रखकर खांड दी। वस यहीं से वालक हरिश्चन्द्र को पढ़ने का शौक लगा और वह लगातार स्कूल जाता रहा।

पं० रामनाथ से वालक हरिश्चन्द्र ने पढ़ने का श्री गणेश किया और फिर वद्रीप्रसाद जी से जिन्होंने रेवाड़ी तहसील के सीहा गोठड़ा गाव से आकर खारिया में पाठशाला आरंभ की थी और वारहो महीनें पाठशाला में रहते थे। वारा-खड़ी (द्वादशाक्षरी) गिनती. पहाड़े, जोड़, वाकी, गुणा, भाग सीखे। और जिन्सों की कीमतें निकालने के गुर भी कंठस्थ किये थे। उन दिनों कंठस्थ करने का वड़ा रिवाज था। धार्मिक ग्रन्थों में विष्णुसहस्त्रनाम शिवमहिम्न, गंगालहरी आदित्यहृदय और गीता का पढ़ना सीखा। संवत १९४९ तक यह सब बातें वालक हरिश्चन्द्र ने सीखलीं।

इस पढ़ाई के वीच पंडितजी ने एक दिन बालक हरिश्चन्द्र की पिटाई करदी। इसकी शिकायत उसने अपनी मां से की तो मां ने कहा मत जाया कर किन्तु पिताजी ने कहा, विद्या पिटने से ही आती है। उसी दिन वालक हरिश्चन्द्र जंगल में जाकर छिप गया किन्तु पिताजी ने उसके पैरों के चिह्नों पर चलकर उसे ढूँढ लिया और हम लगते

पर छोड़ दिया कि पढ़ने में नागा नहीं करूंगा। इसके बाद सचमुच ही बालक हरिश्चन्द्र ने पढ़ने में नागा नहीं की। कौन जानता था कि आज उसका पिता जिसे शिक्षा दिलाने के लिये उसके पद चिन्हों को ढूंढता है भविष्य में हजारों युवक उसके पदचिन्हों पर चलकर पढ़ाई के क्षेत्र में उतरेंगे।

गांव की हिन्दी की पढाई समाप्त करके बालक हरिश्चन्द्र अपने गुरुजी के गांव सीहा गोठड़ा उर्दू पढ़ने गया जहां उसने कुछ दिन आनन्द से विताये। वहां से गुरुजी के साथ ही लौट आया और पढ़ना लिखना बन्द हो गया। चौधरी रामूराम जी की भी समझ में नहीं आ रहा था कि अब बालक हरिश्चन्द्र को कहां पढ़ावे क्योंकि आसपास कहीं आगे की पढ़ाई का स्कूल न था।

संवत १९५१ में चौधरी रामूराम जी ने अपनी दो लड़कियों की शादी की। बारात गुसाईंसर तहसील डूंगरगढ़ से आई। संवत १९५०। ५१ में फसल बहुत अच्छी हुई थी। इससे ये शादियां शानदार तरीके से ही हो गईं।

इनका शेष कुटुम्ब बछरारा में ही था। बछरारा में जब अपनी दादी के मौसर में बालक हरिश्चन्द गया तो अपने ८० वर्ष के हृष्ट पुष्ट दादा को देखकर बहुत खुश हुआ। चौधरी साहब ने लिखा है कि "इसी साल (सं० १९४९) बागड़ मैंने पहले पहल देखा। मुझे बड़ा आनन्द हुआ। होली भी बछरारा की देखी खूब राख उड़ाई।"

इसके बाद श्रावण सं० १९५१ में बालक हरिश्चन्द्र

उर्दू पढ़ने के लिये खेवाली गया। उन दिनों उर्दू पढ़े लिखे विना नौकरियां नही मिलती थी और जमाना ऐसा था कि उर्दू मिडिल पास आदमी तहसीलदार तक वन जाता था। यह ईस्वी सन् १८९४ था। खेवाली गाँव खारिया के उत्तर पूर्व कोण में ७ कोस था। यहाँ पर नैणों की एक लड़की व्याही गई थी पति का नाम डालू और गोत खेरवा था। रिश्ते में वह बालक हरिश्चन्द्र का फूफा लगता था। नैण गोत की फूफी तो मर चुकी थी। भाभू गोत की फूफा जी के घर थी। जाटों और आम तौर से सभी हिन्दुओं में दूसरी स्त्री से वही नाता उस गोत के लोग वरतते हैं जो अपने गोतवाली से बरतते है इसलिये बालक हरिश्चन्द्र भाभू गोत वाली को बुआ अथवा फूफी ही कहता था। उसी फूफी के घर डेरा डाले और खेवाली के स्कूल में जिसमें कि मुंशी रामजीदासजी तहसील हाँसी ववानीखेड़ा निवासी मास्टर थे दाखिल हो गया। यहाँ आठ महीने वालक हरिश्चन्द्र ने दो कक्षायें पास कीं। इसके वाद दूसरे अध्यापक श्री रघुवरदयाल जी आ गये। बीच में वालक हरिश्चन्द्र-भाग भी गया किन्तु उनके भाई हिमताराम ने ढूंढ़ लिया और फिर खेवाली पढ़ने लगा। यहां पर पाँच दर्जे पास कर लिये। संवत १९५५ तदनुसार सन् १८९८ में सिरसा के ऐंग्लो माध्यमिक स्कूल में भर्ती हुआ पाँचवां दर्जा अच्छे नम्बरों से पास करने के कारण दो रुपया मासिक सरकार की ओर से छात्र वृत्ति भी हो गई। यहीं से हरिश्चन्द्र ने

अँग्रेजी उर्दू में मिडल पास किया, उन दिनों इस स्कूल में जमीदारों पर आधी फीस लगती थी किन्तु श्री जयचन्द्र मुकरजी ने जो कि यहाँ हेडमास्टर थे वह फीस चतुर बालक समझकर माफ कर दी। छात्र वृत्ति दो रुपया मासिक बराबर मिलती रही। हरिश्चन्द्र ने जिला हिसार के मिडिल स्कूल के छात्रों में आठवीं क्लास में सबसे अधिक नम्बर प्राप्त किये और जिले भर में फर्स्ट रहा।

चौधरी जी ने अपने इस शिक्षा काल के सम्बन्ध में लिखा है कि पढ़ाई तो मैं दिल तोड़कर करता ही था किन्तु खेलकूद में भी खूब दिलचस्पी लेता था क्रिकेट का खेल तो मुझे पसन्द नहीं था किन्तु कवड्डी और ऊंची कुदाई बहुत प्रिय थे। गोला फेंकने और तलवार घुमाने में बहुत लड़कों से अच्छा था।

सन् १६०२ में मिडिल पास करके हरिश्चन्द्र घर आगया। अब हरिश्चन्द्र बालक नहीं रहा। यहां से उसका सांसारिक जीवन आरंभ हुआ, इसलिये अब हम भी उसे बालक हरिश्चन्द्र अथवा हरिश्चन्द्र न लिखकर चौधरी हरिश्चन्द्र के नाम से ही याद करेंगे।

चौधरी जी इस शिक्षा काल में आर्य समाज के सम्पर्क में आ गये थे उन्होंने लिखा है कि एक बार मैं मास्टर रामजीदासजी के साथ आर्य समाज के एक जलसे में गया था किन्तु समझ में नहीं आया। सिरसा में पढ़ते समय स्कूल में सनातनधर्म सभा बनाई। पहले मैं उसका कोषाध्यक्ष

और पीच्छे अध्यक्ष चुन लिया गया। आर्य समाज से हिचकता था क्योंकि मुझे बताया गया था कि आर्य समाजी जादूगर हैं उनसे बचते रहना चाहिये। हमारे स्कूल में कुछ मुस्लमान लड़के और कुछ सिख लड़के पढ़ते थे उनमें मिश्नरी स्प्रिट थी। सिख के प्रभाव से मैं अपने को हरिचंदसिंह लिखने लगा और मुस्लमान के प्रभाव से खां बनना अच्छा लगा किन्तु इन्हीं दिनों कुछ आर्यसमाजियों की बातें सुनी उन्होंने सिख और मुस्लमान दोनों ही मजहबों की बखिया उधेड़ दी। इससे हमारे मन में से सिख और मुसलमान दौनों ही मजहबों की जो प्रीत बढ़ी थी वह काफूर हो गई और परमात्मा का धन्यवाद है कि हम सही रास्ते पर बने रहे। शनैः शनैः वैदिक धर्म में आस्था बढ़ती रही। और आर्य समाज के सम्पर्क में अधिकाधिक आता रहा।"

सर्विस की तलाश

पढ़ने लिखने का अर्थ प्राचीन काल में कुछ भी रहा हो किन्तु जब से भारत में अंग्रेजों का अमल हुआ पढ़ने का अर्थ नौकरी की तयारी ही समझा जाने लगा था और आज भी यही अर्थ है। चौ० हरिश्चन्द्रजी भी जब पढ़कर निकले तो उन्हें भी नौकरी की सूझी। अनेकों मनुष्य आरंभ में साधारण ही होते हैं। उन्हें असाधारण अथवा महत्वपूर्ण स्थितियां बनाती हैं चौधरी हरिश्चन्द्र जी को असाधारण अथवा विशेष व्यक्तित्व का आदमी परिस्थितियों ने ही बनाया। अन्तर इतना होता है कि परिस्थितियां बिगाड़ने और सुधारने दोनों तरह के काम करती है जो लोग विपरीति परिस्थितियों से जूझते हुए सफल हो जाते हैं वे महापुरुषों अथवा बड़े आदमियों की श्रेणी में आ जाते हैं और जो विपरीत परिस्थितियों के सामने आत्म समर्पण कर देते हैं वे या तो विनिष्ट हो जाते है या जहां के तहां बने रहते हैं। चौ० हरिश्चन्द्र जी ने विपरीत परिस्थितियों का सामना किया और वे ऊँचे उठ गये और उस हरिश्चन्द्र में तो काफी ऊँचे उठ गये जो महाराजा गंगासिंह जी के राजकाल में महाराज भैरूंसिह के आशीर्वाद से तहसीलदारी की बख्शीस की बात सुन कर खुश हो गया था।

तहसीलदारी नहीं मिली। अच्छा जीवन विताने के लिये सर्विस अथवा ऐसा धंधा ढूढना जरूरी था जिसमें शारीरिक श्रम कम और आमदनी अधिक हो। केवल गुजारे का सवाल ही होता तो चौधरी रामूराम जी ने दोनों लड़कों लायक जमीन तो इकट्ठी कर ही ली थी।

फौज और पुलिस में अच्छी जगह मिलने की आशा थी किन्तु उनके पिताजी ने मना कर दिया और हरिश्चन्द्र जी पिताजी को जरा भी नाराज न करना चाहते थे इसलिये अच्छे चांस भी रक्खे ही रह गये।

पंजाब के कई जिलों में बन्दोवस्त हो रहा था। उसमें दरख्वास्त भेजी किन्तु चूंकि पत्र वैरंग था इसलिये वापिस आगया उस पर लिखा हुआ था। इस प्रकार की दरख्वास्तें नहीं ली जातीं।

एक समय किसी ने कहा, पटियाला कौंसिल के प्रेसीडेन्ट सरदार गुरमुखसिंह नैन जाट है वह अपने गोत और बिरादरी का बहुत खयाल रखते है। चौधरी साहब बड़े इरादे से पटियाला पहुंचे किन्तु जिन दिनों वे पटियाला पहुंचे सरदार गुरमुखसिंह जी वीमार थे। उनके बड़े लड़के नरनारायनसिंह जी सिविल जज थे उन्होंने चौधरी साहब का स्वागत सत्कार तो खूब किया किन्तु कोई अच्छी पोस्ट दिलाने में लाचारी जाहिर की।

उन दिनों वारवार्टन साहब पटियाला में पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट थे उन्हें उनसे मिलने की सलाह दी गई।

एक दिन जब चौधरी जी पटियाले के बाजार की सैर कर रहे थे महाराणी जी की सवारी सैर को निकली। चार घोड़ों की रबर टायर की बग्घी में बैठी थी। गाड़ी बन्द थी जिसमें कांच की खिड़कियां थीं। आगे आगे बिगुल बजता जा रहा था और लोग रास्ता दे रहे थे। चौधरी हरिश्चन्द्रजी लिखते हैं "किसी राजा की राजधानी में आने का यह मेरा पहला अवसर था मैंने बड़े कौतूहल के साथ महारानी जी की सवारी को देखा।"

यहां पटियाले मे रहते हुये चौधरी हरिश्चन्द्र जी ने पन्द्रह दिन बिता दिये उन्हें हल्का सा ज्वर भी रहने लगा। सोच ही रहे थे कि वापिस चलें कि सरदार गुरमुखसिंहजी की कोठी पर नाभा से सरदार गज्जनसिंह जी पधारे। उन्होंने नाभा के तत्कालीन महाराजा हीरासिंह जी की बड़ी प्रशंसा की और कहा, उनके दर्शन करने को नित दूर दूर के आदमी आते हैं। चौधरी जी की इच्छा राजा के दर्शन की हुई। उन दिनों अर्थात बीसवी सदी के आरंभ में लोगों के दिलों में राजाओं के लिये बड़ी श्रद्धा थी। उनके दर्शन बहुत शुभ समझे जाते थे। यह श्रद्धा न मालुम कबसे चली आ रही थी किन्तु लेखक को पता है कि बीसवीं सदी के प्रथम चौथाई भाग तक तो उन्हें देवता ही समझा जाता रहा। चौधरी हरिश्चन्द्र जी सरदार गज्जनसिंह के साथ नाभा को हो लिये। महाराजा नाभा अपने बाग के दरवाजों में से चाहे जिधर से निकलते थे भीड़ सभी दरवाजों

पर रहती थी। चौधरी हरिश्चन्द्र और सरदार गज्जनसिंह जिस दरवाजे पर खड़े हुये, आज महाराजा उधर से न निकल कर दूसरे दरवाजे से निकल गये। चौधरी साहब को निराश होना पड़ा। समय बड़ा बलवान है सन् १९०२ में चौधरी साहब हरिश्चन्द्र जी एक राजा के दर्शन को लालायित थे और सन् १९४६ में कई राजा उनसे कुछ सद्भावना और सहायता के इच्छुक हुये।० अस्तु, सरदार गज्जनसिंह चौधरी साहब को नाभा के दीवान के घर पर ले गये जहां उनका उचित आदर सत्कार हुआ और भोजन का प्रबंध भी दीवान जी के यहीं हुआ।

दूसरे दिन चौधरी हरिश्चन्द्र जी अपने गांव को लौट पड़े। नाभा से गुढ़ा रेल द्वारा और फिर खरिया तक पैदल सफर किया। यह घटना श्रावण सं. १९५९ वि. सन् १९०२ अगस्त महीने की है। क्वार के महीने में चौधरी जी के एक रिश्तेदार खारिया आये और उन्होंने कहा, हमारे यहां के मतीरे (तरबूज) बहुत मीठे होते है तुम मेरे साथ चलो। चौधरी साहब राजी होगये। एलनाबाद, बिसरासर और कालू होते हुये गुसांईसर पहुंचे, जहां कई दिन तक मतीरों को खाते रहे। वास्तव में बीकानेर के मतीरे खाने की चीज है लेखक ने भी मतीरे खाने के लिये दो बार

०—भरतपुर महाराजा ने उन्हें सायं भोज पर आमन्त्रित किया। महार. बीकानेर ने उन्हे सदैव से चला आया अपना हितू कहा।

वीकानेर के देहातों को देखा था। गुराईसर से नवम्बर के महीने में चौधरी हरिश्चन्द्र जी को बीकानेर देखने की उत्कण्ठा हुई। वह कहते हैं कि मैं ४-११-१९०२ को वीकानेर पहुंचा और माजीपुगलियाणी जी के कामदार गुमान जी वरड़िया की कोटड़ी में ठहरा। कविराज भैरव दान जी ने मुझे जकात की थानेदारी देने को कहा, किन्तु मैंने उसे स्वीकार नहीं किया।

वहां रहते हुये चौधरी देदा जी गोदारा के साथ महाराज भैरूसिंह जी साहव के दर्शन हो गये। चौधरी जी के लिये यह पहला ही अवसर था कि एक महाराज के अकस्मात और स्वतः दर्शन होगये क्योंकि जहां चौधरी जी खड़े थे वहां एक राजपूत सरदार का भी निवास था। महाराजा साहव उधर ही आये थे। चौधरी देदाजी से वे परिचित थे इसलिये उन्होंने संकेत करते हुये देदाजी से पूछा यह तुम्हारे साथ वाला आदमी कौन है उसने उत्तर दिया महाराज यह मेरा रिश्तेदार है और अंग्रेजी पढ़ा लिखा है। महाराज ने कहा, अच्छा इससे अर्जी दिलादो मैं इसे कोई अफसर वना दूंगा।

चौधरी हरिश्चन्द्र जी को यह तोहफा वहुत पसंद आया और उन्होंने अर्जी दे दी। उसी दिन महाराज सा० ने प्रार्थी को वीकानेर दरवार के प्राइवेट सेक्रेटरी रुस्तम जी दोराव जी कपूर को दिखाते हुये कहा, मैं इस जाट को तहसीलदार वनाना चाहता हूं।

चौधरी हरिश्चन्द्र जी ने अपनी आप बीती में लिखा है :-"मैं एक ग्रामीण और लोक व्यवहार से अनभिज्ञ आदमी महाराज के शब्दजाल में फंस गया। तहसीलदारी के स्वप्न देखने लगा। रियासत के अन्न जल ने फिर जोर मारा ऐसा प्रतीत हुआ। मेरे लिये महाराज के रसोड़ में भोजन करने की आज्ञा हो गई। ठहरने का प्रबंध मैंने बछरारा के ठाकुर बहादरसिंह जी के पास कर लिया, वे भी वहां रहते थे और अपने खाने को महाराज के रसोड़ में से कांसा लाते थे। मैंने एक दो वक्त वहीं रसोड़ में जीमा किन्तु देखा कि वहां मांस भी पकता है। इंचार्ज रसोड़े से मैंने मना कर दिया कि मैं यहां खाना नहीं खाऊंगा। तब रावले में मेरा भोजन का प्रबंध हो गया।"

नवम्बर १९०२ के आखीरी हफ्ते में तत्कालीन गवर्नर जनरल एन्ड वायसराय लार्ड कर्जन का बीकानेर आगमन हुआ पुरोहित लक्ष्मीनारायण और चौधरी हरिश्चन्द्र जी को रोशनी का इंचार्ज बनाया गया। उन दिनों तक बिजली का चलन बीकानेर में नही था। जगह जगह बांस के खम्भों पर तेल के दीपक रखे गये थे। ६५ मन तेल खरीदा गया था। रोशनी अच्छी हुई। महाराजा साहब को अन्य अच्छे कारकुनों की भांति ही चौधरी साहब को सार्टीफिकेट मिला जिसके निम्न शब्द है—"हरिश्चन्द्र जाट मौजे बछराला तुमने हिज ऐक्सीलेन्सी दी वायसराय एन्ड गवर्नर जनरल साहब बहादुर दामइकबालहू के बीकानेर

वीकानेर के देहातों को देखा था। गुसाईसर से नवम्बर के महीने में चौधरी हरिश्चन्द्र जी को वीकानेर देखने की उत्कण्ठा हुई। वह कहते हैं कि मैं ४-११-१६०२ को वीकानेर पहुंचा और माजीपुगलियाणी जी के कामदार गुमान जी वरड़िया की कोटड़ी में ठहरा। कविराज भैंरव दान जी ने मुझे जकात की थानेदारी देने को कहा, किन्तु मैंने उसे स्वीकार नहीं किया।

वहां रहते हुये चौधरी देदा जी गोदारा के साथ महाराज भैरूंसिह जी साहव के दर्शन हो गये। चौधरी जी के लिये यह पहला ही अवसर था कि एक महाराज के अकस्मात और स्वत: दर्शन होगये क्योंकि जहां चौधरी जी खड़े थे वहां एक राजपूत सरदार का भी निवास था। महाराजा साहव उधर ही आये थे। चौधरी देदाजी से वे परिचित थे इसलिये उन्होंने संकेत करते हुये देदाजी से पूछा यह तुम्हारे साथ वाला आदमी कौन है उसने उत्तर दिया महाराज यह मेरा रिश्तेदार है और अंग्रेजी पढ़ा लिखा है। महाराज ने कहा, अच्छा इससे अर्जी दिलादो मैं इसे कोई अफसर वना दूंगा।

चौधरी हरिश्चन्द्र जी को यह तोहफा वहुत पसंद आया और उन्होंने अर्जी दे दी। उसी दिन महाराज सा० ने प्रार्थी को वीकानेर दरवार के प्राइवेट सेक्रेटरी रुस्तम जी दोराव जी कपूर को दिखाते हुये कहा, मैं इस जाट को तहसीलदार वनाना चाहता हूं।

चौधरी हरिश्चन्द्र जी ने अपनी आप बीती में लिखा है :—"मैं एक ग्रामीण और लोक व्यवहार से अनभिज्ञ आदमी महाराज के शब्दजाल में फंस गया। तहसीलदारी के स्वप्न देखने लगा। रियासत के अन्न जल ने फिर जोर मारा ऐसा प्रतीत हुआ। मेरे लिये महाराज के रसोड़े में भोजन करने की आज्ञा हो गई। ठहरने का प्रबंध मैंने बछरारा के ठाकुर बहादरसिंह जी के पास कर लिया, वे भी वहां रहते थे और अपने खाने को महाराज के रसोड़े में से कासा लाते थे। मैंने एक दो वक्त वहीं रसोड़े में जीमा किन्तु देखा कि वहां मांस भी पकता है। इंचार्ज रसोड़े से मैंने मना कर दिया कि मैं यहां खाना नहीं खाऊंगा। तब रावले में मेरा भोजन का प्रबंध हो गया।"

नवम्बर १६०२ के आखीरी हफ्ते में तत्कालीन गवर्नर जनरल एन्ड वायसराय लार्ड कर्जन का बीकानेर आगमन हुआ पुरोहित लक्ष्मीनारायण और चौधरी हरिश्चन्द्र जी को रोशनी का इंचार्ज बनाया गया। उन दिनों तक बिजली का चलन बीकानेर में नही था। जगह जगह बांस के खम्भों पर तेल के दीपक रखे गये थे। ६५ मन तेल खरीदा गया था। रोशनी अच्छी हुई। महाराजा साहब को अन्य अच्छे कारकुनों की भांति ही चौधरी साहब को सार्टीफिकेट मिला जिसके निम्न शब्द हैं—"हरिश्चन्द्र जाट मौजे बछराला तुमने हिज ऐक्सीलेन्सी दी वायसराय एन्ड गवर्नर जनरल साहब बहादुर दामइकबालहू के बीकानेर

आगमन पर जो रोशनी २५-११-१६०२ को हुई उसमें काम मिहनत से और ईमानदारी से किया और हमको बहुत खुश रक्खा लिहाजा यह सार्टीफिकेट हमारे खुश होने का तुम्हें बख्शा जाता है ताकि सनद रहे। २६-११-१६०२। महाराज भैरूंसिह बीकानेर।

हीरालाल जी कोचर के छुट्टी जाने पर चौधरी साहब को मई १६०३ में सरिस्तेदार बनाया गया।

चौधरी साहब लिखते हैं कि वैसे महाराजा मेरे ऊपर प्रसन्न थे किन्तु मेरा मन वहां लग नहीं रहा था इसलिये ६-७-०३ को छुट्टी लेकर घर चला आया, इस प्रकार लगभग साल भर बाहर बिता कर घर के दर्शन किये। वहां चरित्रहीन सभी को बनना पड़ता था। केवल हमीर जी पुरोहित और मैं ही दो ऐसे आदमी थे जो सभी व्यसनों से बचे। इसलिये रावले की सभी स्त्रियां हमारे साथ भलमनसाहत का व्यवहार करती थीं और कभी गुस्ताखी से पेश नहीं आईं। बल्कि आदर और मान करती थीं।

इस ७। ८ महीने के चौधरी साहब ने संस्मरण भी पेश किये है जिनसे महाराज साहब के प्रेम, उद्दंडता, जालसाजी, अतिथि सत्कार, दरियादिली, कंजूसी, प्रजावत्सलता और पक्षपात सभी गुणावगुण पर प्रकाश पड़ता है किन्तु लेखक को चौधरी हरिश्चन्द्र जी की जीवन घटनाओं से ही दिलचस्पी है अतः उनके ही जीवन क्रमों को अंकित किया

है। वैसे उनके संस्मरण बहुत सी अज्ञात घटनाओं पर प्रकाश डालते हैं जो सामन्तशाही का इतिहास लिखने वालों के बड़े काम के हैं। उदाहरण के लिये हम एक पत्र राज खड़गसिंह जी की पासवान चम्पा का पेश करते हैं जो रामूराम जी नैण को धैर्य बंधाने के लिये लिखा था—

"लिखतू सिरी ड्योढी सू गाम शेरपुरे में चौधरी रामूं नैण जोओ जाणी जोग तथा अठैरा समाचार सिरी जी सायवारे तेज प्रताप कर भला छैं। थारा सदा भला चाही जें और रुपया १५०) अखरे रुपया डोड़ सै दे ज्यौ और रुपया रया जका काती में रकम लै आस्यो जद दे दे स्यां सू हमारे इसाही चाही जै छैं सू दै जौ नटि ज्यो मती। घणा काईं लिक्खां थां दौनारे भरोसे पर लिख्यौ छै। सो कागद बांचतां पाण करिजो। ईसु आवै छै सो समाचार मुख जवानी कह सी सो थे राजी खुशी रह ज्यौ। कईं वातरी भो मतां करी ज्यौ। और थारे सामूं खुमाणा सागै मेल्यो जकै रो तो अठै इयां कै वें छैं। म्हारो गाम जवानी सिंहजी उजाड़ैं छैं। पण हवालदार तो इयां रयै सीत रामा कह्यो कि रामूं म्हारे सामा कागद लिख्यौ जा मेंह रामूं सामैं लिख्यौ इयाणो दोष काईं छै। सो इयां तो अठै हुवै छै सो तें कई वातरी भो मति लाय ज्यो। थारै लारैं हूं छूं। और हवालदार री दवियार मति भुगत्यौ। और तनें मोहबत सिंह गालियां काढी जकैरी कसर काढ़ लेस्यूं पण एक खाजोटी रुपये एक कईं हुवैं तो हूं अबकेई भुआंली

खवाय देसूं । संकजे मती । खुशी रह ज्यो । संवत उगणीस सै अडतीस री मिती असाढ़ सुदी दूज वार मंगल ।

साल भर घर रहने के बाद चौधरी हरिश्चन्द्र फिर बीकानेर पहुँचे और वहाँ डाक्टर नारायनसिंह जी से साक्षात्कार हुआ, उनके सत्संग और सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन से चौधरी हरिश्चन्द्र कट्टर आर्य समाजी बन गये। उन्होंने रावले मे भी माँस मत खाओ, शराब मत पीओ का आन्दोलन आरंभ कर दिया । इससे उनकी इज्जत रावले में बढ़ गई । इसके पश्चात उन्होंने डाक्टरी सीखने के प्रयत्न किये किन्तु उसमें असफल रहे। आखिर में राजगढ़ तहसील में २०–७–१६०५ को अहलमद हो गये । महाराज द्वारा तहसीलदार बनाने का वायदा हवा में ही झूल गया। पाँच वर्ष चौधरी हरिश्चन्द्र जी राजगढ़ चूरू और मिरजावाला और बीकानेर में गुजारे । मिरजावाला में सात महीने ही रहने पाये थे कि आपका तबादिला बीकानेर को होगया। वहाँ आपने तय कर लिया कि अब नौकरी नहीं करनी और छुट्टी लेकर घर चले आये ।

जोलाई सन १९०६ में संगरिया मंडी कायम करने के लिये बीकानेर से कुछ अफसर आये थे। संगरिया रेलवे स्टेशन के पास ही था । पहले स्टेशन का नाम चौटाला रोड़ था । चौटाला गांव जिला हिसार का गाँव है जो स्टेशन ने पाँच मील दूर है । संगरिया बीकानेर की सरहद का गाँव था और उन दिनों बहुत ही छोटा था । उसके

तरुणाई के दिनों में

चौ० हरिश्चन्द्र जी अगस्त सन् १६१०।

पीने के लिये भी पानी ऊँटों पर लाद कर चौटाला से लाया जाता था। रियासत का माल पंजाब में न जाय और पंजाब से जरूरी चीजें लाकर सरहदी लोगों को मिलती रहें इसी उद्देश्य से बीकानेर के महाराजा ने संगरिया में मंडी कायम करने की सोची थी। संगरिया में तहसीलदार मिर्जावाली भी पहुँचे अफसर माल ने तहसीलदार से हरिश्चन्द्र को बीकानेर भेजने का प्रस्ताव रक्खा, क्योंकि वे महनती आदमी है यह दलील थी।

बीकानेर में काम बहुत था और अधूरा काम और भी अधिक था उसे चौधरी साहब ने पूरा किया और पूरा करने में तथा काम को काबू करने में उन्हें कई महीने लग गये। यह काम उनकी पसंद का न था फिर भी इसमें उन्होंने छः साल गुजार दिये। इसका कारण यह था कि वे यह न कहलवाना चाहते थे कि 'पढ़े फारसी बेचें तेल। यह देखो कुदरत का खेल' इससे देहातियों की पढ़ने की रुचि को धक्का लगता, इसलिये नौकरी पर चिपटे रहे। दूसरे उन्हें यह देखना था कि शायद महाराजा साहब अपने बचन को पूरा करदें।

वकील हरिश्चन्द्र

दीवानी और फौजदारी की ५ साल की अहलमदी ने उन्हें आधा सा वकील तो बना ही दिया था। एक साल मिहनत करके उन्होंने बाकायदा वकालत की परीक्षा दी और उसमें वे द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हो गये।

उन दिनों उर्दू अंग्रेजी मिडिल तक पढ़े हुये लोग उसी भांति वकील बन जाते थे जिस भांति कि मैट्रिक पास लोग बैरिस्टरी का इम्तहान दे लेते थे। बहुत कम लोगों को यह पता होगा कि महात्मा गांधी ने मैट्रिक के बाद ही बैरिस्टरी पास करली थी। उन दिनों की मैट्रिक की योग्यता आज की बी० ए० से अधिक होती थी। और रियासतों में शिक्षा का स्तर और भी नीचा था।

सन् १६१० में उन्होंने वकालत पास की और उसी साल से प्रेक्टिस आरंभ कर दी। वैसे उन्होंने ३६ साल तक वकालत की किन्तु लग्न के साथ और डट कर सन् १६१७ तक ही की। इसके बाद वे जाट स्कूल संगरिया के संचालकों में हो गये। कन्या पाठशाला, आर्य समाज, जाट सभा, जमीदार लीग, प्रजा परिषद, और कांग्रेस, विभिन्न क्षेत्रों में उन्होंने अपने को फँसा दिया। इस कारण वकालत से

इतना संग्रह नहीं कर सके जिस पर गर्व किया जा सके। वे स्वयं लिखते हैं :—"छत्तीस साल का समय बड़ा लम्बा होता है। दो सौ रुपया सालाना भी कोई बचावे तो सात हजार से ऊपर होते हैं परन्तु मैं कोरा हूं। लेकिन इसका मुझे दुख नहीं। मुझे इस बात का गर्व है कि मैंने अपने मुवक्किल को झूठे वायदे नहीं किये। उन्हें वाक् जाल से फँसाया नहीं। सिर्फ यही कहा, खूब मेहनत करूंगा और न मुकदमा जीतने अथवा अपने मुवक्किलों के पक्ष में फैसला कराने के लिये मैंने न कभी अदालतों की खुशामद की। पहले वकालत का पेशा बड़ा पवित्र था अब तो लोग इसे ठगी कहते हैं। पहले मुवक्किल वकीलों को आदर की दृष्टि से देखते थे। अब वह इज्जत नहीं। वकील भी उस समय मेहनत का खाना पसन्द करते थे। अब वह बात कहां है।

चौधरी हरिश्चन्द्र जी ने बीकानेर में रहते हुये। जाटों के साथ जो सलूक राज्याधिकारियों का देखा था उससे उनमें एक विचार उत्तरोत्तर दृढ़ता पकड़ता जा रहा था वह यह कि जाट को जितने का कि वह अधिकारी है उतना सन्मान देना तो अलग उसकी अशिक्षा से अनुचित लाभ और उठाया जाता है। उन्होंने देखा था कि गरीब जाट लकड़ी, भूसा, ग्वार का लादा आदि जो भी सामान बाजार में लाते हैं वह उनसे बिना मोल किये सरकारी नौकर चाकर अपने यहां डलवा लेते है और मन में आता है उतना ही

दाम उसे देते हैं। वकालत में आने का उनका यह भी एक कारण था क्योंकि वकालत का पेशा स्वतंत्र पेशा था।

अपनी मनोव्यथा को उन्होंने इन शब्दों में व्यक्त किया है—"आश्चर्य तो यह है कि गाँवों के रहने वाले जाट, माली आदि जो अपनी कमाई का अन्न खाते हैं और जिनका खुद का धर्म सावित है तथा जिनकी स्त्रियाँ सती व पतिव्रता है। उन्हें शहर के गोले चाकर भी जो पेट भरने के लिये इज्जत तक दे वैठे है अपने से नीचा समझते हैं...... हा! अविद्या तूने इन देहातियों को इतना निर्जीव बना दिया है कि यह अपने पर होने वाले दुर्व्यवहारों के प्रति चूं तक नहीं करते।

शेखसर के गोदारे मशहूर पट्टीदारों में से हैं। वीकाजी ने यह राज्य दवाया उससे पहले सात कौम पट्टीदार और सत्तावन माजरे अर्थात् शाखे मशहूर थीं। पट्टीदार गोदारे, सहारण, पोणिये, वेनीवाल, सिहाग, सोहू, कसवाँ इत्यादि थे। गोदारों के साथ वीकाजी का जो समझौता हुआ उसमें यह था कि वीकाजी के वंशजों का तिलक गोदारों के हाथ होगा। होली के अवसर पर पच्चीस मुहर गोदारों के मुखिया को मिला करेंगी। पच्चीस मुहर घटते घटते अव केवल पाँच रुपये रह गये हैं। गोदारे कितने गिरे है। शेखसर के गोदारे होली के अवसर पर हाथ में थाली लिये वीकानेर में सरदारों के डेरों पर तिलक काढ़ने और एकाध रुपया लेने को फिरते हैं। उन्हें यह होश नहीं है कि हम कौन थे और अव क्या हो गये हैं।

यहाँ वीकानेर में मुझे जब उनका स्वभाव याद आता है जिसे कि मैं अकड़ समझता था तो अब खुशी होती है क्योंकि उनकी इज्जत उनके स्वभाव के कारण ही है। मेरे पिताजी जब वीकानेर राज्य में ही रहते थे, अनेक पट्टेदार उनसे मित्रता के लिये उत्सुक रहते थे। उनकी इज्जत उन चौधरियों से अधिक की जाती थीं जो जमीन और नकदी मेरे पिताज़ी से अधिक रखते थे। वह इसीलिये कि मेरे पिताजी में स्वाभिमान काफी था।"

चौधरी हरिश्चन्द्र जी के दिल में ऐसी ही टीसें थीं जिन्हें वे वर्षों से दवाये हुये थे। वह कुछ करने के लिये तड़पड़ा रहे थे। नौकरी मे वह मामूली सी सेवा ग्रामीणों की मीठा बोलकर तथा उन्हें हलकी फुलकी कानूनी सलाहें देकर ही कर सकते थे किन्तु एक लाभ उन्हें नौकरियों से अवश्य हुआ कि वे चूरू, राजगढ़, मिरजावाली ओर वीकानेर की तहसीलों के हजारों ग्रामवासियों से परिचित होगये। ठिकानेदार, कामदार और अफसरों में बड़े बड़े लोगों की जवान पर हरिचन्द (वे लोग यही नाम लेते थे) खेलने लगा। महाराजा, उनके प्राइवेट सेक्रेटरी, ए.डी.सी. और रावले की स्त्रियाँ सभी जाट हरिश्चन्द्र से परिचित हो गईं और हरिश्चन्द्र भी उन्हें सही रूप में पहचान गये। राजा के दर्शनों की १९०२ में जो चाह उनमें थी वह १९१० तक खत्म हो चुकी थी। वकालत के दिनों की

अनेक घटनायें उन्होंने अपनी डायरियों में लिखी है जिनसे न्याय और कानून सम्बन्धी अनेकों बातों पर प्रकाश पड़ता है। नमूने के लिये सन् १९३३ की डायरी से कुछ नोट यहाँ पेश करते हैं :—

२० जनवरी १९३३—सेवासिंह जमादार तहसील झींखता है कि पेन्शन के नोट खजांची ने सौ सौ रुपया के दिये। एक जरा फटा दे दिया। मैंने उसके चित्ती लगाली। अव रकम (लगान) में रसू चोधरी को दिया रसू उसे खजाने में दाखिल करने गया तो खजांची नहीं लेता। वहुत कहा गया। नहीं माना। गंगाराम कानूनगो कहने लगा उसके पास मुहर आई पड़ी है। हुक्म है कि जो रुपया नोटों में वसूल होवे उस पर फौरन मुहर लगादी जावें। खजांची इसलिये नहीं लगाता कि कभी कोई ऐसा मौका नोट खराव होने का पड़े मुहर लगी हो तो मैं इनकार कैसे करूं वरना यह नटने को गली है। इस पर चौधरी साहव ने अपनी टीप लिखी है कि "राज के नौकरों को प्रजा को सव तरह के कष्ट देने का हक है"।

जीसुखराम कहने लगा यह मेरा भाई रामदयाल है उमरउद्दीन लंगड़ा जो पहले थानेदार था। उसने इससे दस रुपये के स्टाम्प पर मुख्तारनामा आम राजाराम की तरफ से लिखवा लिया। और इनसे कहा, मैं रियासत वाहर इन्हें तभी जाने दूंगा जव मुझको ये इतने रुपये दें। वह तयार हो गये। मैं आया। मैंने कहा, लिखकर दे दे कि

रियासत से बाहर इसका चालान नहीं होने देगा। तब वह नट गया। यह मुख्तारनामा उससे ले आया हूं। इसके स्टाम्प के दाम वापिस मिल जांय ऐसी कोशिश करो। मैंने साफ कह दिया कि मुश्किल से वापिस मिलेंगे। दरख्वास्त भले ही वापिसी की दे दो। मैं तो वर्षों के झगड़े में नहीं पड़ता।

६ फर्वरी १९३३—रेवेन्यू कमिश्नर साहब की पेशी में बुलाहट हुई। बृजलाल जी वकील हुक्मा की तरफ से पेश हुए। दरअसल सारी कार्यवाही तेजभान खराब करता है। मैंने आज मेरे मुवक्किल लेखराम से कहा, मुझे बीस रुपये दे दो, मैं तेजपाल से तय कर लूंगा। पहले उसने हुक्मा को जिता दिया अब वह मुझे जिता देगा। मैंने कहा, ना भाई! तू जाने तेरा काम। मेरे से तो ऐसी बात की चर्चा भी मत कर। मैंने एक दलील दी कि यह बैनामा गलत हुआ है। रेवन्यू कमिश्नर साहब बोले राज मुझे चालीस रुपये घंटा देता है मेरा वक्त कितना कीमती है उसे ऐसे बर्बाद मत करो। मैंने मन में तो कहा, चालीस फी घंटा का हर्जा मैं कहां से दूं किन्तु चुप रह कर अपनी दलील को आगे जरूर बढ़ाता रहा। मुझे आंशिक ही सफलता मिली।

२ जनवरी १९३३—रिश्वत देने के मैं सदा विरुद्ध रहा, किन्तु जब मामराज ने कहा, मेरा काम रिश्वत देने से पूरा हो जायगा तो मैंने विवश होकद कह दिया।

मांगते है तो दे दो। मैंने कह तो दिया किन्तु दिल ने कहा, यह तो ढिलमिल यकीनी हुई।

४ फर्वरी १६३३—एक ल्हास आई। अफ़ीम छुड़ाने के लिये वह गया था उसे कोई ऐसी चीज दे दी जिससे वह मर गया। गरीब की कहीं पूछ नहीं।

रामचन्द्र जी ने कहा, तहसीलदार ढींगावाली गये थे। वहाँ अन्ना ढाका ने तहसीलदार के मागने पर भी दूध देने से इनकार कर दिया। कह दिया कि मेरा दूध मुफ्त का थोड़े ही है। उन दिनों की रिवाज ही यह थी कि अफसर लोग गाँवों में जाते थे तो अपने खाने पीने के लिये गाँव वालों से घी दूध मुफ्त प्राप्त करते थे।

पहले तो रामचन्द्र की मिसल महक्मा नहर में दो तीन साल तक फिरती रही। उन्हें जैसे तैसे उसे निकालने को तयार किया। तो महक्मा माल में भेज दी गई। कमिश्नर ने उसे माल अफसर के पास और माल अफसर ने तहसील-दार के पास भेज दिया। रामचन्द्र ने माल अफसर को मिन्नत करके मना लिया और तहसीलदार की १००) से पूजा की। फिर वह रेवन्यू कमिश्नर के यहाँ अटक गई यहाँ वहीं तेजमाल पेशकार है। रामचन्द्र ने उसे भी बीस रुपये दिये। "हे भगवान इन लोगों से न्याय की पार कैसे पड़े"। इसी प्रकार के उनकी प्रत्येक वर्ष की डाइरियों में अदालतों के रवैये और लूट खसूट पर प्रकाश डालने वाले अनेकों नोट हैं।

आप किसी भी हाकिम की खुशामद में नहीं पड़ते थे। वह जमाना रिश्वत से भी अधिक खुशामद का था। शासन तन्त्रों की रूढ़ियों का अधिकारी और कर्मचारी वर्ग पर भी असर पड़ता है शासकों की भाँति ही उनके भी वही रवैये भाषा, वर्ताव और ठाठ-वाट एवं रहन-सहन के तरीके वन जाते हैं। सामन्तों के दिमाग वास्तव में चारण, भाट एवं राजकवि विगाड़ते हैं। उन्हें खुशामद की एवं चापलूसी की बातें सुनने की आदत पड़ जाती थी। यही आदत सरकारी नौकर शाह वर्ग की भी हो जाती थी। खुशामद से वे भी प्रसन्न होते थे। चौधरी हरिश्चन्द्र जी के वस की यह बातें नहीं थी। ऋषि दयानन्द के भक्त होने के कारण स्पष्टवादिता उनमें अधिक थी। एक दिन रेवन्यू कमिश्नर के वंगले पर मिलने चले गये तो मन में कहा, "न तो हमें कोई काम था न कमिश्नर साहव ने ही हमें याद किया है, फिर इधर आने का मतलव ?"

विवाह

एक बात जिस पर हमें पहले ही प्रकाश डालना चाहिये था वह है उनके विवाह की बात। उसका जिक्र चौधरी हरिश्चन्द्र जी ने इस भाँति किया है :—"मेरे पिताजी को कई लोगों ने अपनी लड़कियों के साथ मेरे बड़े भाई तथा मेरा विवाह कर देने को कहा, परन्तु वह यही कह दिया करते कि लड़के अभी छोटे हैं। जब हम क्रमशः २२ और १६ के हो गये तो लोगों के बड़े जोर देने पर उन्होंने बड़े भाई हिम्मताराम की सगाई ली। लड़की वालों के दो लड़कियाँ थी उनका इरादा था कि वह मेरा भी उसी दिन विवाह करदें। भाई साहब की बरात की तयारी हो रही थी कि उसी दिन मेरी फूफी को लेकर नायरसर के चौधरी रतनाराम का बड़ा लड़का चन्दराराम खारिया आ पहुँचे और जेलदार रामनाथ जी द्वारा जोर डलवाकर मेरा विवाह भी उन्होंने वैसाख सुदी २ संवत् १६५६ का निश्चय करा दिया। पिताजी ने मुझ से कहा तेरा भी विवाह है। तू बारात में न चल। मैंने कहा, आप भी तो जा रहे हैं, इस दलील पर उन्होंने मुझे भी बरात में चलने की आज्ञा दे दी। वैसाख ११ को भाई का विवाह हुआ १२ को बरात ठहरी और १३ को वापिस चल दी।

परिवार में

बीच में चौधरी जी, बायें उनकी धर्म-पत्नी धैर्यवती जी,
दायें पुत्री चन्द्रवती गोद में शिशु वीरेन्द्र दोहित्र को
लिये हुये। पीछे बाये से दोहित्री दयावती बी. ए.
गोद में बालिका राजेश्वरी दौहित्री ।
बीच मे खड़ा देवेन्द्र दौहित्र ।

१४ को खारिया रहकर मावस को मेरी बरात चल दी। सायरसर खारिया से दक्षिण दिशा में पचपन कोस की दूरी पर है। दो रात व एक दिन रास्ता चलकर शुक्ला २ को लड़की वाले गाँव में पहुँचे। विवाह हो गया शेखसर के गोदारों की बरात भी उन्हीं के यहाँ मेरी बड़ी साली को व्याहने आई हुई थी। विवाह में हमारा पैसा भी खर्च नहीं हुआ। दुलहनि को भी लाये किन्तु दो दिन रहकर वह विदा होगई।"

चौधरी हरिश्चन्द्र जी के घर में जो आज गृह लक्ष्मी हैं वे ढींगावाली के चौधरी रामकरण सहारण की बेटी धैर्य्यवती हैं। रामकरण जी के पिता सुखराम जो थे जो वींझाराम जी के पुत्र थे इस शादी का व्यौरा चौधरी साहब ने इस प्रकार बताया।

"जेठ संवत १९६८ विक्रमी में तीन दिन की बीमारी के बाद मेरी पहली स्त्री का देहान्त हो गया। उसने एक पुत्री गोरा और एक पुत्र हरिदेव छोड़े। अपनी माँ के देहान्त के समय हरिदेव कुल तीन दिन का था। इस वर्ष के कातिक में दूसरा विवाह रचाया किन्तु यह दुलहनि फेरोंवाली रात में ही गुजर गई। मेरे घर में यह चार मौतें एक वर्ष के अन्दर ही हुईं, वैसाख में पिताजी, जेठ में प्रथम पत्नी कातिक में द्वितीय पत्नी और माघ में माताजी। संवत १९७१ में आषाढ़ सुदी नवमीं को यह तीसरा विवाह किया।

सैनिक भर्ती

यद्यपि बंगभंग और पंजाब में करतारसिंह सरावा की सरगर्मियों से सारे भारत में अंग्रेजों के प्रति रोष पैदा हो चुका था किन्तु सन् १९१४ ई० में जब जर्मनी के साथ अंग्रेजों का युद्ध हुआ तो भारत में स्वराज्य के लिये प्रयत्न शील बड़े बडे नेताओं ने जिनमें महात्मा गाँधी भी एक थे। अंग्रेजों की मदद करने का ही तय किया। अंग्रेजों की मदद के लिये मुख्यतः दो काम किये जाते थे (१) सैनिक भर्ती और (२) धन संग्रह। चौधरी हरिश्चन्द्र जी ने भी इसमें सहयोग किया किन्तु यह काम उनके लिये धर्मसंकट जैसा लगा। उन्होंने स्वयम् अपनी कलम से लिखा है :- "मनुष्य के जीवन में परीक्षा की घड़ियां भी कभी कभी आती हैं। उसी मौके पर देशभक्ति राजभक्ति की परीक्षा होती है। मेरी उम्र में इसके लिये पहिला मौका अगस्त सन् १९१४ में योरुप में होने वाले महायुद्ध के अवसर पर आया। कैसर विलियम ने वर्तानिया को मटिया मेट करने की ठानी। अंग्रेजों ने भारत से मदद माँगी। महाराजा बीकानेर ने रंगरूट भर्ती करने के लिये बीकानेर, राजगढ़, भादरा तथा हनुमानगढ़ में डिपो कायम करके कवायद परेट सिखाने का काम आरंभ किया। पहले तो मैंने अपने आप को ही पंच

किया किन्तु बाँह टूटी हुई होने के कारण नहीं लिया गया। फिर मैंने दो आदमी भर्ती कराये किन्तु मेरा उत्साह उधर नहीं था।

सन् १९३९ से ४५ के युद्ध के समय तो मैं अधिक स्पष्ट था। मीठी मीठी लोरियाँ जो दी जाती थी उनका मुझ पर कोई असर नहीं होता था। १०–१२–४० को मुझे जबकि मैं बीकानेर असेम्बली के अधिवेशन में शामिल होने के लिये गया हुआ था। एक कागज पर फौजी दफ्तर के क्लर्क का लिखा मिला, कल जनरल हरीसिंह जी से मिलें। मैं उनके पास गया तो वे बड़े गिड़गिड़ाये युद्ध की भावना प्रकट की, फिर मुझसे बोले कुछ मैट्रिक पास लड़के दो तो काम चले। मैंने उन्हें स्पष्ट रूप में कहा, आपने हमें मैट्रिक करने की कुछ भी सुविधायें दी होतीं तो हम अवश्य ही मैट्रिक पास लड़के आपको दे सकते थे। मेरी बात उन्हें तीर जैसी लगी किन्तु वास्तविकता से इन्कार कैसे कर सकते थे। जो भी मेरे से पढ़े लिखे लड़के सेना में भर्ती होने के लिये मांगता उसी से मैं यही जवाब देता।"

यह शब्द उनकी हृदय की उस पीड़ा को व्यक्त करते हैं जो राठौर सरकार की जाटों एवं ग्रामीणों की शिक्षा की ओर से उपेक्षा तथा भाई बान्धवों को सर्व प्रकार से उन्नत करने को थी।

सार्वजनिक जीवन में प्रवेश

गदर पश्चात् चौथाई शताब्दी बीत जाने पर भारत के प्रत्येक प्रांत और जिले में अनेक विभूतियों ने जन्म लिया। जिनमें से कुछ का भारत व्यापी प्रभाव रहा कुछ का प्रांत व्यापी और कुछ का जिला व्यापी असर रहा। वीर सावर कर, लाला लाजपति राय, रास विहारी बोस आदि भारतीय स्तर की महान आत्मायें थीं। मानों गदर की ही सैनिक और सेनापतियों की हुतात्माओं ने भारत मां की सेवा के लिये पुनर्जन्म लिया हो। बागड़ अथवा जांगल प्रदेश में भी संवत १९४० विक्रमी के भादों महीने की एकादशी तदनुसार सन् १८८३ में एक हुतात्मा ने जन्म लिया जो आगे चलकर चौधरी हरिश्चन्द्र के नाम से विख्यात हुई। हम उन्हें हुतात्मा इसलिये कहते हैं कि उन्होंने भरी जवानी के दिनों में अपना जीवन देहातियों की शिक्षा के लिये संगरिया की शिक्षा संस्था को अर्पण कर दिया और उस संस्था के स्वावलम्बी होने पर राजनैतिक जागृति के अगुआ बने। सन् १९१७ से १९५७ तक लगभग आधी शताब्दी तक उन्होंने कौम, धर्म और देश की सेवा और उन्नति के लिये प्रयत्न और श्रम में खपाये।

हैं। सबसे पहले हम उनकी शिक्षा प्रचार एवं प्रसार सम्वन्धी सेवाओं पर प्रकाश डालते हैं।

२६ जनवरी १६१८ ई० की बात है। उन दिनों चौधरी हरिश्चन्द्र जी मिरजावाली में वकालत करते थे कि उनसे चौधरी बहादुर सिंह जी मिले। उन्होंने संगरिया स्कूल के चन्दे का काम अपने जिम्मे लिया हुआ था। चौधरी हरिश्चन्द्र जी ने बहादुर सिंह जी के संबंध में यह पंक्तियाँ अपनी कलम से लिखी है। "चौधरी बहादुर सिंह जी धुन के पक्के और कठोर परिश्रमी थे। आकर्षण शक्ति उनकी विलक्षण थी। वह देश की वर्तमान दशा को जान चुके थे। बहुत सी ठोकरें खाने के बाद अब उन्हें यह सुधि आई थी कि उन्नति का मुख्य साधन शिक्षा है। बिना शिक्षा के कोई जाति अथवा देश उन्नत नहीं हुये। वह देहात के लोगों की नाड़ी टटोलते फिरते थे। मैं एक कोने में पड़ा अपने हाल में मस्त था। उस जादूगर ने अपना मंत्र मुझ पर भी चला दिया। उन्होंने अपना तन, मन, धन देश को शिक्षित बनाने के लिये दृढ व्रत में होम दिया। और मेरे कान में भी फूक मार दी कि बिना शिक्षा के देश के उद्धार की कल्पना स्वप्न मात्र है। तपस्या में विचित्र शक्ति है। उस तपस्वी ने मेरी सुप्त भावनाओं को जगा दिया और मेरी रगों में बिजली का जैसा संचार कर दिया। मैं उनके साथ हो लिया। मदेर, रोही, डांववाली, आदि स्थानों से उन्हें कुछ चन्दा कराया।

पाँच छः साल से इधर वकालत करने से लोगों से जान पहचान अच्छी हो गई थी।"

जिस समय जाट स्कूल संगरिया की नींव डाली गई थी, उन दिनों बीकानेर राज्य के गाँवों में तो सूरतगढ़, हनुमानगढ़, मिर्जा वाली जैसे तहसील और निजामती कस्बों में भी स्कूल नहीं थे। देहातियों की शिक्षा के स्वप्न को साकार करने के लिये संगरिया में बहादुरसिंह ने कुछ आदमियों को इकट्ठा किया और तय हुआ कि चूंकि इस इलाके के देहातों में जाट ही अधिक है इसलिये स्कूल का नाम जाट स्कूल रक्खा जाय। ठाकुर गोपालसिंह, बाबा मनसानाथ के सहयोग से उन्होंने इस स्कूल की स्थापना करदी। उन्हें कुछ अच्छे साथियों की आवश्यकता थी। और उन्हें जो अच्छे साथी मिले उनमें चौधरी हरिश्चन्द्र मुख्य थे। उन्होंने न केवल इस संस्था को अपना समय ही दिया अपितु धन से काफी मदद दी, उन्होंने एक हज़ार कमरे के लिये दिये क्योंकि उन दिनों कमरे एक हज़ार ही में बन जाते थे अपनी नेक कमाई में से दिये और दो सौ रुपया सदस्यता शुल्क तथा पाँचसौ छप्पन विभिन्न अवसरों उत्सव आदि पर दिये। इस प्रकार पौने दो हजार रुपया वित्तदान देकर और चालीस वर्ष का लंबा समय दान देकर उन्होंने संगरिया के जाट स्कूल की जो कि अब ग्रामोत्थान विद्यापीठ के नाम से जग जाहिर है सेवा की है।

उनकी निज की आमदनी पर इस सेवा कार्य का बड़ा

सहयोग के साथी (१६२०)

श्री चौधरी बहादुरसिहजी भोभिया संस्थापक जाट स्कूल संगरिया
और चौधरी हरिश्चन्द्र जी (काशी में डेपूटेशन पर)

दुष्प्रभाव पड़ा वकालत ठप होने लगी और बीवी बच्चों को आनन्द का जीवन बिताने में कठिनाई पैदा हुई किन्तु उन्होंने इस ओर कुछ भी ध्यान नहीं दिया। एक दृढ़व्रती के समान वे संगरिया स्कूल के उत्थान में संलग्न रहे। उनकी इस प्रकार की संलग्नता को देखकर बीकानेर हाईकोर्ट के चीफ जज शेख मोहम्मद इब्राहीम ने कहा था–"हरिश्चन्द्र एक होशियार वकील है। मगर वह कम्बख्त एक बुरी बीमारी में फँस गया है। वकालत और सेवा साथ-साथ नहीं चलती हैं"। किन्तु चौधरी हरिश्चन्द्र जी को चौधरी बहादुरसिंह जी की भाँति ही कौम की तरक्की का नशा चढ़ गया था। उस नशे से निश्चय ही न केवल जाटों का अपितु सभी लोगों का कल्याण हुआ।

ग्रामोत्थान विद्यापीठ संगरिया

चौधरी हरिश्चन्द्र जी ने जिस संस्था के लिये सर्वाधिक कार्य किया और जिसके इतिहास के साथ उनके जीवन काल के चालीस वर्षों का इतिहास जुड़ा हुआ है। उस महान् संस्था का संक्षिप्त इतिहास इस प्रकार है। "सन् १९१७ के अगस्त महीने की ९वीं तारीख को भटियाना प्रांत के कुछ उत्साही लोगों ने पुराने भटनेर और अब के हनुमानगढ़ में एक पाठशाला की स्थापना की।

हनुमानगढ़ से लेकर भटिंडा और जयसलमेर से लेकर वहावलपुर तक का इलाका किसी समय भट्टीवंश के अधीन था जिनमें से कुछ राजपूत कुछ जाट और कुछ मुसलमानों के अन्तर्गत आज तक विद्यमान हैं। संगरिया इसी इलाके के मध्य में है इसीलिये हमने इस इलाके को भटियाना के नाम से याद किया है।

चूँकि हनुमानगढ़ मलेरिया प्रधान इलाका था। इसलिये इस स्कूल को जनवरी सन् १९१८ में उठाकर संगरिया लाया गया और एक धर्मशाला में पढ़ाई आरम्भ कर दी गई। यह हम पहले ही वता चुके हैं कि जिन दिनों इस स्कूल की स्थापना हुई थी। उन दिनों बीकानेर के तहसीली मुकामों पर भी स्कूल न थे यही. नहीं पंजाब के

हिसार जिले के वे गांव भी जो बीकानेर की हद से मिलते हैं शिक्षा शून्य थे। लगभग आठ सौ मील के घेरे में संगरिया का जाट स्कूल ही प्रथम विद्या केन्द्र था।

संगरिया क्षेत्र में पीने के पानी का कतई अभाव था। यहाँ के वाशिन्दे या तो तीन मील दूर चौटाला से अपने पीने के लिये ऊँट व कंधों पर पानी लाते थे अथवा रेलगाडी द्वारा लाई गई टंकी से पाते थे। जो हनुमानगढ़ से और इधर संगत स्टेशन से आता था। यह दोनों ही स्थान संगरिया से १६ व २१ मील दूर थे। यहाँ के लोग नहाने धोने का काम या तो खारी पानी से चलाते थे या कई-कई दिन बिना नहाये ही टाल देते थे। यहाँ केवल एक ही फसल खरीफ वाली होती थी सो भी प्रति वर्ष नही क्योंकि हर पाँच वर्ष में यहाँ तीन वर्ष अकाल का औसत रहता था। गर्मी के दिनों में लूओं के साथ इतनी धूल उड़ती थी कि प्रायः ९ बजे प्रातः से शाम के ५ बजे तक दिन में ही रात हो जाती थी। धूल से आसमान आच्छादित हो जाता था। इस प्रकार का था यह भयँकर और अभावग्रस्त इलाका। जिसमें कि वरनाक्यूलर ऐंग्लो संस्कृत जाट स्कूल की स्थापना की गई।

चूँकि इस इलाके में जाटों की ही आबादी अधिक है इसलिये संस्था के संस्थापकों—खासतौर से ठाकुर गोपालसिंह ने इसके नाम के साथ जाट शब्द जोड़ना ही उस समय की मनोदशाओं के कारण उचित समझा किन्तु

आरम्भ से ही यह शिक्षण संस्था जाति पाँति के संकुचित दायरे से ऊँची रही । इसमें सभी जातियों के यहाँ तक कि हरिजनों के बालकों ने सदैव समानता के साथ शिक्षा प्राप्त की है । इस कारण कुछ समय तक उच्च कहे जाने वाली जातियों की ओर से इसका विरोध भी किया गया। इसे ढेढ़ व चमारों का स्कूल कहा गया । इसके संचालकों को अधार्मिक कहा गया । वह समय ही ऐसा था जब संध्या हवन करना लोगों को रुचता नहीं था । इस संस्था की जो प्रथम सप्तवर्षीय रिपोर्ट छपी है. उसमें कहा गया है कि वैदिक शिक्षा अर्थात् संध्या, हवन से यहाँ के लोग बहुत चिढ़ते हैं । जब स्थानीय सेठों को यह पता लगता है कि उनके बच्चों को गायत्री आदि वेद-मंत्र सिखाये जाते हैं तो वह अपने लड़कों को इस स्कूल में पढने से रोक लेते हैं। बात यही तक सीमित नही रही थी । लोगों ने राज में भी पुकार की और राज ने भी वैदिक धर्म को न बढ़ने देने के लिये अपना एक समानान्तर मिडिल स्कूल खोल दिया। प्रचार किया जाने लगा कि राज्य के स्कूल में पढे हुये लड़कों को नौकरियाँ मिलना सुलभ रहेगा । और छात्र-वृत्तियाँ भी इस स्कूल में मिलेंगी । यह एक आघात था किन्तु इसे भी इस संस्था के कर्णधारों ने बड़े धैर्य के साथ सहन किया । और न केवल वे अपने स्कूल में छात्र संख्या बढ़ाने में ही प्रयत्नशील रहे अपितु इस मिडिल स्कूल के अधीनस्थ गोलूवाला, मटीली मन्डी, घूमड़ वाली इ

प्रायमरी पाठशालायें और आरम्भ कर दीं। इस प्रकार के तेरह स्कूलों की स्थापना हुई जिनमें कुलार जिला फीरोजपुर और हरिजन पाठशाला तथा कन्या पाठशाला चौटाला जिला हिसार थी। जिनमें सन् १९२५ में १२७ विद्यार्थी दाखिल हो चुके थे।

संगरिया जाट स्कूल की अपनी इमारते बनवाने के लिये दस हजार रुपये की अपील निकाली गई थी किन्तु अकाल के पड़ जाने से जब यह धन राशि दो वर्षों में भी इकट्ठी नहीं हुई तो चौधरी बहादुरसिंह जी ने आमरण अनशन कर दिया। इसपर न केवल बीकानेर अपितु हरियाना और मालवा (पंजाब) तक के लोगों में तहलका मच गया। और मार्च सन् १९२१ में हरियाना के प्रसिद्ध जमीदार नेता चौ० छोटूराम के सभापतित्व में वार्षिकोत्सव करके इस राशि से भी अधिक धन जमा हो गया। यह कह देना उचित होगा कि हरियाना के लोगों विशेषतः चौधरी छोटूराम, चौ० लालचन्द, चौ० श्रीचन्द, चौ० हरीराम, चौ० टीकाराम और चौ० शादीराम का पूर्ण सहयोग रहा।

इस स्कूल के पानी के कष्ट को दानवीर चौधरी सेठ सर छाजूराम जी ने दस हजार रुपये जल कूपों के निर्माण के लिये देकर दूर किया। उनके दान की स्मृति यहां का प्राण सरोवर नामक कुंड कराता है जिसमें बरसाती पानी भर कर काम चलाया जाता था।

इस शिक्षा संस्था के लिये आरम्भ में जो इमारत बनी थी। उसका नाम आजकल आर्यकुमार आश्रम है। विद्यापीठ में ठाकुर गोपालसिंह मार्ग से घुसने पर यह इमारत बायें हाथ की ओर पड़ती है। इसका दक्षिणी भाग स्कूल के काम में आता है। पच्छिमी तथा उत्तरी भाग में छात्रावास था, जहाँ बीच में इस समय दर्जी विभाग है। वहाँ रसोई घर था। बीच के द्वार के दक्षिण भाग में पानी की कोठरी थी जिसमें जमीन के अन्दर ईंटों की टंकी बनी हुई थी। उत्तर और पच्छिम की वैरिकें छात्रावास का काम देती थीं। साथ में ही पुस्तकालय और औषधालय थे। कुछ अध्यापक भी यहीं रहते थे।

यह जो कुछ था चौधरी बहादुर, चौ० हरिश्चन्द्र, बाबा मनसानाथ और चौ० जीवनराम आदि के प्रयासों का फल था। जनता की सहानुभूति इस स्कूल से उतरोतर बढ़ती ही गई। क्योंकि सन् १९१८ में जहाँ स्कूल को कुल चार हजार एक सौ बारह रुपये नौ आने प्राप्त हुये। वहाँ सन् १९१९ में छः हजार छः सौ आठ रुपये साढ़े ग्यारह आने प्राप्त हुये और इस प्रकार प्रति वर्ष आय में व्यय के अनुसार वृद्धि ही होती रही जो सन् १९२४ में बारह हजार पाँच सौ छत्तीस रुपये पर पहुँच गई। इस बीच में देहातों में जहाँ शाखा पाठशालायें खोली गई वहाँ संगरिया स्कूल में पुस्तकालय, औषधालय और गौशाला जैसी प्रवृत्तियाँ चालू की गईं। यह ध्यान देने की बात

है कि सन् १९१७ से १९२८ के बीच शिक्षा-दीक्षा के खयाल से बीकानेर के शिक्षाविभाग द्वारा इसे मान्यता तो थी किन्तु अनुदान कुछ भी नहीं दिया गया। चौ० बहादुरसिंह जी संस्था के लिये अपना जीवन दान दे चुके थे। जिस दिन से उन्होंने कार्य आरम्भ किया जीवन भर करते रहे। उनके लगाये इस पौधे ने अभी साड़े सात साल ही पूरे किये थे कि पहली जून सन् १९२४ को उनका देहान्त हो गया। यह धक्का वास्तव में पिछले समस्त धक्कों से तगड़ा धक्का था। नाव डूबना ही चाहती थी कि चौधरी हरिश्चन्द्र जी वकील ने इलाके के अन्य सरदारों के सहयोग से इस संस्था को डूबने से बचा लिया।

यह जमाना बडा भयंकर था। आये दिन अकाल पड़ते थे और बीकानेर सरकार इसे अपने लिये खतरनाक शत्रु मानती थी। कुछ सहूलियतें इस संस्था को रिड़कन साहब के रेवन्यू मिनिस्टर बनने पर अवश्य मिली थीं।

सन् १९३२ ई० में इस संस्था का भार स्वामी केशवानंदजी ने संभाल लिया और इन तीस वर्षों में जो उन्नति उन्होंने कर दी है वह आश्चर्य जनक है इस समय यहां कृषि कालेज है और अनेकों सांस्कृतिक प्रगतियों की यह संस्था केन्द्रबिन्दु है। राजस्थान में आज इसका वही स्थान है जो किसी समय तक्षशिला का था।

यों तो चौधरी हरिश्चन्द्रजी ने सन् १९१८ से ही इसको उन्नति करने में योग दिया और अब तक देते रहे हैं

सन् १९२८ से १९३२ तक सात वर्ष तक वे अकेले ही चलते रहे। पूर्ण भार उन्हीं पर रहा यों तो—चौ० जीवन रामजी दीनगढ, चौ० हरजीरामजी मलौट, चौ० सरदारा रामजी चौटाला, चौ० शिवकरणसिंहजी, चौटाला, चौ० हरिरामजी गोदरा, चौ० मनीरामजी सियाग, चौ० गंगा रामजी ढाका, चौ० सरदारारामजी दीनगढ़ और सरदार उत्तमसिंह जी विडग उनके सहायक रहे किन्तु ग्रामों में घूमने फिरने, संस्था में बालकों की देखरेख करने अध्यापकों के सम्पर्क में रहने आदि की पूरी जिम्मेदारी चौधरी हरिश्चन्द्रजी पर रही। खर्च के लिये पैसे की कभी कमी नहीं सदैव ही तंगी रहती थी उसपर निम्न पत्र प्रकाश डालते हैं जो चौधरी हरिश्चन्द्र जी को अध्यापकों, सहायकों, तथा शुभचिन्तकों ने लिखे थे :—

माननीय चौधरी साहब,

इधर आपका कई दिन से कोई समाचार नहीं मिला। हम जानते हैं या तो आप सुदूर की यात्रा से वापिस नहीं हुये होंगे अथवा खाली हाथ लौटे होंगे। अकाल की स्थिति ने स्कूल की अवस्था को डांवाडोल कर रक्खा है। अध्यापकों के कई महीने के वेतन नहीं दिये गये हैं। ज्यों ज्यों समय बीतता जारहा है अध्यापकवर्ग में बेचैनी और उदासीनता बढ़ती जा रही है। कुछ छात्र भी जो अधिक गरीब हैं सहायता के इच्छुक हैं। आप एक बार अवश्य ही और शीघ्र ही स्कूल में पधारने का कष्ट करें और यदि दूसरी

जगह से रुपये का प्रबन्ध नहीं हो सका हो तो चौधरी शिवकरणसिंहजी से ही रुपये उधार लेकर यहां शांति का वातावरण पैदा करे।

८ जौलाई १९२७ आपका गिरवरसिंह

× × × ×

प्रिय चौधरी जी,

संगरिया के लिये कुछ रुपया गंगा नगर के आस पास से ही हो सके तो मैं भी उधर आने को तयार हूँ। मैं संगरिया गया था। प्रधान अध्यापक चौ० गिरवरसिंह जी भी घबरा उठे हैं। अध्यापकों के वेतन का शीघ्र ही प्रबन्ध होना चाहिये। गंगानगर के आस पास के नहरी गाँवों में से कुछ चन्दा हो सकता है प्रयत्न तो आप कर ही रहे होंगे। आपके ऊपर जो बोझ है और संभालने की जो आप भरसक चेष्टा कर रहे है वह प्रशंसनीय है। इस समय मेरे पास भी पैसे की कमी है वरना मैं ही कुछ रुपया गिरवरसिंह जी को दे देता। आपका साथी

जीवनसिंह

× × × ×

श्रीमान मान्यवर चौ० हरिश्चन्द्र जी,

आपको मालुम ही होगा स्कूल की इस समय अति दयनीय दशा हो गई है। आप जैसे जाति हितैषीयों के होते हुये यदि यह जातीय स्कूल इस प्रकार नष्ट हो जावेगा तो

हमारी जाति के लिये कितने दुर्भाग्य की वात होगी। सो अव आप से मेरी यह करवद्ध प्रार्थना है कि एक वार फिर इस डूवती नाव को उभारें। अधिक क्या लिखूं।

आपका शुभचिन्तक
नुकरो १९-११-३० वीरवलसिंह सहारण

× × × ×

प्यारे चौधरी जी,

मैंने वातचीत की है एक अपनी ही जाति के गेज्यूएट है, उदासी संत जाट है। वे केवल निर्वाह मात्र पर सेवा करने को तयार है। आप चाहें तो उनसे पत्र व्यवहार करले। आप सच्चे और सेवा भावी हैं। जाट स्कूल संगरिया की फाइनेन्सल हालत डाँवाडोल होने से हम सव को चिन्ता है, आप हमारे कर्णधार हैं, इस नाव के खेवन हार हैं। इधर पंजाव में जाटों ने कई शिक्षा संस्थायें कायम की हैं। उनकी हालत वरावर अच्छी होती जा रही है। मेरे लायक कोई सेवा हो तो लिखें।

आपका अपना
नारायणसिंह भाटी
किलियाँवाली जि० हिसार

× × × ×

माननीय चौधरी जी,

वरसात ऊपर से आ रही है। छतें कुछ कमजोर हैं। कहीं-कहीं दीवार भी टूटी फूटी सी दिखाई देती हैं। वरसात

आने से पहले इनकी मरम्मत हो जाना आवश्यक हैं आपने जो रुपये मई के महीने में भेजे थे। उनसे स्कूल का ऐसा आवश्यक सामान खरीद लिया है जो विद्यार्थियों के काम आ सके। इधर विरोधी लोग अफवाह फैला रहे हैं कि जाट स्कूल चल नहीं सकता किन्तु आप जब तक इसकी नैया को खे रहे है। हमें अधिक चिन्ता नहीं है आप पत्र शीघ्र डाला करे।

आपका प्रेमी
१५ जून १९२८ गिरवरसिंह

× × × ×

डायरी से

आज चौधरी जीवन राम जी श्री मवासीनाथ जी के साथ हनुमानगढ़ होते हुये आये थे। जाट स्कूल संगरिया के लिये चन्दा करना है। म्यूनिस्पल वोर्ड वालों ने मना कर दिया। ११-११-२८

× × × ×

अभी हमारे लोगों में अपनी उन्नति के कामों के लिये भी इतनी लग्न नहीं है जितनी दूसरी जातियों के लोगों में है। अगर लग्न होती तो एक स्कूल का चलाना क्या वड़ी वात थी।

× × × ×

बीकानेर के जो मेरे मित्र हैं उनको पत्र लिख रहा हूं इस समय कुछ सहायता वे दें तो श्रावणी की फसल पकड़ ली जाय।

× × × ×

खींवाराम आया था कह रहा था एक बड़ा मौसर है सीरा घाला जायगा। दूर दूर के लोग आवेंगे। मैंने उनसे कहा, तुम लोग फिजूल खर्चियों को वन्द करके अगर अपने जाट स्कूल में धन देते रहो तो जाति के बालक पढ़ लिख जावे न। ज्ञानीराम जी के साथ संगरिया गया कन्या पाठशाला में ३९ में से ३६ लड़कियाँ पढ़ती हुई पाई गई ५-१-२८

× × × ×

......जाट मोटा है। पहले तो ऊंट पर चला फिर आठ मील पैदल चल कर पहुंचा। मैंने कहा चौधरी संगरिया स्कूल के लिये कुछ चन्दा दो। बोला चौधरी थे तो वावला होय रस्यो है। पानी नहीं वरस्यो तो चंदा तारे सब एक साथ दीख जांयलै।"

× × × ×

अदालतों में इनकी पूछ नहीं। क्लर्क और चपरासी तक इनसे अच्छी तरह पेश नहीं आते। पटवारी लोग चाहे जैसे इन्द्राज करके इन्हें लूटते हैं फिर भी इनके दिलों में अपने टावरों को पढ़ा लिखा कर योग्य वनाने की लगन नहीं है। हजारों गाँव यहाँ जाटों के हैं। ये चाहें तो एक नहीं दस स्कूल चला सकते है। पदमपुर में 'मुहम्मद उमर कानूनगो से चंदा मांगा तो इसने कहा यह स्कूल तो हमारा दुश्मन है। अव तक नौकरियां हमें मिलती थीं अव तुम्हें मिलेंगी। १४-१-१९३०

पल्टनों में जो जाट चले गये हैं। परदेश में घूमने से उनके दिलों में तो जातीय प्रेम उत्पन्न हुआ है। उन्होंने तो अपने इस स्कूल की अच्छी सहायता की है। कुछ भी हो मुझे तो इसे चलाना ही है। "साधियाम् या पातियाम" का सिद्धान्त मेरा संबल है।

बीकानेर १२-२-४०

× × × ×

श्रीमान चौधरी हरिश्चन्द्र जी,

एक बात आपको आज बहुत गोपनीय लिखता हूँ आपके स्कूल का नाम जाट स्कूल है। ......यदि जाट स्कूल के बदले कोई और सार्वजनिक नाम रख दे तो...... आपको ग्रान्ट आदि की अधिक सहायता प्राप्त हो सकती है।

भवदीय
रामगोपाल मोहता।

वर्षों की मिहनत से जाट स्कूल संगरिया को इस स्थिति पर लाया जा सका था कि वह अपने पैरों पर खड़ा हो चुका था। ऐसे समय में राज्याधिकारियों की दृष्टि उस पर गई वे उसे स्वतंत्र देखना नहीं चाहते थे अतः ग्रान्ट बढ़ाने के प्रलोभन से श्री मोहता द्वारा चौधरी हरिश्चन्द्र जी को यह बात कहलवाई। चौधरी साहब लिखते हैं कि मुझे इस चिट्ठी को पढ़कर गुस्सा तो इतना आया कि फाड़कर फेंक दूं किन्तु यह सोच कर कि मोहता सा० का इसमें क्या दोष है पत्र को फाड़ा नहीं।

उन्होंने जाट जाति के दो महान् नेताओं चौ० लालचंद जी और चौ० छोटूराम जी को पत्र लिख कर राय मांगी। उन दोनों ही नेताओं ने स्कूल के साथ से जाट नाम को निकालना मुनासिब नहीं समझा इससे चौधरी हरिश्चन्द्र जी को संतोष हुआ।

चौ० लालचंद जी ने लिखा था कि अगर बीकानेर सरकार एक मुस्त एक लाख रुपया देने को तयार हो तो स्कूल का नाम महाराजा गंगासिंह जाट स्कूल संगरिया रक्खा जा सकता है। जाट शब्द हर हालत में स्कूल के नाम के साथ रहेगा।

चौ० छोटूराम जी ने लिखा था—यह जानने की कोशिश कीजिये कि महाराजा गंगासिंह जी अपना नाम जाट स्कूल के साथ रखाने का इच्छुक हैं क्या? यदि ऐसा हो तो उनका नाम जोड़ा जा सकता है।

महाराजा गंगासिंह जी के जमाने में फिर यह सवाल कभी नहीं उठा। हां, महाराज सादुलसिंह के समय में जब कि उनके यहां लोकप्रिय मंत्रिमंडल बन गया फिर यह प्रश्न सामने आया। उस समय भी चौ० हरिश्चन्द्र जी नाम बदलने के विरुद्ध रहे किन्तु स्वामी केशवानंद जी की दूरदर्शिता पूर्ण इस सुझाव को मान लिया गया कि संस्था का नाम ग्रामोत्थान विद्यापीठ रख दिया जाय।

आर्य समाज से सम्बन्ध

एक वार महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने लिखा था कि "महाभारत के पश्चात भारतवर्ष में महात्मा वुद्ध और स्वामी दयानन्द दो महापुरुष पैदा हुये हैं। ऋषि दयानन्द का जन्म सन् १८२४ ई० में हुआ था। गदर के समय वे पूर्ण युवा थे। गदर अथवा १८५७ की स्वतन्त्रता की लड़ाई के मुख्य संचालक धोंदूपन्त नाना जी से उन्होंने विठूर में मुलाकात भी की थी। नाना जी के महल के पास उनके सुरम्य उद्यान में एक गुरुकुल चलता था। उस गुरुकुल के मुख्य विद्यार्थी स्वयम् नाना साहव, छवीली वाई जो पीछे झांसी की महारानी वनी। तांत्याटोपे, आदि थे। इस गुरुकुल के संचालक थे द्वितीय वाजीराव पेशवा, नाना साहव के पिता।

पेशवा वाजीराव से अंग्रेजों ने छलपूर्वक पूना का मराठा राज्य छीन लिया था और आठ लाख सालाना की पेन्शन पर महाराष्ट्र से दूर कानपुर के पास विठूर में उन्हें रख दिया था। उनकी साध अपने खोये हुए राज्य को पुनः वापिस लेने की थी। वे अंग्रेजों से वदला लेना चाहते थे। वे यह भी सोचते थे कि यदि उनके जीवन काल में उनका इरादा पूरा न हो तो भी अंग्रेजों को भारत से निकालने की

उत्कट भावना का अंत न हो, इसलिए अपने दत्तक पुत्र और आश्रित मराठा परिवारों के होनहार बच्चों के लिये वे एक छोटा सा गुरुकुल चलाते थे। जिसमें महाभारत गीता, दुर्गामहात्म आदि की धार्मिक एवं वीरतापूर्ण कथाओं का श्रवण और पठन होता था तथा मुग्दर गदका आदि से व्यायाम कराया जाता था। इसके अलावा शस्त्र संचालन और घुड़सवारी का प्रशिक्षण दिया जाता था। गुजराती साधु ऋषिदयानन्द को मराठा ब्राह्मण का यह प्रयास अच्छा लगा और उसने भी हृदय में दृढ़ प्रतिज्ञा भारत को विदेशी सत्ता से मुक्त कराने की लेली। ऋषि दयानंद ने नाना साहब के संचालित किये हुये सन् १८५७ के विद्रोह को विफल होते हुए भी देखा था। उन्होंने यह भी देखा था कि बादशाह बहादुरशाह, युवक अजीमुल्ला, नाना साहब, राजा नाहरसिंह और वीर तुलाराम के विद्रोह के दिनों में हिन्दू-मुस्लिम एकता बनाये रखने के प्रयत्न अंग्रेजों द्वारा बहकाये हुये दिल्ली के मुल्लाओं तथा मुस्लिम अगुआओं ने किस भाँति विफल कर दिये थे।

ऋषि दयानन्द तथ्यों से आंख मिचौनी करने वाले मानव नहीं थे। उन्होंने जानलिया था कि असंगठित हिन्दू समाज सदा पद दलित रहेगा। भारत में अनेकों सम्प्रदाय जिनकी अलग-अलग पूजा विधियाँ हैं अलग-अलग देवी देवता हैं अलग-अलग उनकी धर्म पुस्तकें हैं। उन्होंने एक रूपरेखा अपने दिमाग में तैयार की। वह यह कि सारे

भारतवासियों का एक धर्म हो, एक धर्म पुस्तक हो, एक समाज हो। और सबका एक ही धर्म वेद-प्रतिपादित धर्म (वैदिक धर्म) ही हो सकता है। वेद ही धर्मपुस्तक हो सकती है। ईश्वर ही एक आराध्य देव हो सकता है। सबकी एक ही जाति आर्य जाति ही कहला सकती है। सब एक ही समाज आर्य-समाज में गठित हो सकते है। इसी हेतु उन्होंने आर्य-समाज की स्थापना की। शनैः शनैः आर्य समाज सारे भारत में फैलती गई। इसका जितना ही विरोध हुआ उतना ही प्रचार और प्रसार भी हुआ।

स्वामी दयानन्द और उनके अनुयायियों के तर्कों के सामने, मौलवी, मुल्ला, पंडित पाधे और पादरी सभी घबरा उठे। कुछ कम बुद्धि के लोग कहने लगे। आर्य समाजी जादूगर होते है इनसे बचना चाहिये। हमारे चरित नायक हरिश्चन्द्र जी भी कुछ समय तक इनसे बचते ही रहे। विद्यार्थी काल में सनातन धर्म सभा के खजांची और अध्यक्ष रहे किन्तु उस समय भी वे यह अवश्य महसूस करते थे कि मुसलमान और सिक्खों के सामने सनातनी लोग कतराते हैं इनसे और पादरियों से भी कोई बाजी मारते हैं तो वे आर्य समाजी ही है।

स्वलिखित जीवनी में चौधरी साहब ने लिखा है—"२१–७–१६१३ को मैंने आर्यसमाज बीकानेर का प्रवेश पत्र भर दिया और जब तक उसका सदस्य रहा, बराबर मासिक चन्दा देता रहा। उन दिनों बीकानेर आर्य समाज

का भवन वन रहा था । उसके लिये भी सहायता दी। २५–२–१५ को यहाँ की आर्य समाज से नाम कटा लिया और रामनगर (अब गंगानगर) का ४–१–१९२१ को सदस्य वन गया। तब से अब तक उसका सदस्य चला आता हूँ। रामनगर आने पर भी बीकानेर आर्य समाज के भवन के लिये सहायता भेजता रहा। संध्या मेरा नित का धंधा है और हवन विशेष अवसरों पर करता हूँ स्वाध्याय का मुझे इतना शौक लगा है कि बिना पुस्तकें और अखबार पढ़े चैन नहीं पड़ता। अबतक ३०००) रुपये के अखबार व पुस्तकें खरीद चुका हूँ।" वे वर्षों तक रामनगर (गंगानगर) आर्य समाज के पदाधिकारी रहे हैं। श्री रामसिंह से उन्होंने आर्य समाज के लिये मकान खरीदा और उन्होंने ही रामनगर की कन्या पाठशाला के बीकानेर की कौंसिल से जगह प्राप्त की।

मिर्जावाली से १५-१०-१९२० ई० को तहसील का हेड्क्वाटर उठकर रामनगर आ गया था तभी कन्या पाठशाला की नींव डाल दी गई। और पन्द्रह वर्ष तक चौधरी साहब ने धढ़ल्ले से उसकी उन्नति की। फिर जब गवर्मेन्ट ने यहाँ कन्या पाठशाला खोल दी। वह लाला ईश्वरदास जी तहसीलदार व रामलाल हेड मास्टर को पट्टा, तमसुक और नगदी के साथ सौंप दी।

कन्या पाठशाला की स्थापना के सम्बन्ध में चौधरी साहब ने अपने उद्गार इस भांति प्रकट किये हैं—"आर्य

समाज की ही यह भी एक देन है। उसीने हमें बताया कि प्रत्येक मनुष्य सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझे। हम लोगों ने जब देखा कि पुरुषों की उन्नति के लिये तो राज के भी स्कूल हैं। प्राइवेट भी प्रबन्ध है। स्त्रियों की शिक्षा के लिये कुछ भी प्रबन्ध नहीं है। यह देश के लिये अर्द्धांग रोग है। बिना स्त्रियों की शिक्षा के पूर्णांग उन्नति कहाँ। रामनगर के प्रमुख लोगों और राज कर्मचरियों का सहयोग प्राप्त करके १६२० ई० में रामनगर में कन्या पाठशाला की स्थापना कर दी गई। मुझे उसकी संचालन कमेटी का मन्त्री बनाया गया। पहले तो मन्दिर के पुजारी के मकान में कन्या पाठशाला चलती रही, फिर राज से पट्टे पर जमीन लेकर निज का मकान बनवा लिया। आज तक जिन-जिन संस्थाओं में मैंने काम किया है। उनमें पैसा शायद ही कभी जमा हुआ हो, हाँ, काम रुका नहीं। काम होता रहा, पैसा देर अबेर आता रहा। इस संस्था को चलाने के लिये अर्थ संग्रह के कई तरीके काम में लिये। मासिक चन्दा लेकर। एक मुफ्त दान प्राप्त करके। घरों के अन्दर घड़े रखकर अन्न व आटे की चुटकियाँ डलवा कर और जब नहर आने के समाचार से दुकानें बढ़ीं तो अनाज की बिक्री पर कुछ छटाँक अन्न लेकर। इस भाँति हमने काम चलाया।

मकान तब तक रामनगर में कच्चे ही थे। आर्य कन्या पाठशाला का मकान भी कच्चा ही था। बरसात के दिनों

में मुझे उसकी छत पर चढ़कर चू जाने से बचाने को खड़ा रहना पड़ता था। अजीब मुहब्वत थी पाठशाला के मकान से कि अपने घर की छत की बजाय पाठशाला की छत पर भीगता रहता था।

अध्यापिकाओं का वेतन बीस रुपया मासिक से चालीस रुपया मासिक तक दिया गया। पढ़ने वाली लड़कियों की भी तादाद बढ़ी किन्तु जी तोड़कर काम करने वाली अध्यापिकाओं का सदा अभाव रहा। जब काम बढ़ने लग। तो फूट भी पैदा होने लगी। जिससे मेरा मन खट्टा हो गया। काम तो मैं खूब कर सकता हूँ किन्तु उखाड़ पछाड़ न तो मुझसे आती है और न उसे मैं पसन्द करता हूँ। उस जमाने में जबकि पैसे का अभाव था साढ़े चार हजार रुपया इकट्ठा करके इस काम को सफल बनाया।

गंगनहर के आने से आबादी भी बढ़ने लगी किन्तु इतनी नहीं कि यहां दो दो पाठशालायें चलती रहें, जब राज की ओर से एक कन्या पाठशाला कायम हुई तो मैंने अपने साथियों से कहा, मुझे काम करते हुये पन्द्रह वर्ष हो गये हैं। थक चुका हूँ अब इसी पाठशाला को राज के हाथ दे दिया जाय। उन दिनों के तहसीलदार साहब लाला ईश्वरदास जी हमारी पाठशाला के प्रधान थे और उन्ही के हाथ में राज की पाठशाला का प्रबन्ध होना था। इसलिये मैंने उनको चार्ज संभाल दिया।"

अपनी डायरियों में पाठशाला के लिये अच्छी

अध्यापिकाओं का मिलना उन दिनों कितना मुशकिल था। इस पर चौधरी जी ने प्रकाश डाला है। "उनदिनों बीकानेर राज तो क्या सारे राजस्थान में ही पढ़ी लिखी स्त्रियों का अभाव था और जो पढ़ी लिखी थीं भी वे अपने परिवार से अलग परदेश में रहने से हिचकिचाती थीं। जो हिम्मत करके आ जाती थी उनमें से कुछ के पीछ गुंड़ों के लगने का खतरा रहता था। इसलिये उनकी रक्षा की जिम्मेदारी भी संचालकों पर रहती थी।

इन सभी परिस्थितियों में चौधरी साहब ने बड़ी खूबी के साथ कन्या पाठशाला का संचालन किया। उसकी कीर्ति में कोई धब्बा आने से वंचित रखा"।

अध्यापिकाओं के सम्बन्ध में उनकी डायरियों में नोट जो है उनमें से दो को का उल्लेख यहाँ किया जाता है–"आगरे से जो अध्यापिका आई। उससे मुझे निराशा ही हुई। वह पान बहुत खाती है। उसके साथ उसकी छोटी बहिन भी है"। २-३-१९२९

"कन्या पाठशाला की भूतपूर्व अध्यापिका आये दिन बीकानेर जाती थी। उससे कहा गया। जल्दी-जल्दी मत जाया करो तो उसने एक दिन बहाना ढूंढ़ा कि छत पर कोई चढ़ आया था। वह अब की गंगानगर से लौटी तो स्तीफा दे दिया कहा कि मुझे अजमेर में अच्छी जगह मिल गई है। उसे रहने को समझाया भी किन्तु नहीं रुकी"।

विधायक-रूप में : चौ॰ हरिश्चन्द्र

चौधरी हरिश्चन्द्र जी बहुउद्देश्यीय पुरुषों में से हैं। समाज सुधारक, नेता, कार्यकर्ता, विचारक और विधायक उनके टाइटिल हो सकते हैं। इस अध्याय में हम उनके विधायक के तौर पर किये गये जनहितकार्यों का उल्लेख करना चाहते हैं।

दिनाङ्क १-१२-१९२९ ई॰ को पत्र संख्या ८३८ के द्वारा बीकानेर की लेजिस्लेटिव असेम्बली के सेक्रेटरी ने उन्हें सूचित किया "आप कास्तकारान की ओर से राजसभा के मेम्बर नामजद किये गये हैं। राजसभा का सैशन १३ दिसम्बर से आरंभ होगा। आप प्रश्न और प्रस्ताव यदि भेज सकें तो १० दिसम्बर तक भेजने का कष्ट करें। राज सभा के कायदे कानूनों की एक प्रति भी इस पत्र के साथ भेज रहा हूं"।

इस आदेश पर चौधरी हरिश्चन्द्र जी ने आश्चर्य प्रकट करते हुए लिखा है कि :—"आज तक मैं यह नहीं जान सका कि कास्तकारों की ओर से प्रतिनिधि नामजद करने के लिये मेरा नाम किसने सुझाया। मेरा ध्यान अपनी कार गुजारियों की ओर जब जाता है तो सोचता हूं कि मैंने राजाधिकारियों की तो कोई ऐसी सेवा की नहीं

विधायक की पोशाक में
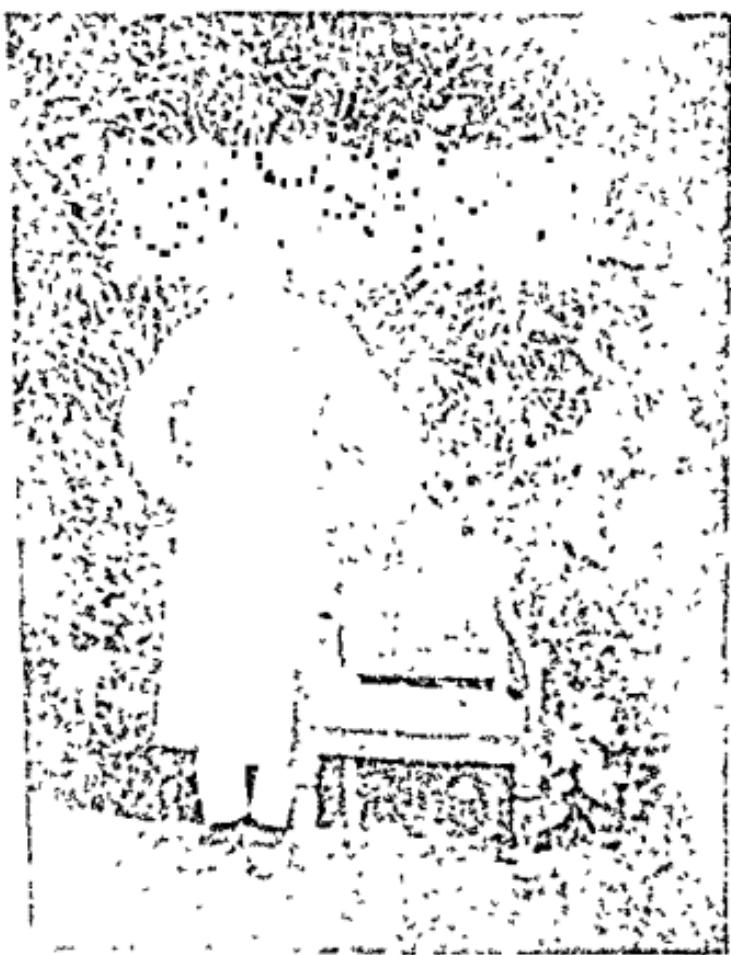
चौधरी हरिश्चन्द्र जी बीकानेर की राज-सभा में।

जिससे प्रसन्न होकर मेरे नाम की दरबार बीकानेर से शिफारिस कर दी हो। इस सम्बन्ध में मेरे दो ख्याल हैं। एक यह कि गंगनहर के उद्घाटन अवसर पर जो कि सन् १९२७ ई० में २५ से २८ अक्टूबर तक गंगानगर में हुआ था। मैंने एक मानपत्र महाराजा सा० श्री गंगासिंह जी को पुरानी आबादी के लोगों की ओर से पढ़ा था उस पर प्रसन्न होकर महाराज साहब ने मेरी पीठ भी थपथपाई थी। दूसरा खयाल यह है कि अंग्रेज बहुत दूर की सोचते हैं। आजकल रेवन्यू मिनिस्टर श्री० रिड़कन सा० एक अंग्रेज हैं उन्होंने सोचा हो कि हरिश्चन्द्र किसानों के दुख दर्द के नाम पर सरकारी अधिकारियों की प्रायः आलोचना किया करता है। इसे असेम्बली का मेम्बर बनाकर गुलामी का यह तौक उसके गले में डाल दिया जाय। कुछ भी हो मैंने बारह साल तक किसानों के हित की बातें असेम्बली की बैठकों में बराबर--अपने तरीकों से--रक्खीं।"

चौधरी साहब ने मानपत्र जो महाराज गंगासिंह जी की प्रशस्ति में पढ़ा था। उसकी भी एक कहानी है जो उन्हीं की जबानी इस प्रकार है:--"गंगनहर के आने से नये आबाद होने वाले लोगों में उत्साह था उन्होंने महाराजा साहब के स्वागत के लिये बड़ी जोरदार तयारियां पुराने आबादकार उदासीन थे। बयास सीताराम ने जोकि उन दिनों रेवन्यू कमिश्नर थे चौधरी

को बुलाकर कहा, हमारी इज्ज़त रखो। उनके प्रेमपूर्ण आग्रह को नहीं टाला गया।"

चौधरी साहब ने इस सैसन में जवाब पाने के लिये बारह प्रश्न भेजे। जिनमें औसरों की फिजूलखर्ची रोकने के लिये सरकार द्वारा कोई कानून बनाने की सम्भावना, दखलयाबी और बेदखालियों की कठिनाइयों को दूर करने के सरकारी इरादे जानने, जजों की नियुक्ति सम्बन्धी योग्यताओं की जानकारी प्राप्त करने, जाट स्कूल संगरिया को ग्रान्ट न दिये जाने के कारणों पर प्रकाश डालने आदि से सम्बन्धित थे।

इन प्रश्नों पर बीकानेर के तत्कालीन प्राइम मिनिस्टर और राज सभा के प्रेसीडेन्ट सर मनुभाई मेहता ने इन शब्दों में चौधरी साहब की प्रशंसा की थी—"चौधरी हरिश्चन्द्र ने १२ प्रश्न पूछे हैं। उनकी जिज्ञासा और उत्सुकता के भाव पर मैं उन्हें बधाई देता हूँ। आपके बहुत से सवालों का उद्देश्य सामाजिक सुधारों को उन्नत बनाना है। और कुछ का उद्देश्य यह है कि ग्रामों में शिक्षा का और अधिक प्रचार किया जाय। राष्ट्र निर्माण के लिये यह सब उचित उपाय हैं।"

इस अधिवेशन में उनकी अनमेल विवाह, बाल रक्षा कानून और बजट पर तीन स्पीचें हुईं। जो तीनों ही उनके हृदय के भावों की सच्ची झाँकी कराती है। उन्होंने अनमेल

एवं वाल विवाह कानून में एक उपसंशोधन पेश करते हुये कहा था।

"हिन्दू विवाह एक्ट में धारा ६ की मंशा वृद्धविवाह पर कुछ रुकावट डालने की है। लेकिन इससे रुकावट कुछ भी नही होती। इनमें ४५ साल से ऊपर की उम्र वाले पुरुप और १४ वर्ष से कम उम्र वाली लड़की से विवाह करने पर लड़की के माँ, वाप के लिये सजा रक्खी गई है। परन्तु ४५ वर्ष की उम्र में २,४ वर्ष का गोल माल हो जाना कोई वड़ी वात नहीं है। ४५,५० साल का मद और १३,१४ साल की लड़की। यह विल्कुल अनमेल विवाह है। विवाह क्या ऊंट के गले में वकरी का वाध देना है। ऐसे विवाहो से लड़की के सुख का तो खयाल ही वेकार है किन्तु मर्दों को भी सुख नहीं हो सकता। न्याय की दृप्टि से ऐसे अनमेल विवाहों से अवोध वच्चियो के जीवन नप्ट होते हैं और इनकी रक्षा का भार राज्य के ऊपर है। वूढ़ों के साथ विवाह होने पर लड़कियों को जो जीवन भर कप्ट उठाना पड़ता है उसका अनुमान लगाना कठिन है। मैं पुरुपों से पूछना चाहता हूँ कि किसी सोलह वर्ष के लड़के को ३५ वर्ष की स्त्री से शादी करने को कहा जाय तो वह लड़का क्या कहेगा? मैं इन अवलाओं की दुर्दशा का वर्णन कहाँ तक करूँ। एक ओर २-२,४-४ साल की लड़कियाँ विधवा वनी वैठी हैं। दूसरी ओर वूढ़ी-वूढ़ी स्त्रियाँ कुंआरी वैठी हैं। मुझे अभी वताया गया है कि एक

महाजन की २५ साल की लड़की इसलिये कुंआरी बैठी है कि उसके बदले में मां, बाप अपने दो लड़कों की शादी करना चाहते हैं। इसलिये मैंने संशोधन पेश किया है कि ४५ की बजाय अधिक से अधिक ३५ वर्ष रखे जावें"।

कहना नहीं होगा कि चौधरी हरिश्चन्द्र जी के इस मामूली सुझाव का भी घनघोर विरोध उस समय के उनके साथी मेम्बरों में से अनेक ने किया। जिनमें सेठ रामरतन दास बागड़ी, मदन गोपाल दम्माणी, आइदान हिसारिया, मेजर महाराजा नारायणसिंह और व्यास रणजीतमल मुख्य थे। चौधरी साहब का यह सुझाव गिर गया।

शाम को उन्होंने अपनी डायरी में इस घटना का जिक्र करते हुये लिखा "इस कौम का भगवान ही मालिक है।"

बाल रक्षा कानून बहस के बाद सिलेक्ट कमेटी के सामने पेश कर दिया गया। उसके प्रस्तावक नारायणसिंह जी तो नहीं चाहते थे किन्तु श्री शिवरतन जी मोहता के प्रस्ताव पर चौधरी साहब भी उस सिलेक्ट कमेटी के मेम्बर बना लिये गये।

बजट पर बोलते हुये चौधरी साहब ने बड़े व्यंगपूर्ण ढंग में कहा था—"मेरी इच्छा थी कि बजट पर कुछ भी नहीं बोलूं किन्तु फिर भी अपने देश की हालत पर विचार करके बोलना ही पड़ता है। पूर्व से पच्छिम और उत्तर से दक्षिण तक के देहातों का मैंने भ्रमण किया है। उनकी

करुण कथायें मेरी उम्र के हिस्से हो गये हैं। श्रीमानों का किन शब्दों में धन्यवाद करूँ जिन्होंने कि छः वर्ष तक इतने लम्बे चौड़े क्षेत्र में जिसमें छः लाख से अधिक देहाती रहते है। पाँच स्कूल प्रति वर्ष खोलने का बजट में प्रावधान किया है। भूखे को जब तक पूर्ण भोजन नहीं मिलता उसकी आत्मा को शान्ति नही मिलती है।

राज सभा में मेरे दो ही उद्देश्य होंगे। स्त्री शिक्षा और ग्राम शिक्षा के लिये उचित सुझाव तजवीजें पेश करके श्री. जी. साहब की प्रजा के इस बड़े हिस्से के साथ उदारता पूर्व्वक खर्च करने की दरख्वास्तें करना।

बीकानेर असेम्बली का अधिवेशन साल भर में एक ही बार होता था। सन् १९३० के अधिवेशन में चौधरी साहब ने सात प्रश्न पूछे। पिछले अधिवेशन में चौधरी हरिश्चन्द्र जी को सबसे अधिक प्रश्न पूछने पर प्राइम मिनिस्टर ने धन्यवाद अदा किया था। इसलिये इस अधिवेशन में प्रायः सभी गैर सरकारी मेम्बरों ने सवाल पूछे।

चौधरी हरिश्चन्द्र जी के प्रश्न और उनके उत्तर इस प्रकार हैं:—

(१)—(क) किस-किस निजामत में कानून विरुद्ध कितने-कितने विवाह हुये ?

(ख) कितने अनमेल विवाह नाजिमों ने समझा बुझाकर रुकवाये ?

(ग) कितनों पर मुकदमा चलाने की शिफारिश नाजिमों ने की ?

(घ) सरकार कितनी मंजूरियाँ मुकदमा चलाने की दीं ?

(ङ) चलाये गये मुकदमों के नतीजे क्या हुये ?

इन सभी महत्वपूर्ण प्रश्नों का उत्तर होम मिनिस्टर महाराज नारायणसिंह जी ने केवल इन दो शब्दों में दिया । "सूचनायें मांगी गई हैं ।"

(२) क्या गवर्मेन्ट के ध्यान में यह बात आई है कि हट्टे कट्टे लोग भी भीख मांगने की ओर प्रवृत हो रहे है ?

इसका उत्तर भी होम मिनिस्टर साहब ने दिया किन्तु हाँ, या, ना, में नही । बल्कि यह कहते हुये कि प्रश्न उमदा और समाज सुधार का है अच्छा हो इस पर गैर सरकारी लोग बिल पेश करें ।

(३) क्या सरकार कोई ऐसी कमेटी नियुक्त करने का इरादा रखती है जो देहात सुधार की स्कीम पेश करें ?

इस प्रश्न का उत्तर महाराजा मानधातासिंह रेवन्यू मिनिस्टर ने 'नहीं' में दिया ।

(४) मंडियों में जो धर्मादे का पैसा संग्रह किया जाता है । उसके सद्उपयोग के लिये सरकार कोई कार्यवाही करने की तयारी कर रही है क्या ?

फाइनेन्स कमिश्नर सालिसवरी ने उत्तर दिया। अभी सरकार की ऐसी नीयत नहीं है।

(५) किसान की पैदावार को कुर्क करने के जो कायदे व तरीके हैं उनसे किसान को बड़ा नुकसान होता है, क्या किसान की सहूलियत के उन कायदों को नरम बनाने की सरकार कृपा करेगी ?

एम० एल० भटनागर ने जो कि कानूनी सलाहकार थे उत्तर दिया अभी इस की जरूरत महसूस नही होती।

(६) जुड़ीशियल अदालतों के अलग होने पर समनों की तामील तहसीलों द्वारा होने में काफी समय लग जाता है। इस दिक्कत को मिटाने के लिये क्या सरकार कोई सहल तरीका अपनायेगी।

उत्तर में कानूनी सलाहकार ने कहा, हां, समन तामील के लिये अलग नजारतें कायम की जारही है।

(७) वकीलों की सहूलियत के लिये क्या जाब्ता फौजदारी का मिलना सुलभ किया जायगा।

हां, किया जायगा ऐसा उत्तर कानूनी सलाहकार ने दिया।

इस अधिवेशन में स्पीचें बहुत ही कम हुईं श्री मेहता साहब प्राइम मिनिस्टर का भाषण अवश्य विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालने वाला था। जिसमें उन्होंने कहा था—"आजकल आन्दोलन का युग है जो हमारे देश के राजनीतिक जीवन के लिये बड़ा नाजुक समय है। हमारे देशी

राज्यों का बृटिश भारत के लोगों के साथ ऐसा घनिष्ट सम्बन्ध है कि ऐसी आशा करना व्यर्थ है कि सीमायें और सीमाओं पर लगे खंभे एक दूसरे के प्रभाव को रोक सकेंगे। राज्यों में हम भले ही बंटे हुये हैं किन्तु हम सब की सामाजिकता एक है। सच्ची बुद्धिमानी इसी में है कि जीवन को पुष्ट करने वाले भावों को, वे चाहे जहां से मिलें ग्रहण कर लेना चाहिये और जीवन को क्षति पहुंचाने वाली बातों को निकाल बाहर फेंकना चाहिये।

एक नये युग के प्रारंभ और नवजीवन के संचार में सहायता देने के लिये अगले महीने से लन्दन में एक कान्फ्रेन्स बुलाई गई है। और श्री जी साहब बहादुर उसमें निमंत्रित किये गये हैं। मुझे भी इस कान्फ्रेन्स में बुलाया गया है.........मैं आजकल जिस नवजीवन का संचार तेजी के साथ होरहा है और जिस नवीन युग का प्रारंभ हमारे देश में हो चला है उसके प्रति देशी राज्यों के क्या भाव हैं। इस सम्बन्ध में फैले हुये कुछ भ्रमों को दूर करने की चेष्टा करूंगा।

एक पब्लिक प्रस्ताव इस अधिवेशन में यह आया कि महाराज कुमारी का कोटे के राजकुमार के साथ अप्रैल में जो विवाह हुआ है उस पर हम हार्दिक प्रसन्नता प्रकट करते हैं।

चौधरी हरिश्चन्द्र जी ने इस प्रस्ताव का सम र्थ

केवक इतने से शब्दों में किया। मैं भी हृदय से इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ।

चौधरी जी जानते थे कि विवाह किसी का हो, 'घर लुटता है किसान का'। बाल रक्षा कानून को सिलेक्ट कमेटी के सुझावों के साथ स्वीकार कर लिया गया। इस कमेटी के एक मेम्बर चौधरी साहब भी थे।

बीकानेर असेम्बली का तीसरा अधिवेशन २७ अप्रेल १९३१ ई० को हुआ। इस वर्ष भी प्राइम मिनिस्टर और राजसभा के अध्यक्ष श्री आनंदशंकर मनुभाई मेहता ही थे। उन्होंने अपने भाषण में पहले उन बातों पर प्रकाश डाला जो नई चेतना से सम्बन्ध रखती है उन्होंने कहा—

"मैं आप लोगों के सामने संघात्मक राज्य के सिद्धान्तों के सम्बन्ध में कुछ कहना चाहता हूँ। बहुतों का ऐसा खयाल है कि देश की तमाम राजनैतिक कारवाइयों का एक मात्र इलाज संघशासन है। मैं आप लोगों को बताना चाहता हूँ कि संघ शासन कोई नया आविष्कार नही है। हिन्दुस्तान में संघ शासन की नींव डालने के बारे में सर्व प्रथम सन् १९१८ ई० में जबकि वृटिश भारत में जनता को स्वराज्य की पहली किस्त दी जा रही थी। यह तजवीज सामने आई। मांटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधारों की रिपोर्ट में लिखा गया था। "भारत में स्वशासन के देने का देशी राज्यों पर भी असर पड़ता है तब आवश्यक यह है कि उन्हें भी इसका भागीदार बनाया जाय और यह तभी

सम्भव है जब कि हम संघ शासन का लक्ष्य अपने सामने रखे" ।...... अगली जो गोलमेज कान्फ्रेन्स होगी उसमें अधिक स्पष्ट तौर से इस पर विचार किया जायगा।

गोलमेज कान्फ्रेन्स में शामिल होने और कुछ ढंग की बातें करने पर तथा अपनी खुशामदाना प्रकृति होने से सेठ रामरतन बागड़ी ने महाराजा श्री गँगासिंह जी को धन्यवाद का प्रस्ताव पेश किया जिसका सभी ने दिल खोल कर समर्थन किया---चौधरी हरिश्चन्द्र जी ने भी समर्थन किया किन्तु ठीक वैसा ही जैसा कि "मारि मारि ससुर गवावत हैं" एक व्रजगीत में आता है। उन्होंने कहा--"मेरे विचार से इस राजसभा के ही नहीं अपितु सारे बीकानेरी प्रजाजन अन्नदाता जी के हैं और अन्नदाता जी हमारे है। जब अपने पराये का भेद ही नहीं तो फिर धन्यवाद और कृतज्ञता की चाह का प्रश्न ही नहीं उठता। पिता पुत्र से अथवा पुत्र पिता से धन्यवाद की आकाँक्षा कब करता है फिर इस धन्यवाद की पुष्टि की क्या आवश्यकता है।...... लेकिन हाँ, गोलमेज में जो कार्य हमारे महाराज ने किया है उसका लाभ सारे देश को होना है। इस स्थिति में महाराज हमारे ही क्या सारे देश के हो गये। इस खुशी में हम अपने महाराज को धन्यवाद दें तो कोई हर्ज भी नहीं है।

प्रस्ताव का विरोध और समर्थन दोनों पर सदन से बाहर निकलने पर कई समझदार लोगों ने चौधरी साहब

की योग्यता को स्वीकार किया। इस वर्ष के बजट पर चौधरी साहब ने जो स्पीच दी वह उनकी मनोव्यथा का खुला चित्र है। उन्होंने कहा—"१९३०-३१ का बजट ......जिन बुद्धिमान मस्तिष्कों की उपज है। उसके प्रति मेरे लिये कुछ कहना कठिन है......इस राजस्वी परिवार में हम किसानों का यही काम है कि हम कमाये ही जायँ और देते रहें। यह पूछना हमारा काम नहीं कि यह खर्च कहाँ होता है"।

चौधरी हरिश्चन्द्र जी के लिये बीकानेर असेम्बली की सदस्यता अनअपेक्षित, अप्रत्याशित और स्वतः टपक पड़ने वाली चीज थी। न तो इसके लिये उन्होंने कोई मांग की थी और न वातावरण ही बनाया था। भाग्य से आ गई। चाह तो वे तहसीलदारी रहे थे। और उसके लिये महाराज भेरोंसिंह जी के भवनों पर एक लम्बा समय विताया भी, वह न मिली। एक छोटी सी सरकारी नौंकरी ही की किन्तु उस पर भी अधिक दिन नहीं टिके क्योंकि अफसरों के आचरण से उन्हें घृणा होगई। वकील हो गये। वकालत भी पानी में कमल की भाँति रहकर निर्लिप्त भाव से की। कर्म किया किन्तु कर्म में आसक्ति नहीं रक्खी। कम खा लिया, मोटा पहन लिया किन्तु गलत बातें कहकर मुवक्किलों को फँसाया नहीं। ठगा नहीं। अदालतों में बहस तो खूब करली किन्तु न्यायाधीशों के बँगलों के चक्कर नहीं लगाये। हर समय सरकारी अफसरों

की आलोचना करने की उनकी तवियत रहती थी। परमात्मा ने उनकी मुराद को पूरा किया। असेम्वली का मेम्वर वना दिया। असेम्वली की मेम्वरी अनायास मिलने पर उन्हें आश्चर्य भी हुआ और जितने दिन असेम्वली में रहे उससे मोह उत्पन्न नहीं किया।

असेम्वली मे की गई टीका पर मुकद्दमे नहीं चलते हैं यह वहुत वड़ी वात थी उन दिनों, किन्तु उन्होंने असेम्वली में महसूस किया कि वहाँ भाट और चारणवृति के ही लोग अधिक हैं। एक शिवरतन मोहता और दो तीन अर्ध शिक्षित जाट मेम्वरों को छोड़ कर उनका साथ देने वहाँ वाला कोई नही है तो पहले तो उन्हें निराशा हुई किन्तु 'अकेला ही चल' का पाठ उन्होंने पढा था और उसे वे अपने जीवन में सदैव पूरा भी करते रहे।

असेम्वली के पहले ही अधिवेशन में उन्होने अपनी वात कह दो थी कि स्त्रियों के उत्थान और ग्रामीणों की शिक्षा समृद्धि मेरे दो ही विषय होंगे, जिन पर मैं वरावर असेम्वली में आवाज उठाता रहूँगा। उन्होंने अपने सम्पूर्ण मेम्वरी के टाइम में किया भी यही।

चौधरी हरिश्चन्द्र जी में गुस्सा तो नहीं है किन्तु स्वाभिमान की कमी नहीं है। स्वाभिमानो पुरुष में गुस्सा न हो तो ओज और अमर्ष तो होता ही है। वे जिस समाज में पैदा हुए थे। उसका न तो वीकानेर के शासक ही कल्याण सोचते थे और न उसके सम्पर्क के अन्य लोग ही। इसलिये

उन्हें सामन्तशाही की ठोकरें समय समय पर लगती ही रहती थीं। असेम्वली में कभी कभी उनका ओज अमर्प में परिणित हो जाता था और यह ठंडा अगारा चमक और दहक उठता था।

सन् १६३२ के अधिवेशन के भी सभापति मनुभाई मेहता ही थे। उन्होंने पिछले दो अधिवेशनों के उद्घाटन भापण में वड़ी सुनहरी आशायें दिलाई थी किन्तु इस अधिवेशन में सौंपा उन्होंने पव्लिक सेफ्टी विल जिसे काला कानून भी कहा गया। विल एक मातम पुरसी की हालत में स्वीकार हो गया।

इस अधिवेशन में भी चौधरी साहव के प्रश्नों की झड़ी लग गई। डेढ़ दर्जन के लगभग उन्होंने प्रश्न किये। जिनमें गंगानगर में नजारत कायम करने, वाल-विवाहों की रोक-थाम करने, फैसलों की नकलें मिलने में सुविधा करने, राज्य द्वारा दिये जाने वाले वजीफों में जाटों को मिलने वाले वजीफों की रकम मालुम करने, सिविल सर्विस के छपे हुये कायदे उपलव्ध होने सम्बन्धी प्रश्न थे। वजीफों के वारे में वताया गया कि दीनगढ़ के रामचन्द्रजी को ३०, मासिक वजीफा दिया जाता है। नजारत गंगानगर में कायम करना स्वीकार कर लिया गया।

इस वर्ष के वजट पर वोलते हुये चौधरी साहव ने कहा—"खेती करने वालों के लिये पिछले कई वर्ष संकट के ही रहे हैं। इस फसल को टिड्डियों कीड़ों और चूहों

द्वारा काफी क्षति पहुँचाई गई है। वक्त पर वर्षा का अभाव रहा और गंगनहर से भी समय पर पानी नहीं मिला। इस तरह सिचाई भी भली प्रकार फसल की नहीं हो पाई है। जाड़े और हवा ने भी नुकसान किया है। भाव भी ज्यों की त्यौं मन्दे हैं। इन विकट स्थितियों में लगान और आवियानां चुकाना उनके लिये कठिन है। सरकार का ऐसी दशा में लाजिमी कर्त्तव्य है कि किसानों के साथ रहम का व्यवहार किया जाय और लगान आदि में किफायत की जाय।

सन् १६३३ के अधिवेशन में जिसके सभापति बगसेऊ के ठाकुर साहब सादुलसिंह थे। कुछ और अधिक गर्म बातें कही। उन्होंने गंगानगर आवादी के लोगों के लिये कहा–"गंगानगर के लोगों को रहने की भूमि की कमी है। उन्हें नई आवादियों के लिये जो सुविधायें दी जाती है वे कतई नहीं मिल रही। हमारी सरकार लेना ही लेना जानती है। उन्होंने आगे कहा, मै कितनी वार अधिकारियों से गंगानगर में एक एडीशनल जज रखने की प्रार्थना कर चुका हूँ"। उनकी इस माँग को तत्काल स्वीकार कर लिया गया। बजट बोलते हुये उन्होंने भ्रकुटी पर बल लाते हुये कहा,—"मैं बजट पर अधिक नहीं बोलना चाहता, किसान मुझे इसके लिये कोसेंगे पर बर्दाश्त करूंगा। एक शब्द में मैं इस बजट को फाइनेन्स विभाग की कारस्तानी ही कह सकता हूँ। देहाती शिक्षा के बजट में कमी करके उसने

फोड़े पर चोट मारी है। इस जमाने में संघर्ष ही जीवन है। आप हमें इसी मार्ग पर चलने को चैलेंज करते है।

गोलमेज कान्फ्रेन्स भंग होने से देश में एक दम गर्मी आगई।थी। गर्मी क्या वह एक आग थी जो विदेशी शासन को भस्म कर देना चाहती थी। देश के कर्णधार देशी रियासतों को आजादी के मार्ग में रोड़ा ही समझते थे। रियासतें भी अंग्रेजी शासन का साथ देती थी और उनके अन्दर भी सन् १६२६ से खासतौर से उत्तरदायी शासन भी माँग उठ खड़ी हुई थी। १६२६ ई० में राजस्थान की हृदयस्थली अजमेर में "जन्म-भूमि" गुजराती दैनिक के संचालक श्री अमृतलाल सेठ की अध्यक्षता में एक राजनैतिक संस्था राजपूताना प्रजापरिषद का जन्म हो चुका था, जोधपुर, भरतपुर और अलवर में उसी साल उसकी शाखायें खुल गई थी। सन् १६३२-३३ की गर्मी ने रियासती राजाओं को और भी भयभीत कर दिया। वीकानेर के महाराज गंगासिहजी वड़े रौब दौब के आदमी समझे जाते थे किन्तु उनका भी आसन डोल उठा और सन् १६३४ के राजसभा के अधिवेशन में वीकानेर में परदेशियों के प्रवेश निषेध का विल पेश कर दिया। कुछ थोड़ी सी कार्यवाही के पश्चात इसे सिलेक्ट कमेटी के सुपुर्द कर दिया गया। उस सिलेक्ट कमेटी में चौधरी साहब को भी शामिल करने की कोशिश की गई किन्तु उन्होंने स्पष्ट इनकार कर दिया।

उनके प्रश्नों के उत्तर में उन्हें बताया गया। सन् १९२९ से सन् १९३३ तक राज्य भर में केवल २४ देहातों में स्कूल खोले गये है। यह सब लड़कों के है लड़कियों के स्कूल खोलने पर विचार किया जा रहा है। प्रथम महायुद्ध में बीकानेर की रतनगढ़ तहसील के ३५१ जाट फौज मे भर्ती हुये उनमें से ६४ जाटों को पेन्शन मिलती है जो दो पीढ़ी तक चलेगी। यह पेन्शन अंग्रेजी सरकार की ओर से मिलती है।

बजट स्पीच में उन्होंने बड़े दुख भरे शब्दों में कहा, क्या इस जागृति के युग में हमारे लिये यह कम चिन्ता की बात है कि हमारे देहात के लोगों के पास कोई कागज आये और वह उसे पढ़वाने के लिये कई कोस दूर जावे। इस तरह की शिक्षा के प्रति उदासीनता बरती जावै और फिर भी उन्नति की आशा की जावे यह कैसे सम्भव हो सकता है।

इस अधिवेशन में रेवन्यू मिनिस्टर ने बताया कि इस साल भी मालगुजारी में से बकाया समेत ९५३५१०) वसूल हो गये है और ५६५५४४) बाकी हैं। कोलानाईजेशन मिनिस्टर ने बताया कि अब तक कुल ३३५०५४ बीघा जमीन नहरी इलाके में बिकी है जिससे ३६३२५८५७) रुपये प्राप्त हुये हैं। पुराने बाशिन्दों से उनकी कब्जे की जमीनों का नजराना लिया गया है। २६६६८०) वसूल हो चुके है। शेष जल्दी ही वसूल होने की उम्मीद है।

सन् १६३५ के बजट अधिवेशन के अध्यक्ष, महाराजा भेरोंसिंह जी थे चूंकि अब मेहता साहब जा चुके थे प्राइम मिनिस्टर भेरोंसिहजी ही हो चुके थे। आनन्दशंकर मनुभाई मेहता बीकानेर में कुछ अधिक कर तो नही पाये किन्तु वे पीड़ित प्रजा और शोषक राजवंशी सामन्तों के बीच एक दीवार थे। वह दीवार ढहा दी गई और महाराजा गंगासिंह जी ने अपने चचाजाद भाई भेरोंसिह जी को प्राइम मिनिस्टर बना दिया चूंकि उन्हें कई मनमाने कार्य करने थे तथा कानून बनाने थे। इसलिये उनके दृष्टिकोण से मनुभाई का विदा हो जाना ही अच्छा था।

अधिवेशन आरम्भ हुआ प्रेसीडेंट की स्पीच हुई। महारानी साहब को वृटिश बादशाह की ओर से सी. आई. का खिताब मिला था। उसके लिये बधाई प्रस्ताव पेश हुआ। महारानी जी के गुणों के गीत गाये गये। चौधरी हरिश्चन्द्रजी का भी नम्बर आया। इस सीधे से लगने वाले ठंडे आदमी में अंगारे धधकते थे उसे अपने पीड़ितों की प्रशंसा कभी भी नहीं सुहाती थी किन्तु राजसभा का मेम्बर होने के नाते कुछ नहीं कहा जाय यह तो सम्भव नहीं था। उन्होंने बधाई प्रस्ताव पर अपने उद्‌गार प्रकट किये किन्तु ठीक वैसे ही जैसे कूटनीतिक लोग किया करते हैं उन्होंने कहा—"परमात्मा से हमारी यही प्रार्थना होनी चाहिये कि भगवन् हमें अंधकार से दूर हटा कर प्रकाश की ओर ले चलो। ·······जितने आनन्द का आज अवसर मिला है उसका वर्णन

मैं कर नहीं सकता। मातृशक्ति की पूजा और गुणों का वर्णन करने के लिये इस प्रस्ताव ने आज मुझे अवसर दिया है। ……शुद्ध जीवन विताने के लिये जितनी कठोरता भारतीय स्त्रियों ने सीखी और झेली है। उतना पुरुष समाज न सीख सकता है और न झेल सकता है। इतिहास के पन्ने स्त्री जाति के सतीत्व, वीरता, सहृदयता आदि गुणों से भरे पड़े हैं। इन गुणों के वखानने के लिये श्रीमती मातेश्वरी के वधाई के प्रस्ताव ने आज अवसर उपस्थित कर दिया है।"

ऐसा ही एक अवसर विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर के सामने उपस्थित हुआ था। वादशाह सलामत का दिल्ली में दरवार था। देश के राजे महाराजे और विशिष्ट जन उसमें आमन्त्रित थे। टैगोर घराना भी भारत के बड़े घरानों में समझा जाता था। इस घराने को वृटिश-प्रभुओं ने उपाधियों से भी अलंकृत किया था किन्तु तरुण रवीन्द्र का हृदय देशभक्ति से ओतप्रोत था। उन्हें गुणानुवाद तो करना था सम्राट् का किन्तु कर डाला भारत भूमि का। वही गीत आज स्वतन्त्र भारत का राष्ट्र गीत है जो 'जन गण' से आरम्भ होता है। चौधरी हरिश्चन्द्रजी को गुण तो गाने थे वीकानेर की महारानी के और गा डाले मातृ शक्ति के।

सन् १९३६ के अधिवेशन के अध्यक्ष ठाकुर सादुल सिंह वगसेऊ थे क्योंकि वही कार्यकारी प्राइम मिनिस्टर थे। सबसे पहले वादशाह जार्ज पंचम की मृत्यु पर शोक

प्रस्ताव रक्खा गया। २० जनवरी १९३६ को उनका स्वर्गवास हो गया था। यह उल्लेखनीय है कि चौधरी हरिश्चन्द्र जी इस प्रस्ताव पर मौन रहे।

इस साल ऐसा भी अवसर आया कि कास्तकार मेम्बरों का यह प्रस्ताव कि सिंचित इलाके के कास्तकारों की कठिनाइयों और समस्याओं पर अपना मत व्यक्त करने के लिये एक कमीशन मुकर्रिर किया जाय। ला० जयगोपाल पुरी कालोनाइजेशन मिनिस्टर के विरोध पर भारी बहुमत से गिर गया। इस प्रस्ताव को बाबा मवासीनाथ ने पेश किया था और चो० हरिश्चन्द्र जी ने इसका समर्थन किया था।

इस वर्ष के बजट पर चौधरी साहब ने मीठे ढंग से काफी चुटकियां लीं जो उस समय के हालात के अनुसार काफी करारी चपतें थीं। उन्होंने कहा :—"जिस जमात का मैं यहां नुमायन्दा हूं उसकी तो मुझे हिदायत है कि बजट जैसा भी हो उस पर चूं, चरा कुछ भी मत करो। ....मैं जानता हूं कि बजट में आमदनी की जो रकमें हैं उनका अधिकांश भाग किसान के पसीने की कमाई का है। महाराजा साहब स्वयं स्वीकार करते हैं कि किसान उनके कमाऊ पूत और सोने का अंडा देने वाली चिड़िया हैं। ....मैं कहना चाहता हूं कि किसानों के अधिकार की बात जाने दीजिये उन पर दया ही कीजिये। यदि आप ऐसा भी करते तब भी किसान बड़ा अहसान मानता......

ऐसा लगता है कि दैव ने इसकी प्रारब्ध में मुसीवतें ही मुसीवतें लिखी है। पानी से तो पतली कोई चीज नहीं है किन्तु गंगानगर के किसानों के लिए पीने के पानी पर भी ताला लगा हुआ है। वजट जो भी जैसा भी है उसे मंजूर करने का विरोध मैं नही करूंगा। यह तो डेढ़ करोड़ रुपये ही का है अगर पचास करोड़ का भी होगा—तव भी मैं यही कहूंगा पास करो।"

सन् १९३२ में 'जनता की रक्षा' नाम का जो कानून पास हुआ था, उसे और भी सख्त वनाने के इस वर्ष कुछ और परिवर्द्धन वीकानेर सरकार ने किये और उनका मसौदा असेम्वली में पेश किया। चौधरी हरिश्चन्द्र ने इसका विरोध किया क्योंकि वे समझते थे कि यह बिल जनता की रक्षा का नहीं अपितु उसे और भी अधिक कुचलने का है। उन्होंने कहा, "मैं इस संशोधित विल के खंड ३ के उपखड ङ का विरोध करता हूँ पहले चार उपखंडों क, ख, ग, घ में सरकार को उलटने की प्रवृतियों में भाग लेने वालों के लिये सात वर्ष की सख्त सजा का प्रावधान किया गया है। अव पांचवें खण्ड द्वारा पुलिस को बहकाने का उपक्रम करने वाले को इसी सजा का प्रावधान किया जा रहा है। पुलिस के लिखे वयानों को अदालत में अव तक मान्यता नहीं दी जाती थी। अब पुलिस को दिये हुये वयान भी सच माने जायगे। यह एक वड़ा अन्याय होगा पुलिस को इतना अधिकार देना

पागल के हाथ में हथियार पकड़ा देना जैसी गलती होगी। बाबा मवासीराम जी ने भी चौधरी साहब के इस कथन का समर्थन किया किन्तु होम मिनिस्टर महाराजा मानधातासिंह ने रिमार्क कसा कि "चौधरी हरिश्चन्द्र ने पुलिस को काले कपड़ा पहना कर खून के छींटे लगाये हैं।"

सन् १९३८ के अधिवेशन में प्रथम प्रस्ताव किंग जार्ज षष्टम की गद्दीनसीनी पर बधाई देने का था। इसके समर्थन में सेठ मदनगोपाल दम्माणी राजा भूपालसिंह महाजन और प० सतानन्द ने ही भाग लिया। प्रश्नों के टाइम में चौ० साहब ने अपने पिछले वर्षो के जवाब चाहे और डोमीसाइल सार्टीफिकेट प्राप्त करने के कायदों को प्रकाशित करने का उत्तर मांगा। दूसरे दिन की बैठक में उन्होंने और भी सवाल पूछे जिनमें बाहरी वकीलों को राज्य में वकालत की पाबन्दी, गंगानगर के मिडिल स्कूल में दाखिले के लिये कठिनाई। किसानों को पटवारी जैसी छोटी नौंकरियों में सुविधा देने आदि से सम्बन्धित थे।

बजट पर बोलते हुये चौधरी साहब ने अपने उसी पुराने तरीके से कहा--"पिछले सालों की भाँति इस वर्ष भी मैं बजट की मदों पर कोई टीका टिप्पणी नहीं करूँगा। हाँ, बजट में विद्याविहीन कृषक वर्ग की जो उपेक्षा की गई है। उसके लिये अवश्य कुछ कहूँगा। विद्या प्रचार मेरे जीवन का लक्ष्य है और किसानों में विद्या की बड़ी कमी है। ग्राम पंचायतों का काम भी उनकी निरक्षरता

के कारण ही ठीक नही हो रहा है इसे सरकार भी मानती है। इतने पर भी देहाती इलाकों में पढ़ाई के लिये ग्यारह हजार रुपये की छोटी रकम ही इस वर्ष और दी है। मैं तो यह चाहता हूँ कि शत प्रतिशत लोग पढ़ जावे। आज असेम्बली में मैंने ५६ सवाल किये है जिसमें अधिकांश शिक्षा बढ़ाने के उद्देश्य से ही किये गये हैं।

मंडियों मे किसानो की जो लूट होती है। उस लूट के धन को ही यदि शिक्षा में लगा दिया जाय तो शिक्षा की समस्या हल हो सकती है। नौ हजार के करीब प्रति वर्ष गंगानगर की मंडी में किसानों से एक आना प्रति सैंकड़े के हिसाब आता है, इसी भाँति पचासों मंडिया है जिनमें किसान का शोषण होता है। मेरे ध्यान दिलाने पर गोगामेडी स्टेशन के प्लेट फार्म पर एक फाटक के बजाय दो कर दिये गये। इसके लिये मैं पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेन्ट का आभारी हूँ। इसी भाँति यदि सभी सरकारी अधिकारी सुनवाई कर लिया करें तो कितना अच्छा हो, किन्तु किसी के दिल में प्रजा के लिये दर्द हो तब न। परमात्मा समस्त राज कर्मचारियों को सुबुद्धि प्रदान करें कि प्रजा की माँग को जो नाखुन में से मैल निकालने जैसी होती है सुन लिया करें। मैं बहुत सीधा सादा आदमी हूँ। अलबता सचाई की ओर मेरी आत्मा मुझे खींचती है इसलिये कभी-कभी खरी बातें कह डालता हूँ। मैंने गंगानगर के लोगों के पीने के पानी के कष्ट का जिक्र किया था। २००) से एक

डिग्गी की मरम्मत कराने पर मैं सरकार को धन्यवाद ही दूंगा। इस असेम्बली का श्रीगणेश ही तारीफ के पुल बाँधने से होता है। मैं भी आज उस परम्परा में कोई कमी नही रहने देना चाहता।

सन् १९३९ में प्राइम मिनिस्टर के पद पर कर्नल सर कैलाश नारायण हक्सर आ चुके थे। उन्होंने इस वर्ष के अधिवेशन का जोकि १५ मई सन् १९३९ को हुआ था सभापतित्व एवं उद्घाटन किया। उन्होंने अपने भाषण में श्री के० एम० पन्निकर की नियुक्ति पर खुशी जाहिर की। उन्हें महाराजा ने विदेश एवं राजनैतिक तथा शिक्षा का मिनिस्टर बनाया था। लाला जयगोपाल पुरी के स्थान पर श्री जानकीनाथ अटल को कोलेनाइजेशन अधिकारी नियुक्त किये जाने की सूचना दी। इसके बाद चौधरी उदमीदास के स्वर्गवास और उनकी जगह पर चौधरी लाभूराम जी की नियुक्ति का जिक्र किया। सन् १९३८ के अकाल में राज्य ने जो जो काम जनहित के किये उन पर प्रकाश डालते हुये उन्होंने अपने भाषण को समाप्त किया।

प्रश्नोत्तर के समय चौधरी साहब ने पूछा कि गंगानगर डिवीजन के नये खरीददारान को मकान बनाने के लिये मसाला और लकड़ी पर जकात की रियायत है। मगर पुराने आबादकारान के लिये यह रियायत नहीं है क्या यह फायदा पुराने आबादकारान को भी देने को सर-

कार तयार है। इसके उत्तर में श्री जानकीनाथ अटल ने चौधरी साहब को विश्वास दिलाया कि ऐसा ही होगा।

चूंकि श्री जानकीनाथ अटल पंजाब से आये थे। पंजाब में खेती के उन्नत तरीकों को लोग अपना कर खुशहाल भी हो रहे थे अतः अटल साहब ने उन तरीकों का प्रचार करने की नींव डाली। उन्होंने इसी अधिवेशन में "कपास की बीमारियों की रोक थाम" के लिये एक बिल पेश किया। जिसके अनुसार बीज छाँट कर बोने और बुवाई का समय निश्चित करने का प्रावधान था। इस बिल को चौधरी साहब ने जनता की राय के लिये प्रकाशित करने का अनुरोध किया क्योंकि उनका अन्दाज था खेती के काम में किसान को जो स्वतंत्रता है उसमें सरकारी अधिकारियों का अकारण हस्तक्षेप हो जायगा। पं० सतानन्द और चौधरी बीरबल ने भी चौधरी साहब के सुझाव की तारीफ की किन्तु सरकारी और सरकार पिट्ठू लोगों के बहुमत ने उनकी सलाह को गिरा दिया और बिल उसी रूप में पास हो गया।

दूसरे दिन चौधरी साहब ने एक प्रस्ताव पेश किया जो इस प्रकार है:—"यह सभा नम्रभाव से श्री जी साहब की सेवा में निवेदन करती है कि जिन जमींदारों की तरफ राज का कोई मतालबा बकाया न हो, उन पर अफसरान से मंजूरी लेकर अपनी आराजी को फरोख्त व रहन, करने की पाबन्दी हटा दी जाय। और जिनके जिम्मे

राज की वकाया हो, उनको बाद इत्मीनान अफसर रजिस्टरी कुनिन्दा वकाया दाखिल करने पर अपनी आराजी को विला मंजूरी फरोख्त करने का मुकम्मिल हक दे दिया जाय और उनके वकाया की पड़ताल भी रजिस्ट्री कुनिन्दा ही कर लिया करे और वकाया दाखिल करने के बाद रजिस्ट्री तस्दीक कर दिया करे।

इस प्रस्ताव पर चौधरी साहब ने जो भाषण दिया उससे बीकानेर राज के कदीमी बाशिन्दगान के जो राज के शासकों से कई सदी पहले से इस भूमि भाग पर काविज थे और लगभग २००० गांवों पर जिनकी कबीला ढंग की हुकूमत थी। उन्हें राठौर राजाओं ने किस भाँति वेगाना सा बना दिया था। जमीन पर कोई हक ही नही रहने दिया था जमाने की रोशनी ने उनको बाध्य भी किया तो किस तंग दिली के साथ उन्होंने उन्हें हक कास्त-काराना अदा किये आदि बातों पर प्रकाश पड़ता है।

इस प्रस्ताव के असली मकसद पर आने से पहले यह अर्ज कर देना निहायत जरूरी है कि यह मंजूरी की पाबन्दी कब और किस वजह से लगाई जाय तथा मंजूरी कहां से हांसिल करनी पड़ती है।

सन् १९१४ से पहले हकूक मोरुसियत या मिल्कयत बीकानेर के कागजात जमीन में बिलकुल दरज नही थे बल्कि संवत् १९५० यानी सन् १८९३ के बन्दोबस्त में

साहब मौहतमिम बन्दोबस्त की तजवीज रियासत की तरफ मोरुसियत दीये जाने के बावत गर्वनमेंट आफ से हकूक इडिया में भी पँहुचे ।

स्वर्गवासी रिडकिन साहब बहादुर ने पहले पहल सन् १६१५ में चक अव्वल तहसील हनुमानगढ और पश्चात तहसील मिर्जावाला को हक मोरुस सुनाया और यही हक सन् १६१५ पीछे के दो तीन सालों में तमाम इलाको में जिससे नहर आने की तजवीज थी सुना दिया गया ता० २५ सन् १६१४ को एक हुक्म जारी किया कि फेगन साहब बहादुर के बन्दोबस्त में जिनका खाता है। उनसे दो रुपया इसके बाद से जो खातेदार बने उनसे ५) रु० फी बीघा नजराना लिया जावेगा जो ८ किस्तों में वसूल होगा बाद में एक हुक्म यह भी दिया गया कि जो सख्श एकदम सात किस्ते देगा उसको एक किस्त मांफ होगी ।

कई एक लोगों ने सातों किस्तें एक साथ अदाकर दी उनको हक मोरुसी की सनदें सन् १६१८ में दे दी गई जिनमें रहन, बय, हिवा, वगैरह की इजाजत है, और नहर से आबपासी होने पर ८ किस्तों में फिर नजराना लिया जावेगा । जिसकी लगात फी बीगा १० रु० से ज्यादा नहीं होगी यह भी उसमें तहरीर किया इन २ और ५) रु: वालों को (क) और (ख) क्लास का मौरुस माना गया हक मिलकयत और उसके नजराने की शरह बाद में तजवीज की गई है । सन् १६१८ तक कोई पावन्दी रहन

और वय के लिये नही थी इसलिये लोग खुले तौर पर रहन और वय करते रहे।

कोई रुकावट नहीं होने की वजह से वेवगान की तरफ से भी खुले आम आराजी वय होने लगा। वारिसान हिस्सेदारान या करीवी रिश्तेदारान ने इसमें अपना नुकसान देख कर अर्ज मारुज की। वारसान के नुकसान को रोकने के लिये ३ दिसम्वर सन् १६१८ ई० को साहव रेवैन्यू कमीश्नर वहादुर ने बजरीये रुवकार वेवगान के लिये मन्जूरी हासिल करने की पावन्दी लगादी।

इसी अरसे में गैरजराअत पेशा लोगों ने बहुत सी जमीने जराअत पेशा लोगों से खरीद ली या रहन रखली इसके रोक के लिये ता० ११ अक्टूवर सन् १६१६ ई० को रोवकार के जरीये जाट, राई, किशनोई, राजपूत व लबाना को कास्तकार करार देकर साहव रैंवेन्यू कमीश्नर ने हुक्म किया कि हर एक कौम अपनी ही कौम में वय व रहन करे इसकी कौम की सूरत में मन्जूरी ली जावे।

नोटिफिकेशन नम्वर ६ ता० २० फरवरी सन् १६२० ई० साहव रेवेन्यू मैम्वर आफ कौनसिल ने जारी करके पुराने कास्तकारान रियासत को अपनी आराजीयात के गैर जरूरी इन्तकाल से वचने के लिये जवतक के लिये आवपासी शुरू न हो जावे कुछ कवायद बनाई जिनमें कि कुछ (क) क्लास पर मन्जूरी की की पावन्दी लगाई (ख)

क्लास को पाबन्दी से मुस्तसना करार दिया स्त्रियों को हर हालात में अग्रिम मन्जूरी ठहराया ।

श्री गंगानगर डिविजन कालोनाइजेशन रेग्यूलेशन सन् १६३० ई० के अन्दर यह पावन्दी लगाई गई कि जब तक मिलकियत की सनद न मिले तबादले वगैरह बिला मन्जूरी न हों यह मन्जूरियाँ साहब मैम्बर कालोनाइजेशन मिनिस्टर और साहब स्पेशल ऑफीसर कोलोनिजेशन देते रहे और देते हैं ।

मंजूरी की पावन्दी दफा बारह इस गरज से लगाई थी कि जहाँ तक हो सके एक चक यानी गाँव में एक ही गिरोह और मेल के आदमी आबाद रहें और वक्त मंजूरी इस बात को देख लिया जाया करे कि दूसरी कौम के आदमी को जमीन तो नहीं बेची जारही हैं और शुरु शुरु में मंजूरी देने में भी यह शर्त कौम की लिख दी जाया करती थी। उसी उद्देश्य को सामने रख कर अलाटमेंन्ट किये गये, वजह इसकी यही थी कि हक सुफा इलाके में जारी नहीं है। और सनद मौरुस ने भी लिख दिया है कि सुफा नहीं है मगर अब देखा जाता है कि इस असूल की पावन्दी नही की जा सकती बल्कि दूसरी अकवाम ऐसी मंजूरियों के जरिये चक में दाखिल हो रहे हैं। और पावन्दी की मन्शा ही नष्ट हो रही है ।

इस ऊपर की तमहीद से यही नतीजा निकलेगा कि

मंजूरी की पाबन्दी लगाने की बाबत चार वजूहात हस्ब जैल थी।

(क) वारिसान बाजगश्त के हकूक की हिफाजत के लिये बेवगान मंजूरी लें।

(ख) जराअत पेशा की जमीन गैर जराअत पेशा के कब्जे में जाने से हिफाजत की जाय।

(ग) आबपासी शुरू होने से पहले लोगों के कब्जे में से जमीन न निकल जावे ताकि उस वक्त तक कीमत बढ़ जावे।

(घ) इस बात का ख्याल रक्खा जावे कि दूसरी कौम के आदमी एक ही कौम के चक में दाखिल न हो।

इसमें कोई शक नहीं कि ऊपर लिखे हुये यह कुल खयालात पब्लिक पालिसी को मद्देनजर रखते हुये निहायत फायदेमन्द और ऊंचे दर्जे के थे मगर उनका मकसद पूरा नहीं हो रहा है बल्कि मंजूरी हासिल करने में पबलिक को भारी नुकसान और तकलीफें है और बिला लिहाज (क) और (ख) सब को मंजूरी लेने का रिवाज पड़ गया है। इसलिये ये चारों वजूहात पाबन्दी की किसी भी तरह मुफीद नहीं हैं। क्योंकि:—

(१) बेबगान चाहे मंजूरी लेकर ही रहन करें वारिसा बाजगस्त अदालत दीवानी में चाराजोई करके डिग्री ले सकते हैं। अगर हर एक बेवा को इजाजत नहीं दी जावै

तो भी ठीक नहीं क्योंकि बहुत सी सूरतों में जरूरत जायज होती ही है।

(२) जराअत पेशा और गैर जराअत पेशा का भी लिहाज मंजूरी में अब नहीं रखा जाता।

(३) नहर को आये बारह साल हो गये। कीमतें जो बढ़नी थी बढ़लीं अब घटाव की ओर है।

(४) दूसरी कौम वाले भी मंजूरी की पाबन्दी होते हुए धड़ाधड़ गैर कौम के चकूक में दाखिल हो रहे हैं। इसका बेहतर इलाज हकसफे का जारी होना ही जान पड़ता है।

गवर्मेन्ट का फर्ज हैं कि बहबूदी के लिये मुनासिब तदबीर समय-समय पर जारी करे लेकिन उस किस्म की पाबन्दी लगाने की बजाय बहुत ही उमदा यह तजवीज होगी कि लोगों को ऐसी तालीम दी जावे कि वह अपने हकूक की हिफाजत के लिये स्वयम योग्य बन जावें। यह भी नो हो सकता हैं फि उनकी फिजूलखर्चियों पर कानून बनाकर पाबन्दी लगाई जावें।

स्वर्गीय रिडकन साहब ने रेगूलेशन नं० ए में लिखा था कि औसर और शादी जरूरी खर्च नहीं हैं। इसी भाँति सतलज सिंचाई विकास की पंक्ति संख्या ३१ में लिखा गया कि जाटों में शादी और मृतक भोज के अवसरों पर इतनी फिजूल खर्ची होती है कि वे कर्जदार हो जाते हैं उनकी इस

फिजूल खर्चो को कम करने के आन्दोलनों में सरकार को पूरी मदद करनी चाहिये।

इन पावन्दियों की मौजूदगी में मंजूरी वय और रहन हासिल करने में जो तकलीफ होती है अथवा जो दिक्कतें उठानी पड़ती है वर्णन नहीं की जा सकती। ऐसी मिसालें भी मिलेंगी कि मंजूरी लेने की गर्ज से दुचन्द कर्जे के तमस्सुक लिख दिये वहुतों ने विना ही कर्जा लिये तमसुक लिख दिये और इनमें से अनेकों कर्जख्वारों ने उन विना दिये तमसुकों से भी रुपया पटाने के लिये कुर्कियाँ निकलवाली। इस प्रकार यह पावन्दी फायदा पहुँचाने के वजाय हानि ही पहुँचा रही है। ऐसी भी मिसालें हैं कि वेवा की हालत में भी दरख्वास्तें तसदीक के लिये तहसीलों में भेज दी जाती हैं। जिनकी तसदीक सहज ही नही हो पाती।

ऐसे भी उदाहरण हैं कि ऋणदाता और ऋणी ने आपस में समझौता करके कर्जे की वेबाकी और वकायाराज की अदायगी की तजवीज सोचकर मंजूरी लेने की दरख्वास्त दी, जिसमें तहसील में जाने की वजह से ढील हुई। इस बीच एक दूसरे आदमी ने ऋणी को वहकाकर कुछ कम पर रजिस्ट्री कराली। ऋणदाता का रुपया और राज का वकाया भी पड़ा ही रह गया। अगर यह पावन्दी हटादी जाय तो फरीकैन और उनका नफा नुकसान। हाँ,

मतालबा राज रजिस्ट्रार सा० पहले ही अदा करा सकते हैं। नाबालिगान के लिये जो कानून वली है वही काफी होगा। मुझे आशा है गैर सरकारी मेम्बर तो मेरा साथ देंगे ही।

चौधरी हरिश्चन्द्र जी के इस प्रस्ताव का समर्थन गणेशराम व्यास ने किया। उन्होंने कहा–"चौ० हरिश्चन्द्र जी के प्रस्ताव की मंशा यह है कि पुराने आबादकारों को जिन्होंने हक मिल्कियत व हक मौरूसी हासिल कर लिया है। उनके लिये तो रहन व बय के लिये कोई पाबन्दी नहीं रक्खी जाय। बाकी जायदाद मौरूसी वाले जिस वक्त रहन व बय करें वे लोग उतना ही हक किसी दूसरे के नाम बदलें जितना कि उनको हासिल है तो उसके लिये कोई पाबन्दी न रक्खी जावे क्योंकि गवर्नमेन्ट का मतालबा जिस कदर उस जमीन पर रहेगा, वह हर हालत में सुरक्षित है यानी जिसके कब्जे में वह जमीन रहेगी वह देने का जिम्मेवार है।" अंत में आपने कहा–"चौ० हरिश्चन्द्र जी पुराने जमीदारों में से हैं। इसलिये उन्हें उन सभी तकलीफों का आभास है। उनका प्रस्ताव अवश्य मंजूर होना चाहिये।"

पं० जानकीनाथ अटल ने चौधरी साहब की प्रत्येक दलील का उत्तर ऐसे ढंग से दिया कि मानों बीकानेर सरकार को किसानों की जमीन की बड़ी चिन्ता है और एक इस शब्द को "फरीकैन जाने और नफा नुक्सान" विशेष रूप से पकड़ लिया और कहा, चौधरी हरिश्चन्द्र जी

तो ऐसा कह सकते हैं किन्तु महाराजा साहब तो ऐसा नहीं कह सकते उनके ऊपर तो परमात्मा ने अपनी गरीब प्रजा के हिताहिता की जिम्मेवारी सौंपी हुई है।

चौधरी हरिश्चन्द्र जी के दूसरे इस शब्द को कि "गैर सरकारी मेम्बर तो मेरा साथ देंगे ही" अपने पक्ष में मेम्बरों को यह कह कर करने की कोशिश की कि हम सब लोग जो भी तय करें मिलकर तय करें, सरकारी और गैर सरकारी का भेद खड़ा करना अच्छा नही। और मैं जोर देकर आपसे चाहता हूँ कि इस प्रस्ताव को कोई भी अपनी राय न दें।"

उस समय के हालात ही ऐसे थे किसी ने उनके प्रस्ताव पर हाथ नहीं उठाये। हाँ, आठ मेम्बरों ने यह हिम्मत अवश्य की कि वे तटस्थ रहे।

१७ जनवरी १९४० को बीकानेर की असेम्बली का उत्सव आरम्भ हुआ इस समय बीकानेर में सर सिरेमल बापना प्राइम मिनिस्टर होकर आचुके थे और हक्सर साहब विदा हो चुके थे। इस समय द्वितीय महायुद्ध चल रहा था अतः सभापति सर बापना ने अपने उद्घाटन भाषण में पहले युद्ध की विभीषिकता और उसमें विजय प्राप्त होने की आशा व्यक्त की। उन्होंने यह भी बताया महाराजा के पौत्र श्री करणसिंहजी की सगाई डूंगरपुर राज्य के महाराज की पुत्री के साथ और महाराजा डूंगरपुर के पुत्र की सगाई हमारे महाराज की पौत्री देवकुंवरिजी के साथ हो रही है।

इस अधिवेशन में चौधरी साहब के पुराने प्रश्न ४९ के जवाबों को मेज पर रखने की घोषणा राजा मानधातासिंह ने की।

इस अधिवेशन में चौधरी साहब ने स्वास्थ्य विभाग, इंजीनियरी, रेलवे, गंग केनाल के अफसरों की तादाद पूछी और यह भी पूछा कि उनमें कितने देशी और कितने परदेशी हैं। के. एम. पन्निकर ने जो उत्तर दिया उसके अनुसार अस्पताल के १३ असिस्टेंट सर्जनों में ४ बीकानेरी ४७ सब असिस्टेंट सर्जनों में १ बीकानेरी और रेलवे के आठों उच्चाधिकारी परदेशी ही निकले। इंजीनियरिंग जैसे भारी-भरकम महकमे में ३ अफसर बीकानेरी निकले।

कुछ सवाल उन्होंने जमीन के हकूक सम्बन्धी किये जिनके कायदे कानून मेज पर रखवाने चाहे।

प्रस्तावों के अवसर पर चौधरी साहब ने एक प्रस्ताव बीकानेर की एक राजकुमारी का सम्बन्ध तय होने पर बधाई प्रस्ताव रक्खा व्यास गणेश जी ने इस प्रस्ताव का समर्थन किया और कहा तकनीकी शिक्षा के लिये राज्य सरकार अधिकाधिक वजीफे दे।

जाब्ता दीवानी में दो ऐसे संशोधनों के प्रस्ताव भी उनके गिर गये जिनके पास होने पर किसानों को कुछ राहत मिलती। केवल पाँच जमीदार सदस्यों के सिवा सभी इन संशोधनों के खिलाफ रहे।

इस वर्ष के बजट पर बोलते हुए आपने कहा,

इस वर्ष आमदनी २१६६१६० अधिक करली गई है जबकि दो वर्ष से अकाल पड़ रहे हैं ये एक करिश्मा ही है।......आमदनी के जरिये और तरीकों पर आलोचना न करना ही मैं ठीक समझता हूँ किन्तु विभिन्न महकमों के मदों में जो अन्य सालों की भाँति इस साल भी वृद्धि हुई है। वह अवश्य खलने वाली बात है। खर्च अधिक होना चाहिये निर्माण के काम पर किन्तु होरहा है महकमे बढ़ाने तथा महकमों में अफसर बढ़ाने पर। मेरी यह आलोचना बुराई करने की दृष्टि से नहीं अपितु सुधार करने की दृष्टि से है।

सन् १६४१ में असेम्बली का अधिवेशन १६ दिसम्बर से आरम्भ हुआ। इस साल यह परम्परा अमल में आई कि चीफ जज मियाँ अहसान-उल-हक को सभापति बनाया गया जोकि राज्य में चीफजज के पद पर काम कर रहे थे।

सबसे पहले युद्धभूमि में महाराजा और कुंवर करणीसिंह के जाने और वहाँ से लौटने पर महाराजा मानधातासिंह जी ने बधाई प्रस्ताव पेश किया। इसमें संदेह नहीं कि चौधरी हरिश्चन्द्र जी ने इस प्रस्ताव की बड़े ही अच्छे शब्दों में ताईद की। मानों वे फासिस्टवाद एवं नाजीवाद के दुष्परिणामों से परिचित हो चुके थे। या राठौर हुकूमत में और राठौर शासकों में उन्हें अवगुणों की कमी दिखाई दे रही थी। हमारी समझ में वे नाजीवाद

को पसन्द ही नहीं करते थे क्योंकि उन्होंने पिछले वर्ष उन्हे लालची और छोटे राष्ट्रों का भक्षक बताया था। और अध्ययनशील आदमी वे है ही। खाने से अधिक भूख उन्हें पढ़ने की रहती आई है। इसीलिये उन्होंने अखीर में कहा था–"अब जबकि युद्ध भारत के द्वार पर आ पहुँचा है समस्त भारतवासियों का कर्त्तव्य है कि "संगच्छध्वं" वेद मंत्र के अनुसार सब एक होकर तन, मन, धन से इस विपत्ति को मार भगाने में कटिबद्ध हो जावें।"

इस सैशन में जो भी सवाल पूछे वे सब किसानों के हितों से सम्बन्धित थे। जिनमें हक मौरुसी एवं हक मिल्कियत दिये जाने में सरकारी लापरवाहियों का जिक्र था।

बजट पर बोलते हुये उन्होंने पहले तो जाट स्कूल संगरिया की एड़ में वृद्धि पर प्रसन्नता प्रकट की और आगे कहा "बीती ताहि बिसार दे के अनुसार अब भी अगर जनता की शिक्षा और स्वास्थ्य की ओर सरकार का पूर्ण ध्यान हो जाय तो कुछ नहीं बिगड़ा है।"

यह चौधरी साहब की असेम्बली में अन्तिम स्पीच थी। सन् १९२९ से १९४१ तक वे लगातार बारह वर्ष इसके सदस्य रहे। सदस्य ऐसे नहीं कि केवल नुमायशी रहे हों। प्रत्येक सैशन में पहुँचें और सवालों की झड़ी लगाई। किसान के छिनते अधिकारों और उनके प्रति बर्ती जाने वाली लापरवाहियों, धांधलेबाजियों पर सदैव सरकार

को सचेत किया । वजट पर तो उनकी स्पीचें जितनी मार्मिक व्यंगपूर्ण और खेद जनक होती थीं उतनी सरकारी और गैर सरकारी किसी भी मेम्बर की नहीं होती थीं । महाराजा गंगासिंह जी से जब किसी ने शिकायत की घणीख्रमां यह जाटडो तो नलीके मूँ नहीं वोलसी । तो महाराज ने जवाब दिया कि इससे भी हमें लाभ होता है । बाहर के जो लोग हमारी असेम्बली की कार्यवाही को पढ़ते हैं अथवा सैशनों को देखते हैं । वे समझेंगे कि बीकानेर असेम्बली में लोगों को खुलकर कहने की आजादी है । महाराजा के इसी खयाल के कारण चौ० जी से हुकूमत ने बदला नहीं लिया यही सौभाग्य की बात थी ।

चौधरी साहब ने अपने असेम्बली काल की तीन याद-दाश्तें लिखी हैं :-

(१) में उन्होंने अपने बजट भाषणों का उल्लेख किया है । (२) में उन भाषणों का उल्लेख है जो उन्होंने प्रस्तावों पर किये (३) मे सिर्फ एक पृष्ट है जिसमें उन्होंने यह बताया है कि मैं इतने दिनों असेम्बली का इतने दिनों म्यूनिस्पल आदि संस्थाओं का मेम्बर रहा । हमने असेम्बली की असल कार्यवाही से सार रूप में तथा उनसे सुनी बातों के आधार पर उनके असेम्बली कार्य का यह विवरण प्रस्तुत किया है ।

असेम्बली के कार्यकाल में उन्हें कई बार निराशा ने भी

आ दवाया ऐसे प्रसंगों के कारण उन्होंने लिखा है :-"मैंने बारह साल तक बहुत नर्म शब्दों में कास्तकारों की शिक्षा भूमि-अधिकार और स्वास्थ्य के सम्बन्ध में मन्तव्य रखा किन्तु मुझे निराशा ही मिली । कई बार मैंने सोचा कि असेम्बली में न जाऊं लिखदू कि मुझे कोई लाभ नहीं दीखता किन्तु कुछ तो अपने ही विचारों की अस्थिरता और कुछ मित्र और शुभचिन्तकों के आग्रह से मैं असेम्बली में बना ही रहा । सेठ सोहनलालजी कहा करते हैं असेम्बली की मेम्बरी से हमें तो कोई घाटा नहीं। हमारा मान है प्रतिष्ठा है किन्तु मेरे हाथ तो परदेशियों से और सामन्तवर्ग से दुश्मनी और अपनों से जो अनपढ़ होने के कारण मेरे काम को न तो सुन पाते हैं न समझ पाते हैं उदासीनता ही हाथ लगे है । हाँ, एक लाभ मुझे अवश्य हुआ है वह यह कि कौन पराया है और कौन अपना है। यह मैं खूब जान गया । यह भी जान गया कि हमारे हित के नाम पर क्या दंभ चल रहा है अब कोई भ्रम नहीं रहा है। मैं यह भी जान गया हूं कि न केवल राजा और राजवंश के लोग अपितु सभी हमें अशिक्षित रखने में खुश हैं ताकि शोषण बराबर चलता रहे । मेरे अनुभव के अनुसार तो राजस्थान में खेती करना पाप और जाट कहलाना महापाप है । न कोई बादशाही है और न कोई राज्य । है तो केवल नौकरशाही है । इस राज में अहदपैमान, कौलकरार लिखत इत्यादि सभी झूठ, क्षणक्षण में अर्थ बदलते रहते है।

कानून एक बहाना है ना समझ, गरीब और निर्बलों को लूटने और फंसाने को।

यहां की राजसभा में प्रजा की ओर से अधिकांश शहरों, कस्बों के निवासी सेठ व धनवान ही आते हैं। वे बात की बात में हजारों लाखों का बारा न्यारा करने वाले हैं यहां वे कुर्सी की इज्जत के लिये आते है।"

यहां आने जाने का सफर खर्च मैं कब तक गांठ से देता मैंने लिखा पढ़ी की जिसपर हुक्म हुआ कि आपको यहां आने जाने और रहने सहने का उतना ही खर्च मिलेगा जितना एक तहसीलदार को मिलता है आप अपने बिल भेज दें। मई सन् १९४५ से मेरे तथा अन्य जमींदार मेम्बरों के आग्रह पर इसमें कुछ वृद्धि होगई।

उन्होंने अपने काम का व्यौरा जो असेम्बली में किया इस भाँति नोट किया है। —"मैंने सन् १९२९ में १२ सन् १९३० में ७ सन् १९३२ में २१ सन् १९३३ में ३ सन् १९३४ में ४ सन् १९३५ में २ सन् १९३६ में ७ सन् १९३८ में १० सन् १९३९ में २९ सन् १९४० में २४ और सन् १९४१ में १७ प्रश्न किये जिनका योग १३६ होता है।"

प्रस्ताव जो उन्होंने पेश किये उनका व्यौरा इस भाँति अंकित किया है। सन् १९३२ में गंगानगर में एक मुंसिफ कोर्ट बढ़ाने के लिये था क्योंकि डिस्ट्रिक्टजजी में काम ज्यादा था। सन् १९३४ में सैशन कोर्ट

स्थापित करने के लिये । सन् १९३९ में जमीनों के रहन व क्रय पर जो पावन्दी राज ने समय समय पर लगाकर किसानों की दिक्कतें बढ़ाई थीं उन पावन्दियों को हटाने के लिये । सन् १९४१ में ४५०) से अधिक के अफसर भर्ती करने पर रोक लगाने जैसे उपयोगी प्रस्ताव पेश किये ।"

उन्होंने जो विल असेम्वली में पेश किये उनको इस भाँति नोट किया है—सन् १९२९ में हिन्दू विवाह एक्ट की धारा ६ की धारा में उल्लेखित लड़कियों की विवाह आयु १४ से १८ करने और इस उम्र की लड़की से शादी करने वाले पुरुषों की आयु अधिकतम ३५ कर देने का संशोधन पेश किया ।

सन् १९३२ में मृतक भोजों पर पावन्दी लगाने का विल पेश किया जिसे सामाजिक मामलों में सरकार दखल नहीं देना चाहती यह कह कर टाल दिया गया सन् १९३६ में पब्लिक रक्षा विल पर जिसे मैं पसन्द नहीं करता था। तटस्थता ग्रहण की ।

सन् १९४० में जावता दीवानी में दो संशोधन पेश किये । मेरा अनुभव यही है कि सकार किसी भी ऐसी बात को पसन्द नहीं करती जो पब्लिक के जरिये कही जाय और पब्लिक के हित के लिये हो । मेरी ही भाँति पं० माधव प्रसाद जी व सेठ मालचन्द कोठारी के सुझावों की भी गति हुई ।

मैंने वर्षों यही स्वप्न देखे कि यदि महाराजा साहब

तक प्रजा की तकलीफें सही रूप में पहुँचाने का इरादा मंत्रिगण और उच्च अवसर करले तो अवश्य ही कुछ संतोष-प्रद कार्यवाही हो सकती है। मैंने इसी उद्देश्य से मंत्री और अधिकारियों से सम्पर्क भी बढाया किन्तु उनको मैंने किसानों का सही हितैषी नही पाया। जब सन् १६४१ में प्रेसीडेन्ट चीफजज को बनाया तो मुझे पूर्ण आभास हो गया कि कदम प्रगति की ओर नही पीछे की ओर है क्योंकि नियामक और निर्णायक दोनों विभागों का एक ही प्रमुख बिलकुल सामन्तशाही को दृढ़ बनाना है।

जब प्राइम मिनिस्टर और दरबार बिगड़े

चौधरी साहब की सहनशक्ति का पारा भी बराबर उसी गति से बढ़ रहा था जिस गति से बीकानेर में दमन और किसानों की बेइज्जती तथा देश में अत्याचार के विरुद्ध आन्दोलन बढ़ रहे थे। उनका हृदय जहाँ, अपने देहाती भाइयों की तकलीफों और बेइज्जतियों से दुखी था। उन्हें स्वयं भी कई अफसरों से अपमानित होना पड़ा था। उन्होंने इस प्रकार की कई घटनाओं का वर्णन अपनी डायरियों में किया है। सन् १९२९ ई० की एक घटना उन्होंने इस प्रकार लिखी है—

"२८-९-२९ को प्राइम मिनिस्टर के चीफ सेक्रेट्री ने मुझे लिखा कि ३ अक्टूबर को ५ बजे सायं लालगढ़ पैलेस में एडमिनिस्ट्रेटिव कान्फ्रेंस हो रही है उसमें हिजहाइनैस महाराजा साहब भी बोलेंगे इसके अलावा ग्रामीण जनता की भलाई की तजवीजों व जरियों पर बहस के लिये एक कान्फ्रेंस ७ अक्टूबर को एक बजे (जार्ज फिफ्थ) पंचम जार्ज हाल में होगी और ट्रेडकामर्स तथा इन्डस्ट्री की उन्नति के लिये आठ अक्टूबर को उसी पंचम जार्ज हाल में एक मीटिंग और हो रही है चूंकि हिज हाइनैस की गवर्नमेंट ने आपको इन कान्फ्रेंसों का मेम्बर मुकर्रिर किया है। आप

ठीक समय पहुँचें और आपको जो तजवीजें पेश करनी हों मुझे लौटती डाक से भेजें---चौधरी साहब लिखते हैं। कि ठीक समय पर लालगढ़ पैलेस में पहुँचा इन्सपेक्टर जनरल कस्टम व एक्साइज लेजवा साहब के पीछे मेरी कुर्सी थी उस पर मैं बैठ गया मैंने लेजवा साहब को कहते सुना, यह सख्स तो मेरे पास अहलमद्द था मै उनकी बात को पी गया इतने में राय बहादुर ठाकुर भूहरेसिंह जी मेरे पास आकर खड़े हुये और कहा जाटड़ा लालगढ़ मे कुर्सी पर बैठे हैं। मैने कहा जमाना शायद जाट को इससे भी आगे ले जाय मुझे यह भी मालुम हो गया कि पन्नीकर साहब की "बाइग्रोफी आफ महाराजा बीकानेर" मे जो मेरा फोटो छापने के लिये तलब किया था इस तरह की ओछी मनोवृति के महाराजा के सलाहकारों के होते हुये उस पुस्तक में छपना असम्भव ही है। और हुआ भी यही कि महाराजा बीकानेर के जीवन चरित्र की पुस्तक में मेरा फोटो नहीं छापा गया।

बीकानेर में राजाओं के समय यदि किसी जाट को कोई मान या पद कभी मिल जाता था तो जागीरदार कहा करते थे "सोने के थाल में यह लोहे की मेख है।"

बात चीत और चिट्ठी पत्री में राजा हरीसिंह जी महाजन, ठाकुर मेघसिंह जी मेलिया, कुँवर अमरसिंह जी गारप श्री गुलाबसिंह जी राजवी आदि दो चार राजपूत सरदारों को छोड़कर सभी रैकारे से ही सम्बोधित करते थे

महाराजा गंगासिंह ने यह ढंग बनाया हुआ था कि जब वे रैकारे से बोलें तो लोग समझते थे कि महाराजा साहब हमसे खुश हैं। और जब जीकारे से बोलें तो लोग उन्हें गुस्से में समझते थे ऐसा वास्ता एक बार मेरा भी महाराजा साहब से पड़ गया सन् १६३६ के राजसभा के अधिवेशन में पूछने के लिये मैंने जो सवाल भेजे, उसमे राज की बदनामी का खयाल किया गया, राज विलास में जब गैर सरकारी मेम्बर इण्टरव्यू के लिये बुलाये गये तो मैंने देखा कि मेरे प्रश्नों की लम्बी लिस्ट पर लाल पेन्सिल के निशान लगे हुए है। महाराज ने मुझे सम्बोधित करते हुए कहा चौधरी हरिश्चन्द्र जी आपने ये क्या सवाल पूछे है ? इतना कहते २ उनका चेहरा लाल होगया मैं समझ गया परन्तु मैंने दृढ़ता के साथ कहा इन परदेशियों की भरमार को हम कब तक सहन करेंगे मेरा यह जवाब महाराज की तबियत के अनुकूल था क्योंकि वे भारत सरकार पर यह प्रकट कर रहे थे कि मेरी प्रजा परदेशियों को ऊँचे ऊँचे ओहदों पर नहीं चाहती है। क्योंकि जवाब उनके अनुकूल था इस लिये वे ढीले पड़ गये और बोले थाराम्हारा वड़ेरा सागे रह्या आपो भी सांगे रहस्या।

इससे पहिले प्राइम मिनिस्टर से मेरी अकड़ा तकड़ी होली थी उन्होंने जाते ही जोर से पूछा था आपका नाम चौधरी हरिश्चन्द्र है मानो मैं बहरा था मैंने भी ऊँचे स्वर से उत्तर दिया जी हाँ कहते तो हैं। उनके कुर्सी की ओर

इशारा करने पर मैं बैठ गया उन्होंने डैस की मेज में से मेरे प्रश्नों का कागज निकाला और कहा यह आपके प्रश्न है। मेरे यह कहने पर जी हाँ मेरे ही है। वे बोले क्योंकि आप दरबार की पुरानी रिआया हैं। राजभक्त हैं। अगर यही शक्ल अखबारों में गई तो बदनामी होगी। मैने कहा यह बदनामी राज कर्मचारियों के जुम्मे लगेगी जो बार २ अपना हुक्म बदलने में जरा २ से लोभ के कारण नही चूकते। आखिरकार बहुत सी बातचीत के बाद मैंने अपने प्रश्नों को कुछ हल्का कर दिया, अगर मैं ऐसा न भी करता तो प्रेसीडेट की हैसियत से वे उनको पेश होने से रोक सकते थे।

सन् १६४० की एसेम्बली की मीटिंग में बजट पर बोलते हुये फिर सरकारो अधिकारियों की ज्यादतियों को दुहराया, मैंने कहा इन बड़े २ अफसरों से प्रजा व छोटे मुलाजमान सभी दुखी हैं। प्रजा कहती है हमारी सुनाई नहीं होती और छोटे मुलाजमान का कहना है कि उनके काम की कदर नहीं होती।

बड़े अफसर भी चौधरी साहब से इतने चिढ़ गये थे कि जब उनके पास कोई दुखी आदमी जाकर पुकार करता तो वे कहते चौधरी हरिश्चन्द्र के पास जाओ।

इसका सब से बड़ा और ज्वलन्त उदाहरण चौधरी मोतीराम जी के दामाद पृथ्वीसिंह जी का है। चौ० सा० ने उसको सर्विस न मिलने पर सन् १६३६ की असेम्बली

में सवाल पेश किया था। इस पर वीकानेर दरवार बहुत नाराज हुये थे और उन्होंने प्राइवेट मुलाकात के समय आँखें तरेर कर चौधरी जी से कहा था। असेम्वली जातीय सवालों के लिये नहीं है। मोतीरामजी को जव इस घटना का पता चला तो वे सम्वधित मिनिस्टर से मिले और उन्होंने मिनिस्टर से कहा कि चौधरी हरिश्चन्द्र तो हम से नाराज रहते हैं इसीसे उन्होंने पृथ्वीसिह का नाम लेकर सवाल किया। मिनिस्टर ने उन्हें यह टका सा जवाब दिया कि अटल साहव के पास जाओ। अटल साहव उन दिनों गंगानगर के कोलोनाईजेशन मेम्वर थे और उनकी नियुक्ति तथा काम की प्रशंसा करते हुये प्राइम मिनिस्टर ने असेम्वली के उद्घाटन पर उन्हें योग्य और लोकप्रिय शासक वताया था किन्तु चौ० हरिश्चन्द्रजी ने उनके समय में वीकानेर में होने वाली धांधलियों रिश्वतखोरियों पर प्रकाश डालकर पर्दा साफ कर दिया था। न हरिश्चन्द्रजी उन्हें पसन्द करते थे और न वह हरिश्चन्द्रजी को पसन्द करते था। असेम्वली में पृथ्वीसिह का सवाल आने पर उसने यह किया कि पृथ्वीसिह का नाम ही लिस्ट से निकल दिया और जव भी मोतीरामजी पृथ्वीसिह जी को लेकर अटल साहव के पास गये तो यही जवाव दिया कि "चौधरी हरिश्चन्द्रजी के पास जाओ।"

चौधरी हरिश्चन्द्रजी ने इस घटना पर टिप्पणी दी है कि मैं यह समझता था कि महाराजा गंगासिहजी तक की

ये बातें पहुँचे तो शायद वे इन वेइन्साफियों को रोकने का प्रयत्न करेंगे किन्तु पृथ्वीसिंह के सवाल ने मेरे इस भ्रम को भी दूर कर दिया। महाराजा ने इस प्रश्न पर आँखें तो नटेरी और यह भी कहा कि शायद तुम यह समझते हो कि मैं राजपूतों का ही हूँ किन्तु पृथ्वीसिंह के साथ तो उन्हें न्याय करना था उसे तो नौकरी पर लगाते ही।"

आगे उन्होंने लिखा है कि अव तक जो थोड़ी वहुत आशा महाराजा गंगासिंह से थी वह समूल नष्ट हो गई और असेम्वली को केवल महाराजा की भाट-सभा के अव अधिक कुछ भी समझने की मेरी आस्था नहीं रही। और यह अच्छा ही हुआ कि कालोनाइजेशन कमिश्नर जानकी नाथ अटल और श्री० मान्धातासिंह प्राइम मिनिस्टर के जोर देने पर श्री महाराजा श्री गंगासिंह ने सन् १९४२ में मेरे स्थान पर एक मुसलमान को नियुक्त कर लिया जो कभी नं० १० का वदमास और अनपढ़ था और असेम्वली को इमली कहा करता था।

म्यूनिस्पल कमिश्नर

महाराजा गंगासिंह अपने समय के अत्यन्त कूटनीतिज्ञ राजाओं में थे। अँग्रेज जिस भाँति भारत में राज्य करते थे और विदेशों को यह बताने के लिये कि भारत में अँग्रेज प्रजातन्त्र का विकास कर रहे हैं स्वायत शासन संस्थाओं की स्थापना कर रहे थे उसी भाँति अँग्रेजों को यह बताने के लिये कि बीकानेर भी उन्हीं की भाँति प्रगतिशील है अपने राज्य में स्थायत शासन संस्थाओं की स्थापना कर रहे थे। बीकानेर असेम्बली उन्होंने सन् १९१३ में ही स्थापित कर दी थी और सन् १९३० में म्यूनिस्पलटियों का प्रसार किया। गंगानगर में जो पहली म्यूनिस्पलटी बनी। उसमें चौधरी हरिश्चन्द्र का नामीनेशन भी हो गया। उस समय के कमिश्नर ने आपके नाम के लिये शिफारिस करते हुये लिखा था "चौधरी हरिश्चन्द्र जैसे आदमी की जो कि अपनी काबिलियत का सिक्का असेम्बली में जमा चुका है। सेवायें गंगानगर की म्यूनिस्पलैटी के लिये निश्चय ही मुफीद होंगी।

चौधरी साहब कहते हैं। मैं छः साल तक म्यूनिस्पलटी का मेम्बर रहा, पहले तो यह केवल किसानों की शोषक थी। मन्डी में जो माल गाँवों से किसानों का बिकने के

लिये आता था उस पर चुगी लेना इसका काम था इसलिये इसकी आमदनी भी कम थी। सन् १९३०-३१ के वर्ष में कुल २६९५॥=)। आमदनी रही जो सन् १९४६-४७ के मुकाविले पचास वां भाग है। किसानों पर अधिक भार न वढ़े चुंगी की दर न बढ़ें और वढ़े हुये खर्च भी पूरे होते रहे इसके लिये व्यापारियों के ऊपर उनकी विल्टियों के हिसाव से चुंगी मुकर्रिर की गई। वैसे यह अप्रत्यक्ष रूप से किसानों पर ही पड़ती थी। भारत के कृषि प्रधान देश होने के कारण प्राय: सभी टैक्सों का प्रभाव अप्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष रूप से किसानों पर पड़ता है।

मुझे याद है कि एक वार कर्मचारियों की गवन और अन्य गड़वड़ों से एक निश्चित रकम की कमी हो गई। इन गड़वड़ों में वायस प्रेसीडेन्ट का भी हाथ था। किन्तु अधिक झंझट से बचने के लिये यह किया गया कि मेम्वरों पर वह घटी हुई रकम डाली गई। लाला मेम्वरों पर १००-१०० रुपये डाले गये थे। मुझ पर भी पचास डाले गये। खैर घाटा तो पूरा कर दिया गया किन्तु जैसे मुझे असेम्वली से नफरत होती जा रही थी वैसे ही म्यूनिस्पलटी से भी, क्योंकि जिस ध्येय से अर्थात् जनराज्य के विकास के लिये यह संस्था कायम की जा रही थी वह गलत आदमियों के भर जाने से वदनाम होने के आसार पैदा कर रही थीं। यह मेरा छः साल का अनुभव है।

केनाल और बेंकिङ्ग सलाहकार कमेटियाँ

केनाल एडवाइजरी कमेटी की भूमिका में चौधरी साहब लिखते हैं :—"पब्लिक में से कुछ एक लोगों को बुला कर और उनसे मीठी मीठी बातें करके प्रजा के रोष को ठंडा करने को इस प्रकार की कमेटियां बनाना सरकारी निगाह में अचूक ओषधियां हैं।

गंगानहर के आने पर जो कठिनाइयां नहर के उद्देश्य को स्वार्थपूर्ण तरीके से प्रयोग करने के कारण उत्पन्न होगई। उन कठिनाइयों को दूर करने के लिये प्रजा की शिकायतें अफसरों के चित्त को बोझिल बनाने लगी। उसी बोझ को हल्का करने को रेवन्यू कमिश्नर साहब ने गंगकेनाल सलाहकार समिति का प्रस्ताव बीकानेर सरकार के सामने रक्खा जो स्वीकार कर लिया गया। यह एक अच्छा खिलौना था। मुझे इस खिलौने से खेलने के लिये सरकार ने नामजद कर दिया। यह घटना १९३२ ई. की है। मिटिंग में हमें बुलाया जाता तो हम जाते किन्तु न तो वहां हमारी राय की कोई कदर होती थी और न उसका कोई मूल्य था। वर्ष भर में एक बार या कभी बीच में भी हमें ... आता था। एजन्डा हमारे सामने अंग्रेजी में आता ... मेरे तीन साथी जो रायसिंहनगर, पदमपुर आदि से ...

थे मामूली सी हिन्दी उर्दू जानते थे। फिर भी हम कुछ न कुछ कहते ही रहते थे कुछ पुलियों के निर्माण के लिये वक्त पर पानी न मिलने आदि की बातें हम कहते रहते किन्तु नये आये हुये कमिश्नर अटल साहब को यह भी मंजूर न था। उन्ही की कृपा से मुझे नगरपालिका का यह कमिश्नरी का पुच्छला छोड़ना पड़ा।"

इससे पूर्व सन् १९२९ ई० में चोधरी साहब को बेंकिङ्ग इनक्वारी कमेटी का भी मेम्बर बनाया गया था। चौधरी साहब लिखते हैं कि "संगरिया जाट स्कूल और दूसरी सामाजिक संस्थाओं के काम के लिये आधा जन्म पैदल और थर्डक्लास डब्बों में सफर करने में बीता। ऐसा लगता था कि मेरे भाग्य में ही तीसरा दर्जा विधाता ने टीप दिया है किन्तु धन्य हो बेंकिङ्ग कमेटी के संस्थापकों को जिन्होंने कि इस कमेटी के मेम्बरों के लिये फर्स्ट क्लास का किराया मुकर्रिर किया। इससे विधि के लेख में मेख ठुक गई। वे आगे कहते हैं कि मुझे तो किसानों के भारी कर्ज की फिक्र थी इसलिये मैंने उनके कर्ज की जांच का प्रश्न रक्खा, इसके लिये सरकार ने एक तहसीलदार नियुक्त भी किया किन्तु ईश्वरी ही जाने उसने क्या रिपोर्ट की और राज्य ने क्या एक्सन उस पर लिया।

परदेसियों का कोप

चूंकि सारे राजस्थान में अशिक्षा का पूर्ण साम्राज्य होने के कारण यहाँ पर अच्छे अफसर रखने के लिये राजस्थान से बाहर के ही लोग बुलाये जाते थे जिनका प्रायः उद्देश्य अपना समय बिताना होता था। प्रजा के और खास तौर से देहातियों के दुखों और गरीबी से उन्हें कोई सम्बन्ध न था वे उनके साथ कठोर व्यवहार भी करते थे। इसकी शिकायत एक बार चौधरी साहब ने असेम्बली में इन शब्दों में की थी। "उनके लिये सरकारी अधिकारी और कर्मचारी कोई अच्छा काम करें यह तो अलग रहा वे अच्छा व्यवहार भी तो उनके साथ नही करते। इस कहावत का वे तनक भी पालन नहीं करते कि यदि तुम किसी को गुड़ नहीं दे सकते तो गुड़ की सी (मीठी) बातें तो करो।

इन बातों का नतीजा यह हुआ कि परदेशी अफसर उनसे चिढ़ने लगे और अटल साहब तो इतने चिढ़े कि उन्होंने सीधे महाराजा गंगासिंह से चौधरी साहब की शिकायत की और जब उनकी शिकायत को महाराजा ने इन शब्दों में टाल दिया कि "उसके कड़वे प्रश्नों से भी हमें यह लाभ है कि बाहर के लोग समझते हैं कि असेम्बली

सदस्य खुलकर अपना मत व्यक्त करते हैं।" किन्तु राजा मान्धातासिंह जब बीकानेर के मुख्य मंत्री बने तो अटल साहब ने उनको भड़काया उसका जो नतीजा निकला पीछे लिखा जा चुका है।

आखिर एक ऐसे वकील भी निकले जिन्होंने देशी का सार्टीफिकेट प्राप्त कर लिया वे एक दिन कहने लगे यदि हरिश्चन्द्रजी देशी हैं तो फिर परदेशी किसे कहें। मैं समझ गया कि यह कोई षडयंत्र मुझे परदेशी ठहराने के लिये रचा जा रहा है तब मैंने अपने पुस्तैनी गांव के ठाकुर संगतसिह को अदालतों में खड़ा किया। जिन्होंने कहा, चौ० हरिश्चन्द्र के पुरुषा हमारे पुरुषों से भी बहुत पहले से बछराला में आबादा है। इनके बुजुर्गो ने दान में जमीने दी थी कई जोहड इनके बापदादों के नाम पर है।

असेम्बली में भी चौधरी साहब ने एक प्रश्न भेजा कि दरबार बीकानेर के इल्म में यह है कि मेरे बुजुर्गों ने महाराजा करणसिह जी के बछराला होकर आते समय उनकी गोठ की थी। इस पर दरबार की ओर से उत्तर मिला था "थारा म्हारा वडेरा सागे रहया है।"

अंत में चौधरी साहब ने लिखा है। मुझे इस बात का गौरव था कि मैं बीकानेरी हूं किन्तु परदेशियों के षडयंत्र से मेरा वह गर्वचूर हो गया और उसी की रक्षा के लिये मुझे इतना प्रयत्न करना पड़ा तथा अदालती सार्टीफिकेट बीकानेरी होने का प्राप्त किया।

गौ-भक्त : चौ० हरिश्चन्द्र

हिन्दू धर्म शास्त्रों में गौ, गंगा और गायत्री की बड़ी महिमा है। भारतियों की गौ-भक्ति प्रसिद्ध है। कृषि प्रधान देश होने के कारण यहां गौ की महिमा संसार के अन्य देशों से अधिक है और जाट जो कि भारत की धर्म प्राण और निपुण कृपिकार कौम है उसके लिये तो गौ माता है। प्रत्येक जाट बालक विरासत में ही गौ-भक्ति प्राप्त करता है। चौ० हरिश्चन्द्र जी ने गौ-भक्ति के सम्बन्ध में जो विचार प्रकट किये है उन्हें हम कतई तौर पर उन्ही के शब्दों में यहाँ उद्धत करते हैं। वे लिखते हैं—

"हमारे बडेरे दादेरा नानेरा वाले तो सैकड़ों गायें रक्खा करते थे। पिताजी कहा करते थे कि "१७-१८ साल की आयु पर्यन्त म्हें लंगोटी बांधी अर बछड़े चराये"। उस आयु तक उन्होंने पेट अन्न से भरने की अपेक्षा दूध ही पिया। यह सुविधा मुझे तो प्राप्त नहीं हुई किन्तु फिर भी बचपन में गौएं चराने के कारण गौमाता में प्रेम बहुत है। गौ सचमुच वैतरणी से पार करने वाली और सुखदात्री है। ऋषि दयानन्द जी ने गौ करुणानिधि पुस्तक लिखकर भारत की महान सेवा की है। मुझे गौ-सेवा विरासत में मिली है। इसलिये गौ रक्षा के लिये यथा सामर्थ्य प्रयत्न

करता ही रहा हूँ। सन् १९११ ई० में श्री के. एस. जायसवाल ने एक अपील निकाली कि एक करोड़ मनुष्यों के हस्ताक्षर लेकर मैं इंगलिस्तान में आन्दोलन करने के लिये एक डेपूटेशन ले जाना चाहता हूँ। हस्ताक्षर और रुपया दोनों की मदद मेरे देश के लोग करें। मैंने देहातों में घूमकर कई हजार हस्ताक्षर लिये और दो सौ रुपया चंदा के भी जायसवाल साहब के पास मनीआर्डर व रजिस्ट्री से भेज दिये।

हरिद्वार की गौशाला को प्रतिवर्ष यथा सामर्थ्य दान देता रहा हूँ। गौ सेवा और गौपालन को मैं अपना परम-धर्म मानता हूँ। गौपालन मे मेरी धर्मपत्नी बहुत दक्ष है। उसने अच्छी नस्ल की गाय हमेशा रक्खीं हैं और उनसे पैदा हुये बच्चे बच्चियों को और भी उन्नत नस्ल का खुराक और लालन पालन द्वारा बना दिया है। उनकी पशुपालन की कार्य कुशलता से हमारी गायों ने २०-२२ सेर तक दूध दिया है। हमारी गायों की बछड़ियों की कद्र राज्य के बड़े-बड़े लोगों ने की है। बीकानेर हाई-कोर्ट व राजस्थान हाईकोर्ट के जज पं० त्रिलोचनदत्त जी भी हमारी गाय की बछिया ले गये। यह विचार मैंने इसलिये प्रकट किये है कि गौओं की रक्षा के प्रश्न के साथ गौपालन की ओर भी लोगों की रुचि बढ़े"।

आपके बीकानेर के प्रसिद्ध उद्योगपति मोहता परिवार से बड़े मीठे सम्बन्ध थे और अब तक हैं किन्तु आपने जब

अखबारों में पढ़ा कि लाहौर में मोहता लोग बूचड़खाना बनवा रहे है तो आपके दिल को बड़ी चोट लगी और आपने श्री रामगोपाल जी मोहता को लिखा—

"माननीय सेठ रामगोपाल जी व रायबहादुर सेठ शिवरत्न जी मोहता।

कल मैंने हिन्दी मिलाप में पढ़ा है कि हरमन मोहता कम्पनी ने पंजाब में ११ लाख रुपये की लागत का बूचड़खाना बनवाने का ठेका लिया है। संसार में यह कसाईखाना दूसरे नम्बर का होगा। गौकशी इसमें हुआ करेगी। यह समाचार लोगो में चर्चा का विषय बना हुआ है। इस समाचार को पढ़कर मेरे अन्तःकरण पर भी ठेस लगी है। यदि यह समाचार सत्य है तो मेरे विचारानुसार इससे श्रीमानों की अद्वितीय प्रशंसा और धार्मिक प्रतिष्टा को भारी धक्का लगने की संभावना है। मेरी समझ में ही अभी तक नही आ रहा है कि आप जैसे बुद्धिमान गौ हितैषी सज्जनों के नाम से ऐसा ठेका लिया भी जा सकता है। कृपया इस पर विचार करें और समाचार दें असत्य हो तो प्रतिवाद छपवाने का कष्ट करें।

३०-७-३३

इस पत्र का उत्तर मोहता पैलेस किराची से ५-८-३३ को निम्न प्रकार प्राप्त हुआ:—

श्रीमान चौधरी हरिश्चन्द्र जी वकील, गंगानगर।

माननीय वकील साहब आपका कृपा पत्र मिला। इसके लिये अनेक धन्यवाद। आपने जिस समाचार पर

के आधार पर लाहौर के कथित ठेके का जिक्र किया है। वह सही है और आपने अपने स्नेहशील स्वभाव से समाधान कर लेना चाहा है। इससे मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। इस सम्बन्ध में निम्न पंक्तियाँ लिखता हूँ। आशा है इससे आपको कुछ संतोष होगा।

इस सम्बन्ध में सबसे पहले यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि हमने कस्साव खाने का ठेका नही लिया है। मकान बनाने का ठेका लेना हमारी कम्पनी का व्यवसाय है। उसी व्यवसाय की लाइन में सरकारी मकानों के जो ठेके हमें मिलते हैं। उन मकानों को हम बनवाते है। उन मकानों को सरकार चाहे गिरजाघर के उपयोग में लावें चाहे जेलखाने के में। उससे हमारा कोई सरोकार नहीं रहता।

वैसे सच्ची गौ-रक्षा तभी सम्भव होगी जब भारत से गौर भक्षकों का प्रभाव नष्ट हो जायगा।"

वात कुछ अंश तक ठीक थी चौधरी साहब अर्द्ध संतुष्टि की हालत में चुप नहीं रह गये। दूसरा पत्र लिखा जिसका उत्तर नही दिया। किन्तु दरवार की स्वर्ण जयन्ती पर जब मिले तो बड़े ही स्नेह के साथ मिले और चौधरी जी की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा जब उन्होंने सुना कि इन धर्मवीर मोहता बन्धुओं ने ग्यारह लाख के उस ठेके का परित्याग कर दिया है।

जांच कमीशन की मेम्बरी

भगवान कृष्ण ने महाभारत के एक संदर्भ में नारद के यह पूछने पर आपके शासन में क्या डौल डाल है ? भगवान श्रीकृष्ण ने कहा था और तो सब ठीक है किन्तु हमारी कौंसिल में अक्रूर एक ऐसा सदस्य है जिसे हम न तो हज्म कर सकते हैं और न उगल ही सकते हैं। उसके तीखे प्रहारों से नाक में दम है।" अभिमानी यादवों की राजसभा में अक्रूर वाम पक्ष का नेतृत्व करता था। मद में चूर हुये राठौरों की बीकानेर असेम्बली में चौधरी हरिश्चन्द्र वाम पक्षीय दल के नेता तो नहीं थे किन्तु वाम पक्षी अवश्य थे। उनके प्रश्नों और प्रस्तावों को---हालांकि वे आज की स्थिति में बहुत हलके और मधुर थे---राठौर नेता पसन्द नहीं करते थे किन्तु उन्हें सहज ही वे उगलना भी नहीं चाहते थे जैसा कि महाराजा गंगासिंह ने कहा था कि इसके रहने से बाहर के लोग हमारी राजसभा को भाषण की स्वतंत्रता का स्थल मानते हैं, अतः उन्हें सभी सुधार सम्बन्धी कमेटियों में बुलाया और सिलेक्ट किया जाता था।

शासन की स्थिति क्या है गत पिछले १५ वर्षों में शासन कितना सुधरा है ? इसकी जाँच के लिये जो कमीशन नियुक्त किया उसमें चौधरी साहब को सिलेक्ट कर लिया

गया । कमीशन की जब बैठकें हुई और रिपोर्ट तयार करने का अवसर आया तो चौधरी साहब ने पुलिस की पोल के परत खोलना आरम्भ कर दिया । और कहा शिक्षा में भी कोई प्रगति नही हुई है। इस पर यह अक्रूर (मीठा आदमी) राठौरी शासकों के लिये यहाँ भी क्रूर (खोटा आदमी) साबित हुआ ।

जाटों को बराबरी का दर्जा देने को एक तो राठौर सरदार यूँ ही पसन्द नहीं करते थे दूसरे चौधरी साहब उनकी पोल पट्टियों को खोलते रहते थे इसलिये हर जगह वे व्यंग कसे बिना चौधरी साहब पर नहीं मानते थे जब वे एड़-मिनिस्ट्रेटिव कान्फेन्स में आमंत्रित हुये और सरदारों की पंक्ति में कुर्सी पर जा बैठे तो एक राठौर सरदार ने ताना दिया "यह सोने के थाल में लोहे की कील" । राठौर सरदार चाहते थे कि यह हमारे गीत गावें किन्तु उनसे यह नहीं होसका । नतीजा यह हुआ कि वे चौधरी हरिश्चन्द्र जी को हज्म तो नहीं कर सके । उन्हे उगलना ही पड़ा और सन् १६४२ से उन्होंने उनका असेम्बली, जिलाबोर्ड, म्यूनिस्पलबोर्ड और सभी कमेटियो से बहिष्कार कर दिया । उन्होंने समझा सोने की थाल की लोह कील निकाल दी गई । थाल सम्पूर्ण सुनहरी हो गया किन्तु इसका नतीजा राठौर सरदारों को जो भुगतना पड़ा वह आगे के पृष्ठों में है । यह आग पानी में लगाई गई थी ।

समाज सुधारक : चौ० हरिश्चन्द्र

बीकानेर के किसान जहाँ सामन्तशाही शोषण से भूखे नंगे और त्रस्त थे वहाँ वे सामाजिक कुरीतियों के भी पूर्णतः शिकार थे। अशिक्षा के कारण सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ना या ढीला करना उन्हें और भी कठिन था। चौधरी हरिश्चन्द्र जी ने उनकी शिक्षा के लिये तो अपना जीवनदान ही किया हुआ था किन्तु यह जानते हुये भी कि यह अशिक्षा के कारण है। शिक्षा प्राप्ति के लम्बे समय तक इस ओर से वे उदासीन भी नहीं रहना चाहते थे। इसलिये जहाँ भी वे गांवों में जाट स्कूल संगरिया के लिये चन्दा करने जाते वहां वे सामाजिक कुरीतियों से छुटकारा पाने का भी प्रचार उन लोगों में करते। यहां हम सन् १९१९ ई० की उनकी डायरी के कुछ अंश समाज सुधार के प्रयत्नों के इस उद्देश्य से उद्धरत करते हैं कि आज के लोगों को पता चले कि ४०-४५ वर्ष पहले चौधरी साहब ने उनके हित के लिये क्या-क्या किया है ? कितनी विथा उनके दिल में समाज सुधार के लिये रही है—

लालगढ़ २-१-१९

लोग ओसर की बड़ी धूमधाम मचा रहे हैं। लाखों रुपया आन की आन में सिर पर कर्ज का लाद रहे हैं।

यह बड़ी बुरी रिवाज है। प्रजा उजड़ रही है परन्तु राज अधिकारियों को कोई ध्यान नही।

× × × ×

लालगढ़ ३। १। १९

हमने लोगों को ओसर-मोसर की हानियाँ समझाई किन्तु उसकी समझ में कुछ नही आता। अविद्या के ग्रसे हुये जो हैं। प्रचार से कुछ लोग समझने तो लगे हैं।

× × × ×

लालगढ़ ४। १। १९

आज लालगढ़ के लोगों ने समझाने पर ३० वर्ष तक की उम्र के स्त्री पुरुष के मरने पर ओसर न करने की बात तो मानली और कागज भी लिख दिया है। मैंने ४५ वर्ष की बात कही थी जो नही मानी।

× × × ×

लालगढ़ २४। १। १९

ठाकुर भूरसिंह जी के साथ राजा हरीसिंह जी महाजन से मिला। क्योंकि मोहता मेहरचन्द्र जी रेवन्यू कमिश्नर ने मुझे सलाह दी थी कि आप मेरी व राजा सा० महाजन की सहमति से इस काम को आगे बढ़ावें।

राजा साहब ने हमारे इस काम से पूरी सहानुभूति प्रकट की और कहा कि मैं अपने पट्टे के ८० गाँवों में इस सुधार को अवश्य कराऊँगा।

× × × ×

२६ । १ । १६

हुक्मा चौधरी मिरजावाले ने कहा, ओसर न करने की उम्र २५ साल रक्खी गई थी यह उस का वहाना है वह अपने भतीजे की २३ वर्षीय मृतक वहू का ओसर करना चाहता है मैं इस ओसर को रोकने की भरपूर कोशिश करूँगा ।

× × × ×

१-२-१६

ओसर वन्दी की उम्र २५ से ३० ठहराई । सूखा माझूं जीवण की वहू का ओसर करने को पग मारते रहे ।

× × × ×

२ । २ । १६

मूर्ख लोग ३० वर्ष की उम्र का भंग करना चाहते है । इसलिये पहले इन्हें ठीक करके ही महाजन की ओर जाना हो सकेगा ।

× × × ×

३ । २ । १६

सूखा मांझू ने शर्त ३० साल की ओसर की तोड़ दी और अपनी सगी २३ साल वाली स्त्री का ओसर करा दिया । गुड़ का सीरा कराया गया ।

महाजन ७ । २ । १६

वकील हरीचन्द्र जी

पत्र थांरो मिरजेवाली सूं ता० ३-२-१६ रो लिख्यो आज पहुँच्यो । अठै म्हे थारी वहुत ही उडीक राखी और वसन्त पंचमी नैं एक तार भी थानैं सूरतगढ़ दियो कि अठै जल्दी आवो परन्तु अब थांरे पत्र सूं खबर पड़ी कि थे तो मिरजावाले हा । खैर कोई हरज नहीं फिर मौको आणो पर थाने अठै वुला सां । जद आई जो ।

अठै वसन्त पंचमी ने म्हे बाईस समझदार और मुखिया चौधरीयाने बुलाय लिया हा । परन्तु थे नहीं आया ईंए वास्ते माघ शुक्ला ६ ने उवां चौधरियाने वापिस उवांरे गाँवा जावणरी इजाजत दे दी ।

अब मैं थाने जद लिखूं । आई जो क्योंकि इतरां चौधरियां ने भेला करण में कुछ देर चाहीजे सो कोई मौको आसी जद मैं थाने सूचित कर दे सूं ।

हरीसिंह

ओसर मौसर के सिवा जो कुरीतियाँ विवाह शादियों में उस जमाने में प्रचलित थीं उन पर उनके हृदय के उद्-गार उस पत्र से प्रकट होते है जो उन्होंने चौधरी ताराचंद जी (अब स्वर्गीय) को लिखे गये १६-११-३० के पत्र में प्रकट किये थे । उन्होंने लिखा :—

श्रीयुत चौधरी ताराचंद जी नमस्ते !

पत्र आपका मिला । समाचार पढ़े । मैं अपने विचार

पत्र में ही लिख रहा हूं। मैं जाट जाति की अवस्था से सदा दुःखी रहा। और मेरा दुःख इस जीवन पर्यन्त बना रहेगा। अज्ञानांधकार में पड़ी हुई यह जाति अपने हानि लाभ से अनभिज्ञ रहने के कारण कुरीतियों के जाल में बुरी तरह से फंसी हुई है और महान दुख भोग करके भी दुखों से छूटने का कोई यत्न नहीं करती, हमारी जाति में अनेक कुरीतियाँ हैं। जिनमें विवाह की कुरीति भी कम नहीं है लोग कर्जो से दबे हुए हैं। फिर भी लड़कियों के विवाह में लड़के वाले से कर्ज या रीति के रुपये लेकर तीन दिन तक खूब खाते पीते हैं। लड़के वाला भी कर्जदार बन जाता है लड़की वाले यह नही सोचते कि लड़के वाले को कर्जदार बनाने से उनकी लड़की को ही तो दुख होगा। मैंने औसर बंद करके उस मौके पर उठावणी इत्यादि बंद कर दी हैं। उसी प्रकार भाई हिमतारामजी की लड़कियों का विवाह भी इस ढंग से करना चाहता हूँ कि लड़के लड़की वालों को तो उससे लाभ होवे ही परंतु और लोग भी उसी ढंग पर चलकर लाभ उठाने के इच्छुक बनें। वैसे तो धनाढय लड़के बहुत मिलते है परन्तु मैंने धन विद्या और सदाचार को ही माना है इस विचार का होते हुए मैं उन धनवानों को कैसे पसन्द करूं जिनके पास सदाचार एवं विद्या की कमी है। मैंने इसी उद्देश्य से गंगानगर बुलाया था। भाई हिमतराम जी मुझसे ऊपर होकर कोई काम नहीं करते। फिर भी उन पर संगति-दोष से

रूढ़िवादियों का अभी तक कुछ २ प्रभाव बाकी है। इसी कारण जिस दिन आप आयें वे खुलकर आपसे बातें नहीं कर सके मैं उनको तो राजी कर ही लूंगा परन्तु आपसे पहिले यह पूछना है कि इसी साल फाल्गुण तक हम भाई हिमताराम जी की लड़कियों का विवाह करने वाले हैं एक लड़की आपको इन बातों का निर्णय होने पर देने की इच्छा है। वे बातें यह हैं:—

(१) विवाह वैदिक रीति से होगा। (२) बरात नहीं बुलाई जावेगी केवल एक लड़का और इतना न जंचें तो पांच सात आदमी ही बुलाये जा सकेंगे (३) जिस दिन आप आयेंगे उसी दिन विवाह कर दिया जावेगा और दूसरे दिन विदा हो जायगी (४) न कुछ आपका खर्च होगा न कुछ हम दहेज दाइजे में देंगे (५) फिर भला नाच गीत तमासे की बात तो कहना ही व्यर्थ है। मैं ऐसा करने की बात क्यों सोचता हूं इसलिये कि लोगों को दिखाया जावे कि हम केवल कहने वाले नहीं हैं। करके दिखाने वाले भी हैं। (६) लेने देने और व्यर्थ की जीमनवार में दोनों घर व्यर्थ में लुटते है। फिर ऐसे समय जब कि पैसे का अभाव है, दुर्भिक्ष से प्रजा दुखी है जो भी कोई आडम्बरों में फंसा रहता है। वह जाति और देश का हित चिन्तक नहीं कहा जा सकता यदि किसी की सामर्थ्य होतो जाति के नौनिहालों को विद्वान बनाने में अपना धन लगावें।

क्या आप मेरे इन विचारों से बिना किसी दवाव और भय के खुले दिल से सहमत होंगे, अनिच्छा से ऐसी बातों को स्वीकार करने से लाभ नही होता। आपने सेठ जमनालाल बजाज व भाई परमानन्द की लड़कियों के विवाह के उदाहरण पढ़े होंगे मैं तो सोचता हूँ कि हम आपको अपनी लड़की देकर निश्चित होंगे और कभी भी आपकी ओर से हमारी लड़की को किसी भी प्रकार का कष्ट पहुँचने की सम्भावना नहीं दिखाई देगी। आप मेरे इस पत्र को कई बार विचार पूर्वक पढ़ें और श्री चौधरी चुन्नीलालजी से भी सम्मति लें तब उत्तर दें।

आपका हितैषी
हरिश्चन्द्र

जोधपुर
२-१२-३०

पूज्यनीय वकील साहब,

सादर नमस्ते,

सेवा में निवेदन है कि मैं आपसे खुद ही मिल चुका हूँ और आपके पत्र, को मैंने भली प्रकार पढ़ लिया है। आपने जो भी मुझसे कहा है। वह माननीय है। और आप जो भी मुझसे कहेंगे मैं शिरोधार्य कर आपकी आज्ञा का पालन करूंगा। आपने जो विवाह की शर्तें लिखी है। वे मुझे स्वीकार हैं। क्योंकि मैं स्वयं भी ऐसा ही चाहता हूँ मैने भाई साहब की भी राय ले ली है। वे इस आदर्श को

एक देव पुरुष

स्वर्गीय चौ० ताराचन्दजी सुपरिन्टेन्डेन्ट पुलिस
चौधरी जी के भतीजी दामाद

वहुत पसन्द करते हैं। आप यह जानते हैं कि मैं किसी दवाव और भय से अपने विचारो को दवाने वाला व्यक्ति नहीं हूँ मेरा हृदय स्वतन्त्र है। क्योंकि आप मेरे से एक आदर्श कार्य की वात कहते है। मैं उनसे सहमत हूँ। आप फाल्गुण में शादी करने की वात कहते हैं। अगर छुट्टी मिल गई तो इस समय वरना फिर आसाढ में विवाह करने को मैं तैयार हूँ। और जो आप जाट जाति की अवस्था पर दुखित रहते है सही है। आपने लिखा है कि किसी में सामर्थ्य हो तो वह जाति के बच्चों की पढ़ाई पर खर्च करे, इस ओर भी मैं पीछे नही रहूंगा। मैं यह मानता हूँ कि आदर्श कार्य करने वालों को कुछ दुख उठाने पड़ते हैं किन्तु उन दुखों में सुख छिपा हुआ रहता है। अपनी जाति के अन्दर जो कुरीतियां है। उन कुरीतियों के विरुद्ध चलने वाले आदर्श पुरुषों को आरम्भ में कठियाइयाँ आती है और उनका कुछ विरोध होता है। परन्तु धीरे २ उनका वही आदर्श कार्य विरोधियो को भी शुभ प्रतीत होने लगता है। और वे विरोधी भी आदर्शवादियों के अनुकरण के लिए तत्पर हो जाते है।

लिखने में कोई त्रुटि हुई हो तो क्षमा करना।

आपका आज्ञाकारी

ताराचन्द

चोधरी हरिश्चन्द्रजी ने एक जगह लिखा है कि चौधरी ताराचन्द पूर्ण आदर्शवादी और बात के धनी थे मेरा तो

उनके लिये श्रद्धा से माथा झुक गया। वे मानव नहीं देवता 'थे" और इसमें सन्देह नहीं चौधरी ताराचन्द जी पूर्ण आदर्शवादी थे इस विवाह के सम्वन्ध में ही उन्होंने १८-८-३१ को चौधरी हरिश्चन्द जी को लिखा था" आपने पिछले पत्र में लिखा है कि वीन वनकर आजाओ अतः मैं इस समस्या को आप से ही हल करवाता हूं कि वीन किस ढंग से वना जाय ? क्या हमको हाथ में लोहे का गेडिया कमर में दुपट्टा कोट पाजामा पहिनने इत्यादिक काम करने पड़ेंगे हमको कुछ दिखावा तो करना नहीं है जितना भी होसके सादगी का मार्ग निश्चित करना है। आप इस सम्वन्ध में अपनी सम्मति शीघ्र देने का कष्ट करें" इससे पहिले पत्र में चौधरी ताराचन्दजी ने लिखा था विवाह का पवित्र सम्वन्ध गृहस्थ जीवन को सुखी वनाने का है। जिसमें दहेज दायजे का लालच जोड कर उसे निकृष्ट कर दिया गया है। इस वात का मुझको थोडा वहुत ज्ञान है कि विवाह जैसा पवित्र संस्कार इस लोक के सुख के ही लिये नहीं है वल्कि यह परलोक के सुख की प्राप्ति का भी साधन है। आपने यह भी लिखा है कि गंगाराम का विवाह भी हम साथ ही कर देंगे। विवाह के साथ होने में तो मुझे कोई ऐतराज नहीं है लेकिन गहनों की आस हमसे न की जाय, और मैं यह मानता हूँ कि आप गहनों की वात सोचते भी न होंगे।

चौधरी हरिश्चन्द जी ने इसके उत्तर में लिखा था मैं
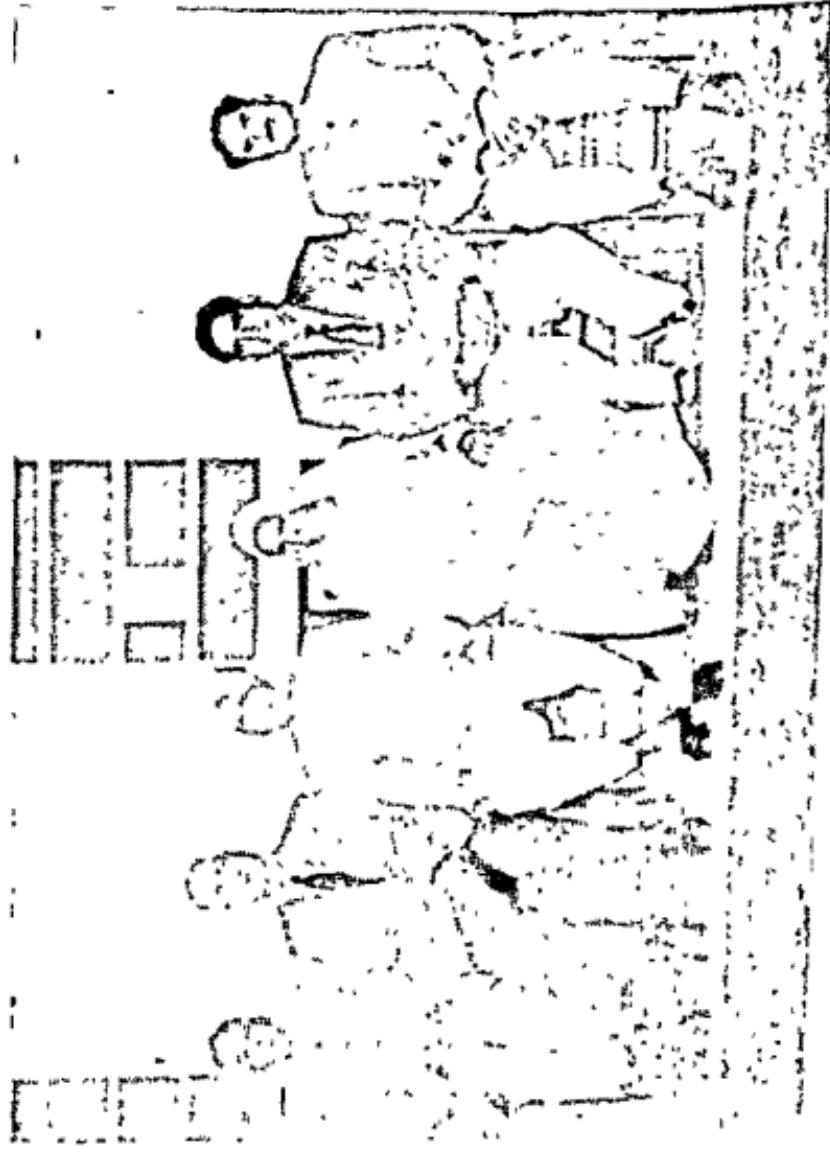
रुढियाँ है। मैं चाहता हूं कि रुढियाँ और विरादरी के के वन्धन सव के जाल से निकलने पर ही सुखी जीवन वन सकता है। विवाह के लिये जेवर कपड़े इत्यादि की जरुरत नहीं होनी चाहिये लड़की वाले का अपनी लड़की लिये अपनी सामर्थ के अनुसार कपड़े देने ही चाहिये शादे कपड़े लड़के ओर लड़को की भावरों में रुकावट तो डालते नहीं।

यह नही कि चौधरी हरिश्चन्द्र जी ने अपनी लड़कियों के ही विवाह में सादगी वर्ती हो, वल्कि लड़कों की शादियां भी तमाम रूढ़ियों की समाप्त करते हुये अत्यन्त सादगी के साथ कीं। उनके एक पुत्र श्रीभगवान की शादी मारवाड के प्रसिद्ध किसान नेता चौधरी गुल्लाराम जी की पौत्री एवं सुपुत्री चौधरी गोर्धनसिंह सचिव राजस्थान सरकार के साथ हुई है इससे पहिले साहनपुर के राजा चन्द्रराजशरणसिंह साहव की पुत्री के लिये सन्देश लेकर के एक ब्राह्मण गंगानगर वेदप्रकाश के वास्ते आया, जिसे चौधरी हरिश्चन्द्र जी ने इस जवाव के साथ वापिस कर दिया कि "वे राजा हैं। और हम किसान उनकी शान के मुताविक न हम वरात ले जा सकेंगे और न गहने और न कपड़े इससे उन्हें दुख होगा"—मारवाड का वावू गुल्लारामजी का खानदान वहुत ऊँचा और सुसंस्कृत खानदान है।

उनके दूसरे लड़के श्री वेद प्रकाश इस समय इगलैंड में

प्रोफैसरी करते हैं। उन्होंने वहीं एक जर्मन लड़की के साथ शादी की है जिसका कि नाम क्रिस्टल था। जब वेदप्रकाश ने अपने पिता चौधरी हरिश्चन्द्र जी से इस विवाह के लिये स्वीकृति माँगी तो आपने लिखा "इस समय तुम बालिग हो अपने हित के लिये सोचने समझने की तुम में योग्यता है। इतना मैं चाहता हूँ कि विवाह वैदिक रीति से हो और कन्या अपने को आर्य पुरुष की पत्नी होने का गौरव अनुभव करे, वैदिक धर्म में दीक्षित होने पर उसका नाम स्नेहलता रक्खा जाय।" पुत्र और पुत्र वधू दोनों ने पिता की बात को स्वीकार किया।

आपने अपने दौहित्र को जोकि इस समय S. P. हैं। विवाह की सलाह में १२-१२-६० को यह पत्र लिखा था।

चिरंजीव ज्ञानप्रकाश प्रसन्न रहो !

तुम भागते दौड़ते ११ दिसम्बर को मिले, इसी कारण इस विषय में बातचीत नहीं हो सकी। अतः पत्र द्वारा बात कर रहा हूँ, हमारी आशाओं का आधार तुम जैसे होनहार नवयुवक ही है। मेरी आयु के ७८ वें वर्ष में ७५ वर्ष की बाते मुझे याद हैं वैसे तो मेरी सारी उम्र ही रुढियों के किलों को चूर २ करने ही में बीती है इसमें से पिछले ५० सालों में तो केवल एक यही लक्ष्य सामने रहा है। तुम वर्तमान शिक्षा में ग्रेजूएट हो। तो मैं अनुभव की पाठशाला का डिप्लोमा होल्डर अपने आपको मानता हूं हमारे यहाँ जन्म से मरणपर्यन्त अच्छी बातें तो सब लोप

हो चुकी हैं। रुढियों ने हमें जकड़ रक्खा है। जो हमारी सर्वांगी और समयोचित उन्नति में बाधक हैं। उनमें से अधिकांश को तो तुमने उखाड़कर फेंक ही दिया है। इसके लिये तुम हमारी हार्दिक वधाई के पात्र हो। वची खुची जो हैं, आशा है तुम उन्हें उखाड़ फेंकोगे। उनमें से कुछ हैं विवाह के समय की रुढियां जो इस अशिक्षित, असंगठित जाति को मौत रूपी अजगर वनकर निगलती जा रही हैं। विवाह की पवित्र रस्म केवल दो तीन घन्टे की है। जिसमें वर वधू जीवनपर्यन्त एक होकर साथ निभाने का कौल व करार करते हैं। वाकी की रस्में रोक, टीका, वरात, दहेज, जेवर, लेन, देन, इन सवका इस पवित्र सम्वन्ध से कोई ताल्लुक नहीं। जव हमने लाखों रुपये के लेन देन को ठोकर मारदी तो अव इसका किसी भी प्रकार जिक्र ही क्या है। इस दहेज प्रथा व दूसरे ढोंग दिखावा वगैरा ने भारत को गारत कर दिया विशेपकर स्त्री जाति का तो इसने सर्वनाश ही कर छोड़ा है। अपनी (Strugle) इस वारे में लिखूं तो पोथा चाहिये। हमारे होन-हार युवक तुम्हारे लिये यह सुनहरी मौका है। जो अनायास ही ईश्वर ने दे दिया है। इसलिये वरात, गहना, दहेज इत्यादि का नाम न लेकर फौरन ही अपनी पसन्द की हुई नारी रत्न को विवाह वन्धन से वाँधकर उसको साथ ले १५ या १६ दिसम्वर को अपने माता, पिता नाना, नानी, मामा मामीं वहिन भाई व समझदार रिश्तेदारों का जो गंगानगर में

रहते हैं । आशीर्वाद प्राप्त करो । हमारे इस पिछड़े हुये इलाके के लिये तुम्हारा यह कार्य एक मिसाल कायम करेगा। सभी बुद्धिमान तुम्हारी प्रसंशा करेगें । मैं बात नहीं कर सका था इसलिये यह पत्र अपनी सारी उम्र की जद्दोजहद का निचोड़ है ।

आशा है मुझे निराश न करोगे ।

श्री ज्ञानप्रकाश ने आपके इस आदेश का पूर्णतः पाल किया । तीन मित्रों को साथ लेकर कन्या के पिता श्री जगरा सिंह एडवोकेट बुलन्दशहर निवासी के यहाँ पहुँचे। १ बजे खाना खाया और ४ बजे तक सुश्री विमला देवी M A. के साथ फेरों से निवृत हो गये और इसी दिन शा को लौट कर देहली आ गये और रात की गाड़ी से दूस दिन गंगानगर पहुँच कर अपने पारिवारिक जनों से आशीर्वाद प्राप्त किया । शादी के समय ज्ञान प्रकाश जी की उम्र २६ साल थी ।

इस समय आप अजमेर में S. P. है ।

चौधरी जी के दोहित्र

श्री ज्ञानप्रकाश पिलानियां आई० पी० एस० (S. P.)
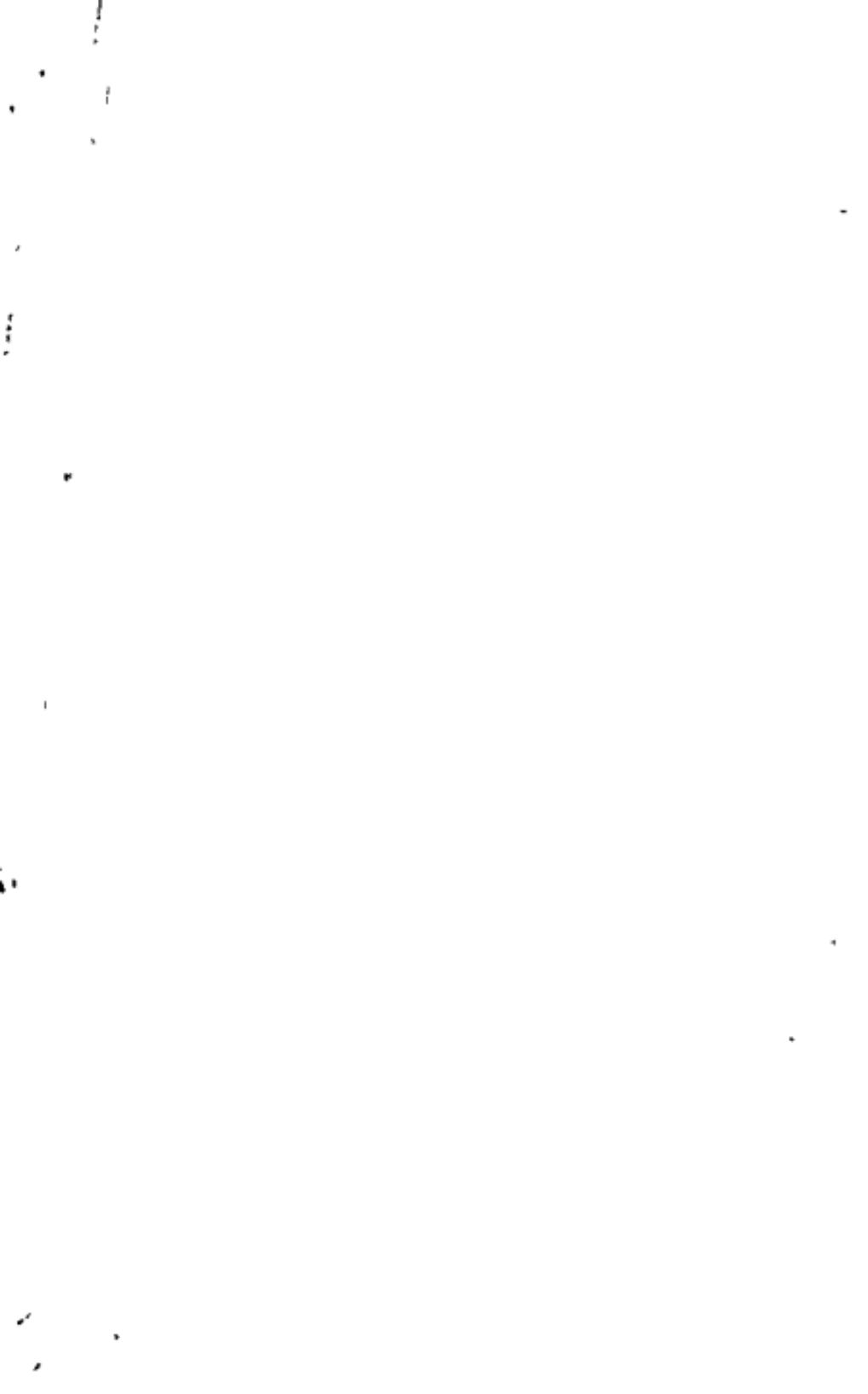
पथ प्रदर्शक चौधरी हरिश्चन्द्र

बीकानेर की ऐसी कोई भी हलचल नहीं सामाजिक हो चाहे राजनैतिक एवं आर्थिक जिसमें चौधरी हरीश्चन्द्र जी का सहयोग एवं पथ प्रदर्शन न रहा हो। यहाँ हम अपनी ओर से कुछ न लिखकर उन पत्रों के कुछ अंश उद्धरत करते है जिनमें चौधरी साहब से सहयोग एवं पथ-प्रदर्शन की अपेक्षा की गई है।

भादरा से ३१-१०-४७ को श्री हरीसिंह जी ऐडवोकेट ने लिखा था, श्रीयुत चौधरी सा० सादर नमस्ते, आपकी सेवा में एक पत्र मैंने पहले भी दिया था आदेश नहीं मिला शायद पत्र आपको मिला नहीं। इधर प्रतिगामी दल खास कर जागीरदार दूसरी किस्म की लड़ाई की तैयारी कर रहे हैं। मुझे भविष्य अन्धकारमय जान पड़ता है इस समय आपकी सूझ बूझ की हमें सख्त जरूरत है।

लुहारू से १८-४-४७ को चौधरी कुम्भाराम जी ने उन्हें लिखा था, आदरणीय चौधरी सा० जयहिन्द। आपके पत्र मुझे सबसे अच्छे लगते है। क्योंकि उनमें कई नई बातें एवं सुझाव होते हैं मैं जब भी आपका पत्र पा जाता हूँ आपके अंतःकरण से बातें कर लेता हूँ। मैं जहाँ तक आपको समझ पाया हूँ यह है कि आपको सबसे बड़ा कष्ट

किसानों का है अगर उनके लिए बिगाड़ दिखाई दे तो आप उसे किसी भी मूल्य पर देख सकने को तैयार नहीं। वर्तमान स्थितियों में जब कि किसानों पर घोर विपत्ति पड़ रही है आपका बेचैन होना स्वभाविक है । इससे पहले पत्र में चौधरी कुम्भाराम जी ने चौधरी हरिश्चन्द्र जी को लिखा था एक बार आपसे मिलकर आगे के लिए सोचना तथा निश्चय करना अत्यन्त आवश्यकीय है। फिर १४-३-४७ को कुम्भाराम जी ने चौधरी सा० को लिखा—एक बार आप जल्दी मिलने का कष्ट करें। आपसे कुछ जरूरी हिदायत तथा सूझ की बातें लेलूं। आपसे एक बार बात हो जाने के बाद मैं आगे आपकी हिदायत के मुताबिक सब काम करने की हिम्मत कर सकता हूँ।

२७-५-४७ को श्री हंसराज जी आर्य ने सहावा किसान सम्मेलन में शामिल होने के लिए चौधरी सा० को इन शब्दों में लिखा था, किसान काफी तादाद में इकट्ठे होंगे वह आपके पधारने के लिए विशेष आशावादी है क्योंकि आपके सिवा दूसरे पर उनका इतना विश्वास नहीं। अत: आप इस सम्मेलन को जिसे कि मैंने अर्थाभाव की कठिनाइयों के होते हुए भी आयोजित किया है सफल बनाने की कृपा करें।

२८-३-४७ को सेंट्रल जेल बीकानेर से श्री नत्थूराम योगी राजबंदी ने चौधरी साहब को लिखा था—मान्य चौधरी जी जय हिन्द, आपकी "किताब बीकानेर राज्य जन

जागृति" तीनों भाग पढ़े दिल बहुत खुश हुआ। सामंत-शाही के जुल्मों का वर्णन आपने बहुत अच्छी तरह पेश किया है। यह पुस्तक लिख कर आपने बीकानेर प्रजा की बड़ी सेवा की है। यह हर बीकानेरी के घर में और हर महकमा के इन्चार्ज मिनिस्टर के पास जरूर भेजी जावे। यह पुस्तक सामतशाही की आंखें खोलने वाली है।

१-१२-५१ को सुजानगढ़ से श्री मेघसिंह ने चौधरी जी को लिखा—कि रतनगढ़ निर्वाचन क्षेत्र के सभी लोग आपके पक्ष में हैं यह भी कि हम आपका कोई भी खर्च नहीं पड़ने देंगे। आपके चुनाव की सहायता के लिए १०००) चौधरी सुरताराम जी, १०००) भगवानाराम जी, १०००) चौधरी भानाराम जी ने देना स्वीकार किया है। २०००) और साथियों से प्राप्त हो जावेंगे। सभी कार्यकर्ता आपका प्रचार कार्य मुफ्त में करेंगे।

२-१२-५१ को चौधरी हनुमानसिंह जी ने चौधरी साहब को लिखा। रतनगढ़ से आप खड़े नहीं हो रहे मुझे इस बात का बहुत खेद है अगर आप खड़े होते तो मेरी सेवाएं आपको समर्पित होती।

सन् १६५० में ७ नवम्बर को श्री केदारनाथ जी "वर्तमान एम. एल. ए." ने आपको लिखा था—यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि आप गंगानगर के चुनाव अधिकारी बनाये गये हैं। इस तरह के अनेकों पत्र हैं जिनमें चौधरी

जी से सहयोग एवं मार्ग प्रदर्शन की याचनायें उस समय के बीकानेरी राजनैतिक कार्यकर्ताओं एवं नेताओं ने की हैं।

१ अक्टूबर १९३० को बीकानेर के प्रसिद्ध व्यवसायी राव बहादुर श्री शिवरतन जी मोहता ने बहावलपुर से लिखा था :—"मैं इन दिनों किसी एक जगह डट कर नहीं रहा, इसलिये आपके पत्र का उत्तर शीघ्र नहीं दे सका। जो कुछ आपने लिखा मेरे ध्यान में है। अवकाश मिलते ही मैं आपके पत्र का पूर्णतः उत्तर दूंगा। आपकी देश सेवा और हम लोगों के प्रति सच्चा प्रेम हमे बराबर आपकी याद दिलाता रहता है। और असेम्बली के (अधिवेशन के) समय तो आपकी याद आ ही जाती है। इस दफा मैं आवश्यक काम के कारण उपस्थित नहीं हो सका। कोलायत के मेले पर मेरा बीकानेर जाने का विचार है। दो तीन दिन यहां ठहर कर करांची जाऊँगा फिर वहां से जोधपुर जाने का विचार है। यहां के नवाब साहब की वर्षगाँठ पर मुझे आमंत्रित किया गया था। कल दरबार आम हो गया। अच्छी रौनक थी। यहां की नहर की जमीन लेने का मेरा विचार हो रहा है लेकिन यह काम आपसे सलाह लेने के बाद ही करूंगा।

५-५-३८ को स्वामी केशवानंद जी ने लिखा था :—"स्टेट कौंसिल में यह प्रस्ताव किसी सदस्य द्वारा रखा जावे कि सर्व साधारण के लिये जनोपयोगी काम करने पर राज्य की ओर से धन अथवा सन्मान द्वारा उत्साहित किया

जावे। कहते हैं यह नियम है किन्तु उसका पालन क्यों नहीं होता। यह पूछा जावे। उदाहरण के लिये जाट स्कूल संगरिया ने २२ वर्ष से अपनी १३ ब्राँचें गाँवों में खोली और इतने ही वर्ष से इन स्कूलों का संचालन किया। भारी लागत से इमारत बनवाई। वृक्ष लगाये। औषधालय, वाचनालय और पुस्तकालय खोले। राज्य बतावे कि उसने इस संस्था का उत्साह बढ़ाने के लिये क्या किया है?

आल इंडिया जाट महासभा के युवक मँत्री चौधरी रिछपालसिंह जी प्रेमी ने सन् १९४६, ३० दिसम्बर को लिखा था :—"माननीय चौधरी जी साहब, आपका निमंत्रण मिला। संगरिया जाट स्कूल के उत्सव में शामिल होने की मेरी उत्कट इच्छा है। मेरे शरीर और प्राणों से राजस्थानी भाईयों की जो भी सेवा हो जाय, उसके लिये मैं सदैव तयार रहता हूँ। राजस्थान में आप जैसे दो चार महारथी हैं उनके अनथक कार्यो से हमें कार्य करने की असीम प्रेरणा मिलती है। अबकी बार जब आपके दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त होगा। आपसे स्फूर्ति प्राप्त करूंगा। कृपा बनाये रक्खें।

× × × ×

बीकानेर से विदा होने के बाद श्री जयपालसिंह ने जो आजकल बिहार में झारखंड पार्टी के नेता की हैसियत से मिनिस्टर और केन्द्र में एम० पी० हैं। देहली से लिखा था—प्रिय चौधरी जी साहब, आपका पत्र मिला। आप

मुझे याद रखते है इसके लिये धन्यवाद। मैं समझता हूं पन्निकर साहब आपके राज्य में अच्छा ही कार्य कर रहे होंगे। मैंने कई कारणों से बीकानेर छोड़ना ही उपयुक्त समझा था। आप हिन्दी में ही पत्र मुझे लिख सकते हैं। आप इधर देहली आवें तो मुझसे अवश्य मिलें। बीकानेर में रहते हुये मैं आप लोगों की मन पसंद सेवा नहीं कर सका किन्तु आपकी सलाहों का मैंने सदैव आदर किया था।

× × × ×

इस प्रकार के अनेकों पत्र हैं जिनमें उनके पथ प्रदर्शन, सलाह मशविरों आदि की सराहना की गई है। हमने स्थानाभाव से थोड़े से ही पत्र अंकित किये हैं

उच्च चरित्र और आदर्श व्यक्तत्व

पिता के कठोर नियंत्रण और माताजी की ममतामयी स्नेह शीलता में लालित पालित होने के कारण और अपने पूर्व जन्म के अच्छे संस्कारों की बदौलत चोधरी हरिश्चन्द्र का जीवन ऐसा आरम्भ से ही बनता गया है। जिसे आदर्श व्यक्ति और उच्च जीवन कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है। बचपन में एक वार उन्होंने स्कूल से भाग जाने का नटखटपन अवश्य किया था किन्तु फिर वे दत्तचित्त होकर पढ़े और उन्होंने इतनी शिक्षा प्राप्त करली जितनी कि उस समय बीकानेर के बड़े २ सामन्तों को भी प्राप्त नहीं थी। १६१० में वकालत का प्रमाण पत्र देते हुए बीकानेर राज्य के चीफ कोर्ट के प्रधान जज श्री निहालसिंह जी ने लिखा था कि मुझे यह प्रमाणित करते हुये हार्दिक प्रसन्नता है कि हरिश्चन्द्र ने १६१० की वकालत की परीक्षा द्वितीय श्रेणी में पास की है। सर्विस के दिनों में जिस ऊँचे चरित्र का आदर्श 'आपने उपस्थित किया था उसको अभिव्यक्ति २७ फरवरी १६०५ के प्रमाण पत्र में श्री भैरोंसिंह जी कौंसिल मेम्बर ने इन शब्दो में प्रकट की थी "मुझे यह प्रमाणित करते हुये अत्यन्त हर्ष होता है कि हरिश्चन्द्र ने मेरे नीचे आठ महीने सरिश्तेदारी की। वह बहुत ही चतुर

वातचीत में कुशल हैं। और उनका चरित्र वहुत ही अच्छा और आदर्श पूर्ण है।"

वकालत के दिनों में जो उनका चरित्र रहा उनमें तीन वातें मुख्य थीं एक तो वे किसी को अपना मुवक्किल करने के लिये गलत वायदे नहीं करते, दूसरे अपने मुवक्किलों का शोपण नहीं करते थे। तीसरे अफसरों से अपने काम निकालने के लिये कभी भी उन्होंने गांठसांठ नहीं की उनके इन गुणों से प्रसन्न होकर श्री उत्तमचन्द डिस्ट्रिक्ट एन्ड सैशन जज ने ६-५-४० को यह प्रमाण पत्र दिया था "चौधरी हरिश्चन्द्र जी जो कि वीकानेर राज्य की तहसील रतनगढ़ में वछराला ग्राम के निवासी हैं और गत ३० वर्ष से प्रैक्टिस कर रहे हैं। सच्चे और सुसभ्य व्यक्ति है"

उनके इन गुणों की चर्चा वीकानेर राज्य में हर खास व आम तक ही नहीं राज्य के उच्च अधिकारियों और दरवार तक में फैल चुकी थी, इसलिये हर ऐसी कमेटी में जो वीकानेर दरवार की ओर से प्रजा हित के लिये नियुक्त की जाती थीं उसमें चौधरी हरिश्चन्द्र जी को नियुक्त किया जाता था। जैसा कि ११ जुलाई १६४५ के प्राइम मिनिस्टर वीकानेर के इस पत्र से सूचित होता है। उनकी ओर से ए० गोस्वामी सैक्रेटरी ने लिखा था "वीकानेर में आल इण्डिया नेवी लीग की एक ब्रान्च खोली गई है। महाराजा नारायनसिंह उसके प्रेसीडेन्ट है। ४ अन्य सरकारी मेम्बर हैं। एक गैर सरकारी मेम्बर रक्खा गया है। आपको

सूचित करते हुये मुझे हर्ष है कि आप इस नेवी लीग के गैर सरकारी सदस्य नियुक्त किये गये हैं।"

और जब सन् १९४६ में नये महाराजा सादुलसिंह की घोषणा के अनुसार शासन सुधारों की रूप रेखा तैयार करने के लिये कमेटियों की नियुक्तियां कीगईं तो आपको फ्रेन्चाइज कमेटी का सदस्य नियुक्त किया गया।

बीकानेर से बाहर शेष राजस्थान में उनको लोग किस निगाह से देखते हैं उसका नमूना जोधपुर के किसान छात्रावासों के सुपरिन्टेडेन्ट श्री रघुवीरसिंह जी के १०-१२-४७ के पत्र से जो उन्होंने अपने एक दोस्त को भरतपुर लिखा था प्रकट होता है। पत्र के शब्द ये हैं।

जोधपुर

मेरे प्यारे सोहनसिंह,

गंगानगर के चौधरी हरिश्चन्द जी वकील स्वयं अथवा उनका आदमी भरतपुर महाराज के आमन्त्रण पर वहाँ आयेगे, तुम उनका पूर्ण सम्मान करना। बीकानेर राज्य के वे वैसे हीं माननीय किसान नेता हैं। जैसे कि मारवाड़ में श्री गुल्लारामजी या वल्देवरामजी मिर्धा हैं"। वे स्वयं अपने जीवन पर नियन्त्रण रखने के लिये कितने सजग हैं। उसका पता सन् १९३३ की पहली जनवरी को लिखे गये डायरी के इस नोट से चलता है।

"हे जगत पिता पिछले साल के आरम्भ में मैंने सन्तोष एवम् आपकी भक्ति की भिक्षा मांगी थी आपके अनन्त

भन्डार में किसी चीज की कमी नहीं यदि प्राणी अपने उद्योग में कमी करे तो यह उसका अपना पैदा किया हुआ घाटा है। प्रभो, यही अवस्था पिछले साल के मेरे जीवन की है। मन पर काबू पाने का मैंने यत्न तो किया किन्तु उसके साधन नहीं ढूँढ़े, इसी कारण मन का विरोध साल भर के अन्दर चौदह बार तो काम के प्रबल जाल में फंसने का हुआ। सन्तोष और भक्ति भी जैसा कि मैं चाहता था नहीं पासका। आज अंग्रेजी नया वर्ष आरम्भ हैं। मैं अपना जीवन बनाने की चिन्ता में हूँ, मेरा अहम दूर हो जाय फल इच्छा रहित शुभ कर्म करने का बल मुझे प्राप्त हो जाय, मेरी इस साल के आरम्भ की यही इच्छा है।"

दो जनवरी को उन्होंने फिर लिखा "पिछले साल की जीवन की त्रुटियों पर निगाह डाली और सुधार के लिये प्रभू से कामना की, ऐसा लगा कि निरन्तर प्रयत्न किया जाय तो सिद्धि निश्चय है। ठोकरों पर ठोकर लगने से जीवन बनता है। परन्तु मुसीबतों के सामने डटे रहने का काम विरले ही लोगों का है। और जो डटे रहते हैं वे निश्चय ही महान आत्मा है।"

वे कई वर्ष से महात्मा गांधीजी की भांति ब्रह्मचर्य के प्रयोग कर रहे थे, जैसा कि उनकी सन् १६२६ ई० की डायरी में उल्लिखत इन शब्दों से प्रकट होता है :—"हे ईश्वर दयानिधि ! आज अँग्रेजी सन् १६२६ ई० का प्रथम दिन है और कई वर्ष से मैं अंग्रेजी सन् के हिसाब

ही अपनी जीवनी लिखता रहा हूँ। उसी ढंग से आज
ई प्रकार का खुला रजिस्टर आरंभ किया है ताकि विचार
विवरण लिखने में कोई दिक्कत न हो। आप कृपा कर
मेरी कामना पूर्ण कीजिये। मेरे को शारीरिक, सामाजिक,
आत्मिक बल दीजिये, ताकि मेरा जीवन अपने गृहस्थ और
सभी लोगों के लिये लाभदायक हो। मुझे सत्य मार्ग से
चलने का बल दो। पिछले सालों के देखते हुए सन् १६२८
में मेरा जीवन सफल रहा कहा जा सकता है। मुझे गर्व
है कि मैं इस पूरे वर्ष ब्रह्मचारी रहा। प्रभो आगे के लिये
इससे भी अधिक जितेन्द्रिय रहने का बल दो। और यह
भी कि पवित्र कामों में मेरी रुचि निन्तर बढ़ती रहे।"
इसी वर्ष की डायरी में २, ५, ७ जनवरी को उन्होंने
लिखा है :—"सैणामल ने कहा, जज साहब आपको याद
करते थे–कहते थे। वकील साहब बहुत ही लायक और
पराये दुख में पड़ने वाले आदमी है।"

मैं चाहता हूं कि भोजन भजन एकान्त में हो। जिस
समय का जो काम है उसे उसी समय पर न कर पाऊं
तो चित्त बैचैन सा रहता है। मैं तो सब कुछ समय को
मानता हूं। इसलिये किसी की समय वर्बाद करने वाली
बातों को सुनने में मुझे कोई रस नहीं मिलता। यह भी
नही चाहता कि मेरे सम्बन्धी भी मेरे से व्यर्थ की बातें
करें और मेरे समय को व्यर्थ ही वर्बाद करें।

मुझे तम्वाकू पीने वाले अच्छे नहीं लगते मुखराम

(भांभूजाट) है तो अभी लड़का ही किन्तु तम्बाकू नहीं पीता है, इसलिये उसे नौकर रख लिया है मेरी पत्नी पर काम का दवाब ज्यादा है उसे कुछ राहत मिलेगी।

मुखराम की एक आदत मुझे पसन्द नहीं है। वह रात को अलाव पर वैठे लोगों में चला जाता है और उनकी गप्पें सुनने में अपना आराम का समय वर्वाद करता है।

हनुमानगढ़ तक जीवन रामजी के साथ बातें करते हुये चला गया, स्टेशन पर हरदेव, धन्नाराम पटवारी पास आ बैठे। उनको मटीली तक यही समझाता रहा कि ब्रह्मचर्य का पालन करो, अच्छी संगत वैठो। सादा किन्तु स्वास्थ्य वर्द्धक भोजन करो। नौकरी में किसी पर सख्ती न करना वे सब अपने ही भाई तो है। धन्नाराम एक होनहार युवक जान पड़ा।

चौधरी साहव के दिल पर इस बात की भी छाप है कि प्रातः उठते ही हरि का नाम लो और भले आदमियों का मुख दर्शन करो। उन्होंने सोचा कि भले आदमियों को प्रातः ही कहाँ ढूंढा जाय। हृदय ने ही समाधान किया कि घर की मालिकिन से और अधिक भला कौन होगा जो इन गरीवी के दिनों में भी कठोर परिश्रम करके तुझे आराम पहुँचाती है और अपने रोने रोती नहीं। तव (१३–११–२८) सवेरे उठा तो इच्छा हुई कि अपनी स्त्री का ही मुख दर्शन करूँ। भीतर गया वह चक्की पीस रही थी।

कर्जे को वे कैसा समझते हैं इसके वारे में उन्होंने १४-११-२६ को लिखा–"पन्द्रह रुपये मेरी अंटी में हैं कोई पावनेदार आया तो उसे इन्हें दे दूँगा। पत्नी के पास जो कुछ था उसे तो दे ही चुकी है।.......कर्जा वहुत ही बुरी वला मेरे पीछे पड़ी है।"

क्योंकि उन्होंने अपने सारे धंधे ठप्प किये हुये थे और जाट स्कूल संगरिया डाँवा डोल स्थिति मे था। अतः पूरा समय उधर ही लगा रहे थे। इस कारण घर खर्च चलाने और घूमने फिरने के लिये उन्होंने कुछ कर्जा कर लिया था यह नोट उसी कर्जे के सम्बन्ध में है। इस समय तो उनकी आर्थिक स्थिति वहुत अच्छी है।

इन दिनों तक चौधरी जी साहव स्वदेशी के रंग में पूरी तरह रंग गये थे। पगड़ी, कोट, कुरता और धोती सब कुछ खद्दर के पहनते थे और प्रायः सभी स्वदेशी चीजों का व्यवहार करते थे। उनके इस स्वदेशी व्यवहार पर उनसे मिलने जुलने मे सरकारी अधिकारी झिझकते भी थे किन्तु उन्हें खतरनाक कोई नहीं समझता था।

१५ सितम्वर १६३० ई० को गंगानगर में एक कृषि प्रदर्शनी हुई, उसमें मनुहार के समय सोडा लेमन आया। चौधरी जी ने वह जव नहीं पिया तो तत्कालीन रेवन्यू कमिश्नर लाला जयगोपाल ने हँसते हुये, मजाक में कहा, चौधरी जी अव स्वदेशी का भी परित्याग कर रहे हैं क्या ? यह तो स्वदेशी ध्येय ही है।

अपने संयमी जीवन के सम्बन्ध में उन्होंने स्वयं जो कुछ लिखा है उसका सार उन्हीं के शब्दों में इस प्रकार है--"आठ वर्ष की अवस्था में अनसमझी से अलाव के पास रक्खी हुई कली के घूट खींचली इससे इतनी तबियत खराब हुई कि उल्टी करते-करते थक गया लेकिन सारी उम्र के लिए तम्बाकू से पीछा छूट गया। एक बार एक विशेष अवसर पर तली हुई भंग की मिठाई खा गया और एक वार धोखे से मुझे शराब पिला दी। भंग भूल से खाई और शराब धक्के से। किस्सा इस प्रकार है कि जब मैं सरसा स्कूल में पढ़ता था तो मेरे सहपाठी हंसराम एक कागज की पुड़िया लेकर आये और मुझे कहा यह सुखा (तली हुई भंग को कहते हैं) खालो, मैं खा गया लेकिन मेरे दिमाग को जो तकलीफ हुई। उसे मैं जानता हूँ। शराब महाराजा भैंरोंसिह जी ने पिलादी। तीन चार आदमियों ने मेरे मुँह में जवरदस्ती शराब डाली थी। पेट में पहुँची तो ऐसा लगा कि अंगारा चिमटा से पकड़ कर पेट में डाल दिया है लेकिन फिर मैंने जिन्दगीभर इन चीजों को अपने पास तक न आने दिया और महाराजा भैंरोंसिह से भी अपना पिंड छुड़ा लिया, चाय भी थोड़े दिनों ही पी है जिन दिनों वीकानेर में सर सिरेमलजी वापना प्राइम मिनिस्टर थे, मैं उनसे मिलने गया। चाय का समय था मेरी भी मनवार की, मैंने कहा मैं तो चाय पीता नहीं क्योंकि यह नशा है और मैंने सभी नशे छोड़ दिये हैं। इससे प्राइम

मिनिस्टर साहव वहुत प्रसन्न हुए। कहा वहुत अच्छा किया हमारे तो यह वीमारी लगी हुई है।

अपनी वेप भूपा और वस्त्रों के सम्वन्ध में उन्होंने लिखा है "२५ साल से सिवाय खद्दर के कुछ नहीं पहनता हूँ। वीकानेर की असेम्वली के लिए काले वूट, अचकन केसरिया या कसूम्वी पगड़ी तथा साफा लाजमी है। शुरू में यह चीजे मांग कर पहनी फिर खद्दर की वनवालीं। पगड़ी विवाह वाली थी उसी से वारह साल गुजार दिये"।

स्वास्थ के सम्वन्ध में उन्होंने लिखा है "सन् १६०४ में मुग्राइना कराने पर मुझे पता चला कि दाईं आँख की दूर देखने की शक्ति क्षीण हो गई है। वचपन में गीडी (गेंद) खेलते समय चोट लग गई थी उसी का यह फल था। १६०७ में ऊंटनी पर से गिरा हाथ पहुंचे के पाससे टूट गया इसी प्रकार जव मैं वीकानेर में था महाराजा भैरोंसिंह ने हौज में ढकेल दिया। एक वार सूरतगढ़ में मन्दिर की चोटी पर से पानी में छलांग लगाईं तव कुछ चोट आगई और सव तरह से जिन्दगी भर तन्दुरुस्त रहा हूँ। हाँ एक वार तिल्ली ने काफी तंग किया था दाँतों की तरफ मैंने सदैव ध्यान रक्खा है और वजाय मंजन के मैंने जिन्दगी भर नीम की दांतुन की है।"

सतसंग के वारे में उन्होंने लिखा है :—सतसंग की रुचि मेरी वचपन से रही है। इससे मुझे लाभ भी वहुत रहा है। कुसंग से सदैव वचने की कोशिश की है और वचा हूँ।

पहले मैं पौराणिक धर्म में विश्वास रखता था, पीछे आर्य समाजियों के सत्संग से वैदिक धर्म से प्रेम करने लगा हूँ। शिक्षा सबसे प्राप्त करने की ओर मेरा ध्यान रहा है गरीबों को भोजन और वस्त्र देने की रुचि मेरी सदैव से रही है अपनी आमदनी का ४०वाँ भाग और आर्थिक स्थिति सुधरते पर कुछ विशेष रकम गरीबों की शिक्षा और सेवा पर खर्च करता रहा हूँ।"

शिक्षा की महत्ता पर उन्होंने लिखा है "पिताजी मुझे जो सबसे बड़ा धन दे गये थे वह यही था कि उन्होंने मुझे पढ़ा दिया। वरना सम्पत्ति के नाम पर तो हमें उनका कर्जा ही मिला।"

स्वजनों के प्रति अपने स्नेह और कटुता के सम्बन्ध में प्रकाश डालते हुये उन्होंने लिखा है। "पिताजी के कर्ज को धीरे २ मैंने बिताया, लालगढ़ में मकान बनवाया और ४०० बीघे के आसपास जमीन खरीदी। भाई हिमताराम को खारियां से बुलाकर लालगढ़ ले आया आधी जमीन उनके नाम करादी। प्रबन्ध सारी का उनके जुम्मे रहा। भाई कहा करते एक दो मुरब्बा जमीन नहर की हो जावे तो अकाल दुकाल में तंगी न उठानी पड़े। ३० बीघा जमीन मैंने नहरी भी ले ली और १५१ बीघे जमीन ढींगावाली में अपने ससुर से व साले से भी २५ बीघा खरीद ली। ये सब जमीन मेरे नाम थी मैंने यह सोच कर कि एक माता के उदर से हम दो है आधा २ बांट करलें। अपनी जिन्दगी ही में भाई

के नाम आधी जमीन करा देना ठीक होगा इसीलिये उन्हीं के नाम करादी। कर्जे की जरूरत पड़ी तो अपने नाम पर ही लिया। मैंने अपने भाई से कुछ भी नहीं छुपाया लेकिन मुझे दुख तब हुआ जब मैंने भाई के कपड़ों में ६ गिन्नी फिर ९ गिन्नी छुपी हुई देखी। फिर भी मैंने उनसे यह बात प्रकट नहीं की कि तुम मेरे से कपट करते हो। मैं अपने भाई व भतीजे रघुवीर से बहुत प्रेम करता था लेकिन वे मेरी इस बात से नाराज हो गये कि मैंने अपनी विधवा पुत्रवधू (हरदेव की पत्नी) को रघुवीर की पत्नी नहीं बनने दिया। क्योंकि मैं समझता था कि वह बड़े घर की लड़की इनके यहाँ सुख नहीं पाने की। इस बात पर मेरे भाई और भतीजे ने मुझे मारने की ठान ली। उन्होंने पिस्तोल भी खरीद ली वे मुझे जान से तो नहीं मार सके लेकिन भाई ने एक दिन खेत में लट्ठों से मरम्मत कर ही दी। इस बात का मेरे दिमाग पर बुरा असर पड़ा। पहले तो मैंने अपने बच्चों के लिये शिक्षा का धनी बनाया उन्हें भरपूर शिक्षा दिलाई और जो कर्जा था उसे जमीन बेच कर चुका दिया। इस समय मेरे दोनों लड़के इस योग्य हैं कि उन्हें किसी जमीन जायदाद की जरूरत नहीं। फिरभी मैने उनके लिये लगभग १०० बीघे जमीन का प्रबन्ध कर दिया है। और वह जमीन दोनों लड़कों और उनकी माता के नाम तकसीम करदी है। मेरे पास मैं हूँ और मेरा स्नेह है। जो अपने बच्चों और पत्नी के लिये है। एक बार मैंने घर

बार छोड़ने का भी निश्चय किया किन्तु हरदेव की मृत्यु ने मुझे काफी ढीला कर दिया है और दूसरे दर २ भटकना मैं पसन्द नही करता इसलिये घर ही मेरे लिये तपोभूमि है और अच्छे लोगों का मिलना जुलना तथा सत्संग तीर्थ है। स्वामी सर्वदानन्द जी का यह उपदेश वाक्य १९३२ का मुझे याद है कि जब तक लड़के के लड़का नहीं हो जावे तुम्हें वानप्रस्थ का अधिकार नहीं है। परमात्मा कहीं दूर देश में नहीं और त्याग भी घर के छोड़ने का नाम नहीं वासनाओं का त्याग और परमात्मा की याद ही सबसे बड़ा सन्यास है।

रूढियों से छुटकारा पाने के सम्बन्ध में उन्होने लिखा है–"इन रूढियों ने मुझे उस समय तक तंग किया जिस समय तक मैंने लोग क्या कहेंगे इस बात की परवाह की। जब इनसे छुटकारा पा लिया और दूसरों को भी छुटकारा दिलाने के प्रयत्न किये तो लोग अपवाद्र करने की बजाय धन्यवाद भी कहने लगे। "मनुष्य को साहस करके आगे बढ़ना चाहिये।"

यह थोड़े से विचार हैं जो छोटे छोटे हैं किन्तु ये छोटे छोटे शुभ विचार ही मनुष्य को ऊंचा बना देते हैं और चौधरी हरिश्चन्द्र जी का आज जो दरजा उनके समाज और प्रदेश में है इन्ही शुभ विचारों के कारण है।

राजनीति में प्रवेश

देशी राज्यों में राजनैतिक हलचलों का दौर वृटिश भारत के क्षेत्रों की अपेक्षा देर से आरम्भ हुआ इसके दो कारण थे एक तो देशी राज्य शिक्षा में वहुत ही पिछड़े हुये थे दूसरे राजाओं के साथ उनकी विरादरी के लोगों का भावनात्मक सहयोग था। वे अपने राजा की आलोचना सुनना भी पसन्द नहीं करते थे। वृटिश भारत में जिस भाँति आरम्भ में होम रूल और औपनेविशक स्वराज्य की माँग की गई थी उसी भाँति देशी राज्यों में भी आरम्भ–सो भी वृटिश भारत से बीस साल वाद-नरेश की छत्रछाया में उत्तरदायी शासन की माँग की गई थी। अनेक देशी राज्य स्टालिन के रूस की भाँति आतंकपूर्ण कानूनों की लौह दीवारों से आवृत थे। उनमें वाहर के आदमियों को चाहे जव आने से रोका जा सकता था। बीकानेर में श्री० अर्जुनलाल सेठी और कुंवर चाँदकरण शारदा का प्रवेश इसलिये निषद्ध था कि वे अजमेर की कांग्रेस कमेटी के कार्यकर्त्ता थे इसी आधार पर सन् १६२८ में सेठ जमनालाल जी वजाज को रतनगढ़ ब्रह्मचार्याश्रम के वार्षिक अधिवेशन में शामिल होने के लिये आने पर उलटे पैरों वापिस कर दिया गया था। बीकानेरी दमन का सबसे ज्वलन्त उदाहरण

सन् १९३२ में चलने वाला षडयंत्र का वह मुकदमा है जिसमें श्री सत्यनारायण, खूबराम शराफ, स्वामी गोपाल दास को लम्बी लम्बी सजायें दी गईं। सन् १९३५ में ऊदासर के किसानों ने अपनी मुसीबत के लिये आवाज उठाई। इस पर उनके नेता जीवन जाट पर १००) जुर्माना करके किसानों को भयभीत कर दिया गया और मुक्ता-प्रसाद, मंघाराम वैद्य आदि को देश निकाला दे दिया गया। दमन से भयभीत जनता बीकानेर में प्रजा मंडल की स्थापना करने में जब असमर्थ रही तो कलकत्ते में प्रवासी बीकानेरियों ने प्रजा मंडल की स्थापना की। पूरे सात वर्ष के प्रयत्न के बाद यह सम्भव हुआ कि बीकानेर में भी प्रजापरिषद की स्थापना हुई। इसके आयोजक थे रघुवरदयाल आदि, उन्हें भी कारावास में डाला गया।

सन् १९४३ में महाराजा गंगासिंह जी का देहान्त हो गया और उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री सादूलसिंह जी गद्दी के मालिक हुये। जनवरी सन् १९४५ में कुछ शासन सुधारों को लागू किया। सन् १९४६ में 'विधान उपसमिति' और मताधिकार उपसमिति नाम की दो कमेटियाँ कुछ अधिक अधिकार प्रदान करने के उद्देश्य से बनाईं। मताधिकार उपसमिति में चौ० हरिश्चन्द्र जी को भी नियुक्त किया। उन्होंने बालिगमताधिकार और स्त्रियों को उचित प्रतिनिधित्व देने पर बल दिया।

प्रजापरिषद् की स्थापना वैसे तो सन् १९४२ में की जा

चुकी थी किन्तु उसमें कार्य करने की शक्ति आई सन् १९-४६ से और तभी से मित्रों के आग्रह पर चौधरी हरिश्चन्द्र जी ने उसमें प्रवेश किया। यहीं से उनके राजनैतिक जीवन का आरम्भ होता है।

यहाँ उन्होंने अपनी आदत के अनुसार जीतोड़ परिश्रम किया और अपने पसीने की कमाई का पैसा भी खर्च किया। उन्हें ऐसे भी अवसर मिले कि मिनिस्टर बनने के लिये उनसे कहा गया। जब जब ऐसी बातें उनके सामने आईं तब तब उन्होंने चौ० हरिदत्त, चौ० रामचन्द्र, चौ० हरिसिंह और कुंभारामजी के नाम पेश किये। लेकिन महाराजा शार्दुलसिंह जी ने बिना किसी की परवाह किये चौ० खयालीसिंह को ले लिया। मिनिस्टरी में जाने पर खयालीसिंह ने एक जाट सभा की स्थापना की।

इसी जाट सभा को लक्ष्य बना कर चौ० हरिश्चन्द्र जी ने एक ट्रेक्ट छपाया जिसका शीर्षक था "यह नई जाट सभा क्यों ?' उन्होंने इसे नई इसलिये कहा कि सन् १९२० ई० से बीकानेर में अखिल भारतीय जाट क्षत्रिय महासभा की एक शाखा स्थापित थी और उसके संस्थापकों में चौ० हरिश्चन्द्र जी भी एक थे। और वर्षों से वे अखिल भारतीय जाट क्षत्रिय महासभा की वर्किङ्ग कमेटी के मेम्बर भी चले आरहे थे। वास्तव में बात यह थी कि चौधरी हरिश्चन्द्र जी को यह जाट सभा बीकानेर की राजनैतिक प्रगति में गत्यावरोधक संस्था जान पड़ी।

उन्होंने इस ट्रेक्ट की भूमिका में ही अपने इस सन्देह इन शब्दों में व्यक्त किया है—"......क्रांति की एक एशिया के हर कौने में उठी और सारे महाद्वीप में छाग

हमारी इस मरुभूमि ने भी एक हलचल का किया। ललाणा, रायसिहनगर, राजगढ़, भूकर गोगामेड़ी, रावतसर आदि स्थानों पर जनता इकट्ठी और जुल्मों के खिलाफ मिलकर एक आवाज बुलन्द की पुराने जर्जरित शासन की नीव हिल उठी। कूटनीति कुछ सिद्धान्त जनता को दबाने के ले लिये ढूंढे ग और फिर उनको आजमाया जाने लगा, गोली, लाठी औ शस्त्रों के नाकामयाव रहने पर भेदनीति से काम लिय जाने लगा। स्टेट में जाटों की आबादी अपेक्षाकृत अधि है। पिसी हुई इस जाति के रोष का भी पार नहीं है इसलिये भेदनीति का पहला निशान इसे ही वनाया गया। जाटों को कुछेक सुविधाये दी जाने लगीं। एक अशक्त, प्रभाव व अनुभवहीन स्वार्थ लोलुप व्यक्ति को जाट जाति का प्रतिनिधि वनाकर मंत्रिमंडल में ले लिया गया।.... जाट सभा, राजपूत सभा, मुस्लिम लीग, हिन्दू सेवासंघ आदि ढकोसले भोली जनता में भेदभाव वढ़ाने तथा उनके संगठन को छिन्न-भिन्न करके गुमराह करने में लगे हुये हैं।

इन सबका उद्देश्य केवल एक ही है। बीकानेर राज्य में जनता की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था प्रजापरिषद् को कुचल कर सामन्तशाही स्वेच्छारी शासन की जड़ें मजबूत

करना। इस पच्चीस पृष्ट की पुस्तिका की यह भूमिका ही चौधरी जी के लक्ष्य को प्रकट करती है और उनके भावुक हृदय का भी परिचय देती है। वैसे यह पुस्तक और इसके दो अन्य भाग बीकानेर के दु:शासन का दर्पण हैं। उनसे बीकानेरी शासन का दूसरा पहलू (अंधा-पक्ष) सामने आ जाता है।

बीकानेर की इस नई जाट सभा ने अपने ग्यारहवें नियम में लिखा था:—"पिछले पाँचसौ वर्ष से अधिक समय से बीकानेर नरेश और उनकी प्रिय जाट प्रजा में जो सुखद सम्बन्ध चला आरहा है उसे पुष्ट करना, कायम रखना और बढ़ाना इस सभा का उद्देश्य होगा।"

इस 'वाक्य के सुखद सम्बन्ध' की चौधरी हरिश्चन्द्रजी ने उदाहरण सहित व्याख्या की उससे बीकानेर के शासकों की कलई खुल गई। उन्होंने लिखा—

"बीकानेर में राठौड़ वंश का राज्य स्थापित होने के समय इस सारे मरुधर देश में सात स्वतंत्र जाट राज्य थे। जिनमें से गोदारा वंश के प्रमुख पांडुजी गोदारा के साथ बीकाराव की जो सन्धि हुई थी उसमें प्रतिज्ञा की गई थी "मैं या मेरे उत्तराधिकारी तुम्हारे भूस्वामित्व पर किसी प्रकार का अनुचित हस्तक्षेप नहीं करेंगे।" आज वह भू-स्वामित्व जिस प्रकार सुरक्षित है (?) उसे प्रत्येक बीका-नेरी जानता है। कोई बतावैं तो सही कहां है जाटों का भूमि स्वामित्व ? सचाई यह है कि वे सात जाट राजवंश

जो कभी इस भूभाग के पूर्ण स्वामी थे । आज वे इस भूमि भाग में से एक इंच के भी मालिक नहीं है ।"

भूस्वामित्व का अपहरण शनै शनैः किस प्रकार हुआ ? इस प्रसँग में चौधरी हरिश्चन्द्र जी ने इस पुस्तिका में लिखा है :—"राव बीकाजी की संतान ने जब धीरे धीरे इस देश के जाटों के भूमिचारे को नष्ट करना आरंभ किया तो यह चाल चली कि अपना एक आदमी कुछेक गाँवों के बीच में रख दिया उसी को उन गाँवों की रक्षा का भार सौंपा । इस बहाने उस आदमी ने जब वहां कुछ रसूख पैदा कर लिया तो उसी के नाम उन गाँवो का पट्टा लिख दिया और मालगुजारी वसूल करने का अधिकार दे दिया । इस प्रकार सब पट्टे के गाँवों में जाटों को भूमि स्वामित्व से बंचित कर दिया गया । बीकानेर राज्य की तीन चौथाई भूमि पट्टेदारों के हाथ चली गई । चौथाई भूमि भाग खालसे अर्थात् सीधा राज के हाथ में जो रहा उसमें पैमायश के समय जाटों को भूमि स्वामित्व से वंचित कर दिया गया ।

जाटों पर पूर्ण आधिपत्य जमाने के लिये बीकाजी के वंशजों ने क्या क्या घृणित कार्य किये इसका वर्णन उन्होंने इसी पुस्तिका के छटे परिच्छेद में इन शब्दों मे किया है :—
"......राजगढ़ में बने गढ़ की कहानी बड़ी हृदय विदारक है । किसी समय यहां पूनिया जाटों का राज्य था । इस गढ़ की नीव को भरने के लिये पूनिया जाटों के सिर काट

काट कर काम में लाये गये थे। राजगढ़ जिले के पूनाणा भाग में बसने वाले जाट इस कहानी को खूब अच्छी तरह जानते हैं कि राजगढ़ का गढ़ उनके सिरों पर खड़ा है। ......दो एक घटनायें और दी जाती हैं इस मरुभाग में सियाग जाट भी कभी हुक्मरां थे। मौजा सुई जो अब जागीर में है सियाग जाटों की राजधानी था। इस इलाके को सियागोठी कहते थे। संवत १८४२ में यह नाम बदल दिया गया। यहां के सियाग जाटों को धोखे से बुलाकर एक बाड़े में खड़ा करके जला दिया गया।......इसी प्रकार जबरा और जोखा दो सारण जाटों की कहानी है। ये दोनों जाट बड़े बहादुर थे। उनकी कई सौ घोड़ो पर जीन पड़ती थीं। उन्ही के नाम से जबरासर और जोखासर नाम के गांव अब तक मौजूद हैं। मन्धरपुरा में मित्रता के बहाने बुलाकर उन्हें भोज दिया गया। उनको बारूद बिछी जमीन पर बिठाया गया और बारूद बिछवा कर उसमें आग लगवाकर उड़ा दिया गया। ......लम्बे समय की बात नहीं, महाराजा गंगासिंह जी के समय की कहानी है। ठाकुर जीतराजसिंह कोर्ट आफ वार्डस् के अफसर थे। पट्टा जसाना उन दिनों कोर्ट आफ वार्डस में था जागदार पट्टा के जुल्म रात दिन बढ़ते जारहे थे। राज्य में किसानों की सुनने वाला कोई नहीं था। रतनपुरा गांव के जाट [illegible] दार से तंग आकर महाराजा बीकानेर के पास पहुंचे फरियादी हुये। बस इतनी सी बात जाटों की

कारण वन गई। ठाकुर जीवराज ने पुलिस और फौज के साथ रतनपुरा पर चढ़ाई करदी और गांव में लूटपाट और मारधाड़ फैला दी। जो लोग खेतों पर थे वे खेतों से जो स्त्रियां चूल्हे पर थीं वे चूल्हे पर से भाग खड़े हुये और इलाका अंग्रेजी में जाकर जान बचाई। जो पकड़े गये उन्होंने हवालातें और जेले भोगीं। महाजन में इससे भी अधिक हुआ। १३२ राव राजे हैं किस किस के जुल्मों का वर्णन करें। ......दुदुवाखारा की घटना इन सब घटनाओं को मात देती है। वहाँ के किसानों पर होने वाले अत्याचार और ठाकुर सूरजमालसिंह जी जागीरदार जिसकी पीठ पर बीकानेर सरकार का हाथ है। के काले कारनामे बीकानेर के इतिहास में अमिट रहेगे। ...... ये हैं सुखद सम्बन्ध जिन्हें नई जाट सभा कायम रखना चाहती है।"

इस प्रकार चौधरी हरिश्चन्द्र जी ने श्री खयालीसिंह पब्लिक मिनिस्टर साहब द्वारा बनाई गई जाट सभा की मुखालफत आरंभ की। और उन्होंने सब जाटों को आवाहन किया कि सभी लोग प्रजा परिषद के झंडे के नीचे आकर इस निर्दय हुकूमत को समाप्त करें।

सन् १९४६ में चौधरी साहब ६० वर्ष की आयु में थे किन्तु उनकी कार्य शक्ति जवानों की जैसी थी। वे प्रायः सभी सभाओं में जाते और जनता में जवानों का जैसा

जोश भरते । कहीं कहीं से तो उनके लिये आग्रहपूर्ण निमंत्रण आते थे ।

वीकानेर में राजाशाही और प्रजा शक्ति का संघर्ष किसानों से आरम्भ होता है । दफा १४४ को तोड़ने के लिये राजगढ़ तहसील में एक एक हजार के जत्थे आते थे और १००-१२५ पकड़े जाते थे । चौदह महीने के संघर्ष में किसानों ने विजय पाई । इस सत्याग्रह में अधिकांश जाट थे इसलिये आल इण्डिया जाट महासभा का एक डेपूटेशन उनकी जेल यातनाओं की जांच करने के लिये वीकानेर पहुंचा । महाराजा सादुलसिंह ने डेपूटेशन की आने की तिथि से पहले ही आवू को रवानगी करली । सरदार के० एम० पन्निकर प्राइम मिनिस्टर ने डेपूटेशन को जेल में जाकर वन्दियों से वातें करने की इजाजत दे दी । उस समय चौधरी हरिश्चन्द्र जी भी डेपूटेशन के समक्ष समस्त कहानी प्रस्तुत करने को उपस्थित हुये थे । उस डेपूटेशन में चौ० रिछपालसिंह जनरल सेक्रेटरी जाट महासभा, चौ० किशनलाल जी लामरोर अध्यक्ष अजमेर मेरवाड़ा जाट सभा और ठाकुर देशराज प्रधान राजस्थान जाट सभा भी शामिल हुये थे । सत्याग्रह सफल हुआ और सभी राजवंदी मय दुदुवाखारा के वन्दियों के रिहा कर दिये गये । प्रजा परिषद मान ली गई और महाराजा की ओर से शासन सुधारों की घोषणा भी हुई ।

इन छः वर्षों में चौधरी जी ने प्रजा परिषद् में जो

काम किया उसका आभास उनकी डायरियों से लगता है। बीकानेर की जन जागृति का इतिहास लिखने वालो के लिये यह नोटस् वहुत उपयोगी सिद्ध होंगे। हम भी उनमें से कुछ एक का उल्लेख यहाँ करते है।

४-८-४६

हरीसिह ने जोर दिया, रात को हनुमान गढ ठहरो। इच्छा न रहते हुये भी ठहर गया। जंक्शन से नन्दराम वकील, जीवनराम जी और मै पैदल ही हनुमानगढ़ गये। रात्रि में हरदत्तसिह गांधी B. A. LL. B. मुसिफ मिले उन्होंने कहा, मैं तो प्रजामंडल के पक्ष में हूँ। अभी चौड़े नही आ रहा, जीवनराम और हरिश्चन्द्र जी चाहें तो प्रविष्ट हो जावें।... हरीसिह ने कहा, मैं भी प्रजा मंडल का पक्षपाती हूँ किन्तु देखता यह हूँ कि जाटों के साथ प्रजा मंडल का रूख कैसा है ? नन्दराम दुविधा मे हैं। सब की एक ही चिन्ता है जाट अनपढ़ हैं अब तक इनका शोपण सामन्तशाही ने किया है। अब कही लालाशाही न करे। मोतीराम जी की यह बात ठीक है कि आवादी के अनुपात से सवके साथ व्यवहार हो। वीरवलदास वकील ने नन्दराम को वताया था कि श्री० पन्निकर और जसवन्तसिंह ने प्राइम मिनिस्टरी और मिनिस्टरी से त्याग पत्र दे दिये हैं।

८-८-४६

आज मैंने देखा प्रजा परिषद् में जितने प्रस्ताव पास

हुये उनमें सभी शहरियों से सम्बन्धित थे। मैंने तीन प्रस्ताव किसान हित के रखवाये। ज्ञानीराम शाम को मिले तो उन्होंने कहा, आपने किसानों के सम्बन्ध में क्यों चेताया स्वामी कर्मानन्द को पता तो चलता कि हवा किधर चलती है।

१०-८-४६

स्वामी कर्मानन्दजी ने रात मुझ पर मेम्बर बनने के लिये बड़ा जोर डाला। कहा, ज्ञानीराम कल बन जायेंगे। मैंने कहा, मैं भी बन जाऊँगा। आत्मा की आवाज की प्रतीक्षा में हूँ।

हनुमानसिंह बोलने में संयम से काम नही लेता। वह यह भी नहीं सोचता कि सभी बातें प्रकट कर देने से कभी-कभी लाभ के बजाय हानि ही अधिक होती है। महाराजा सादुलसिंह को सादुली बाई कहने में सभ्यता का प्रदर्शन नही। हाँ, हनुमानसिंह की यह प्रतिज्ञा सराहनीय है कि उद्देश्य पूर्ति के समय तक सन्यासी रहूँगा।

स्वामी कर्मानन्दजी भी बोलते समय काबू में नहीं रहते। डाइरेक्टर जुगलसिंह को धूर्त और नीच कहकर उन्होंने अपने दिल की भडास भले ही निकाल ली किन्तु भाषण का स्तर ऊँचा नहीं किया।

चौधरी रामचन्द्र जी (जज) का यह कथन जँचा कि असेम्बली में किसानों का उचित प्रतिनिधित्व दिलाने के लिये यह आवश्यक है कि किसान संगठित रूप से प्रजा परिषद् में प्रविष्ट हों।

११-८-४६

मैं कोई पद लेने का इच्छुक नहीं हूँ। इसलिये मैंने प्रजा परिषद् का साधारण सदस्य बनना ही पसन्द किया। रघुवरदयाल गोयल से मेरी नहीं पटती है वह मेरे विरुद्ध ही रहते हैं।

१५ । ८ । ४६

चौ० रामचन्द्रजी (जज) डाकखाने से लौटते हुये मुझे मिले, कहने लगे—"बहादुरसिंह को उधर बर्खास्त किया। इधर मिनिस्टरों के जोर देने पर सुपरिन्टेन्डेन्ट जेल बनाने लगे। इस पर श्री पन्निकर ने कहा, क्यों भद्द उड़वाते हो, मुझे यहां से चला जाने दो। तब चाहे जो करना। सुना है पन्निकर के स्थान पर के. एम. मुन्शी को बुलाया जा रहा है। एक ओर शासन सुधारों की घोषणायें की जाती है। दूसरी ओर नौकरी पर प्राइम मिनिस्टर बुलाये जाते हैं। यह क्या घोटाला ?

१६ । ८ । ४६

रात्रि को नागरिक सभा थी मैं सभा का अध्यक्ष था। आचार्य गोरीशंकर का भाषण हुआ। पहले तो कुशासन पर बोले फिर हीरालाल शास्त्री और गोकल भाई भट्ट के बीकानेर में आने पर स्वागत की बात कही, अंत में वे जाटों पर बरसे जो राजपूत जाटों को बराबर भी नहीं बिठाते थे उन्होंने अब खयालीसिंह को मिनिस्टर बनाया है। उसको काले झंडे दिखाये जावेगे। चौ० ज्ञानीरामजी के इस वाक्य पर कि चौ० खयालीसिंह जाट है, इसीलिये आप

काले झंडे दिखावेंगे। आचार्यजी और भी बिगड़े और उन्होंने कहा, खयालीसिंह ने हम से धोखा किया है। हम शिवरतन मोहता का भी स्वागत नहीं करेंगे आदि आदि।

१९-८-४६

आज रात को चौ० खयालीसिंह मेरे मकान पर आये। बड़ी लम्बी-लम्बी बातें करते रहे किन्तु मैं उनकी बातें नहीं समझ सका। उन्होंने यह भी कहा, कि मैंने तो कुंभारामजी से पहले ही कह दिया था कि मैं तो प्रजा परिषद् को सीढ़ी बनाना चाहता हूँ। और जब वजीर बन गया तो कुभारामजी ने कहा था, हम तेरे साथ हैं फिर क्यों मेरी मुखालफत करते हैं। आप उन्हें समझा दें। मैंने कहा, आपके मेरे सिद्धान्त नही मिलते। हप दुहरी लड़ाई नहीं लड़ सकते एक ओर सामन्तशाही चक्का में हम पिसते रहे हैं। अब कांग्रेस से भी लड़ें। मुझे यह नहीं जँचता है।

२० । ८ । ४६

रात भर मैंने विचार किया यह वही गवर्नमेंट है न, जो जाट स्कूल संगरिया को सहन नहीं करती थी और अब कहती है जाट सभा बनाओ। प्रजामंडल में मत जाओ। चौधरी खयालीसिंह कल तक तो प्रजा परिषद् के (तहसील ब्रांच) के प्रधान थे। आज कहते हैं यह गुंड़ों की संस्था है। महाराजा ने हम चार आदमियों को इस सलाह के लिये बुलाया था कि जाटों में से मिनिस्टर किसे बनायें ? हम चारों में से किसी ने भी तो खयालीसिंहजी का

समर्थन नही किया था। यह सब फूट डालने की चालें हैं हमें इनसे बचना ही होगी।

२२ । ८ । ४६

आज मैंने प्रजा परिषद् के ८० मेम्बर बनाये। मंच पर बोलकर शासन की कुछ पोल खोली। खासतौर से शिक्षा में पक्षपात पूर्ण रवैये की। दूसरे दिन २३ । ८ । ४६ को भी लालगढ़ में ठहरा और १८५ आदमियों को प्रजा परिषद् का मेम्बर बनाया। चमारों को हमने समझाया। वेगार में सरकार का कोई काम न करो।

२४ । ८ । ४६

बीकानेर में मुस्लिम लीग बन गई। बंगाल में बनी थी। तब तो गवर्नर के इशारे से हिन्दुओं पर आक्रमण किया गया। उनका धन दौलत लूटा गया स्त्री बच्चे कत्ल किये गये। अपने अंग्रेज गुरुओं से यह नुसखा बीकानेर दरबार ने किस गर्ज से सीखा है, इसे वही जानें।

आज मुझे भिन्न खबरें मिली। किसी ने कहा, खयालीसिंह ने मिनिस्टरी से स्तैफा दे दिया है किसी ने कहा, स्तैफा दिला लिया गया है।

३० । ८ । ४६

एक वार्ड में सभा रखी गई। मुझे प्रधान बनाया गया। इच्छा तो न थी किन्तु लोगों के आग्रह पर मना भी न कर सका। वीरबल की मौत पर भजन गाये गये। मेरे भाषण के समय लोग उठ चुके थे। मैं गर्म-गर्म भाषण

करना नहीं जानता । मौजूदा सरकार पर से मेरा विश्वास हट गया है···खयालीसिंह को चाहिये जब तक निभै निभता रहे । जाट सभा बनाने और मौजूदा सरकार का पक्ष लेने का व्यर्थ प्रयास न करे । चारों ओर लड़ाई नहीं चल सकती । मुखरामजी ने बताया कि बीकानेर सरकार को यह सारा पता चल गया है कि खयालीसिंह से जाट अधिक संख्या में सहमत नही है । देखें क्या नतीजा निकलता है ?

११-६-४६

रेवन्यू कमिश्नर चोपड़ा ने हरीसिंह से कहा, दरबार कुछ जाट नेताओं से मिलना चाहते हैं । कल ६ बजे मिलो । दूसरे दिन चौदह आदमी एक बार में और दस आदमी दूसरी बार में महाराजा साहब से मिले ।

१२-६-४६

पहले महाराजा साहब ने मुझे बुलाया···मेरे पर यही जोर दिया जाट सभा में मिलो । खयालीसिंह के पीछे लगो । नहीं दुख पाओगे । मैंने कहा, बात कुछ जँची नहीं । जब देखा कि इस पर मेरी बातों का कोई असर नहीं होगा तो कहा जाओ । फिर हरीसिंह को बुलाया वही बातें उनसे कहीं । हरीसिंह ने कहा, महाराज जागीरदारों के जुल्मों को बन्द करो । उनकी लूट से हमें बचाओ । हमारी जान माल और इज्जत कुछ भी सुरक्षित नहीं है । उत्तर मिला । सब कुछ धीरे धीरे होगा । आप मेरी जय

नहीं बोलते हैं। मेरा झंडा भी नहीं फहराते हैं। जो कुछ भला कर सकता हूं मैं ही कर सकता हूं। जवाहरलाल मेरे यहां क्या करेगा ? रामलाल सरदार गढिया ने कहा, महाराजा, छः सौ रियासतें है। सभी जगह इस समय तो तिरंगा ही फहराया जा रहा है और सभी जगह लोग जवाहरलाल की जय बोलते हैं।

वापिस होते समय मैं होममिनिस्टर से मिला। उससे मैंने कहा जब मैं जाट स्कूल को सहायता देने के लिये तथा जाटों के हित के कार्य करने को कहता था तो आप कहते थे मैं साम्प्रदायिकता को पसन्द नहीं करता। अब जब हम सांम्प्रदायिकता से हट रहे हैं। आप हमें जाट सभा में लाना चाहते हैं। आखिर इसमें क्या रहस्य है सो समझाइये। बातें हो ही रही थीं कि सीताराजी व्यास आगये, मैं उठकर चला आया।

२४-६-६१

प्रजा परिषद की मीटिंग चल ही रही थी…कि इतने में पुलिसदल आ धमका। सब इन्सपेक्टर ने कुंभाराम, रामचंद जैन और रामलाल को पूछा, कुंभारामजी बाहर थे। उन दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया। रामलाल के पास काफी कागज थे जिन्हें चतुराई से हरदत्तसिंह ने अपने कब्जे में कर लिया। जिन्दावाद के नारों के साथ उन्हें हमने विदाई दी।

२६-६-४६

पब्लिक पार्क में रात्रि को प्रजापरिपद की मीटिंग की गई। मैंने अपने भाषण में कहा, तोप, वन्दूक और लाठियों की मार के भय को हृदय से निकाल दो, निर्भयता के साथ संगठन करो और आगे बढो। हम अवश्य सफल होंगे।

१०-१०-४६

लोहा में किसान कान्फ्रेन्स हुई। रघुवरदयाल जी गोयल भी बोले। जयपुर के दो जाट बोले। उनमें से एक कुछ करड़ा बोला। हम तो नर्म ही बोले। हां, वहादुरसिंह के भजन जोरदार हुये। जागीरी प्रथा का नाश हो भी कहा गया। सरदार हरीसिंह का कहना था कि दरवार को जागीरदारों पर विश्वास नहीं करना चाहिये। उन्होंने सदा उन्हें धोखा दिया है। ये जागीरें वक्त वक्त पर जब्त भी की जाती रही हैं।

१७-१०-४६

प्यारेलाल ने हमें तार दिया कि समझौता हो चुका है। इसलिये हड़ताल वन्द हो गई है। यह हड़ताल मुलाजिमान की थी। जो नौकरी से निकाले गये थे उनमें से कुछ को वहाल कर दिया गया।

१६-१०-४६

रात्रि को पं० नारायणदास वकील के मकान पर मीटिंग हुई। उसमें मेरी लिखी पुस्तक 'नई जाट सभा'

को प्रकाशित करने का निर्णय हुआ। काशीराम इस में नही था। वह कहता था हमें सम्प्रदायवाद के पक्ष विपक्ष में कुछ नहीं कहना है। करनेलसिंह के साथ उसकी झड़प भी हुई।

२६-१०-४६

सरदार मस्तानसिंह, नाथूराम जी बीकानेर में २९, ३०, ३१ अक्टूबर को होने वाली मीटिंग में चलने से आना कानी करते हैं। इन्हीं लोगों ने मुझ पर प्रजापरिषद में शामिल होने के लिये जोर दिया था। मैंने कहा, इसी विरते पर हम लोग स्वराज्य चाहते है।

चौ० ज्ञानीराम कहते हैं मैं बीकानेर जाऊंगा और ख्यालीसिंह से कहूंगा। जाट बोर्डिंग हाउस के लिये तीन हजार और जाट स्कूल के लिये बीस हजार रुपया राज्य से दिलाओ। मै चुप रहा।

३०-१०-४६

राव वल्देवसिंह जी छतासर कहते हैं कि जाटों का राज्य के साथ कोई समझौता हो जाना चाहिये। यह बात मुझसे चंदरु मोटेर ने धर्मशाला में आकर कही कि आप और हरीसिंह जी को बुलाया है। हम उनसे मिले। देर तक बातें हुई। उन्होंने कहा, हमारी—राजपूतों की—मीटिंग हुई थी। हम कोई सरल सा रास्ता ढूंढना चाहते हैं, जिससे समझौता हो जाय। मैं कोशिश कर रहा हूं आपको आपका मत जानने के लिये बुलाया है।

१-५-४८

प्रजा परिषद् की प्रतिनिधि सभा की मीटिंग में शामिल हुये । गोयल पार्टी खूब जोर लगा रही थी । एक प्रस्ताव में उनका बहुमत रहा । दूसरे में डिवीजन की बात चली । अलग २ बैठे हमारी पार्टी के ३४-३५ उनके २६ आये वह हार गये । यह था वह प्रस्ताव कि बीकानेर को संघ में मिलाया जाय इस प्रस्ताव में मेरा संशोधन था कि पहिले जनमत जाना जाय । इस पर गोयल पार्टी हार गई हरदत्तसिंह और गोयल ने एक दूसरे पर आक्षेप किये । हरदत्तसिंह रात को कार्यकारिणी में प्रधान पद से स्तीफा दे चुके थे मीटिंग का सभापतित्व जीवनदत्त कर रहे थे जो कि एक्टिंग प्रेसीडेन्ट थे । उन्होंने गुरुदयालसिंह को बोलने से रोक दिया । मस्तान सिंह ने आपसी लड़ाई की निन्दा की । गोयल पार्टी अपनी हार हो जाने के कारण उठ कर चली गई। केवल एक रंगा साहब रह गये ।

रात्रि को मेरे घर पर जीवनराम, नन्दराम, हरदत्त-सिंह, कुम्भाराम, हरीसिंह और रामचन्द जज इकट्ठे हुये रात के चार बजे तक सलाह मशवरा होता रहा, अन्त में चुनाव लड़ने के लिये पालियामेन्टरी बोर्ड की रचना की, रामचन्द जज को प्रधान बनाया गया । कार्यकारिणी के मेम्बरों के नामों पर झगड़ा हुआ । मैं भी रूठा ।

५-५-४८

रात्रि को ८ बजे प्रजा परिषद् की मीटिंग रक्खी ।

मैं भी गया। म्यूनिसिपैलिटी के चुनाव के लिये जिन लोगों को टिकिट नहीं दी। वह अलग पार्टी बनाकर चुनाव लड़ना चाहते थे। मैंने और सोहनसिंह ने कम्प्रोमाइज के लिये सलाह दी और कहा इन्हें एक सीट और अधिक दे देने में कोई हर्ज नहीं है। नत्थूराम प्रेसीडेन्ट तेज मिजाज हैं, इसलिये लड़ना ही तय हुआ।

इसी समय सोशिलिस्टों की मीटिंग हुई जिसमें काशीराम गोयल ने प्रजापरिषद् के खिलाफ खूब ही जहर उगला और कहा यह प्रजा परिषद् नहीं जाट सभा है।

४-६-४८

बीकानेर में पहुंचे। मीटिंग तीन बजे की रक्खी थी। चौ० रामचन्द देर से आये। न कोई प्रोग्राम बना हुआ था शिवशंकर जनरल सेक्रेटरी ने तुक मिला कर मीटिंग आरंभ की। गौरीशंकर आचार्य जल्दी २ बातें करके उठ गये। पैसे के काम को छेड़ा भी नहीं जो कि बहुत जरूरी था। मेरे याद दिलाने पर नौ बजे रात को मीटिंग रक्खी और कुम्भारामजी के यह कहने पर कि बातें करते चलें मैं उनके साथ ही उनकी कोठी पर चला गया मगर वहां पर फोटू लेने या गपास्टक के सिवाय कोई बातें नहीं कीं।

रात के नौ बजे हम प्रजापरिषद की मीटिंग के लिये आचार्य गौरीशंकर के बंगले पर पहुंचे। साढ़े बारह बजे तक मीटिंग रही।

५-६-४८

चौधरी कुम्भाराम के बंगले से हरीसिंह के साथ प्रजा परिषद के दफ्तर में गया और वहाँ ५ बजे तक रहा।

६-६-४८

सरदार हरीसिंह व भगवानसिंह आगये हरनामसिंह ने कहा कि आप ही तो हरेक बात को कर लेते हो पर पीछे पिचक जाते हो। जैसे कि आप और मस्तानसिंह ने गोयल पार्टी को प्रजा परिषद में लेकर गलती की और उसका बल भी बढ़ाया हरीसिंह ने हनुमानसिंह की बात का समर्थन किया मैंने स्वीकार किया कि बेशक गोयल के मामले में मैंने ढिलाई की है लेकिन मेरी नीति हर जगह ढील है यह बात गलत है।

१०-६-४८

मेघसिंह के साथ प्रजा परिषद के दफ्तर में जाकर ६० फार्म सदस्य बनाने के दिलाये ग्यारह बारह के करीब हम कुम्भाराम मिनिस्टर की कोठी पर पहुंचे। कुम्भाराम उस समय भोजन की तैयारी में थे। मेरे पहुंचते ही उन्होंने अपना खाना मेरे सामने कर दिया कुम्भाराम के यहां से चौधरी हरिदत्त मिनिस्टर के बंगले पर पहुँचा। उनसे बात-चीत करने के बाद प्रजा परिषद के दफ्तर में आया।

१५-६-४८

प्रजा परिषद की मीटिंग ८ बजे रखी थी मगर आपस

में एकता का प्रयत्न होने लगा एक बार तो सुलह होगई थी किन्तु फिर गड़बड़ मची आखिर में मामला बीच में ही रहा और गोयल रघुवरदयाल ने विरोधी पार्टी की ओर से हरदत्तसिह के प्रस्ताव के हक में कहा हनुमानसिह बीच में ही कूद पड़ा और उसने मिनिस्टरों की निंदा की प्रस्ताव पर वोट लिये गये तो ३१ प्रस्ताव के पक्ष में और २८ विरोध में आये। सवा पांच बजे छापर पहुँचे वहाँ मिनिस्टरों को मानपत्र मिला जिसका जवाब चौधरी हरदत्तसिंह जी ने दिया।

१३-६-४८

सुजानगढ में कार्यकारणी की मींटिग थी, मैं विशेष प्रतिनिधि की हैसियत से उसमें बैठा था बीकानेर महाराजा से समझोता के आधारभूत बातों पर चर्चा चली ग्रीस ने जिन के साथ यह सुझाव रखा कि बालिग मताधिकार और महाराजा को १३ लाख सालाना पेन्शन लेना स्वीकार हो तो चुनाव लड़ा जाय। सरदार हरीसिंह चौधरी हनुमानसिह और मोहरसिंह ने गुट बनाया हुआ है कुम्भाराम और हरदत्तसिह को वजारत से हटाने का इसलिये वह हर बात में अडंगा लगाते हैं। जब मैंने कहा कि हनुमानसिंह जो भी कुछ कहे अलग कहे चलते फिरते विरोधी पार्टी के सामने न कहे, इस पर हरीसिह मुझ से लड़पड़ा कि तुम पक्ष पात करते हो।

१४-६-४८

सवेरे २ वजे से कार्यकारणी की वैठक आरम्भ हुयी १२ वज गये साथी खींचा तानी करते रहे एक सूत्र में वन्धने का प्रिय प्रयत्न अधूरा रहा । रात्रि को मोहरसिह जीवनराम हनुमानसिह और रामचन्द्र के साथ में कुम्भाराम के पास धर्मशाला में पहुँचा, परन्तु वहाँ कोई खास वात नही हुयी ।

२८-६-४८

ठाकुर प्रतापसिह जी के मकान पर सवा ८ वजे रात्रि को पहुँचे स्नान ध्यान से निवृत होने पर मुझ से मिले भोजन के कमरे में वातें हुयीं । मेरे लिये और अपने लिये रोटियाँ मंगाईं । मेरे नट जाने पर मुझे दूध और आम पेश किये । वातचीत के सिलसिले में रघुवरदयाल गोयल और रामचन्द्र जैन की वावत उन्होंने कहा ये लोग पब्लिक हित की वजाय पहले अपना हित देखते हैं मैं भी इन्कार न कर सका । उनके भाई ने कहा जसवन्तसिह जी प्रतापसिहजी को याद करते हैं हमने जाट और राजपूत की एकता की जो वात आरम्भ की थीं । अधूरी रह गई ।

२-७-४८

हरीसिह आदि के साथ मिलकर प्रजा परिपद् के कार्यकर्ताओं से मिलने के लिये दफतर में पहुँचा । डेड़ दो घन्टे वोटर लिस्ट देखी इसके वाद आचार्य गोरीशंकर के मकान पर पहुँचा वही प्रजा परिपद् की मीटिंग होने वाली थी ।

मीटिंग शुरू होने तक अखबार पढ़ता रहा मुझे ६ बजे की गाड़ी से रतनगढ़ जाना था। ठाकुर जसवन्तसिंह जी मेरे कहने पर रतनगढ़ जा रहे थे। सरदार मस्तानसिंह ने मुझे मोटर से स्टेशन पहुँचाने का इन्तजाम किया था किन्तु समय पर मोटर न आ सकी, इसलिये पैदल ही स्टेशन पहुँचा।

५-७-४८

रतनगढ़ से वापिस बीकानेर आया। चौ० कुम्भाराम जी की कोठी पर जाकर स्नान ध्यान और भोजन किया। परिषद् के दफ्तर मे गया। चौ० हरदत्तसिंह दो बजे आये। उन्होंने रामचन्द्र जी की कमजोरी, हनुमानसिंह और मुहरसिंह के त्यागपत्रों की कथा सुनाई। तीन बजे के करीब कुम्भाराम आ गये उन्होंने सुनाया महाजन इलाके के तारुराम ने नहरी इलाके में जमीन मांगी। मैंने हाथ जोड़ कर कहा, चौधरी जी हुक्म नहीं, तो बोले तुमसे तो प्रेमसिंह ठाकुर ही अच्छा था। जिसने लोगों को नहरी इलाके में जमीनें दी थीं। इससे मुझे बड़ा दुख हुआ। इन्हीं के लिये हम मरते हैं और यह ऐसी बातें करते हैं। उधर मुहरसिंह, हनुमानसिंह आदि विरोध पर उतरे हुये है। चौधरी कुम्भाराम की इन बातों को सुनकर ख्याल आया "मिनिस्टरी भी सुख का धन्धा नहीं।"

८-७-४८

चौधरी कुम्भाराम जी रेवन्यू कमिश्नर बिहारीलाल

को नहीं रखना चाहते थे। मन्त्रिमंडल की बैठक बैठी। महाराज कुंवार, प्राइम मिनिस्टर और महाराणी जी उसे रखने के पक्ष में थे और चौ० हरदत्तसिंह, कुम्भाराम जी और सरदार मस्तानसिंह हटाने के पक्ष में आखिर यह तय हुआ कि बिहारीलाल को फिलहाल तीन महीने की छुट्टी दे दी जाय। फिर जैसा भी मुनासिब होगा किया जायगा।

२६-७-४८

कुम्भाराम जी ने बताया कि गोयल से समझौते की बातें हुई। पार नहीं पड़ेगी क्योंकि वे शरतें लगाते हैं कि—

(१) चौ० रामचन्द्र जी पेन्शनर हैं, इसलिये इन्हें परिषद् का प्रधान मत रखो।

(२) कुछ अगुवा लोग प्रण करें कि हम मिनिस्ट्री के इच्छुक न होंगे।

(३) कार्यकारिणी का पुन: गठन हो।

चौधरी रामचन्द्र जी को दो बजे यहाँ बुला रहा हूँ आप भी उपस्थित रहें। आप सब लोग जो भी तय करेंगे। मैं तो स्वीकार कर लूंगा किन्तु दूसरों के मन का मुझे क्या पता है। वे क्या तय करेंगे।

मैंने कुछ मिसलों को देखा अफसर लोग कैसे-कैसे अन्याय किसानों के साथ करते हैं। चोयला वाली गाँव की

भी मिसल देखी, जिसमें नायब तहसीलदार ने टालमटूल बरती थी।

३१-६-४८

कुम्भारामजी ने रात महाराजा बीकानेर की २०-७-४८ की पेरिस से लिखी हुई लम्बी चिट्ठी मुझे पढ़ने को दी। यह चिट्ठी महाराजा ने कुम्भाराम को रेवेन्यू कमीश्नर बिहारीलाल को हटाने पर लिखी थी। महाराजा ने लिखा बिहारीलाल को हटाने का अधिकार सिर्फ मुझे था मन्त्रि मंडल को नहीं। मैंने उसकी मार्च १९४९ तक के लिए मियाद बढ़ाई थी आप लोगों ने जो अनाधिकार चेष्ठा की है उसके संबंध में ७ दिन के अंदर अपना स्पष्टीकरण भेजो या अपनी गल्ती स्वीकार करो। मैंने चिट्ठी कुम्भाराम जी को लौटा दी और यह भी लिखा कि इसका जवाब जो लिखो उसे भी मुझे दिखाना।

मुझे किसी ने समाचार दिया कि बुधारामजी तथा उनके लड़कों को खेत के झगड़े पर किसी ने चोटें पहुंचाई है। वे रतनगढ़ अस्पताल में है। यह समाचार कहने के लिए चौधरी कुम्भारामजी के पास पहुंचे तो उन्होंने इससे भी अधिक चिन्ता की बात सुनाई कि स्वामी कर्मानंद के हरपालू में तीन गोली लगी है हालत चिन्ताजनक है फिर हम होममिनिस्टर हरदत्तसिंह जी के पास पहुंचे वहाँ मालुम हुआ कि हरदत्तसिंह जी की मां अस्पताल में बीमार हैं और उसकी हालत चिंताजनक है। मैंने

मोहनलाल सारस्वत के जरिये खबर भेजी दी कि मैं रतनगढ़ आ रहा हूँ।

१-८-४८

हरदत्तसिंहजी के मकान पर जाने पर पता चला स्वामी करमानंद गाडी से आ रहे हैं। उन्हें लेने के लिए मैंने मोटर भेज दी है। इतने में कुम्भाराम जी आगये। एक कमरे में अलग वे दोनों आपस में एक दूसरे पर इल्जाम लगाने लगे मैंने दोनों से कहा, यह तुम्हारा झगड़ा हमें डुबा देगा। एक होकर काम करो। इतने में समाचार आया स्वामीजी अस्पताल में पहुंच गये हैं। हम मोटर में वहां पहुंचे (अस्पताल में) ओपरेशनरूम में स्वामीजी लेटे हुऐ हमें देखते ही रो पड़े कि दीपचंद ने यह क्या किया। हमने उन्हें धीरज बँधाई। हरदत्तजी ने स्वामी जी से कहा कि भलाई इसमें है कि आप किसी का नाम न लें नहीं तो बीकानेर में कांग्रेस खतम समझिये। स्वामी जी मान गये कि नाम नहीं लूंगा। हरदत्तसिंहजी तो चले गये। इतने में ही पुलिस के आई० जी० पी० प्रतापसिंह, सोहनसिंह के साथ आ धमके। फिर ठाकुर जसवंतसिंह जी आ गये। जसवंतसिंह ने कहा, मैं स्वामीजी से एकांत में पूछताछ करूंगा। मैं और कुम्भाराम जी बाहर आगये।

५-८-४८

बीकानेर में गोकुलभाई आये थे। जहां वे ठहरे हुए थे

वहां मै पहुँचा । देखा शहरी जनता की भीड़ लगी हुई है
काहनसिंह रोडा को खादी की धोती कुर्ता पहने देखा औ
विश्नोई मनीराम लखासर और उसके साथी को भी खादी कं
पोशाक में देखा । कई एक को खादी टोपी लगाये आव
ही देखा । मैंने तुलसीराम जी सर्राफ से कहा गोयल पार्ट
पर हमारा विश्वास नही है, क्योंकि वह जागीरदारों
से सम्पर्क रखती हैं । ३ बजे गोकुलभाई ने वृक्षों के
नीचे भाषण दिया । और चौधरी रामचन्द्र से लिखित लीं
पहले कार्यकारणी भंग की जाती है और जब तक नई
कार्यकारणी संगठित न हो ५ आदमियों की ऐडहोक
कमेटी नियुक्त की जाती है । गोकुल भाई ने ५ आदमियों
में रघुबरदयाल गोयल, चन्दनमल वैद्य चौधरी कुम्भाराम
चौधरी रामचंद और मुझ हरिश्चन्द्र का नाम रखा।
गोकुल भाई ने यह भी कहा कि जनरल सेक्रेटरी एवं
संयोजक का कार्य ये ही पाँच आदमी अपने में से करेंगे।

६-८-४८

काँग्रेस के दफ्तर गया अध्यक्ष काँग्रेस से कोई काम प्राप्त
न होने पर मैं सेठ मदनगोपाल दम्माणी के यहां पहुँचा।
उनसे २०-२५ मिनट बातचीत हुई, पूछने पर मैंने बताया
कि लोग मुझे चुनाव में खड़ा करना चाहते हैं परन्तु क्योंकि
पैसे की कमी है मैं खड़ा नही होना चाहता । सेठ जी ने
मुझे अलग ले जाकर कहा तुम खड़े जरूर हो । एक हजार

रुपये तो मैं तुम्हें सहायता में दूंगा और अधिक चाहोगे तो टाल नहीं की जावेगी।

२५-८-४८

मेघसिंह रतनगढ़ से आया उसने कहा हनुमानसिंह और मौहरसिंह रतनगढ़ में आये थे हाजरी तो २५०-३०० की थी परन्तु कांग्रेस वालों ने उनकी पूछ ताछ नही की। हनुमानसिंह और मौहरसिंह ने गाँव के मुखिया लोगों को कागज लिखा कि स्वामी केशवानन्द जी २५-४-४८ को रतनगढ़ आ रहे हैं सो सब लोग उपस्थित हों। मैंने गाँवों में घूम २ कर लोगों से यह कह दिया है इन लोगों की बातों में मत आओ। मेघसिंह ने यह भी कहा कि मोहनलाल ने जयपुर तार दिया है कि रतनगढ़ वाले चौधरी हरिश्चन्द्र जी को अपने यहाँ से असेम्बली के लिए खड़ा होने में राजी नहीं है। मेघसिंह ने भी अपनी ओर से ऐसा तार देना बताया कि हम लोग हरिश्चन्द्रजी को चाहते हैं।

२७-८-४८

स्वामी चेतनानन्द जी रतनगढ़ से आये सूरजमल जालान का कार्यकर्ता भी उनके साथ था। मुझ से पूछने लगे कि आप चुनाव के लिए खड़े होगे या नहीं। मैंने कहा मैंने कभी इच्छा प्रगट नहीं की। पार्लियामेंटरी बोर्ड वालों ने मेरी इच्छा के बिना मेरा नाम लिख लिया है। मैंने लिखकर भी दिया है मैं खड़ा नहीं होना चाहता। सभी

साथी यह कहते हैं कि रतनगढ़ की अधिकांश जनता मुझे चाहती है। पर मैं झगड़े में पड़ना उचित नहीं समझता लेकिन हां स्वामी जी यह तो बताओ कि आपने भी तो मुझे यह लिखा था कि रतनगढ़ की जनता आपको चाहती है आपके लिखे पर मैंने रतनगढ़ के गावों का दौरा भी किया। फिर अब आप ही मेरे से प्रश्न करते हैं। स्वामी जी नीचे को गर्दन करके चुप हो गये।

मेघसिंह को भारी चिंता है, वह मुझ पर बार २ जोर देता है रतनगढ़ चलो समस्या को सुलझाओ। मैंने उसे समझाया कि अकेला लड़कर कोई सफल नहीं होता है जब तक बहुत से साथी साथ देने को तैयार नहीं हो जावें।

८-८-४८

कुम्भाराम जी की मोटर से ८ बजे गौरीशंकर जी की कोठी पर पहुँचा। गोकुलभाई भट्ट एवं हीरालाल शास्त्री भी आगये। उन्होंने चारों मिनिस्टरों और हम पांचों एडहोक मेम्बरों को बुलाकर बातचीत की। हीरालाल शास्त्री ने कहा कि मैंने महाराज कुमार से कह दिया है कि हम इन हालतों में चुनाव नहीं लड़ेंगे। अब आप लोग बतावें कि आप लोगों की क्या राय है? गौरीशंकर जी ने कुछ ढील सी दिखाई, मस्तानसिंह जी भी चुप रहे। हमने कह दिया जैसी आपकी इच्छा हो हम उसी में राजी हैं। दूसरे दिन तहसील कांग्रेस कमेटियों के मंत्रियों को बुलाकर यही सवाल किया। हनुमानसिंह ने कहा राज्य ऐडहोक

कांग्रेस कमेटी का चुनाव जल्दी हो जाना चाहिए। उन्हें उत्तर दिया गया एक महीना तो यही कमेटी काम करेगी। नंदराम ने कहा पहले हमारे आपसी मतभेद दूर हो जाने चाहिए तभी दूसरी राय दी जा सकती है।

मानजी परिहार अपने पुराने साथी है। वे मेरे पास कुम्भाराम जी की कोठी पर आये और कहने लगे गाँव में चौहानों का जोर है। हम कमजोर हैं कूयें की नाल पर झगड़ा है कुम्भाराम जी से कह कर मेरा यह काम करा दो। मैंने उसके सामने श्री कुम्भाराम जी से कह दिया यह अपना पुराना साथी है और उससे अलग कहा तुझे नाल की पड़ी है इनकी तो मिनिस्ट्री जारही है।

चुनाव न लड़ने वाला और मिनिस्टरों के स्तेफे का वक्तव्य गोकुलभाई और हीरालाल जी ने तैयार किया।

वीकानेर की राजनैतिक जागृति का संक्षिप्त इतिहास

हमारे पास ऐसी सामग्री अभी तक नही जुट पाई है कि हम वीकानेर की जागृति के इतिहास पर कुछ क्रमवद्ध एवं साधिकार प्रकाश डाल सके। किन्तु जो भी कुछ सामग्री हमें चौ० हरिश्चन्द्रजी की डायरियों से प्राप्त हुई है तथा उनके दिये हुये पेम्फलेटस से मिली है उसी के आधार पर थोड़ासा प्रकाश वीकानेर की राजनैतिक जागृति पर डालना उचित समझते हैं।

"सारे ही राजस्थान में जागृति का सूत्रपात करने का श्रेय जिस साहस के धनी पुरुष को है वे थे। श्री विजयसिंह जी पथिक। पथिक जी मेरठ जिले के किसी गाँव के गुर्जर परिवार में पैदा हुये थे। उनका पहला नाम श्री भूपसिंह था। उन्होंने राजनीति में प्रवेश सन् १६१० में किया। बंगाल से प्रसिद्ध क्रान्तकारी नेता श्री रासविहारी वोस देहरादून में वनविभाग के एक अफसर होकर आये। युवक भूपसिंह का उनसे परिचय हुआ और उन्होंने उसे राजस्थान में क्रांति का काम करने के लिये भेजा। उनका उद्देश्य राजस्थान के राजा और सामन्तों

में अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह पैदा करने का था। यह कहा जा सकता है कि पथिक अद्भुत सूझबूझ के आदमी थे फिर भी राजाओं से सम्पर्क कायम करने की कला उनको नहीं आती थी। उन्होने घूम फिर कर दो आदमियों से सम्पर्क कायम किया। एक कोटे के राजकवि केसरसिंह जी वारहट और दूसरे खरवा के जागीरदार राव गोपालसिंह जी राठौर। क्रांतिकारियों के इतिहास से परिचित लोग यह जानते हैं कि १६१२ ई० में लार्ड हर्डिङ्ग पर बम फेंकने वालों में १६ वर्ष का एक किशोर बालक प्रतापसिंह भी था। वह श्री केसरीसिंह जी का ही पुत्र था।

सन् १६१५-१७ में भारत में जिस दूसरे गदर की तैयारी की जा रही थी। वह बंगाल, बर्मा और पंजाब में अंधाधुंध गिरफ्तारियों के कारण असफल हुई। पजाब के हौसलेबाज किशोर क्रांतिकारी करतारसिंह सरावा की फांसी से श्री रासविहारी बोस को इतना धक्का लगा कि वे भारत को छोड़ कर जापान चले गये और वहीं से उन्होंने भारत की आजादी के निरन्तर प्रयत्न किये।

राव गोपालसिंह जी की नजरबन्दी के बाद श्री पथिक जी को भी खरवा छोड़ना पड़ा। वे मेवाड़ में चले गये। मेवाड़ के राजा फतहसिंह ने आन तो महाराणा प्रताप की ही पकड़ रखी थी। किन्तु चतुर अंग्रेजों ने दीवान उन्हें अपना ही दे रखा था। इससे राणा को विद्रोह के लिये उभाड़ना सहज न था। तब पथिक जी ने उन भील

ग्रासियों में काम आरंभ किया जिनके वल पर राणा प्रताप स्वतन्त्रता का पुजारी कहला सका। भारतवर्ष में पहला पहला किसान सत्याग्रह मेवाड़ के विजौलिया इलाके में हुआ। सिरोही के ग्रासियों का विद्रोह भी इसी सत्याग्रह की एक शृंखला था। मेवाड़ को माणिकलाल वर्मा और मोतीलाल तेजावत श्री पथिकजी की ही देन हैं।

सन् १९२४ के आस पास श्री पथिक जी ने तीन आदमियों—श्री रामनारायण चौधरी, शोभालाल गुप्त और शंकरलाल वर्मा—को लेकर अजमेर में राजस्थान सेवासंघ की स्थापना की और 'तरुण राजस्थान' नाम के एक हिन्दी साप्ताहिक का प्रकाशन किया। सामरमती के गांधी आश्रम की तरह पथिकजी का सेवासंघ स्वावलम्बी व सम्पन्न संस्था तो न वन सका किन्तु उसने रोमांचकारी अभावों के रहते हुये भी प्रकाश का काम किया। राजस्थान में जगह जगह कार्यकर्ता पैदा होने लगे। यह स्वाभाविक वात है कि मतभेद सभी जगह होते हैं। राजस्थान सेवासंघ के कार्यकर्ताओं में मतभेद हुआ। चौधरी रामनारायण जी ने सन् १९२८-२९ में अलग जमात वनाली। और राजपूताना प्रजापरिषद की स्थापना करदी। जिसका पहला अधिवेशन अजमेर में सेठ अमृतलाल की अध्यक्षता में हुआ जो कि सौराष्ट्र के एक तेजस्वी नेता और गुजराती 'दैनिक जन्मभूमि" के संचालक थे।

यातायात साधनों के अभाव से वीकानेर राज्य

से दूर था। इसलिये जोधपुर, भरतपुर, बून्दी और कोटा में जहाँ सन् १९३० से प्रजापरिषदों का गठन आरंभ हो गया, वहाँ बीकानेर में सन् १९४५ में हुआ किन्तु इसके यह अर्थ नहीं कि बीकानेर के लोगों में कुछ किया ही नहीं। श्री मुक्ताप्रसाद जी वकील ने सन् १९२२ में सद्विद्या-प्रचारिणी संस्था की स्थापना की जिसने रिश्वत विरोधी नाटक खेला। मुक्ताप्रसाद जी राज्य से निकाल दिये। उस समय के बीकानेर के महाराजा श्री गंगासिंह जी को कठोरता में हम राजस्थान का स्टालिन कह सकते हैं। वे जरा से अपराध पर भारी सजा देने में कभी नहीं चूकते थे। एक ठिकाने के किसानों ने जब जागीरदार का शिकायत की तो उन्होंने जागीरदार को उन्हें दबाने का संकेत ही नहीं दिया, पुलिस का स्तैमाल भी करने दिया। इस प्रकार के आतंककारी शासक के राज में प्रजापरिषद इतनी देर से कायम हुई तो इसमें प्रजा की विशेष कमजोरी नहीं समझनी चाहिये।

बीकानेर के किसानों में जागृति का श्रेय जाट महासभा और उसके पत्र जाटवीर को है। रोहतक और हिसार में जाटों में जो जागृति होरही थी। उसका असर गंगानगर जिले के पंजाब-सीमावर्ती इलाके पर पड़ रहा था और उसी असर से प्रभावित होकर सन् १९१७ में संगरिया में जाट स्कूल की स्थापना हुई। सन् १९२५ के पुष्कर के जाट महासभा के सम्मेलन ने जिसके सभापति भरतपुर

नरेश थे। राजस्थान के जाटों में बिजली का जैसा असर किया था। उसी समय से मारवाड़ में चौधरी मूलचंदजी ने घूम घूम कर अलख जगाना आरंभ कर दिया था और उसी समय से जयपुर राज्य में मढ़ा के दादू पंथी जाट युवक जयरामदास, खंडेलावाटी के देवासिंह वोचल्या, भगवानसिंह सामौता, सीकरवाटी के पृथ्वीसिंह और शेखावाटी के पन्नेसिंह, चिमनाराम और गोविन्दराम और रामसिंह कटेवा ने सरगर्मियाँ पैदा करदी थीं। बीकानेर के चौधरी बहादुरसिंह, जीवनराम और चौ० हरिश्चन्द्र जी तथा मनसानाथ जी पर चौ० लालचंद जी और छोटूराम जी की–पहले शिक्षित और संगठित बनो–नीति की छाप थी। संगरिया के जाट स्कूल को महाराजा गंगासिंह ने एक जागीरदार को अपना काल वताया था वह उनका काल तो नहीं किन्तु उन्हें कम्पायमान कर देने वाला अवश्य सावित हुआ। सन् १९४६–४७ के आन्दोलन के सभी तरुण कार्यकर्ता या तो संगरिया के भूतपूर्व छात्र थे या संगरिया के संचालकों के अनुयायी थे।

शहरी लोगों में श्री मुक्ताप्रसाद के प्रयत्नों की चर्चा की जा चुकी है किन्तु वीकानेर के महाराजा सर गंगासिंह जी की प्रगतिशीलता की सारी पोल खोली थी, श्री खूबराम शराफ के भतीजे सत्यनारायण जी शराफ ने। इन पंक्तियों का लेखक उन दिनों "राजस्थान सन्देश" का सम्पादक था। इस पत्र के संचालक

श्री विजयसिंह जी पथिक 'बीकानेर विशेपांक' निकालना चाहते थे। मैं (ठा० देशराज) मसाला एकत्रित करने के लिये पिलानी के रास्ते जैतपुरा की ढाणी चौधरी जीवनराम जी पूनिया से मिलता हुआ राजगढ़ से रेल में बैठकर भादरा पहुँचा वहां तीन दिन तक सत्यनारायणजी ने मैटर तयार कराया। कोई भी विभाग उन्होंने अछूता नहीं छोड़ा था। वापिसी में राजगढ़ स्टेशन पर पुलिस मुझे गिरफ्तार करने को तयार थी किन्तु पिछले ही स्टेशन पर उतर गया था। और ऊँटों पर चढ़ कर झुनझुनू में रेल पकड़ी थी। हम 'राजस्थान संदेश' का विशेपांक न निकाल सके और महाराजा गंगासिंहजी की प्रार्थना पर आबू के पोलीटिकल एजेन्ट ने अजमेर पुलिस से न केवल तलाशी में वह मैटर ही प्राप्त कर लिया वल्कि प्रेस और अखवार से नई जमानत और तलव करली।

उधर बीकानेर में सत्यनारायणजी खूबरामजी स्वामी गोपालदास जी भाई पर पडयंत्र का मुकदमा चला और उन्हें लम्बी सजायें हुईं। यह घटना सन् १६३२ ई० की है। सन् १६३५ में वैद्य मघाराम व लक्ष्मण ने प्रजामंडल स्थापित की। जिसका गला, कार्यकर्ताओं को विवश करके घोंट दिया गया।

२२ जौलाई सन् १६४२ में रघुवरदयाल गोयल, रामनारायण आचार्य ने फिर प्रजा परिपद कायम की इस

पर गोयल को गिरफ्तार करके राज्य से बाहर कर दिया गया ६ दिसम्बर १६४२ को कुछ उत्साही लोगों ने जिनमें वैद्य मघाराम का लड़का रामनारायण भी सामिल था झंडा सत्याग्रह किया २६ जनवरी सन् १६४३ को स्वतंत्रता-दिवस मनाया पुलिस की ओर से लाठी चलाई गई फिर भी हम सब से छोटे मोटे कार्य जागृति के बराबर होते रहे सन् १६४३ में महाराजा गंगासिंह का देहांत हो गया उनके स्थान पर साद्दूलसिंह जी गद्दी नसीन हुये उन्होंने ८ मार्च सन् १६४३ को घोषणा की कि हमारी यह उत्कट इच्छा है कि हमारी प्रजा राज्य साशन में अधिकाधिक रूप से सामिल हो लेकिन उन्होंने कोई उल्लेखनीय सुधार नहीं किया सन् १६४५ में जनवरी के महीने में धारा सभा को अधिक जनतांत्रिक बनाने की घोषणा की किन्तु ये घोषणायें सुधारों की दिशा में नगण्य थी। ३१ अगस्त सन् १६४६ को जो घोषणा हुई वह अवश्य कुछ प्रगतिवान थी, उसके अनुसार दो कमेटियाँ बनाई गई। एक विधान बनाने के लिये दूसरी 'मताधिकार' का ढाँचा तैयार करने के लिये। और जब तक इन कमेटियों के रिपोर्ट के अनुसार नये चुनाव हों तब तक मंत्री मंडल के दो सदस्य लिये जाने का एलान हुआ।

इन दो मंत्रियों में एक श्री शिवरत्न महुता और दूसरे चौधरी ख्यालीसिंह गोदाख्ये थे इसी समय राज्यगढ़ की ओर किसानों का सत्याग्रह आरम्भ हो गया और रायसिंह नगर

तथा फाँगल में हुई सभाओं में जो नृशंसतापूर्ण दमन से स्थिति बिगड़ गई। उन दिनों का १-७-४६ का एक पैम्फलेट ललाणा की किसान सभा में चलने का आवाहन देते हुये कहता है कि माल के कर्मचारी पटवारी से लेकर बड़े २ हाकिम तक किसानों को अनेक तरह की तकलीफें देते हैं पुलिस किसानों को थानों में बुलाकर मार पीट करती है। गंदी २ गालियाँ देती है एक २ बीघे के कई-कई कच्चे बीघे बना दिये गये हैं और माल गुजारी तिगुनी चौगनी कहीं २ पचगुनी तक ली जाती है सैकड़ों वर्षो से जमीन पर किसान काबिज है फिर भी उन्हें मजारे ही लिखा जाता है वसूली के तरीके भी बड़े खतर नाक हैं जब से बन्दोवस्त की चला-चली है किसानों को जमीनों से बेदखल किया जा रहा है पुलिस जो की भीषण अत्याचार कर रही है और १० मई को राजगढ़ में जुल्म डाये हैं उन्हें कभी नहीं भुलाया जा सकता।

इतनी भीषण घटनायों के होने पर भी हम आँख मूंद कर नहीं बैठ सकते। हम अपना दृढ़तर और फौलादी संघठन करेंगे। जनता की एक लौह दीवार करेंगे जिससे टक्कर खाकर जालिम और अत्याचारी नष्ट हो जाएंगे जगह २ सभायें करना जनता के सामने, अपनी मागें रखना लिखने बोलने और संघठन करने की आजादी प्राप्त करना हमारा उद्देश्य है।

पहली जून को आप सभी भाई ललाणा गाँव में

इकट्ठे होकर राज्य के अधिकारियों को वता दे कि हमारी दुःख दर्द की आवाज इन रेतीले टीले में ही खत्म न हो जाये वलिक बुलन्द होकर दुनिया को वतला देगी कि किसान अन्याओं के विरुद्ध होकर अपने खून की अन्तिम वूद तक गिराने को तैयार है।

एक वड़ा विस्फोट किया। दूदुवाखारा के ठिकानेदार सूरजमालसिंह ने उसने किसानों के कुछ मकान तुड़वा डाले और पीने के पानी के कूंडों पर कब्जा कर लिया। किसान उसके पास रोये धोये तो उसने जवाव में कहा, बकरियाँ भी मरने से पहले ऐसे ही मिमियाती हैं। किसानों ने महाराज वीकानेर के पास भी फरियाद की जब कोई सुनबाई नही हुई तो उन्होंने सत्याग्रह पर कमर बांधी, हनुमानसिंह, वेगाराम और गणपतिराम जी गिरफ्तार कर लिये। हनुमानसिंह के आमरण अनशन का इतना असर पड़ा कि न केवल वीकानेर में ही राजस्थान के सारे ही जागृत किसानों में क्रोध की लहर आ गई। २ जुलाई १९४५ को ३०० किसान बीकानेर पहुँचे। महाराजा ने कोई सुनबाई नहीं की। प्रजापरिषद् के अध्यक्ष और सेक्रेटरी ने उनके साथ सहानुभूति का वर्ताव किया और उन्हें अपने पास ठहराया। ६ जुलाई को पुलिस ने उन्हें खदेड़ने की कार्य-वाही की जिसमें मार पीट भी की गई। इससे सारे ही वीकानेर राज्य में किसानों में बैचैनी पैदा हो गई और

उनका ऐसा तूफानी आन्दोलन उठा कि राज्य उसे दवाने में पूर्ण असफल रहा।

वीकानेर राज्य प्रजापरिषद् के अध्यक्ष स्वामी कर्मानन्द जी ने दुदुवाखारा के लोगों के दृढ़ निश्चयों पर जो वक्तव्य दिया था। उसका सार इस प्रकार है—

"हनुमानसिंह के वड़े भाई चौ० वेगराम के अनशन से उनकी चिन्ताजनक हालत के समाचार अखवारों में पढ़कर मैं उनसे मिलने १८-२-४७ को चूरू गया। उन्हें वहाँ से वीकानेर जेल में पहुँचा दिया गया है। मुझे जुडीशियल हवालात में मालूम हुआ हनुमानसिंह के परिवार के सोलह आदमी गिरफ्तार हैं। केवल उसकी स्त्री बची हुई है। गिरफ्तार व्यक्तियों में उनकी वूढ़ी मां ने भी अनशन कर रक्खा है। ठाकुर सूरजमालसिंह महाराजा वीकानेर के जनरल सेक्रेटरी भी हैं। ऐसी दशा में सहज ही कुछ अच्छा होना कठिन है।"

राज्य भर में खास तौर से चूरू ज़िले में किसानों का आन्दोलन डेढ़ साल तक चला। सरकार ने दवाने में कोई कसर न छोड़ी किसानों ने भर मिटने की प्रतिज्ञा ली हुई थी। तहसील कमेटी राजगढ के प्रधान मंत्री जगमालसिंह के एक पेम्फलेट से यह पता चलता है कि चौदह महीने तक धारा १४४ लागू रही किन्तु फिर भी किसान धड़ाधड़ सभायें करते रहे। और यह कहने में कोई हिचक नहीं है कि एक बार तो प्रजापरिषद् के कुछ नेताओं ने यह कह

दिया कि किसानों के आन्दोलन का संचालन प्रजापरिषद् नहीं करती ।

आमरण अनशन में मघाराम जी वैद्य का परिवार भी पीछे नहीं रहा । आखिर सरकार को समझौता करना पड़ा अनशनकारी छोड़ दिये गये किन्तु थोड़े ही दिन बाद चौ० कुम्भाराम, स्वामी कर्मानन्द और गोयल साहब पकड़ लिये गये । किन्तु फिर थोड़े ही दिन बाद छोड़ दिये गये। क्योंकि हनुमानसिंह की हालत बहुत खराब होगई थी । इसलिये उन्हें भी छोड़ दिया गया । लगभग चौदह महीने बाद यह जंचा कि कुछ अमन हुआ है । राज्य ने प्रजा परिषद् के दफ्तरों पर झंडा लगाना भी स्वीकार कर लिया ।

इस अरसे में ही १५ अगस्त सन् १९४६ से भारत को औपनवेशिक आजादी प्राप्त हो चुकी थी । राजाओं के सामने एक सवाल था कि वे अपनी रियासतों को स्वतन्त्र रक्खें अथवा भारत संघ में शामिल कर दें इसलिये बीका-नेर के महाराज ने उत्तरदायी शासन देने की फिर घोषणा की ।

४ दिसम्बर १९४७ की अन्तिम घोषणा में महाराजा ने कहा—हमने अपनी ३१ अगस्त सन् १९४६ की घोषणा में राज्य में एक ऐसी गवर्नमेन्ट स्थापित करने की इच्छा प्रकट की थी जो नरेश की छत्रछाया में प्रजा के प्रति उत्तरदायी होती । गवर्नमेन्ट आफ बीकानेर एक्ट जो अब

मिनिस्टरों के साथ

सन् १९४६ मे लिया गया चित्र बायें से श्री सेठ खुशहालचन्दजी फाइनेंस मिनिस्टर, कुँवर जसवंतसिहजी तँवर प्राइम मिनिस्टर, चौ० हरदत्तसिह होम मिनिस्टर अंत में दाढी वाले चौधरी साहब स्वयम् ।

प्रकाशित कर दिया गया है। प्रजा की राजनैतिक प्रगति के प्रति हमारी इच्छाओं और कामनाओं को प्रकट करता है। इस ऐक्ट के द्वारा विस्तृत लोकप्रिय मताधिकार के आधार पर दो सभाओं का एक व्यवस्थापक मंडल बनाया गया है। जिसके अनुसार प्रजा को अपने प्रतिनिधि चुनने का अधिकार होगा। शासन-प्रवन्ध का सब काम एक परिपद (कौंसिल) को सौंप दिया जायगा जो व्यवस्थापक मंडल के प्रति उत्तरदायी होगी।

विधान मंडल को भंग करने के अलावा कुछ महकमों को सुरक्षित रखने का अधिकार महाराजा ने अपने हाथ में रक्खा था।

इस घोपणा की यह प्रतिक्रिया हुई कि—"सरकार और प्रजा परिपद में समझौते की वार्ता चल पड़ी और काफी दिनों तक एक दूसरे को धमकाते पुचकारते रहे। १८-३-४८ को अंतरिम लोकप्रिय सरकार की स्थापना करदी गई। उसके निम्नांकित सदस्य नामजद किये गये। (१) श्री ठाकुर जसवन्तसिंह प्राइम मिनिस्टर (२) श्री चौ० हरदत्तसिंह डिप्टी प्राइम मिनिस्टर (३) श्री आचार्य गौरीशंकर जी शिक्षा मिनिस्टर (४) श्री सरदार मस्तानसिंह लोकल सेल्फ गवर्नमेन्ट (५) श्री चौ० कुम्भाराम राजस्व मिनिस्टर (६) सेठ खुशहालचन्द डागा, फाइनेन्स मिनिस्टर (७) श्री सूर्यकरण (८) श्री अहमदवक्स सिंधी (९) श्री ठाकुर कुंभेरसिंह (१०) की पूर्ति प्रजापरिपद पर छोड़ दी गई।

इस समझौते पर वीकानेर राज्य प्रजा परिषद के अध्यक्ष चौधरी हरदत्तसिंह ने इन शब्दों में अपने मनोभाव प्रकट किये :—"यद्यपि हम जो चाहते थे उसे सर्वांश में प्राप्त नहीं कर सके हैं। फिर भी समय और परिस्थिति के अनुसार यह समझौता अंतिम उद्देश्य तक पहुँचने में निस्सन्देह हमें बड़ी सहायता देगा। ......इस अवसर हमें यह कहते प्रसन्नता है कि हमारे लिये एकमात्र जनता का सहयोग व विश्वास ही संवल रहा। जनता ने जिस धैर्य के साथ हमारी सहायता की उसकी हम हृदय से सराहना करते है।"

मंत्रिमंडल के इस प्रकार के गठन से जिसमें किसानों का बहुमत था प्रजापरिषद का लालाशाही तबका बौखला उठा और उनके पिट्ठुओं ने शोर मचाना आरंभ किया कि यह समझौता प्रजापरिषद की शान के खिलाफ है और झुक कर किया गया है। समझौते को वैधानिक चुनौती भी दी जाने लगी। चौ० हरदत्तसिंह ने इस सम्बन्ध में जो दो वक्तव्य दिये उनमें से दो वस्तु स्थिति को बहुत ही साफ तरीके से स्पष्ट करते हैं। ३०-३-४८ के वक्तव्य में चौ० हरदत्तसिंह ने कहा—"परिषद की प्रतिनिधि सभा ने १६ दिसम्बर १६४७ को गंगानगर में परिषद की कार्यसमिति को महाराजा साहब से मिलकर समझौता करने व इसमें असफल होने पर संघर्ष द्वारा उत्तरदायी शासन की स्थापना करने का पूर्ण अधिकार ३ महीने के लिये दे दिया था और

इस कार्य समिति ने तारीख २५ जनवरी को अपनी हनुमान गढ़ की बैठक में एक समझौता व संघर्ष कमेटी का निर्माण करके उसे अपने संघर्ष और समझौते सम्बन्धी पूर्ण अधिकार प्रदान कर दिये थे मेरे अलावा इस समिति में चौधरी कुम्भाराम गौरीशंकर आचार्य और सरदार गुरुदयालसिंह थे। २२ फरवरी सन् १९४८ से इस समिति की वार्तालाप महाराजा साहब से शुरू हुई जो एक विशेष सीमा तक पहुँच कर तारीख २ मार्च को आकस्मिक ढंग से रुक गई जिसका कारण सरकार की ओर से महाराजा साहब की अस्वस्थता बताया गया लेकिन परिषद की इस समझौता समिति को शक था कि प्रतिक्रियावादी शक्तियां परिषद की सफलता में रोड़ा अटका रही हैं। इसलिये मैंने २ मार्च की अपील में जनता को आखिरी वक्त तक संघर्ष के लिये तैयार रहने को कहा।

अखिल भारतीय देशी राज्य लोक संघ के नेताओं को उस वक्त तक की तमाम परिस्थिति से अवगत करा दिया था, इसके बाद ११ मार्च परिषद की कार्य समिति की बैठक बुलाई गई जिसमें बातचीत के सारे हालात रक्खे गये जिसमें विचार करके कार्य समिति ने समझौता समिति को महाराजा साहब से फैसला करने व अन्तरिम सरकार बनाने का पूर्ण अधिकार स्पष्ट शब्दों में दे दिया। अन्त में तारीख १८ मार्च को समझौता होगया जिसके फलस्वरूप जो अन्तरिम सरकार बनी उसके हालात मैं अपने पिछले

वक्तव्य में स्पष्ट कर चुका हूँ समझौते की आधारभूत बातें ये हैं।

१—यह समझौता अन्तरिम काल की व्यवस्था के लिये है।

२—अन्तरिम मंत्रिमंडल समझौता समिति की सलाह लेकर बनाया गया है।

३—विशेष हितों का प्रतिनिधि रिजर्वेशन निर्वाचन क्षेत्रों का पुनः विभाजन आदि का निश्चय करना अन्तरिम सरकार के हाथों में है।

४—राज्य सभा (अपर हाउस) को सिर्फ रिवायजरी अख्त्यारात होंगे बजट को रोकने का उसे अधिकार न होगा।

५—लैजसलेचर अपने प्रथम अधिवेशन में विधान में परिवर्तन करने की अधिकारी भी बहुमत द्वारा होगी लेकिन प्रीवीपर्स, हाउस होल्ड, आर्मी आदि कुछ विशेष विषय उसके अधिकार क्षेत्र से बाहर रहेंगे।

६—पब्लिक सर्विस कमीशन मिनिस्टरों से सम्बंधित रहेगा।

परिषद ने कोई ऐसा समझौता नहीं किया जो परिषद् के विधान और उसूल के प्रतिकूल हो यह समझौता यद्यपि आदर्श नहीं है, तो भी राजपूताने की दूसरी रियासतों के हालात से तुलना करने पर उनसे अच्छा नहीं तो बुरा भी

नहीं है । ..... कुछ असन्तुष्ट निराश व्यक्ति प्रतिक्रियावादी तत्वों से मिलकर प्रजा परिषद् को बदनाम करना चाहते हैं । और अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिये जनता को भुलावे में डालने की चेष्टा करते हैं जिनसे जनता सावधान रहे ।"

दूसरा वक्तव्य उनका ३०-४-४८ का इस प्रकार है— "अखिल भारतीय देशीराज्य परिषद की राजपूताना प्रान्तीय सभा की आखिरी बैठक में बीकानेर के समझौता सम्बन्धी प्रस्ताव और सिद्धराज ढढ्ढा के २७ अप्रेल के इस सम्बन्ध में दिये गये वक्तव्यों को पढ़ कर अजीव आश्चर्य हुआ । समझौते की प्रगति के बारे में हीरालाल जी शास्त्री को ३ मार्च को देहली में और सोलह मार्च को जयपुर जाकर अवगत कराया गया था और उन्होंने समझौते के वार्तालाप को सन्तोष जनक बतलाया था । जो बातें सन्तोषजनक मानली जावें उनका समझौते में दर्ज होजाना विरोध का कारण बनना तर्क संगत नहीं प्रतीत होता । किसी बात का अच्छा या बुरा होना अपनी अच्छाई या बुराई पर निर्भर है । ..... अगर समझौते के समय हम बीकानेर का अलग अस्तित्व न मानते तो फिर उत्तरदायी सरकार कहाँ कायम करते जनता जनार्दन समय की व परिस्थिति की आवश्यकता व अपने भावों की कदर करके इस बात पर निर्णय दे । खाली भावुकता और जोश भरे लैक्चरों से जनता का बहकना सम्भव और शुभ नहीं है । अगर मेरे कुछ

बीकानेरी साथी इस समझौते से असंतुष्ट हैं। तो मैं इस नाराजगी की कदर करता हूँ। मगर साथ ही उनसे अपील करता हूँ कि वे व्यक्तिगत स्वार्थ साधन करने के लिये अपनी खोई हुई लीडरी जमाने में प्रयत्नशील, समय साधकों की भ्रमपूर्ण बातों से बचें और खाली आलोचना की बजाय कोई रचनात्मक और क्रियात्मक कार्यक्रम अपनाकर बीकानेर की चहुमुखी उन्नति करने का प्रयत्न करें। हमने बीकानेर की मौजूदा स्थिति में बंधे रहने का कोई ठेका नहीं लिया है।"

असल बात यह थी कि इस मन्त्रिमंडल में किसान विशेषत: जाट अधिक थे। और होम एवं रेवन्यू जैसे महकमे भी इनके पास थे। इसलिये बीकानेर के उन तत्वों को जो जाटों से सदैव से द्वेष भावना रखते थे, वे चाहे अब भले ही प्रजा परिषद में शामिल हो गये थे, चाहे प्रजा सेवक संघ और सोशिलिस्ट पार्टी में, इस मन्त्रि-मण्डल को पसंद नहीं कर रहे थे। प्रजापरिषद में जहाँ गोयल पार्टी जिसकी की पीठ पर हीरालाल शास्त्री भी थे, जहाँ इस मन्त्रिमंडल को खतम कराने के पक्ष में थे वहाँ जे० बगरहट्टा और समाजवादी पार्टी के लीडर भी थे। १८ मार्च के बाद जारी की गई समाजवादी पार्टी की एक विज्ञप्ति से यह बात और भी स्पष्ट होजाती है। "बीका-नेर में अन्तरकालीन सरकार शीर्षक विज्ञप्ति में समाजवादी पार्टी ने लिखा है प्रश्न यह उठता है कि क्या यह निर्माण

जाति आधार पर किया गया है। दो राजपूत, दो ब्राह्मण, एक सिख, एक मुसलमान, एक वनिया जैसा कि इन नामों से ज्ञात है।

महाराजा साहब ने अपनी घोषणा में यह बताया है कि संयुक्त मंत्रिमंडल समस्त हितों के प्रतिनिधित्व वनाने का निश्चय किया गया है। बीकानेर की जनता में यह भ्रम जोर पकड़ता जा रहा है कि इस मंत्रिमंडल में जाने वाले किन हितों का प्रतिनिधित्व करते है। जाति अथवा पार्टी पोलीटिक्स ? अगर इसका जाति आधार पर किया गया है तो इसमें साम्प्रदायक विष फैलने का डर है।"

आखिरकार हुआ यह कि राजपूताना रीजनल कौनसिल ने यह निर्णय दे दिया कि इस प्रकार का समझौता करना वार्ता समिति के अधिकार के बाहर की बात है। बीकानेर राज्य प्रजापरिषद को चाहिये कि तुरन्त इसका खंडन करने की कार्यवाही करे क्योंकि इसे करने में किसी नेता की सलाह नहीं ली गई है।

१७-४-४८ के रीजनल कौंसिल में इस फैसले ने अन्तरिम सरकार को एक तरह से समाप्त कर देने का निर्णय कर दिया।

कहना पड़ता है कि इस अन्तरिम मन्त्रि मण्डल को उखाड़ने में कुछ अनुभवहीन तथा महत्वाकांक्षी जाटों का भी हाथ था।

यह भी मानना पड़ेगा कि अल्प काल चलने वाले इस

मन्त्रि मण्डल ने काफी हिम्मत के काम कर डाले थे। विहारीलाल जैसे रेवन्यू कमिश्नर का महाराजा और महारानी के विरुद्ध होने पर भी हटा देना और किसानों के कुये जोहड़ और तालावों को जागीरदारों से छीन कर किसानों की मिल्कियत बना देना। मालमन्त्री कुम्भाराम ने १०-६-४८ के अपने ही हुक्म में लिखा था। "जागीरी क्षेत्र के विषय में यह बात ध्यान में आई है। कि दफ्तर साहब मिनिस्टर इन्चार्ज चीफ्स एन्ड नोविल्स को नोटीफिकेशन नम्बर १ तारीख २६ जनवरी सन् १९४७ के कारण जागीरदार लोग बलपूर्वक ग्रामीणों से पानी पीने का साहस करते हैं। जो एक प्रकार का अन्याय और कानून को हाथ में लेना है। वह स्वयं अपराध है। जागीरदारों के इस अनाधिकार कार्य से अनाचार अत्याचार और अन्याय बढ़ता है जिससे सुख शान्ति और मेल जोल नहीं रहता इसलिये जागीरदार तथा जनता के हित को दृष्टि में रखते हुये इस अनुचित कार्य की रोकथाम करना जरूरी है। अतः आज्ञा दी जाती है कि मूल लिपि कार्यालय में रहे। प्रतिलिपि इसकी डी० सी० ए० सी० तथा प्रत्येक तहसीलदार साहिदान के पास भेज कर लिखा जाय कि तहसीलदार साहब अपने क्षेत्र के जागीरदारों को सूचित करदें कि बल पूर्वक पानी पीना न्याय संगत नहीं इसलिये वे भविष्य में ऐसा करने

का साहस न करें। यदि उन्हें कोई आपत्ति हो तो राज्य के सन्मुख रखकर हल करवावें।"

श्री कुम्भाराम माल मिनिस्टर की कलम की इस एक नोंक से ही किसानों के वे कुये तालाब और जोहड़ जिन पर ठिकानेदारों ने अपना हक जमा रक्खा था मुक्त हो गये।

जागीरदारों की ओर से इस अन्तरिम कालीन मिनिस्टरी का विरोध भी खूब हुआ। यहां हम "वीकानेर के समस्त शक्तियों को चेतावनी" शीर्षक नोटिस में कुछ अंश उद्धरित करते हैं:—आज वीकानेर की अन्तःकालीन सरकार को बने हुये करीब पांच माह का अरसा हो चुका। इस काल में जाट मंत्रियों की क्षत्रिय विरोधनी नीति अपनी हद को लांघ कर चरम सीमा पर पहुँच चुकी है। आये दिन आम क्षत्रियों को जो हमेशा से सरकार के वफादार रहते आये हैं। बेगुनाह नौकरियों से निकाला जारहा है। जिनकी संख्या सैंकड़ों पर पहुँच चुकी है। ····· पुलिस इन्सपेक्टर, थानेदार, नायब तहसीलदार आदि सैंकड़ों क्षत्रिय अफसरों को बिना कारण उनके स्थानों से हटाकर जाटों को उनके स्थान पर भर्ती करके वीकानेर के इतिहास में एक नई बात की जारही है। जिन राजपूतों के मुकदमों को बड़ी अदालतों द्वारा ठीक फैसला दे दिया गया था। मगर जाटों द्वारा दो आने की दरख्वास्त देने पर बगैर मिसल देखे रेवन्यू मिनिस्टर (चौ० कुम्भाराम) द्वारा

अपनी कौम के हक में फेसला देकर न्याय की हत्या की गई है ।

······वर्तमान होम मिनिस्टर जो पहले से अपनी जाट कौम का पक्षपात करते आरहे है। रियासत में वेवुनियादी मुकद्दमे चलवा कर राजपूतों को गैर कानूनी तौर पर झूठे मुकदमे चलवा कर फँसा रहे हैं । वे हमारे नेता महावीर-सिंह को अपने मातहत पुलिस अफसरों द्वारा किसी झूठे मामले में फँसाना चाहते हैं उन्होंने अगर ऐसा किया तो रियासत में अशांति और वगावत फैलने के आसार पैदा हो जावेंगे। ·······यह पर्चा राजवी रणजीतसिंह जी द्वारा प्रकाशित हुआ था ।

एक ओर जव जागीरदार एवं उनके एजेन्टों के द्वारा विरोधी प्रचार होरहा था तव दूसरी ओर कुछ समझदार राजपूत अपने भाइयों को प्रतिक्रियावादी रास्ते से हटाने की चेप्टा भी कर रहे थे। फेफाने के श्री भूरसिह रणधीरौत ने "वीकानेर के छुट भइयों को संदेश" शीर्षक लेख में क्षत्रिय गौरव नामक अखवार के १-६-४८ के अंक में लिखा था इस प्रगतिशील जमाने में भी जव प्रत्येक वर्ग साम्प्रदाय के दायरे से वाहर निकल कर राजनैतिक एवं क्षार्थिक उन्नति की ओर अग्रसर होरहा है । राजपूत वर्ग विलकुल उल्टे मार्ग पर चल रहा है ······ जव कि छुट भाई एवं जागीरदारों के हित में इतनी विपमता है जव उनका एक संगठन में रहना कदापि हितकर नहीं हो सकता

साधारण राजपूत अगर जागीरदारों का पिछलगू रहा तो वह देश की नजरों से तो गिर ही जावेगा वलिक उसका खुद का नाश भी होगा.........यहाँ पर मैं साधारण राजपूत एवं छुटभइयों को यह वता देना चाहता हूँ कि उनके एवं उनके परिवार के निर्वाह के लिए जमीने है वे उनकी सुरक्षित रहेंगी और उन्हीं के अधिकार मे रहेंगी। लोकतंत्रिय सरकार की कोई भी ऐसी योजना नही है कि वह किसी की खेती योग्य भूमि को छीनें। इसलिये उन्हे किसी के बहकावे में आकर धैर्य नही खोना चाहिए। जागीरों के लिए ऐसी योजना अवश्य है कि उनका अन्त कर दिया जावे।

अगस्त सन् ४८ में बीकानेर प्रजापरिषद् को समाप्त कर दिया गया और उसके स्थान पर कांग्रेस का नाम अब घोषित किया गया। जैसा कि उसके प्रथम प्रेसीडेंट चोधरी रामचन्द्र जी के उस पत्र से विदित होता है जो उन्होंने बीकानेर महाराज के प्राइवेट सेक्रेटरी को १-६-४८ को लिखा था। उसमें उन्होंने लिखा कि आपका व्यक्तिगत पत्र आज मुझे बीकानेर आने पर मिला अब जो आप पत्र व्यवहार किया करें वह बीकानेर कांग्रेस कमेटी के नाम पर होना चाहिए। महाराजा साहब तक इस खबर को पहुँचाने की कृपा करें कि निकट भविष्य में होने वाले चुनावों का बहिष्कार काफी सोच समझ और पार्लियामेंट्री बोर्ड की

अनुमति प्राप्त करके ही किया गया है। इस प्रस्ताव की प्रतिक्रिया में जो दरार महाराजा एवं कांग्रेस कमेटी के बीच पैदा करने की, जो कोशिश की जारही है, वह उचित नहीं। प्रस्ताव की मंसा तथा हमारे आचरणों पर सही निर्णय देने के लिए हम महाराजा साहब से माँग करते हैं कि वे एक निष्पक्ष ट्रिब्यूनल बैठावें तब हम उन गुप्त षड़-यंत्रों के संबंध में सभी बातें खोल कर रख देंगे जिनके कारण चुनाव का वहिष्कार करना ही मुनासिब समझा गया है।

यह याद रहे कि मध्य अगस्त तक बीकानेर कांग्रेस का इरादा चुनाव लड़ने का था। जैसा कि ८-८-४८ के अध्यक्ष के वक्तव्य से जाहिर है। उन्होंने "आखिर चुनाव का निर्णय क्यों किया गया" शीर्षक वक्तव्य में कहा है—"यह सही है कि बीकानेर का विधान एकदम प्रतिगामी और प्रतिक्रियावादी है उससे बीकानेर की प्रजा की आकांक्षाओं की पूर्ति रतीमात्र भी नहीं होती, इसलिये इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि उक्त विधान को खत्म कर दिया जाय और उसके स्थान पर जनता के प्रतिनिधियों द्वारा प्रजातन्त्रीय विधान तयार किया जाकर बीकानेर में पूर्ण जिम्मेदार हुकूमत कायम की जाय।.........इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये हमारे सामने दो ही मार्ग हैं। (१) समझौते द्वारा एक ऐसा मार्ग निकालना जो उत्तरदायी शासन का प्रतीक हो (२) सीधे संघर्ष द्वारा इस गैर

जुम्मेदार सरकार को खत्म करके पूर्ण जनतन्त्रात्मक शापन विधान तैयार करने के लिये विधान परिषद बुलाना।

कांग्रेस ने संघर्ष से कभी मुह नही मोड़ा है बल्कि उसका अब तक का इतिहास संघर्षमय ही रहा है उसने संघर्ष के लिये पूरी २ तैयारियाँ की हैं परन्तु जनता को तब तक संघर्ष की परीक्षा में नहीं डालना चाहा जब तक कि उसके उद्देश्य की प्राप्ती के अन्य मार्ग समाप्त नहीं हो गये।

पड़ौसी रियासतों और राष्ट्र के हालत को देखते हुये हमने एक समझौता बीकानेर की सरकार के साथ किया है। इस समझौते के अनुसार जनता को जो हक मिला वह यह कि धारा सभा स्वम् अपना विधान बना सकती है, और उसी उद्देश्य को सामने रखकर बीकानेर काँग्रेस धारा सभा के चुनाव लड़ रही है।

इस तरह के ऐलान के बाद बीकानेर कांग्रेस ने चुनाव का वहिष्कार किया। इसके कारण पर ३० अगस्त १९४८ के क्षत्री गौरव ने एक लेख इस प्रकार प्रकासित किया।

"सितम्बर के प्रथम सप्ताह में बीकानेर राज्य में पूर्ण उत्तरदायी शासन के चुनाव करने का पक्का निश्चय किया जा चुका है। प्रारम्भिक कार्य सब पूरे किये जा चुके हैं। स्वयम् महाराजा साहब ऐसे अवसर पर विदेश चले गये

है। ताकि किसी को यह कहने का मौका न रहे कि उनकी ओर से कोई अवैधानिक कार्य हुआ किन्तु पीछे उनके प्रतिनिधि महारानी साहिबा, महाराज कुमार साहब, दीवान जसवन्तसिह तथा अन्य कई छोटे बड़े व्यक्ति है। जो उनकी मनचाही करने को जी तोड़ परिश्रम कर रहे हैं मगर राजपूत हितकारिणी सभा के हाल ही के पर्चे से ज्ञात होता है कि महारानी व महाराज कुमार दवाव डाल कर जसवन्तसिह तँवर को मगरा तहसील से खड़ा कर रहे हैं तथा जनता को वोट देने के लिये वाध्य कर रहे हैं। जागीरदारों की जो चार सीटें रखली गई है। वे महाराज साहब की ही हैं। इसमें किसी को भी सन्देह नहीं होना चाहिये। बीकानेर कांग्रेस की शक्ति को बाँटने के लिये प्रजा सेवक संघ और लोक परिपद् के ढाँचे खड़े किये हुये है। राजपूतो की शक्ति भी 'क्षत्रिय ग्राम सेवक सघ' जागीरदार गुट और राजपूत सभा आदि कई दलो मे छिन्न-भिन्न कर दी गई। कांग्रेस में भी जाट पार्टी की एकता पर किसान सभा का नया प्रहार करवाया गया है। और रहे सहे कांग्रेसी मन्त्रियों को जो अब भी अन्तरिम सरकार में हैं लालच में फांस लिया गया। ये चाले देखते हुये बीकानेर के चुनावों में जनमत की भारी विजय दिखाई नहीं देती। इन्हीं परिस्थितियों से घबराकर कभी तो प्रजापरिपद् के लोग चुनाव की तयारियों मे उत्सुक दिखाई देते हैं और दूसरे ही क्षण उसका वहिष्कार ही करने की

सोचते हैं और इस संक्रांतिकाल में यार लोगों ने अपनी पाँचों घी में करने की ठान ली। नये त्यागी गद्दी पर बैठने की चिन्ता में हैं और पहले के तपस्वियों का कोई ठिकाना ही नहीं है। कुछ लोग बहुत आगे की सोच रहे हैं। संयुक्त राजस्थान का प्रांत बनजाने की आशा में कई प्रमुख कांग्रेसी चुनाव में नहीं खड़े हो रहे है। चूंकि यह व्यक्ति अधिक लोकप्रिय है अतः उनके अनुगामी चुनाव में दिलचस्पी नहीं ले रहे हैं। इस प्रकार बीकानेर के चुनाव एक पहेली बन रहे हैं।

ज्ञात हुआ है कि श्री गोकुलभाई भट्ट, हीरालाल शास्त्री, माणिकलाल वर्मा आदि प्रांतीय कांग्रेस सदस्यों ने यहाँ आकर कांग्रेस का पक्ष मजबूत न देखकर बहिष्कार करने की चाल खेली है। श्री रघुवरदयाल गोयल को मताधिकार मिल न सका। इसलिये वे चुनाव में खड़े न हो सके---यह भी इस बहिष्कार के प्रमुख कारणों में समझा जाता है। यदि कांग्रेस के ही हाथ में सता सौंपना है तो फिर चुनाव के ढोंग की क्या आवश्यकता है।...... दो दिन पहले तक तो कांग्रेस चुनाव के लिये लालायित थी और आज वह बहिष्कार कर रही है। मालुम होता है किसी स्वार्थी ने टाँग अड़ाई है।"

बीकानेर में चुनावों के स्थगन का चाहे जो कारण जनता को बताया हो किन्तु वास्तविकता यही थी।

चुनाव में खड़ा न होने का फैसला करके बीकानेर

कांग्रेस चुप नही रही। उसने पहले अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मारी और २८-८-४८ को तय किया कि चुनाव में हिस्सा न लेने का फैसला करने के वाद हमें यह फैसला करने पर भी विवश होना पड़ रहा है कि हम अपने मंत्रियों से जो कि इस सरकार में हैं—कहें कि वे त्याग पत्र देकर वाहर आ जावे।

कांग्रेस के इस निर्णय के वाद वीकानेर सरकार के प्रकाशन विभाग ने भी ७-९-१९४८ की विज्ञप्ति जारी करदी। उसमें लिखा—"गवर्नमेंट के ४ कांग्रेसी मंत्रियों के त्यागपत्र देने तथा वीकानेर कांग्रेस कमेटी द्वारा ता० २३ सितम्बर को होने वाले चुनावों में भाग न लेने के निर्णय से पैदा हुई परिस्थिति के फलस्वरूप श्री जी साहव वहादुर ने महरवानी फरमा कर निम्नलिखित निर्णय घोषित किये हैं।

(१) अन्तःकालीन मन्त्रि मण्डल तुरन्त भंग कर दिया जायगा।

(२) इसके फलस्वरूप अन्य मन्त्री ८-९-४८ को अपने त्याग पत्र दे देगे।

(३) कांग्रेस के चारों मन्त्रियों के त्याग पत्र ८-९-४८ से स्वीकार कर लिये गये।

(४) इस गर्ज से कि किसी को भी शिकायत का कोई उचित मौका न रहे, श्री जी साहव वहादुर ने आगे वढ़कर एक व्यक्ति को प्रधानमन्त्री बनाना निश्चित किया है जिसका

बीकानेर राज्य से कोई सम्बन्ध न होगा। इसीलिये श्री जी साहब बहादुर ने स्टेट मिनिस्टरी से यह विशेष इच्छा व्यक्त की है कि वह उन्हें एक योग्य आई० सी० एस० अफसर की सेवायें प्राप्त करने में उनकी सहायता करे। जैसे ही श्री जी साहब बहादुर ऐसे किसी अफसर को चुन लेंगे, उसका नाम घोषित कर दिया जायगा।

(५) नये प्रधान मन्त्री जी की नियुक्ति तक राव बहादुर कुँवर जसवन्तसिंह जी आफ दाऊदसर ही प्रधान मन्त्री के पद पर रहेंगे।

(६) नये प्रधानमन्त्री की नियुक्ति के बाद श्री जी साहब बहादुर अविलम्ब उनकी सलाह से चुनावों की तारीख और चुनाव होने तक नये सरकार का निर्माण निश्चित करेंगे।

इन निर्णयों के अनुसार फिलहाल चुनाव स्थगित किये जाते हैं। यह कहना पर्याप्त होगा कि फिर बीकानेर में महाराजा की मर्जी ही समाप्त हो गई और सन् १९५० में वृहद् राजस्थान बना दिया गया। बस संक्षेप में यही बीकानेर की राजनैतिक जागृति व उसके निष्कर्षों का इतिहास है।

वीकानेर में जागृति के कारण

किसी देश में जाग्रति, क्रान्ति और उलट पलट योंही नहीं हो जाती। जव मुसीवतें सर पर होकर खेल जाती हैं और रक्षक ही भक्षक वन जाते हैं। न्याय ताक पर रख दिया जाता है। शोपक और शोपितों के वीच गहरा भेद पैदा हो जाता है। सवल निवलों के जीवन यापन के साधनों पर भी कब्जा कर लेते हैं। मनुष्य मनुष्य की पर-वाह नहीं करता। ऊंच नीच और वड़े छोटे के भेद पराकाष्ठा पर पहुँच जाते हैं और असंतोप का घटाटोप वातावरण वन जाता है तव क्रान्ति का होना अवश्यम्भावी हो जाता है। क्रान्ति का पहला रूप असंतोप और दूसरा रूप जाग्रति कहलाता है। कानून भंग, मारकाट, गदर आदि उसके अंतिम रूप हैं।

वीकानेर राज्य में असंतोप वढ़ने के क्या कारण थे और फिर जाग्रति कैसे हुई। इस पर चौधरी हरिश्चन्द्र जी ने "वीकानेर में जन जागृति" शीर्पक छोटी छोटी तीन पुस्तिकाओं में प्रकाश डाला है। इन पुस्तकों के दूसरे खंड के प्रथम परिच्छेद में वे लिखते हैं—"वीकानेर की जनता की उन दिनों की खुशहाली के सम्वन्ध में क्या कहें जव वह अपनी इस मातृभूमि की गोद में स्वतन्त्रता का आनन्द ले

रही थी। वे दिन यहाँ की जनता के लिये सुनहरी थे।···
जनतंत्रवाद में पली जनता आज सामन्तशाही व नौकरशाही के गुलामी के पंजे में मौत और नर्क से भी भयंकर यातनायें झेल रही है।"

नर्क से भयंकर यातनायें क्या प्रजा की गलत अथवा गैर वफादारी से बढ़ीं अथवा शासकों की प्रजा के प्रति अवहेलना, अन्याय अथवा पक्षपात से बढ़ी। इस पर प्रकाश डालते हुये उन्होंने लिखा है कि "पिछले पाँचसौ वर्ष के भीतर शासकों के साथ बगावत और विद्रोह यदि किसी ने किये तो उन्हीं के भाई बन्धु और जागीरदारो ने किये। जनता ने तो हमेशा शासकों का ही साथ दिया। इसके उदाहरण में उन्होंने बताया है कि पाँचवें राजा कल्याणसिंह के बाहर जाने पर जब उन्हीं के बान्धव मालदेव ने बीकानेर पर कब्जा कर लिया तो यहाँ के लोगों ने उनको प्रवासकाल में भोजन वस्त्र दिया और राज वापिस दिलाने में साथ दिया। लेकिन इन कृतघ्न लोगों ने उस वायदे को भी पूरा नहीं किया जो भूस्वामित्व सदैव किसान का रखने का गोदारों के नेता पांडु के साथ संधि होने के समय किया था।

पाँचसौ वर्ष तक जनता ने धैर्य के साथ सब कुछ सहन किया और जितना ही सहन किया दुख दर्द उतने ही बढ़ते गये। राजाओं का व्यवहार उत्तरोत्तर कठोर ही होता गया।"

जनता किस धोखेबाजी और कूटनीति से दबा दी गई । इस सम्बन्ध का चौधरी हरिश्चन्द्र जी का वर्णन बड़ा रहस्य भेदक है वे लिखते हैं :—"भेदनीति से वे जनता की संगठन शक्ति तथा बल को कमजोर करने में लग गये । धीरे धीरे आगे चलकर प्रजा के साथ की गई संधि की अवहेलना की जाने लगी । समय निकलता गया कूटनीति की चालें फलवतीं होती रहीं । ज्यों ज्यों शासक वंश के नाती पोते बढ़ते गये उन्हें गाँवों में बसाया जाने लगा और उन्हे राजस्व वसूलो के अधिकार–पट्टेदार–बना कर दे दिये गये । ये करवाहक कर वसूल करने तथा अपनी हिफाजत के लिये कुछ सैनिक भी रखते गये । इस प्रकार गाँवों पर आतक राज्य जमा लिया जाने लगा । सन् १६४६ तक राज्य का तीन चौथाई भाग इन पट्टेदारों के हाथ में चला गया जिनकी संख्या १३२ होगई । इनके अलावा दूसरे सेवकों को भी पट्टेदार बनाया गया इस प्रकार लगभग एक हजार तक यह पहुँच गये ।

बीकानेर की जनता में जाट अधिक संख्या में थे और आज भी हैं किन्तु चूंकि यह जनता के नेता भी थे इसलिये शासक वंश का ध्यान इन्हीं लोगों के दबाने पर अधिक गया । · · · सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक सभी दृष्टियों से उन्हें कुचला जाने लगा । सामाजिक दृष्टि से उन्हें हीन बताया जाने लगा और राजनैतिक दृष्टि से उन्हें सरकारी सर्विस से जहां तक भी मुमकिन हो सके दूर रखा

जाने लगा। · · · सामंतशाही का बल बढ़ जाने के बाद उनके भूमि अधिकार भू-स्वत्व पर हाथ साफ किया गया।"

चौधरी हरिश्चन्द्र जी ने एक उदाहरण नैण गोत के दो भाइयों का देकर बताया है कि जो बीकानेर में पड़ा रहा उसकी संतान की कैसी दशा है और जो बीकानेर को छोड़कर पटियाला में जा बसा उसकी संतान की क्या दशा है ? वे कहते हैं---"बीकानेर की सामन्तशाही के घोर अत्याचारों से तंग आकर एक भाई पटियाला राज्य में चला गया। उसके वंशजों में श्री उदयसिंह जी पटियाला के दीवान बने। और उसके पुत्र गुरमुखसिंह जी कौंसिल के प्रधान बने जिन्हें अंग्रेज सरकार ने महाराजा गंगासिंह से भी पहले सी० आई० ई० का खिताब बखशा और ४ गांव मिले। दूसरे भाई के वंशज श्री सहीरामजी नैण हैं जो उदयसिंह और गुरमुखसिंह के समकालीन ही हैं। वे धौलीपाल (हनुमानगढ़ तहसील) में केवल एक नम्बरदार हैं। सो भी पूरे गांव के नहीं। यदि यहां भी शिक्षा और अर्थ की वही सुविधायें होतीं जो पटियाला में इस खानदान को प्राप्त हुई तो क्यों न चौ० सहीराम नैण भी अपने भाई उदयसिंह नैण की भांति एक सम्मानित व्यक्ति होता ?"

इस पक्षपात और शत्रुतापूर्ण व्यवहार के जो फल किसानों और विशेपतः जाटों के अधःपतन के निकले उसका ज्वलन्त उदाहरण शासक समूह में जाटों की

नग्नता है जो चौ० हरिश्चन्द्र जी द्वारा तैयार की गई इस तालिका से प्रकट है--

महाराजा का पर्सनल स्टाफ जिसमें २४ सरदार सभी राजपूत। ३ पैलेस सर्जन जिनमें १ काश्मीरी १ पंजाबी १ मद्रासी। ६ हाउस होल्डर जिनमें ३ राजपूत १ वैश्य और १ खत्री १ पर्सनल सेक्रेटरी जो राजपूत।

राजकुमारों के स्टाफ में ४ अफसर जिनमें २ राजपूत १ ब्राह्मण १ वैश्य। मंत्रियों में ५ राजपूत ३ अन्य। सेक्रेट्रियट में २० सेक्रेटरी जिनमें जाट कोई नहीं। हाईकोर्ट के जजों और नाजिमों से लेकर नायब तहसीलदारों तक १८२ अफसर जिनमें १ जज जाट ४ नायब तहसीलदार जाट।

यह लिस्ट सन् १९४६ की है सन् १९३५ तक किसी भी पद पर एक भी जाट न था।

जाटों को प्रत्येक क्षेत्र में किस भांति पिछड़ा बनाया गया और राजपूतों विशेषत: जागीरदारों को किस भांति आगे बढाया गया। इस पर पूरा प्रकाश चौधरी साहब की 'बीकानेर की जन जागृति' के तीसरे खंड में विस्तार के साथ है। उसके कुछ अंश इस प्रकार है—सरकार हमेशा सामन्तो का हित सोचने में ही लगी रही तथा प्रजा की गाढ़ी कमाई को सामन्तों के लिये ही पानी की तरह बहाया। उनके लिये खजाने का द्वार हमेशा खुला रक्खा। शादी गमी के अवसर पर इनको खुले हाथों धन दिया

जाता । यह देखने का कभी कष्ट नहीं किया गया कि यह धन गरीब जनता की गाढ़ी कमाई का है । इस तरह की खुली छूट पर नाबालिगी के टाइम में रिजेन्सी कौंसिल ने कुछ पाबन्दी लगाई । रोबकार के जरिये उसने सामन्तों के चार दर्जे किये और दर्जे के मुताबिक ही शादी गमी में खजाने से सहायता देना तय किया । जिसमें शादी में ८००, ६००, ४०० और २०० रुपये दर्जो के हिसाब से देना तय किया यही क्रम मौत के खर्च के लिये रखा गया यह आंकड़े २५ जून १८८९ में रिजेन्सी द्वारा जारी किये गये रोबकार से लिये गये है । . . . सरकार को बीकानेर की जनता जिसकी आय सात पाई रोजाना से भी कम है। उसकी ओर से पूर्ण उपेक्षा ।

इतना ही करके सरकार संतुष्ट नही रही । सामन्तों के बच्चों को पढ़ाने का प्रबन्ध भी जनता के पैसे से ही नौबल स्कूल खोलकर किया है । इस स्कूल में सामन्तों के लड़कों के सिवा अन्य किसी का प्रवेश नहीं था । और इस स्कूल के पढ़ाई के बाद सामन्तों के लड़कों के लिये अजमेर के मियो कालेज के दरवाजे खुले थे और खर्चा दिया जाता था राज्य के खजाने से । जिस गरीब जनता के पैसे से सरकार इस प्रकार सामन्तों को परिवरिश दे रही है उसके लिये देहातों में चलकर देखें तो एक भी स्कूल नहीं है । तेईस हजार वर्गमील लम्बे चौड़े बीकानेर राज्य में बसने वाली देहाती जनता के लिये आज भी काला अक्षर भैंस बराबर

है। इस नोवल स्कूल पर आजतक लगभग पचास लाख से ज्यादा रुपया खर्च किया जा चुका है और अब भी बराबर हो रहा है। अब जनता की आंखों में धूल झोंकने के लिये इसका नाम नोवल स्कूल से बदल कर शार्दूल पब्लिक हाई स्कूल रख दिया गया है किन्तु काम अब भी वही हो रहा है। साधारण जनता के बच्चों का प्रवेश आज भी उसमें कठिन है जैसा कि नोटीफिकेशन नम्बर ५ सन् १९४४ से जाहिर है। उसमें लिखा है स्कूल में दाखिला किसी खास जाति के लिये सीमित न होगा किन्तु दाखिले के समय उमरावों, सरदारों व उनके निकट सम्बन्धियों, मुतसद्दियों ··· राज्य के उच्च अधिकारियों का ज्यादा खयाल रक्खा जावेगा। ··· इसी कारण आज उसके १८७ लड़कों में से १२५ राजपूत हैं शेष सेठ और बड़े नौकरों के। वजीफे पाने वालों में केवल एक वैश्य और दो खत्री बालक हैं। राजपूत लड़कों की शिक्षा की भांति ही राजपूत कन्याओं के लिये भी गर्लस् नोवल स्कूल की स्थापना की गई थी।

सामाजिक और शिक्षा क्षेत्र में राजपूतों और सामन्तों की भरपूर सहायता करने के अलावा सरकार ने उन्हें राजनैतिक क्षेत्र में खूब बढ़ाया है। ऊँचे ऊँचे पद बड़ी बड़ी नौकरियों खास खास महकमे इन लोगों के हाथ में दे दिये गये हैं। ···· राज्य का एक भी बड़ा और छोटा महकमा ऐसा नहीं है जिसमें कोई सामन्त न हो। ये अपनी

आवाज भी बुलन्द करते रहे और संगठित भी रह सके। इसके लिये "सरदार सलाहकार समिति" भी बना दी गई है। ···· सामन्तों के लिए सर्वस्व लुटा देने वाली बीकानेरी सरकार जहाँ इस प्रकार की रियायतें दे रही है। वहाँ उसने प्रजा का गला घोंटने के लिये पब्लिक सैफ्टीएक्ट जैसे जबान बन्दी कानून घड़ रक्खे हैं।

सामन्तों के सुधार के लिये 'राजपूत हितकारिणी सभा', राजनैतिक उन्नति के लिये 'सरदार सलाहकार समिति' जैसी संस्थायें बीकानेर सरकार ने बना रक्खी हैं वहाँ जागीरों की हिफाजत के लिये 'कोर्ट आफ वार्डस' बनाया हुआ है। इस महकमे का बस एक ही काम है सामन्तों की संपत्ति की रक्षा और उन्हें आर्थिक संकट से बचाना। कर्जो से मुक्त कराना।

बीकानेर राज्य में आये दिन अकाल पड़ते रहते हैं। गरीब जनता को अपने बच्चों के लालन पालन के लिये गाँव छोड़ देने के लिये विवश होना पड़ता है। इस संकट काल में जबकि उसके लिये रोटी के भी लाले होते हैं वह भूमिकर नहीं दे सकती है। जब तक किसान अपना बकाया लगान अदा नही करता उस पर एक रुपये सैकड़े का व्याज चलता है। एक तरफ यह व्यवहार है दूसरी तरफ उसके सामन्तों को राहत देने के लिये (२१ अगस्त १६१४ से) आर्डर दिया हुआ है कि—बारिश कम होने अथवा दूसरे सँकट के कारण कोई पट्टेदार वार्षिक

नजराना अदा न कर सके तो वह दूसरे साल विना किसी इजाफे के अदा कर सकता है।

सन् १९१४ में आर्डर नं० १४ जारी करके इन सामन्तों की इज्जत इतनी बढा दी गई कि जनता आतंकित हो उठी। इस आर्डर में कहा गया कि कोई भी पट्टेदार—सिवा कत्ल और राजद्रोह—के विना महाराजा की पूर्व मँजूरी के न गिरफ्तार किया जायगा और न उस पर कोई मुकदमा चल सकेगा। हवालात और हथकड़ी तथा जमानत देना भी उसके लिये आवश्यक नही। मुकदमा चलाने की मंजूरी मिल जाने पर भी यह आवश्यक नहीं कि वे अदालत में आवें वल्कि अदालत को ही उनके यहां जाना होगा। इस प्रकार की रियायतों से पट्टेदारान एवं सामन्तों के दिमाग कितने चढ़ गये थे। दुदवाखारा में तभी तो सूरजमालसिंह पट्टेदार ने किसानों के रोने पर भी यह कह दिया था कि जिवह करते समय वकरियाँ भी मिमियाती है। सामन्तो ने इस खुली छूट से मनमानी लाग, वेगारें वढ़ा दीं जब चाहा तव किसानों के खेत, कुएँ और जोहड़ छीन लिये वहिन वेटियों की इज्जत खराव करदी।

उन्हें काल कोठरियों में बन्द करके यंत्रणायें दी जाती हैं। और इन सामन्तों को इस प्रकार की छूट देने के खेल खेले जाते हैं। सामन्त चोरी करें, डाके डालें, व्यभिचार करें, कोई उन्हें पकड़ने वाला नहीं। सजा की बात ही क्या? यह बात अलग है कि सामन्त अत्याचार करते २ खुद ही थक जावें। ···· इतने भद्दे भावों अन्यायों और पक्षपातों के होते हुए भी १८ फरवरी सन् १९४६ को बीकानेर के महाराजा ने नरेन्द्र मंडल में कानून की दृष्टि मे सबको समान समझने का प्रलाप किया था।

यह संक्षिप्त सा वर्णन है उन कारणों का जिनसे बीकानेर की जनता में असंतोष बढ़ा और जागृति हुई।

आंकड़ों का धनी

चौधरी हरिश्चन्द्रजी के शौकों में एक शौक आंकड़े संग्रह करने का भी है। उन्होंने अनेकों किस्मों के अनेकों आंकड़े संग्रहीत किये हैं। जिनमें से कई किस्म के आंकड़े इतिहास की चीज बन गये हैं। बीकानेर राज के संबंध में जन-गणना, ग्राम गणना, और राज्य की आय व्यय के आंकड़े मुख्य है। यहां हम बीकानेर से संबंधित कुछ आंकड़ों का उल्लेख करते है। मर्दम शुमारी के आंकड़े निम्न प्रकार है।

सन	जन संख्या कुल	शहरी जन संख्या	देहाती जन संख्या	औसत देहाती जन संख्या
१८८१	५०९०७७	७७८०६	४३१२७१	४८·८
१८९१	८३२०६५	११९३२३	७१२७४३	८५·७
१९०१	५८४७५५	११७२६७	४६७४८८	८०·०
१९११	७००९८३	१२७४८२	५७३५०५	८१·९
१९२१	६५९६८५	१६७९९१	४९१६९४	७८·६
१९३१	९३६२१८	२२५१४८	७११०७०	७६·०
१९४१	१२९२९३८	३३९१८५	९५३७५३	७३·८

इस जन गणना के अनुसार सन् १८८१ और सन् १८९१ के बीच तीन लाख से ऊपर आबादी बढ़ी लेकिन

अगले दस वर्षों में यानी सन् १६०१ तक अकालों के कारण ढ़ाई लाख के करीब आवादी घट गई। जिस में शहरों से करीब दो हजार घटे लेकिन देहातों में से दो लाख से ऊपर आदमी अपनी गुजर वशर के लिए इधर उधर भाग गये। यह क्रम भागने और पुनः वसने का वरावर चलता रहा। अनेकों तरह की लाग वाग एवं टैक्सों के कारण देहाती आवादी का औसत १८६१ के वाद वरावर घटा और सन् १६४१ में वह ८५.७ की वजाय ७३.८ रह गया।

इस वीच में कस्वों की संख्या भी ६ से १६ हो गई गावों की संख्या में वढ़ोतरी तो हुई किन्तु जन संख्या का औसत नहीं वढ़ा। कस्वे और गाँव १८६१ से १६४१ तक इस भांति वढ़े। सन् १८९१ में ६ कस्वे और १६५६ गाँव थे। १६२१ में कस्वों की तादाद १३ और गावों की २१४१ होगई। यही संख्या अगले वीस वर्ष यानी सन् १६४१ में कस्वे १६ और ग्राम २८८२ हो गये। गंगानगर जिला में नहर आने से गाँवों की संख्या वढ़ी वाकी सब जिलों में घटी।

चौधरी साहव ने सन् १६४६ में जो आँकड़े इकट्ठे किये, उसके अनुसार कुल गांवों की संख्या ३११४ थी किन्तु इनमें से आवाद २७४६ और ३३८ गैर आवाद थे। गांवों और जनसंख्या के आंकड़े तहसीलवार चौधरी सा० ने इस प्रकार संग्रहीत किये हैं।

नाम तहसील	कुल गाँव	आवाद	गैर आवाद	विशेष विवर
सदर	२५५	१६०	६५	८ वास शह में आ गये ।
सूरपुरा	१७५	१६६	६	
लूनकरनसर	१७७	१४५	३२	
सुजानगढ़	१६२	१५६	६	
सरदार शहर	१७८	१६६	१२	
रतनगढ़	६३	६२	१	
डूगरगढ़	६६	६१	५	
राजगढ़	१८६	१८४	५	
चूरू	६४	६४	०	
रैनी	१०४	६६	८	
भादरा	१०६	१०७	२	
नोहर	१५७	१५१	६	
सूरतगढ़	१३२	१२२	१०	
हनुमानगढ़	१६१	१५५	६	
अनूपगढ़	१७६	१४८	३१	
गङ्गानगर	२७६	२१५	६४	
करनपुर	२१२	१६२	५०	
रायसिंगनगर	१८४	१५०	३४	
पदमपुर	१७८	१५०	२८	
१६	३११४	२७४६	३८६	

उपयुक्त तहसीलों में कितने घर और उनमें कितने स्त्री-पुरुष रहते हैं इसका विवरण चौधरी हरीश्चन्द्रजी ने इस प्रकार किया है ।

नाम तहसील	घरों की संख्या	स्त्री	पुरुष	कुल
सदर	११६६६	२५७५०	२८०५७	५३८०७
सूरपुरा	१२२२७	२७१६७	२९८२५	५६९९२
लूनकरनसर	६२२१	१३४०७	१५२८२	२८६८९
सुजानगढ़	१०२३०	२३०५६	२६१७१	४९९२७
सरदारशहर	७९६	१७८९५	१९४२०	३७२१५
रतनगढ़	६२४९	१४२५८	१५९३३	३०१९१
डूगरगढ़	६२८५	१३८८३	१५४५४	२९३३७
राजगढ़	८७००	२२६४५	२६३३२	४८९७७
चूरू	६५४४	१५७६८	१७७९५	३३५६३
रैंनी	४५८२	१११०८	१२६४०	२३७४८
भादरा	८१२६	१९१११	२२३८७	४१५०६
नोहर	११११५	२३११५	२७४६०	५०५७५
सूरतगढ़	५८२०	१३६६६	१६१५३	३०७२२
हनुमानगढ़	११९११	२८०६७	३३७३७	६१८०४
अनूपगढ़	३७४५	८०६५	१०८१८	१८८८३
गंगानगर	९८२४	२२९७२	२९५३३	५२५०५
करनपुर	६२७४	१३१५८	१७३३७	३०४९५
रायसिंहनगर	२९६१	६११३	८४५८	१४५७१
पदमपुर	३६६७	७८९९	१०९३३	१८८३२
				६९६२१०

उपरोक्त आँकड़ों से पता चलता है कि सन् १९३० तक स्त्रियों की संख्या पुरुषों से २० से लेकर २५ फीसदी तक कम थी। यह भी एक कारण था कि उस समय गरीव लोगों को शादियाँ करने के लिये या तो वंचित रहना पड़ता था या कर्ज़े लेकर लड़की वाले को कुछ पैसा देना पड़ता था। समय ने पलटा खाया है कि अव स्त्रियों की संख्या पुरुषों से आगे जारही है और अव लड़की वालों को लड़के के लिये पैसा देना पड़ता है। उस समय तो चौधरी जी ने अपनी डायरी में लिखा था खेद है कि "लोग लड़कियों पर पैसा लेते है" और अव उन्होंने दहेज के खिलाफ आन्दोलन उठाया है। ठीक है काम करने वाले को हमेशा काम तैयार रहता है किन्तु हमें तो उनके आंकड़ा संग्रह करने के शौक पर ही कुछ और रोशनी डालनी है। बीकानेर सरकार ने राजपूत वच्चों की तालीम के लिये नौवल स्कूल और मियो कालेज पर जो खर्च किया उसके आंकड़े इस प्रकार हैं :—

सन्	बजट	नौविल स्कूल	मियो कालेज	उच्च शिक्षा के लिये
१२-१३	३८९८८)३	९१२९॥।≡)९	४५२०)	
१३-१४	४५१२९।॥-)	९३६६॥-)	४४५६)	
१४-१५	४८१७८)	९६९५≡)६	४३३१)	
१५-१६	६०१२०)	१०७६८)	८६२९)	
१६-१७	७१९३९)	१२७७२)	९१५०)	
१७-१८	७५२४०)	११५१५)	१०४५७)	

सन्	वजट	नौविल स्कूल	मियो कालेज	उच्च शिक्षा के लिये
१८-१९	१२७६३६)	१६७३३)	९८९२)	
१९-२०	१४७६६६)	१७७९०)	९८३५)	
२०-२१	१६८०३७)	२६५५५)	१०३६२)	
२१-२२	१८७३८९)	२६५६७)	८६०८)	
२२-२३	१४७३२९)	२६५०७)	८५७२)	
२३-२४	...	,,	,,	
२४-२५	....	,,	,,	
२५-२६	....	,,	,,	
२६-२७	१४०४७५)	,,	,,	
२७-२८	१७७१४५)	,,	,,	
२८-२९	१७८६०९)	२५६१७)	४१४५)	४८००)
२९-३०	१९४४१७)	२३९८७)	२५३३)	२४००)
३०-३१	२४२२२७)	२५४१४)	२३०३)	३३००)
३१-३२	२३१६६८)	२४०८४)	३०६८)	३३००)
३२-३३	२१४०२१)	२३४५६)	२८२१)	२४००)
३३-३४	१९६३६५)	२२५४६)	५१२५)	५७८३)
३४-३५	२४१७९८)	२१५२०)	५२०५)	११९१९)
३५-३६	२८४१९८)	२४८४१)	५४३७)	१४३३३)
३६-३७	३१०९७८)	२६४०८)	९३२५)	१४३९३)
३७-३८	३८१५४२)	२६९०४)	७०२०)	१८५६९)
३८-३९	३६९१९६)	३४१००)	७१९४)	१९०७५)
३९-४०	४५६५१५)	३४२९३)	७१६२)	२६३९५)
४०-४१	४३८९७२)	३४५३०)	७२९५)	२६२५०)

सन्	बजट	नौबिल स्कूल	मियो कालेज	उच्च शिक्ष के लिये
४१-४२	६४४०००)	३७६५०)	७६५६)	२५२८६)
४२-४३	५८६२२२)	४१२३३)	७८७६)	२२८२५)
४३-४४	६१४६८०)	४१६६३)	७५७६)	२८५३६)
४४-४५	८५५८६५)	५४४७५)	७५७६)	३६४६७)
४५-४६	,,	५४४७५)	७५७६)	,,
४६-४७	११३५१६३	११००५०)	७५७८)	,,

बीकानेर में जब कांग्रेस स्थापित हुई और उसके अन्तरिम सरकार में मेम्बर भी पहुँच गये तथा चुनाव की तैयारियां होने लगी। उस समय उन्होंने यह देखने के लिये कांग्रेस की कहां कितनी ताकत है। प्रत्येक तहसील के कांग्रेस सदस्यों के आंकड़े इकट्ठे किये जो इस प्रकार हैं—

नाम तहसील	सदस्य संख्या	नाम तहसील	सदस्य संख्या
बीकानेर (सदर)	११५२	सूरतगढ़	६७४
नोखा	३७८	हनुमानगढ़	३३६८
मगरा	२०	अनूपगढ़	२६
लूनकरनसर	७८६	गंगानगर	१४८५
सुजानगढ़	१३१६	करणपुर	४२०
डूंगरगढ़	११२६	रायसिंह नगर	६५०
रतनगढ़	१३१५	पदमपुर	६१८
सरदार शहर	२८२५	कलकता प्रवासी	३१२
राजगढ़	६५०१	मद्रास प्रवासी	१६

नाम तहसील	सदस्य संख्या	नाम तहसील	सदस्य संख्या
चूरू	४४५६	कानपुर प्रवासी	३६
तारा नगर	१८०५	बम्बई प्रवासी	१५
नोहर	३०२५	बनारस प्रवासी	१६
भादरा	२११५	विहार प्रवासी	२१

इसके अलावा उन्होंने अनेकों प्रकार के आंकड़े संग्रह किये है। ऊंट, घोड़ा और गाड़ी से ३५५८६ मील, पैदल ५३३५५ मील, रेल से २७६५८३ मील, हवाई जहाज से २५० मील, वस द्वारा ३१६० मील, जीप से ६०४ मील, कार से ५४० मील, तांगा से ३० मील सफर किया। इन सफरों पर जो खर्च हुआ उसका भी ब्यौरा उन्होंने दिया है जिसका जोड़ ६०५६।।।–)। होता है।

अपने जीवन भर के आय व्यय का खाता तैयार किया है। कितने अखवार किस साल में उन्होंने खरीदे पढ़े और कितने मील वे रेल में चले कितने मील का पैदल सफर किया। यह सब उनके अंक संग्रह में है। कोई आदमी ठाली हो और यह जानना चाहे कि चौधरी हरिश्चन्द्र ने कितनी रोटी किस दिन और किस अनाज की खाई उनकी डायरियों को देखें। अपने भोजन का टोटल उन्होंने ३५७ मन अन्न, ८७ मन घी और ६०६ मन दूध वताया है। साग भाजी और मिठाई का भी हिसाब है। कितने मेंहमान उनके घर आये और कितनों ने उनके यहां भोजन किया। यह सब उनकी डायरियों में अंकित है। उदाहरणार्थ जब

वे बीकानेर में चौधरी कुम्भाराम जी रेवन्यू मिनिस्टर के यहां रहते थे तो उन्होंने लिखा है आज डेढ़ फुलका खाया आज तीन रोटी खाई जिनमें आधी बाजरे की थी। यह नहीं कि चौधरी हरिश्चन्द्र जी कोई ठाले बैठे आदमी हों बल्कि उनका जीवन भमीरी नामक तितली का जैसा रहा है जिसमें आराम हराम समझा गया है।

उन्होंने १९०५ से १९६३ तक ७५९४ पत्र संस्थाओं, मित्रों और सरकारी अधिकारियों को लिखे।

डायरियों का बादशाह

यदि चौधरी हरिश्चन्द्रजी को हम डायरियों का बादशाह कहें तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। उन्हें डायरियों का मजनूं कहना और भी उपयुक्त होगा। इन्होंने सन् १६०५ से डायरियाँ लिखना आरंभ किया जो विना नागा आज तक जबकि उम्र अस्सी वर्ष से ऊपर है यह क्रम बराबर चलता जा रहा है। अपनी कलम से उन्होंने सन् १६०५ की प्रथम जनवरी से १६६२ की ३१ दिसम्बर तक का डायरियों का ब्यौरा इस प्रकार अंकित किया है—

डायरियों की संख्या	दिनों की संख्या	पृष्ठों की संख्या	पंक्तियों की संख्या
१६३	२१५४६	७२६३१	८००३८५

शब्द संख्या	अक्षर संख्या
१०६४३५२३	३७२०७४६६

डायरी में लिखते किस नियम अथवा तरीके से उसे पाठक जान सकें इसलिये एक पृष्ठ का नमूना यहाँ अंकित करते हैं।

२६ जून १६४८

शौच से निमट नीम की दांतुन कर स्नान किया।

मेघसिंह ने कपड़े धोये, स्वामी चेतनानन्द जी और मेघसिंह से बातें कीं। और जागीरी बन्दोबस्त की फाइल देखी।

भोजन मिर्च वाले दाल मूंग, प्याज का साग कच्चे प्याज दही फुलका ६ एक बजे रात को फिर कुम्भाराम के साथ भोजन ३ फुलका प्याज पोदीना की मीठी चटनी ऊपर से ५ छटांक दूध।

कुम्भाराम, हरदत्तसिंह, शिवशंकर, केदारनाथ इकट्ठे हुये। पैसा वणिये का नहीं दिया। फिर देने की तसल्ली दे दी। फिर भरतपुर हवाई जहाज से चलने के लिये शिवशंकर कुम्भाराम को पक्का कर मैं और हरदत्तसिंह गौरी शंकर के पास गये उसे पकाया। शर्त यह कि मौसम अच्छा रहे।

रात्रि स्नान करके भोजन किया ४ फुलका दाल साग से खाये फिर कुम्भाराम से बातें की। १० वजे से ४ वजे तक नींद ली। फिर जाग उठा, व्यायाम कर आँखें धो पानी पिया। दिन रात बादल ६ वजे बूँदें आईं। रात को भी पड़ीं। विजली चमकी। आँधी भी आई।

स्वामी चेतनानन्द जी भोले हैं। मोहनलाल ने विद्यार्थी भवन की कार्यकारिणी का चुनाव बेकायदा और बेढंगा करा लिया। मैंने स्वामी जी को समझाया तो कहा, मोहनलाल के विना काम नहीं चले।

द० हरिश्चन्द्र बीकानेर

जिस दिन कचहरी वकालत करने जाते। मुकदमों का हाल लिखते। न्यायाधीश की हरकतें दर्ज करते। जिस दिन गृहणी को किसी काम मे मदद देते उसे भी चौधरी साहब ने लिखे बिना नही छोड़ा है।

डायरी लिखने का उनका शौक इस हद तक बढ़ गया है कि उसे यदि व्यसन कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी। घर में पहलौठे पुत्र हरदेव की मृत्यु हो गई है। शोक से हृदय फटा जा रहा है। बेटे की लाश सामने है और आप डायरी लिखने बैठ जाते हैं। उसमें लिखते है–"इस समय ग्यारह बजे हैं पुत्र हरदेव की लाश चारपाई पर पड़ी है। भाई हिमताराम उसके सिरहाने, चतरूराम पागाणे, संतासिह, गरीबासिह दक्षिण में बैठे व लेटे है मेरी धर्म पत्नी वेद को गोद में लिये बैठी है। चतरूराम की स्त्री भी उसी के पास मांचे के सहारे बैठी नींद के खुर्राटे लेती है। मै आज की कथा लिखने बैठा हूँ।

पूरे दिन में अदालत में रहा अदालत से बाहर के कार्य का विवरण लिखकर के फिर पुत्र हरदेव की मृत्यु पर लिखते है – "मेरी पत्नी ने कहा, आपने कोठे की कूँट कने एक आदमी लेटो पड़्यो है देखो तो कुण पड़्यो है। मेरे मन में दो खयाल हुये एक तो यह कि कोई शराबी पड़ा होगा, दूसरे यह कि हमें फंसाने के लिए किसी ने कोई जाल न रचा हो राज ने कहा, मैं बाबे ने कह दियो – थोड़ी देर में भाई भागता हुआ आया लालटेन लेकर जल्दी आओ रे मैं

लालटेन लेकर भागकर गया तो देखा। सिर पर साफा, पैरों में जूती, लोटा पास पड़ा है हरदेव। दक्षिण में सिर उत्तर में पैर किए बेजान पड़ा है। भाई चिल्लाये अरे यह हम ही लुट गये। उसे माची पर लिया भाई ने भानसिंह को डाक्टर के पास दौड़ाया। चूहड़सिंह, भाई और मेरी स्त्री ने उसे मांची पर लिटाया और घर में ले आये। मैंने चतुरू ओ चतुरू शोर मचाया। इतने में महावीर प्रसाद मिल गया उससे कहा, वह कोई दवा लाया कस्तूरी तांबेश्वर मैंने उसके मुंह में दूध के साथ डाले मगर उसमें तो जान ही नहीं थी। इतने में डाक्टर मथुराप्रसाद आगया। उसने उसके हृदय की देख भाल करके तीन इंजेक्शन लगाये। गरीबा वगैरह ने कांसे की कटोरी से उसकी मालिश की। डाक्टर ने काफी देख भाल के बाद कह दिया चौधरी जी, अब बेवसी है। संतोष करो। डाक्टर की बात सुन कर मेरी धर्मपत्नी हरदेव के गले से लिपट कर दहाड़ मार कर रोने लगी। किन्तु मेरे आंसू नहीं निकलते थे मानो शरीर में कोई है ही नही। रात को ही मैंने हरदेव के ससुर ठेकेदार पोहकरराम जी को भी तार दिला दिया। हरदेव चारपाई पर पड़ा है। मैं बैठा लिख रहा हूं। स्त्री ओ३म ओ३म करके ठंडी सांसे भर रही है। ……मैं सोच रहा हूं सवेरे वैदिक रीति से इसका दाह संस्कार करना है। ……फिर मेरा मनीराम दौड़ रहा है सवेरे खोजी को लेकर उधर जाऊंगा जहाँ हरदेव जंगल झाड़े को गया था। शायद उसकी मौत का

कोई कारण मिल जावे संभव है इसके पास रुपया हो गाड़ी में या मंडी में किसी ने भांप लिया हो यहां कोठे के आसपास कंठ मसोस दिया हो रुपये ले गया हो।"

दूसरे दिन ११-२-३३ की रात को इन्होंने इस अधूरी कथा को फिर लिखना आरम्भ किया "मैंने आध घंटे तक हरदेव की लाश के पैरों की तरफ खड़े होकर ईश्वर से प्रार्थना की। हे ईश्वर जैसे बावर बादशाह की प्रार्थना पर आपने उसके पुत्र हुमायुं की बीमारी हुमायुं के बजाय बावर पर डाल दी थी वैसे ही सच्चे अन्तहकरण से मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि हरदेव को जो भी रोग हो मुझे लग जावे और हरदेव चगा बन जावे। परन्तु मुझ जैसे निर्भाग की प्रार्थना परमात्मा ने स्वीकार नहीं की।.... मैं विचार करता रहा मैं अपना जीवन कैसे व्यतीत करूँगा बुढ़ापे में बेटे ने अच्छा धोखा दिया। क्या मैं तपस्वी या सन्यासी बनूं या इसी घर के जाल में बालकों के खिलाने पढ़ाने में लगा रहूँ। इत्यादि"

हमारी समझ से डायरी लिखने का इतना दृढ़ प्रतिज्ञ आदमी संसार में कोई भी दूसरा हुआ हो जिसने बेटे की लाश के पास बैठकर रात के २ बजे भी डायरी लिखी हो। आज भी डायरी लिखने का उनका क्रम टूट नहीं रहा। बल्कि डायरी लिखना उनका मानसिक भोजन हो गया है। जिस प्रकार बिना भोजन के आंतें कुड़बडाती रहती हैं वैसे

ही इनका विना दिन भर का विवरण लिखे इनका मस्तिष्क परेशान रहता है।

दूसरे लोगों के लिये जो ये डायरियां फायदा पहुँचा सकती हैं वे निम्न प्रकार हैं।

(१) ये डायरियां बीकानेर के आधुनिक और आरंभिक इतिहास पर प्रकाश डालती है। बीका की संतान ने धीरे धीरे किस प्रकार इतना वड़ा राज्य वनाया उसका आभास इन डायरियों मे मिलता है।

(२) किसान और आम तौर से जाट अपनी ही भूमि में आगुन्तकों द्वारा किस प्रकार धीरे धीरे वेगाने वना दिये गये।

(३) किसानों की जमीनों और गावों को कब और किसे पट्टे पर अथवा इनाम में देकर किस भाँति किसानों को दुहरी गुलामी में डाल दिया गया।

(४) किस प्रकार जमीन कर के अलावा विभिन्न टैक्स उन पर लगाये गये।

(५) शिक्षा का जमाना आने पर भी किस प्रकार किसानों को शिक्षा से अछूता रखा गया।

(६) राजवंशी लोगों के विचारों का अन्य लोगों पर जाटों के विरुद्ध क्या प्रभाव पड़ा।

(७) राजवंशीयों के किस प्रकार के अंतरंग एवं वाह्य आचार विचार थे।

(८) सार्वजनिक जागृति आंदोलनों के इतिहास की तिथियां और घटनाओं पर हुई बीकानेर अथवा भारत में प्रतिक्रियाओं की संक्षिप्त जानकारी।

(९) बीकानेर के उच्च एवं मध्यम समाज सेवी व्यक्तियों का थोड़ा बहुत परिचय।

(१०) बीकानेर के राजाओं की दो पीढियों का दैनिक विवरण।

(११) चौधरी हरिश्चन्द्र जी के पारवारिक और सार्वजनिक जीवन का खुला दर्शन।

इन डायरियों को चौधरी जी ने किसी एक उद्देश्य की पूर्ति के लिए नहीं लिखा बल्कि दिन भर में जो कुछ उन्होंने किया अथवा दूसरों ने उनसे कराया, उसका विवरण अपने जागने से लेकर सोने तक दिन भर के निजी और परिवार के कार्यों का विवरण और जो देखा और समझा उसका उल्लेख इन डायरियों में है। इस प्रकार ये डायरियां निज बीती और पर बीती संक्षिप्त विवरणों का संग्रह है। उदाहरणके लिए सन् १९३३ की डायरी में से कुछ विवरण यहाँ हम प्रस्तुत करते हैं।

३ जनवरी

तहसीलदार सा० से भाखरा डेम के संबंध में बातें हुईं, कहने लगे, पाँच कड़ोर रुपये हों तो काम बने। फिर चाहे जितना पानी लेलो। बीकानेर राजसभा से पत्र

आया है कि अगले सेशन के लिए प्रश्न और प्रस्ताव भेजो मैं तो इन प्रश्नों को नौकरशाही के लिए व्यर्थ का काम देना और जवाब में प्रजा हित के लिए अंगूठा बता देना समझता हूं।

७ जनवरी

कचहरी गया उर्दू प्रताप हिन्दी मिलाप पढ़ा। लिखा था कि मेवों के उपद्रव से महाराज अलवर ने गद्दी छोड़ना मंजूर कर लिया है। यही काशमीर में भी हुआ था पहले झगड़े कराये जाते हैं फिर अंग्रेज सरकार पंच बनती है जिस किसी भी राजा को गद्दी से उतारना होता है यही क्रम दिखाई देता है यह सब पोलीटिकल विभाग के खेल हैं

...आर्य समाजी कानफ्रेन्स के लिए चीफ सा० को अध्यक्ष बनाने की बात कहते हैं, मैंने स्वामी स्वतंत्रतानंद का नाम पेश किया है।

९ जनवरी

घर में आपाधापी रहती है भाई हिमतारामजी के लिए तो सब एक हैं किन्तु भावज और भतीजे रघुवीर के विचार ओछे हैं।

१० जनवरी

इस देश के सिखों का ख्याल है कि बीकानेर प्रदेश के लोग हम से कम पोजीशन के हैं।

१९ जनवरी

अभी श्रीभगवान के लिए दूध ठंडा करने को रखा

तो एक कुत्ता झूठा कर गया। उधर बिल्ली भी बैठी थी वही दूध मैंने श्रीभगवान को पिला दिया और इसी दूध को अगर कोई अछूत छू लेता और मैं श्रीभगवान को पिलाता हुआ लोगों की--निगाह पड़ जाता तो लोग कैसा हुल्लड मचाते, हमारे विचारों में कैसा अंतर आ गया है।

२८ जनवरी

मेरी धर्मपत्नी ने कहा, बुधराम जी (जमाई) गोरा (बेटी) से कहते हैं तू तो रोगनी रहती है मैं दूसरी शादी करूंगा, न हो तो अपनी चन्द्र (दूसरी बेटी) को ही बुधराम जी को ब्याह दें। मैंने कहा इससे गोरा और चन्द्र दोनों को दुख होगा। गोरा को समझाओ वह आराम की जिन्दगी छोड़े, कुछ काम काज किया करे जिससे तन्दुरुस्ती अच्छी हो और अभी तो २ वर्ष तक चन्द्र का विवाह करना ही नहीं, आगे देखेंगे और जो उचित होगा करेंगे।

आर्य समाज का जलूस निकालने की मंजूरी कोई ढ़ाई बजे इन शर्तों के साथ प्राप्त हुई कि अमुक २ रास्ते से जलूस निकलेगा और उसमें खंडन मंडन एवं राजनैतिक गाने न होंगे।

२९ जनवरी

पंडित बुधदेवजी का बड़ा अच्छा लेक्चर हुआ। चौधरी जीवनरामजी भी आये थे हमारे घर के सभी लोग आज आर्यसमाज में पहुंचे। बाबा मवासीनाथ के सभा-

पतित्व में सभा हुई, जिसमें एक यतीमखाना खोलने का प्रस्ताव पास हुआ। पंडित त्रिलोचनदत्त समाज के प्रधान हैं।

५ फरवरी

लायब्रेरी में मानसरोवर नम्बर देखा इसके बीच के १६ पेज कोई फाड़ कर लेगया। यह हाल इस देश के पढ़े लिखे लोगों का है अब क्या होगा।

१४ फरवरी

पोहकरराम ने ईश्वर से धन मांगा मैंने पुत्र पूत सपूत हो तो धन की क्या कमी मुझे यह घमंड था। परमात्मा ने हरदेव को लेलिया मेरा घमंड जाता रहा। घमंड तो सभी प्रकार के बुरे।

१२-१-५२

चन्द्र आ गई। उसने गाय दुहाई। मैंने चन्द्र से कहा तुम्हारी माता गोगला को काम के लिए नौकर नही रखती है। उसने भी अपनी मां की पुष्टि की कि वह काम तो कोई करता नही उसे बुलाने के लिए उसके घर जाने की हाजिरी और देनी पड़ती है।

१६-१-५२

रात को मेरी स्त्री ने झींका कि मैं दिन भर काम करती हूँ जिससे इतनी थक जाती हूँ कि हाथ पैर दर्द करने लगते हैं शरीर जवाव देने लगता है कभी-कभी रुआंस भी आ जाती है। फिर भी आप शीत से बचाव के लिए

मेरे लिए गर्म कपड़े लाने तक की तकलीफ नहीं करते। मैंने कहा मैं तो बार-बार कहता हूँ कि वितसे अधिक काम मत करो बीमार हो जाओगी। गोबर पानी के लिए कुछ पैसे खर्च करो तो क्या हर्ज है? बोलीं लड़कों को पढ़ाना भी तो है कुछ बचालूं तो उनके काम आवे। पैसे की तंगी न रहे।

मैंने अपना वोट राजस्थान असेम्बली के लिए मोतीराम को और पार्लियामेंट की जनरल सीट को केदारनाथ को रिजर्व सीट को पन्नालाल बारूपाल को दिया।

६-२-५२

जयपुर में सिविल लाइन कोठी नम्बर १४ पहुँचा। वहाँ चौ० कुम्भाराम जी मिनिस्टर की हैसियत से रहते थे वहाँ पर उनकी स्त्री, लड़के, लड़की मिले। स्नान किया चौ० कुम्भारामजी बाहर गये हुए थे। जब आये तो स्वामी करमानंद और दीपचन्द उनके पास जा बैठे। मुझे भी कुँवर चन्द्रसिंह ने बताया, चौ० कुम्भाराम आ गये हैं। उनसे मिलने गया मुझे देखते ही कुर्सी से खड़े होकर मेरी तरफ बढ़े पैरों की ओर हाथ बढ़ाये। मैं उनकी सज्जनता पर पहले से ही मुग्ध था। शाम को खाने पर उनसे बातें हुई। उन्होंने कहा मौलाना अब्दुलकलाम आजाद मुझसे नाराज है इसमें कुछ सोचो। लाजपतराय अलखपुरा और तेगराम जी अबोहर को बुलाने की तय हुई।

२५-२-५२

कुम्भाराम जी को बहलाना खूब आता है । मैंने जमीन सम्बन्धी बातें छेड़ीं । उन्होंने झट दूसरा प्रश्न छेड़ दिया और कहा कि ऐसी अफवाहें हैं कि आप सन्यास ले रहे हैं ।

चौधरी साहब की सूक्तियाँ

आंकड़े संग्रह करने ओर डायरी लिखने की भांति ही चौधरी हरिश्चन्द्र जी के कुछ और भी शौक हैं जिनमें से एक मूक्तियाँ, कहावतें और मुहाविरे संग्रह करने का दूसरा चुटकियां लेने का है। यहाँ हम पहले उनके सूक्ति, कहावतें और मुहावरों में से कुछ को नमूने के तौर पर पेश करते हैं जिनसे उनकी मुरुचि का पता चलता है :—

गुण ग्राहक—

सीरत के हम गुलाम हैं, सूरत हुई तो क्या ?
सुर्ख व सफेद मिट्टी की मूरति हुई तो क्या ?

अर्थात् हमें उसकी मीठी वोली पसन्द है, खूबसूरती से मतलब नहीं क्योंकि मिट्टी की मूर्ति सफेद हो चाहे सुर्ख विना वाणी के वेकार है।

न सूरत बुरी है न सीरत बुरी है।
बुरा है वही जिसकी नीयत बुरी है।

अर्थ—स्पष्ट है।

ज़ईफ़ी जिन्दगी में वक्त की वेजां रवानी है।
अगर जिन्दा दिली है तो बुढ़ापा भी जवानी है।

अर्थात्–जीवन में बुढ़ापा तो समय की वेजां गति है।
वरना दिल जीवट वाला हो तो बुढ़ापा भी जवानी है।

अस्तित्व–

शेख ने मस्जिद बना बर्बाद बुतखाना किया।
पहले कुछ सूरत तो थी, अब साफ वीराना किया।

अर्थात्–मूर्तिघर में जाने पर मूर्तियों को देखकर उनके अस्तित्व की तो याद आ जाती थी अब मस्जिद में तो मैदान ही मैदान है।

देश-प्रेम–

क्यों हमारे आशियां पर नजर है सैयाद की।
क्या मिलेगा उसको बर्बादी से कुछ हासिल भी है।

अर्थात्–शिकारी की हमारे घोंसले पर कुदृष्टि है इसकी बर्बादी से उसे क्या मिलेगा।

बुरे-दिन–

जब जमाना फिर गया तो दोस्त भी फिरने लगे।
जिसको समझे थे यगाना हम वही बेगाना है।

अर्थात्–जब बुरे दिनों का आना हुआ तो दोस्त भी दुश्मन हो गये जिनको हम अपना समझते थे वे पराये बन गये।

बागबां ने आग दी जब आशियाने को मेरे।
जिनपे तकिया था वहीं पत्ते हवा देने लगें।

अर्थात्–जब बाग के रक्षक ने मेरे घोंसले में आग लगाई तो जिन पत्तों पर आश्रय था वही आग को तीव्र करने के लिये हवा देने लग गये।

विरक्ति–

बुलबुल ने आशियाना चमन से उठा लिया
हमारी बला से बूम बसौ या हुमा बसौ !

अर्थात्–जब बुलबुल ने बाग से अपना घोंसला उठा लिया तो उसकी तरफ से तो बाग में उल्लू बसौ या हुमा बसौ ।

निराशा–

बागे दुनियां में कोई हमसा भी होगा बदनसीब ।
आये ऐसे बाग में और खाली दामां हम चले ।

अर्थात्–हमसे भी अभागा और कौन होगा जो इस संसार रूपी बगीचे से खाली हाथ जा रहे हैं ।

अहम् का त्याग–

दिया अपनी खुदी को जो हमने मिटा ।
वह जो पर्दा सा बीच में था न रहा ।

अर्थात्–हमारे और परमात्मा के बीच में एक "मैं" पन का पर्दा ही तो था उसको भी हमने खत्म कर दिया है। यानी मैं यह हूँ मैं वह हूँ इसे कहना व समझना छोड़ दिया ।

रहे पर्दे में अब न वो पर्दा नसीन !
कोई दूसरा उसके सिवा न रहा ।

अर्थात्–वह छिप कर रहने वाला परमात्मा अब तो खुले में आ जाय क्योंकि उसके सिवा अब दूसरा कौन है । मतलब यह है कि ईश्वर जीव के कारण ही तो अदृश्य है

जव जीव ने अपना अस्तित्व खो दिया और वह परमात्मा-मय हो गया तव उसे किससे अदृश्य रहना है ।

इन्सान कौन–

जफर आदमी उसको न जानियेगा
गो हो कैसा ही साहिवे फेहम् व जकारा
जिसे ऐश में यादे खुदा न रही
जिसे तैश में खौफे खुदा न रहा

अर्थात्–उस आदमी को चाहे वह कितना ही प्रभाव शाली व बुद्धिमान हो इन्सान नही मानना चाहिये । जिसे कि ऐश्वर्य के दिनों में परमात्मा की याद न रहे और गुस्से में परमात्मा का डर न रहे ।

कूकर वृत्ति—

सगे दुनियां पस अज् मुर्दन भी दामनगीर दुनियां हो ।
कि इस कुत्ते की मिट्टी से भी कुत्ता घास पैदा हो ॥

अर्थात्––ये दुनिया एक कुत्ता जैसी है । क्योंकि मरने पर भी इस दुनिया को नही छोड़ा जाता । जैसे कि एक कुत्ते की मिट्टी में कुकरमुत्ता ही पैदा होता है ।

अभिप्राय यह है कि जीव मर कर के भी फिर इस दुनियाँ में वापिस आता है ।

पतन पराकाष्ठा—

नाम यूँ पस्ती में वालातर हमारा हो गया ।
जिस तरह पानी कुयें की तह में तारा होगया ॥

अर्थात्--अवनति भी हमारी इतनी बड़ी हो गई है। जैसा कि बहुत गहरे कुये में पानी तारा हो जाता है।

वियोग मिलन--

काग उड़ावन धन खड़ी आया पीव भड़क्क।
आधो चूड़ी काग गल आधी गई तड़क्क ॥

अर्थात्--कौये को सदेशवाहक मान कर वियोगिनी ने हाथ का झटका देकर उसे यह कहकर उड़ाया कि पिया आरहे हों तो उड़ जा कह कर ऊपर को हाथ उठाया कि पिय आगयो इससे उसके सूखे हाथ के खून को ऐसा बढ़ाव हुआ कि आधी चूड़ियाँ कौये की ओर और आधी तड़क गईं।

कुसंग---

केला तब क्यों ना चेतिया जब ढिग लाग्यो बेर।
अब पछिताये होत कहा जब कांटेन लिया घेर ॥
अर्थ स्पष्ट है।

मन चंगा--

दिल बदस्त आवर कि हज्जे अकबरस्त।
अल हजरां कावा इक दिल बहतरस्त ॥

अर्थात्--दिल काबू में हो तो सबसे बड़ी तीर्थ यात्रा है। कहा गया है कि सबसे बड़ा तीर्थ है किसी के दिल में गुंजायश पैदा कर देना।

मद्य निषेध—

न रख रोजा न मर भूखा वजू का तोड़ दे कूजा।
शराबे शौक पीता रह ॥

अर्थात्—अगर तुझे शराब का ही शौक है तो ईश्वर के प्रेमरस का पान कर फिर न व्रत उपवास की आवश्यकता है न वजू की।

जाहिद शराब पीने से काफिर मैं हुआ क्यों।
क्या डेढ़ चुल्लू पानी में ईमान वह गया ॥

अर्थात्—काफिर अथवा अधम होने के लिए केवल शराब ही काफी नहीं है। वह तो आरम्भ मात्र है। जैसा कि पंजाबी के इस पद से जाहिर है।

शरह फरमादडीं को सानू मुल्ला अल्हडे बोल सुना नाहीं।
जेहडा दम गाफिल वही दम काफिर सानू यारदी याद भूला नाहीं
सिजदा यारनू शीस झुका कीता हुण होर नवाजरवा नही।
इक्को बूटिया यारदीं झाते चावा लोड दीन ईमानदी कार नाही

अर्थात्—अरे मुल्ला हमें ये बेतुकी बात मत सुना कि शरह (कुरान) कहती है कि तुम काफिर हो। हम शरह वरह की बात तो मानते नहीं, हम तो यह जानते हैं। कि जिसका मन गाफिल है वही आदमी काफिर है। हमतो कभी भी परमात्मा को नहीं भूलते। जो परमात्मा को नहीं भूलता है उसे काफिर कहना बेवकूफी की बात है। हम तो सिर्फ परमात्मा को अपना मित्र मानते है। और

उसी को सिर झुकाते हैं। किसी और की नमाज हमें नहीं सुहाती। हमने तो एक परमात्मा के नाम की ही बूटी पी रक्खी है। उसी की झांकी के इच्छुक हैं। इसके सिवा हमें किसी दीन ईमान की जरूरत नहीं है।

भगवान भरोसा–

रण, वन, विपति व्याधि में रहिमन मरे न रोय।
जो रक्षक जननी जठिर सो हरि गये कि सोय॥

अर्थ स्पष्ट है।

चौधरी साहब की चुटकियां

बातचीत के दौरान चौधरी साहब अनेकों कहावतों और चुटकुलों का व्योंहार करते हैं। और कभी २ अच्छी खासी चुटकियां ले जाते हैं। हम उनकी डायरी से यहाँ कुछ चुटकियों का जिक्र करते हैं।

× × ×

इसी तरह पढ़ाई होती रही कि मुन्शी रामजीदास जी बदल गये लाला रघुवरदयालजी उनकी जगह आये। वह बूढ़े और दयालु थे खेवाली के लड़कों ने रामजीदास की मार सही थी बस अब क्या था बूढ़े रघुवरदयाल के जमाने में स्वतन्त्रता मिली और बिगड़े.........इस स्वतन्त्रता ने मेरा हौसला भी बढ़ा दिया और सोचा पढाई की ऐसी तैसी चलो बागड़ की सैर करें।

× × ×

जब भाई हिमतारामजी ने हमें ढूंढ़ निकाला तो पिताजी के सामने पेश हुये। मुझे उनसे बड़ा भय था किन्तु गंगा उलटी बह गई, वे बोले शाबास बेटो। यह सारा उत्पात मेरा था किन्तु यह बुराई मत्थे पड़ी रावतराम के। हुआ यह कि नामी चोर मारा जाय नामी साह कमा खाय।

× × ×

हमारा विवाह बिना पैसा खर्च किये होगया। तीन

दिन तक पांचों घी में रहीं। हल्दी लगी न फिटकरी सहज बहू आ पड़ी, वाली बात हुई।

× × ×

मुझको अपने मितव्ययी होने का घमंड है। इस पर मुझे कोई कंजूस कहे तो कह सकता है। मैं भले ही कंजूस हूँ किन्तु माँगने वालों को तो कुछ न कुछ देता ही रहता हूँ।

× × ×

लार्ड कर्जन आये पैंसठ मन तेल रोशनी में जलाया गया। तेल की चोरी भी हुई। मैंने अपने साथी अफसर पुरोहित लक्ष्मीनरायनजी से कहा तो वे कहने लगे 'तेली का तेल जले मशालची की रूह जले की कहावत मत करो।

× × ×

महाराज बीकानेर की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर बैरिस्टर जुगलसिंह खीची डाइरेक्टर शिक्षा विभाग ने महाराजा की प्रशंसा में गाया —

म्हाने चोखा लागै जी, म्हाने आछा लागै जी,
बीकाणा रा नाथ।
चोखा चोखा खोल्या मदरसा कीणों घणो उपकार।
उण में म्हारा बाला पढ़कर होजासी हुशियार॥
म्हाने मीठा लागै जी, म्हाने चोखा लागै जी।
बीकाणा रा नाथ।
म्हाने आछी लागै जी।

चौधरी हरिश्चन्द्र जी को यह गीत अखरा क्योंकि

देहातों में स्कूल नगण्य अवस्था में थे। जहाँ से शड़क मदरसे के नाम से लोकल रेट वसूल होता था। वहाँ भी नाम मात्र को स्कूल न था। शहर बीकानेर का नौविल हाई स्कूल केवल राजपूतों के लिये रिजर्व था। महाराजा, उनके पिट्ठुओं और खीचीं जुगलसिंह को तो चोखा लगना ही था किन्तु चौधरी साहब को क्यों चोखा लगता, इसलिये असेम्बली के इजलास में जुगलसिंह के इस गीत को लक्ष्य करके चौधरी साहब ने पूछा टीबी के पैंतालीस गांव कब से बीकानेर राज्य में शामिल हैं? कितना अरसा उन्हें शामिल हुये हो गया? उनसे प्रतिवर्ष कितना शिक्षाकर (लोकल रेट) वसूल किया जाता है? उनमें कितने मदरसे खोले हुये हैं? १६ मई सन् १९३८ को रेवेन्यू मिनिस्टर कुंवर प्रेमसिंह ने उत्तर दिया। टीबी के ४४ गांव सन् १८६१ से बीकानेर राज्य में शामिल हैं। २०२० रुपया प्रतिवर्ष लोकल रेट वसूल होता है। मदरसा और अस्पताल अभी तक कोई नहीं खोला गया। नोबल स्कूल के प्रश्न का १९ मई सन् १९३९ को महाराज मानधातासिंह ने उत्तर दिया सन् १८९३ से बना। बाकी का जवाब टाल गये। दूसरे प्रश्न का उत्तर यह दिया कि पट्टे के गांव १४७३ हैं जिनमें पट्टेदारों की ओर से केवल दो स्कूल हैं।

समझदार लोग जान गये कि यह चोखा चोखा खोला मदरसा का पर्दाफास किया गया है।

कांगड़ कांड के वाद से चौधरी हंसराज जी आये इस गीत को इस प्रकार गाने लगे थे ।

म्हाने भौंडा लागे जी, म्हाने खोटा लागै जी,
बीकाणा महाराज ।

एक दिन जब चौधरी हरिश्चन्द्रजी ने उनसे यह गीत सुना तो कहा, भाई तुम्हारी तो उसने हड्डी पसली तुड़वाई है। तुम्हें तो खोटा लगना ही चाहिये किन्तु वह तो मुझे भी खोटा लगता है जिसकी चोटी के वाल वचे हुये हैं।

× × ×

मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि प्रायः दरवारी और महाराजा साहव के सम्पर्क में रहने वाले लोग चोटी नहीं रखाते है । पूछने पर मालुम हुआ, दरवार साहव को डाढ़ी चोटी पसन्द नहीं इसीलिये लोगों ने दाढ़ी चोटी की सफाई करादी है मुझे भय हुआ, कि कहीं मेरी चोटी पर भी हाथ न मारा जावे। मैं इनका चोटी कट नहीं वनना चाहता। शेखावतजी के मन्दिर में गया नाई को वुला १। हाथ लंबी चोटी जिसे बड़ी मुश्किल से पाला था साफ करादी । एक दिन एक मर्द और स्त्री महाराज भैरोंसिंह जी के डेरे में आये, उन्होंने गाया "मेरी राधा ने वन्शी चुराई" मैंने उनसे कहा क्यों भाई अगर मैं गाऊँ कि तुम्हारी मां ने मेरी लुटिया चुराई तो तुम्हें कैसा लगेगा? वे बोले वहुत बुरा मैंने कहा तो फिर तुम क्यों जगतपिता भगवान कृष्ण को और

उनकी भक्त राधा को वदनाम करते हो वे शर्म से सिर नीचा करके चुप हो गये।

× × ×

अव तो वीकानेर में सर मनूभाई आनन्द शंकर मेहता दीवान वनकर पांच हजार रुपया मासिक वेतन पर आ गये। लोग कहते है कि उनका विचार अनिवार्यशिक्षा जारी करने का है। वात तो वड़ी अच्छी है। लेकिन देखें ऊँट पादता है या फिस करके रह जाता है।

× × ×

आज चौके में जितनी रोटी वनी थी आने वाले सव खागये। हमने सोचा चलो सवेरे जल्दी खा पी लेंगे लेकिन इतने में एक मेहमान और आगया और कहने लगा चौधरी जी खाना तो मुझे खाना नहीं लेकिन रात को ठहरूंगा। मैंने मन में कहा भगवान तैंने लाज रखली नही तो रोटी तो घर वाली को वनानी पड़ती और खुशामद मुझे करनी पड़ती।

वकालत और वार ऐशोसियेशन

वीकानेर राज्य में दो वार ऐशोसियेशन थीं। एक वीकानेर में दूसरी गंगानगर में। महाराजा गंगासिंह के स्वर्गवास के पीछे गंगानगर की वार ने किसानों के लूटने की ठानी। चौधरी बुधराम जी, ज्ञानीराम जी, हरिश्चन्द्र जी और रतीराम जी चार ही इस वार में किसान सदस्य थे और सब दूसरे पेशे वाले थे। इन चारों किसान वकीलों का कहना था कि दीवानी अथवा फौजदारी दोनों ही तरह के मुकदमों पर होने वाले व्यय आगे पीछे किसानों पर ही पड़ते हैं। तब उन पर किसी किस्म की लाग लगाना उचित नहीं, परन्तु वहुसंख्यक गैर किसान वकीलों के सामने इनकी दलीलें न चलीं और १९४३ के अगस्त से नीचे लिखी रकम टैक्स में लेना वार ने पास कर दिया–

दीवानी के मामलों में मुद्दई से १०००) तक २) सैकड़ा।
हजार से ऊपर ३०००) तक १) सैकड़ा।
तीन हजार से ऊपर ५०००) तक वारह आने सैकड़ा।
पाँच हजार से ऊपर आठ आने सैकड़ा।
मुदायलई से दो हजार तक आठ आने सैकड़ा।
दो हजार से ऊपर चार आने सैकड़ा।

नकद रकम के दावों के अलावा दूसरे दीवानी मामलों में दुगना।

फौजदारी मुकदमात पुलिस चालानी में अदालत फर्स्ट-क्लास मजिस्ट्रेट दस रुपया।
सैकिन्ड क्लास मजिस्ट्रेट पाँच रुपया।
सैशन कोर्ट में पन्द्रह रुपया।

मुस्तगीस से आधा

प्राइवेट इस्तगासों तथा जमानत हिब्ज अमन में दोनों तरफ से दो दो रुपया।

रजिस्ट्री की तकमील के दावों में दस रुपया रसूम भरे जाने वालों में पांच रुपया।

रजिस्ट्री की तकमील के दावों में बीस रुपया रसूम भरे जाने वालों में दस रुपया।

आश्चर्य यह है कि टैक्स लगाने का अधिकार सरकार को होता है। किन्तु गंगानगर की बार ऐशोसियेशन ने किसानों से टैक्स वसूल किया और चीफ जस्टिस ने भी इसे अनुचित नहीं कहा। इस पर चौधरी साहब ने अपनी डायरी में इन शब्दों में आश्चर्य प्रकट किया है—"पाँच पीर मक्के से चाले और छटी मिल गई देवी। देख गांव का भोंदू वाड़ा मोडे मांडी खैवी।" अर्थात् किसानों को मूर्ख समझ कर लुटेरों की बन आई।

वकालत में चौधरी जी साहब ने सत्य और ईमानदारी पर चलते हुये भी २१७८८) कमाये। इनमें से १५१०)

फीस वकालत के ७२७३) स्कूल पाठशाला और अन्य दानों में ६०५६) रेल तांगे और ऊँट सवारी के किरायों में खर्च कर दिये। अपने लिए पचास साल के अर्से में केवल ८३८४) बचाये। जो केवल तेरह रुपये माहवार पड़ते हैं। एक बार जब चौधरीजी ने अपनी धर्म पत्नी को बताया कि मैंने वकालत से २१ हजार से ऊपर रुपये कमाये हैं तो उन्होंने कहा कि हमें तो नोंन तेल के खर्चे के लायक ही मिले हैं। उनके कथन की सचाई इससे अधिक क्या होगी कि इस त्यागी तपस्वी ने अपना समय और धन सार्वजनिक कामों पर खर्च करके १३) माहवार से पत्नी को गृहस्थ चलाने की कठिनाइयों में डाला, किन्तु प्रसन्नता की बात यह है कि उनके पास सबसे बड़ा धन उनके शिक्षित और सुचरित पुत्र और दौहित्र आदि हैं।

दृढ़ प्रतिज्ञा

चौ० हरिश्चन्द्र जी कम बोलने वाले और अधिक करने वाले आदमियों में हैं किन्तु कभी कभी ऐसा भी होता है कि ठंडे दिमाग को भी गर्म होना पड़ता है। जब बीकानेर की असेम्बली का विधान बना तो लोअर हाउस में एक भी सीट महिलाओं के लिये नहीं रक्खी गई। अपर हाउस में एक महिला सीट का प्रावधान किया गया। लालगढ़ पैलेस में जब विधाननिर्मात्री कमेटी की मीटिंग हो रही थी जिसके कि सदस्य चौधरी साहब भी थे तो आपने कहा, बड़े दुख की बात है कि मातृ शक्ति का इतना अपमान कि उसके लिये आप लोग एक भी सीट का प्रावधान नहीं कर रहे हैं। मैं इसके लिये आन्दोलन करूँगा।

इसके दो दिन बाद जब २९-१-४८ को गंगानगर में एक आम सभा हुई तो आपने प्रतिज्ञा की जब तक असेम्बली में महिला सीट स्वीकार न करली जायगी मैं केश नहीं कटाऊँगा। और आवश्यकता पड़ी तो सत्याग्रह का संचालन भी करूंगा। उनकी इस प्रतिज्ञा को सुनकर इनकी धर्मपत्नी श्रीमती धैर्यवती और चौधरी कुंभाराम जी की धर्मपत्नी श्रीमती भूरी देवी ने कहा, हम ऐसे सत्याग्रह में हर्ष के साथ शामिल होंगी।

बीकानेर का विधान रक्खा रह गया और रियासत का स्वतंत्र अस्तित्व भी जाता रहा, सन् १६५० में स्वतंत्र भारत का विधान बना जिसमें स्त्रियों के लिये भी चुनाव लड़ने की पुरुषों की भाँति ही छूट रही। तब मित्रों के समझाने पर चौधरी साहब ने अपने शिर की जटायें तथा चेहरे की ढाढी को विदा किया। जिसे चिरस्मृत रखने के लिये लिफाफे में बन्द करके आपने रख छोडा है। इसी प्रकार आपने चाय को परित्याग की प्रतिज्ञा करली। हालांकि आजकल चाय राष्ट्रीय पेय बन चुका है जिसे काशी के पंडित से लेकर हरिद्वार के साधु और भारत के राष्ट्रपति तक पीते हैं। पार्टियों एवं अल्पभोजों का तो आधार ही चाय बनी हुई है किन्तु आप चाहे किसी भोज में शामिल हों, चाहे किसी नेता और अफसर के घर पहुंचें चाय की मनुवार को स्वीकार नही करते। इससे अपने को अधिक प्रगतिशील समझने वाले चौधरी साहब को पिछड़े जमाने का आदमी भी कहते है किन्तु इसकी उन्हें तनक भी परवाह नही। शीत के दिनों में भी वे चाय को अपने पास नहीं आने देते। जुकाम हो, सर्दी से बदन जमा जा रहा हो वे चाय को होंठों तक नहीं जाने देते। सर्दी का इलाज उनकी जेब के बादाम करते हैं। कमजोरी और थकान को वे छुहारे और किसमिश से मिटाते है।

उनकी एक प्रतिज्ञा और है और वह भी निभ रही है

वे उन लोगों से जान बूझकर कोई सम्बन्ध यहां तक कि रिस्तेदारियों का भी नहीं जोड़ते है—जिन्हें वे समाज के लिये अभिशाप समझते हैं। यही कारश है कि उन्होंने अपने एक लड़के की शादी उत्तरप्रदेश के एक राजघराने से भी नहीं की।

इस प्रकार वे एक ऐसे आदमी है जो वायदे के, वचन के और वात के धनी है, और फालतू वातों और फालतू आदमियों एवं फालतू शौकों से दूर रहते हैं तथा दृढ़ प्रतिज्ञ भी हैं।

सत्य के पुजारी

वचपन में यह लोगों की देखा देखी अपनी वात मनवाने को वाप की सौगन्ध खानी सीख गये। किसी से सुना कि सौगन्ध खाने से वाप मर जाता है। तव तेरी सोंह शुरू कर दी। जब समझ आई तो पता लगा जो झूठ बोलते हैं वही सौगन्ध खाते हैं। तव से न सौगन्ध खाई न सौगन्ध खाने वाले का विश्वास ही किया। जब कभी बीकानेर महाराज भैरूंसिह जी कहते खावो मेरी सौगन्ध। तव यह कहते मेरे मुंह से झूठ कभी नहीं निकलेगा। सौगन्ध का खाना झूठों का काम है। तव इनके साथ रहने वालों को इनकी सचाई पर विश्वास होने लगा। इसी सचाई ने ठाकुर मेघसिंह नाजिम व ठाकुर भूरसिंह वगैरह को इनका खूब विश्वासपात्र बना दिया।

(क) इनके गाँव लालगढ़ में कुएँ के बारे में लड़ाई हुई। एक आदमी मालूभादू मारा गया। बलवे का मुकदमा चला। सैकड़ों आदमी सूरतगढ़ निजामत में पेशी भुगतने लगे। पं० जोगेश्वरनाथ ने इनको गवाही में तलब कर लिया जैसा सच इन्होंने जाना बयानों में लिखा दिया। उस पर किशनलाल सुथार बरी हो गया। मगर गाँव के भादू जाट तथा उनके मित्र इनसे बड़े नाराज हुए।

(ख) इनके भाई हिमताराम ने एक मुकदमे की पैरवी इन्हें सौंपी बीच ही में इन्होने झूठ का समर्थन करना उचित न जानकर उनको पैरवी करने से मना कर दिया। तब भाई ने पत्र लिखा कि तू सत्यवादी युधिष्ठिर है। हम गिरे हुए हैं। हमारे मुँह देखने का तेरा धर्म नहीं इत्यादि।

(ग) एसेम्बली बीकानेर में भी सच्ची-सच्ची बातें पूछी। मगर महाराजा गंगासिंह जी जिनको यह समझते थे कि वे सत्य को पसन्द करते है। इनके सत्य से नाराज हो गये और कहा अखबार वालों को इससे मैटर मिलता है।

(घ) मन, वचन, कर्म से इनका सत्य का अभ्यास जारी रहा। १-१-१९०५ ई० को जिस दिन डायरी लिखनी शुरू की। उसी दिन से सच्ची घटनायें लिखने का निश्चय किया सन् १९५४ की डायरी इनकी धर्मपत्नी जी ने दौहित्री दया से पढ़वा ली। जब उसने अपनी चर्चा उसमें लिखी पाई तो ८ पृष्ठ फड़वाकर नष्ट कर दिये ओर जब इनसे चौधरी जी ने कहा यह क्या किया तो कहा बस यही लिखना सीखे हो क्या ? उन यों कह्यो, उन यों कह्यो। परन्तु जब देवीजी को स्वामी केशवानन्दजी ने विश्वास दिलाया कि यह डायरियाँ अनमोल हैं तब जोर देने लगी जल्दी छपवालो। लड़के रद्दी में फेक देगे। अर्थात् वह भी कटु सत्य को कुनेन की मानिन्द लाभकारी जानकर कड़आ घूँट पीने को राजी हो गईं।

(ङ) धार्मिक विषय में हमेशा सत्य की खोज में रहे जिसके प्रमाण में ६४ साल पहले का इश्तहार संभाल कर रख छोड़ा है। जो इस प्रकार है :— (उस वक्त सिरसा स्कूल में पढ़ते थे।)

ओ३म श्री गणेशाय नम:

सनातन धर्म की जय मनाये जिसका जी चाहे। सब महाशयों से नम्रता के साथ प्रार्थना है कि बालक सभा का जल्सा कल अक्षय तीज बुधवार के दिन २ मई को होगा। दिन के २ बजे से ४ बजे तक उपदेश किया जावेगा फिर ४ बजे से ६ बजे तक नगर कीर्तन होगा। आप सब सज्जन पुरुषों से निवेदन है कि ठीक समय पर आकर सत मार्ग का लाभ उठावें। सम्वत् १९५७ वैसाख शुदी २।

इस सभा का जलसा पुरानी तहसील के पास बाबू शेरसिंह के मकान पर होगा। मंत्री लाला हुकमचन्द।

सिरसा की इस बाल सभा के यह मंत्री, खजान्ची आदि रहे। १९०४ में आर्य समाज की बात सत्य जान पड़ी तब से उसको इतना जोर से पकड़ा है कि ६० साल से बराबर उसी रास्ते में जूझ रहे है।

सत्य की पगडंडी पर चलने के लिए यह आवश्यक है कि समय की पाबन्दी की जाय। इसमें भी चौधरी जी खरे उतरे हैं। सभा सुसाइटियों में वे समय पर पहुँचते हैं। नियत समय पर पहुँचने के लिये चलती रेल में बैठे है और अगले

स्टेशनों पर स्वतः टिकटों के दाम रेलवे वालों को जो भी रेलवे वालों ने कायदे से चाहे हैं दिये हैं। जिनके उल्लेख उनकी डायरियों में भरे पड़े हैं। इस प्रकार वे मन, वचन और कर्म से जिन्दगी भर सत्य के व्रती रहे हैं।

कुछ बिखरी बातें

मातृ-भक्ति—

अपनी तीसरी शादी के समय चौधरी साहब को रुपयों की आवश्यकता पड़ी। दूसरे से उधार लिये किन्तु उन्हें दुःख तब हुआ जब उन्होने भाई की पोटली में छः गिन्नी बँधी देखीं। कुछ समय बाद नौ हो गईं। इतने पर भी जब दोनों भाई अलग-अलग हुए तो आपने अपनी कमाई में से खेत जायदाद जो भी पैदा किये, बराबर हिस्सा अपने भाई हिमताराम जी को दिया। अंतिम दिनों में उनके भाई के पास तीस हजार रुपये नगद हो गये थे।

कांग्रेस की आंधी—

आप जब १९४८ में महाराजा भरतपुर के बुलाने पर भरतपुर गये। उन्होंने पूछा इस समय जाट मेरी क्या मदद कर सकते है। आपने उत्तर दिया। काँग्रेस की इस तूफानी बाढ़ में जो भी सामने आयगा वह चूर चूर हो जायगा। आप सरदार पटेल की बात को मान लें। इसी में हित है। महाराजा ने कहा, बीकानेर महाराजा का क्या इरादा है? इस पर चौधरी साहब ने उत्तर दिया उन्हें भी धराशायी होना है।

जाको राखे साइयां—

जब आप महाराजा से मुलाकात करके वापिस स्टेशन पर आये तो आपको पाजामा पहने देखकर कातिलों के एक गिरोह ने पीछा किया—उन दिनों हिन्दु बहुल इलाकों में मुसलमानों को और मुस्लिम बहुल इलाकों में हिन्दुओं को गाजर मूली की भाँति काटा जा रहा था। स्टेशन पर घूम रहे एक मुस्लमान सी० आई० डी० ने आपको सलाह दी कि यदि जान की खैर चाहते हो तो पाजामा उतार कर धोती पहन लो। आपने उसकी सलाह को मान लिया और कपड़ों में से निकाल कर धोती पहन ली।

इसी भाँति भटिन्डे से आप देहली को जाते हुये। गाड़ी के उस डिब्बे में बैठ गये जिसमें मुसलमान सिपाही बैठे थे। उनमें से एक मेव-मुसलमान-सिपाही को सूचना मिली थी कि उनके स्त्री बच्चे सभी कत्ल कर दिये गये। इस समाचार से दूसरे सिपाहियों की भी आँखे लाल हो गईं। चौधरी साहब ने सोचा बुरे फँसे। परमात्मा ही रक्षक है और हुआ भी यही उनसे किसी ने कुछ नहीं कहा और सही सलामत दिल्ली पहुँच गये।

आसमान से गिरा और खजूर में अटका वाली कहावत के अनुसार आप गढ़मुक्तेश्वर पहुँच गये। वहाँ अखिल भारतीय जाट महासभा का इजलास होरहा था, उसके सदर चुने गये थे त्यागमूर्ति राजा महेन्द्रप्रताप। किन्तु

उनके न आ सकने के कारण आप ही को अध्यक्ष बनाया गया। कार्यवाही चल ही रही थी कि मुसलमानों की दुकानों में आग की लपटें आने लगीं। रात भर स्वयं सेवकों ने रक्षकों का काम किया। जाग कर पहरा दिया। इजलास समाप्त होने पर गाड़ी में बैठे किन्तु गाड़ी को खड़ा छोड़ कर मुसलमान ड्राइवर इंजन को ले उड़ा। यह अफवाह फैल गई कि खड़ी गाड़ी पर मुसलमान हमला करेंगे किन्तु भगवान की दया से गाड़ी तक तो वे नहीं आये किन्तु पुल के पास सैकड़ों हिन्दुओं का कत्ल उनकी एक भीड़ ने किया। मास्टर तेगराम की जान भी परमात्मा ने ही बचाई।

चौधरी साहब ने हमें बताया कि भरतपुर से नागौर और नागौर से गंगानगर तक जो मैंने खून खराबा देखा उन दृश्यों के याद आने पर आज तक रोमांच हो जाते हैं।

मुस्लिम षडयन्त्र

बीकानेर महाराज के कुछ मुसलमान बहुत मुँह लग गये थे। खुशामद करके उन्होंने ऊंचे औहदे भी प्राप्त कर लिये थे किन्तु चौधरी साहब उनसे काफी सजग थे। ऐसे ही लोगों में एक थे मियाँ महीदी खान खोखर।

उन्होंने अपने एक मुस्लिम नेता बागअली अबोहर को जो पत्र लिखा उसमें हिन्दुओं को काफिर लिखा था। चौधरी साहब ने उसके पत्र की फोटू कराई और बीकानेर के होम मिनिस्टर को बताया कि ये हैं आपके राज्य के खैरख्वाह। महाराज ने उसे राज्य से सकुशल पाकिस्तान भिजवा दिया। इस प्रकार चौधरी साहब ने गंगानगर के हिन्दुओं को उस खुराफाती झगड़े से बचा लिया जो यह आस्तीन का सांप करा देना चाहता था। उस पत्र को हम यहाँ देते है। जिससे पता चलता है कि एक हिन्दू राज से ही परमिटों का लाभ उठाया जा रहा था। उसे ही काफिर कहा जा रहा था।

गंगानगर २३-३-४४

मुकर्रमी अस सलामअलेकम्

अलहमदलिल्लाह

लाहौर से वापिसी पर वक्त न मिलने की वजह से

आपसे नहीं मिला मुआफ फरमावें। ऐन० एम० खान से मिला था उस काम का वक्त गुजर चुका था। मियाँ नूर अहमद साहब से मिला था उनसे आपका हवाला किया था कि पाँच हजार बोरी चावल का परमिट गूजरांवाला से मेरठ वास्ते कोशिश करके दिलादो। आपके नाम का भी परमिट किया गया था उन्होंने वायदा किया था कि कल या परसों साहब से मिलकर बतला दूँगा लेकिन मेरा खयाल है कि फिलहाल कोई कोटा नही है। इस वजह से कामयाबी मुश्किल नजर आती है। बाकी मुफस्सल हालात आप सूफी साहब से दरयाफ्त कर लेवे।

नीज मैंने आपसे जिकर बिनौले की पाँच हजार बोरी का किया था और खाँड की दरयाफ्त का भी किया था उसके मुताल्लिक भी मैं दो चार रोज में तहरीर करूँगा (यानी देशी खाँड)

नीज सबसे अहम मामला जो इस वक्त मेरे सामने है वह यह है कि मसजिद कमेटी गंगानगर की तरफ से जो जलसे का इन्तजाम किया गया है। उसकी सब कमेटी की इत्तफाक राय से आपको सदर जलसा इन्तखाब किया गया है। उम्मीद है कि आप जरूर मंजूर फरमावेंगे हील व हुज्जत नही होगी चूंकि यहाँ के हालात का मुतायला आपने किया हुआ है। इस कुफ्रिस्तान में आप जैसी अजुल ऊज्म हस्ती का सदर बनना आम मुसलमानों का फखर का बायस

होगा और कि जलसा खुन्दा वन्द करीम के फजलो कर्म से कामयाब होकर मुसलमानों की हौसला अफजाई होगी व उम्मीद मन्जूरी कमेटी ने आपको सदर जलसा करार दे दिया है। इस वास्ते वदीद न अरीजा हजा मंजूरी से इत्तला फरमाई जावै। ताकि सारा इन्तजाम व मुश्तहरी की जावै। तारीख जलसा ३१-३-४४, १-४-४४ २-४-४४ हैं। इश्तिहार इरसाल है।

२४-३-४४

आपका खैर अन्देश
महंदी

अज अबोहर
३०-३-४४

करम फरमायं मलिक साहबजाद इनायतहू

वेशक इस किस्म की परमिट हाय का कोई फायदा नही है। जिस वक्त परमिट हरदो किस्म मिल जावे इत्तला देवें।

मुझे बड़ी खुशी होती। अगर सदारत का मौका मिलता लेकिन मजबूरी तारीखहाय में बुरी तरह मशगूल हूँ माफी चाहता हूं।

निआजमन्द वागअली

कांग्रेस के सम्बन्ध में—

चौधरी साहब के जीवन से संबंधित अनेकों घटनायें हैं किन्तु हमने उनकी डायरी से कांग्रेस सम्बन्धी घटनाओं में से कुछ एक को संकलन किया है जो इस प्रकार हैं :—

४-११-४६ को जागीरदारी उन्मूलन के प्रश्न पर एक जाँच कमेटी जयपुर से बीकानेर आई। कमिश्नर ने उसके सामने गवाही देने के लिये चौ० हरिश्चन्द्र जी को आमंत्रित किया।

गंगा नगर तहसील कांग्रेस कमेटी ने चौ० जी के भाई हिमतारामजी के स्वर्गवास पर जो शोक प्रस्ताव पास किया था उसकी प्रतिलिपि चौ० साहब को प्राप्त हुई।

३०-११-४६ को काँग्रेस का जो फार्म चौधरी साहब ने भरा उसमें कांग्रेस के २० कार्य-क्रमों में से १४ चौधरी साहब ने अपनाये और उन्हीं की पूर्ति के लिये वर्ष भर कार्य किया। वे कार्य ये हैं। (१) साम्प्रदायिक एकता (२) अस्पृश्यता निवारण (३) शराब निषेध (४) खादी प्रचार (५) ग्रामोद्योग (६) ग्राम स्वच्छता (७) स्वास्थ्य शिक्षा (८) स्त्री जाति की उन्नति (६) राष्ट्रभाषा प्रचार (१०) किसान संगठन (११) कष्ट निवारण (१२) पार्लमेन्टरी

कार्य (१३) कांग्रेस संगठन (१४) अधिक अन्न उपजाओ आन्दोलन।

२०-९-५० को गोगामंडी में चौधरी साहब की अध्यक्षता में कांग्रेस कान्फ्रेन्स हुई।

८-१-४९ बीकानेर एडहाक कमेटी की अध्यक्षता की।

सितम्बर १९४८ इस वर्ष चौधरी जो जिला कांग्रेस के अध्यक्ष थे। आपको रतनगढ़ तहसील के प्रमुख किसानों ने जिनमें जाट, विश्नोई, बलाई राजपूत, ब्राह्मण और कुम्हार सभी वर्ग के लोग थे एक महजर नामा भेजा कि हमारा सारा क्षेत्र आपको ही चाहता है। आप ही इस इलाके से असेम्बली के लिये खड़े हों और जब उन्हें यह यकीन हुआ कि चौधरी साहब इधर ही से खड़े होंगे तो उन्होंने देहातों के मुखियाओं के नाम परिपत्र जारी किये कि वोट सब चौधरी हरिश्चन्द्र जी को ही दें। एक परिपत्र के शब्द यह है—

चौधरी साहब पचास वर्ष से आप लोगों की सेवा करते आये है। संगरिया जाट स्कूल जहाँ से कई ... र लड़के पढकर तैयार हुए हैं। वह चौधरी साहब की ... का ही फल है। रतनगढ़ स्कूल के ... कृपा है। तन और मन से तो वे उस ... हुए हैं। साथ ही उन्होंने उसे ६००) ... दी है। उनकी सेवाओं के प्रति हम ...

चौ० सा० ने केदारनाथ जी को लिख...

पत्र मिला किन्तु मुझे कार्यकारिणी की यह राय नहीं जँची कि हम मताधिकार कमेटी को उन लोगों के लिये छोड़ दें जो प्रतिक्रियावादी है। हमारे उन कमेटी में रहने से जो लाभ हैं छोड़ देने से नही। आप जिला कांग्रेस की मीटिंग बुलावें उसमें मैं यही बात कहूँगा।

आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी के पार्लमेन्टरी वोर्ड को आपने लिखा :– मैं किसी भी चुनाव में प्रतिद्वन्दी बनने को तैयार नहीं। यदि मुझे चुनाव ही लड़ाया जाय तो रतनगढ़ का क्षेत्र मेरे लिये उपयुक्त होगा। वैसे मैं चुनाव लड़ने में रुचि नहीं रखता।

गङ्गानगर और हिन्दूमलकोट

वर्तमान गंगानगर पहले रामनगर कहा जाता था। जिसकी स्थापना सन् १९१० में हुई। इससे बहुत पहले यहाँ रामू जाट की ढ़ानी थी। सन् १९२७ में गंगनहर के उद्घाटन के बाद महाराजा गंगासिंह ने रामनगर को गंगानगर नाम दिया। रामनगर अब पुरानी आबादी के नाम से पहचाना जाता है।

एक रामनगर ही क्या अनेकों पुराने शहर और कस्बों को बीका की संतान के राजाओं ने अपने नाम पर बदल दिया। राजगढ़ को सादुलगढ़ बनाया गया।

गंगानगर की भूमि का भी एक इतिहास है। महाराजा बीकानेर ने डंगली साधुओं से एक लाख रुपये उधार लिये और साधु भगवानगिर को ताम्रपत्र पर लिखकर दिया के यहाँ की एक लाख बीघा जमीन तुम और तुम्हारे शिष्यों के पास पीढ़ी दर पीढ़ी रहेगी। लेकिन जब गँगनहर का इस भूमि से गुजरने का सर्वे हुआ तो उस समय के साधु नर्मदागिरि से जो जन्म से जाट था। धोखे धड़े से तीस हजार रुपया सालाना पर ९९ वर्ष का पट्टा इस जमीन का महाराजा गंगासिंह ने करा लिया। यही जमीन करोड़ों

रुपयों पर पंजाव से आकर यहाँ वसने वाले सिखों को अथवा पुराने वाशिन्दों को कीमतन दी।

× × ×

गंगानगर से आगे हिन्दूमलकोट है। भारतीय पंजाव का यह सीमान्त गाँव है। यहाँ रेलवे स्टेशन भी है। यह नाम बीकानेर राज्य के दीवान हिन्दूमल वैश्य के नाम पर रखा गया है। जव अँग्रेज सरकार की मध्यस्थता में बीकानेर और भावलपुर राज्य की सीमाओं की हदवन्दी हुई तो हिन्दूमल दीवान ने अपनी बुद्धिमानी से लगभग ६० वर्ग मील का इलाका बीकानेर का सावित करा दिया। फूलड़ा और वल्लड़ नाम के गांव भी इसी हदवन्दी में आ गये। हिन्दूमल ने लालगढ़ के भोपा जाणी को अपनी योजना का सहायक वनाया। भोपा ने कई कोस तक जगह जगह जमीन में कोयले गाड़ दिये और सबूत के समय वताया कि यहाँ तक हमारी गायें चरने आती थीं। यहाँ यहाँ हमने लकड़ी जलाई। उसके जो कोयले वचे वे इस जमीन में मौजूद हैं। इतना इलाका बीकानेर को मिल गया। लेकिन इस राजभक्त हिन्दूमल को एक दिन हीरा की कनी खाकर अपनी जीवन लीला समाप्त करनी पड़ी क्योंकि महाराजा बीकानेर उससे किसी काम पर अधिक नाराज हो गये थे। भोपा को इतना इनाम मिला कि एक पीढ़ी के लिये उसकी खुदकास्त जमीन पर लगान माफ कर दिया गया। महाराजा

की इस कंजूसी के लिये चौधरी साहब ने कबीर का यह पद गाया :-

"चोरी करे निहाई की करे सुई का दान।
ऊँचे चढ़कर देखता केतिक दूर विमान"।
मतकर कंथा गीरबो वस बीकाँरेवास
एह तीनो सागे मिलें मोर-फोट शावाश

चौधरी जी की आदर्श धर्मपत्नी

विवाह को संत कवियों ने जानबूझ कर काठ में पैर फंसाने जैसा कहा है। विरक्ति के लिये यह आवश्यक भी है कि पुरुष गृहस्थ जीवन से मुक्त हो किन्तु संसार में ऐसा होता बहुत कम है। शास्त्रों ने प्रजोत्पत्ति के लिए गृहस्थाश्रम को आवश्यक माना है। गृहस्थ दुख रूप भी है और सुख रूप भी। यह बहुत कुछ स्वभावों पर निर्भर है।

चौधरी हरिश्चन्द्रजी का गृहस्थ दुख रूप एक प्रसंग को छोड़कर जबकि उनके बड़े पुत्र हरदेव की अकाल मृत्यु हुई अधिकांश में सुखरूप ही रहा है। सुख रूप बनाने में मुख्य हाथ रहा है उनकी धर्मपत्नी श्रीमती धैर्यवतीदेवी का। बताशा जैसे दूध में घुल कर दूध रूप हो जाता है उसका अपना स्वयं का कोई अस्तित्व नहीं रहता, इसी प्रकार कुछ स्त्रियां भी अपने हित, अपनी इच्छाओं और आशाओं को पति रूप में मिला देती है। धैर्यवतीदेवी भी ऐसी ही स्त्रियों में है।

बहुत पहले हमने फ्रांस के एक साहित्यकार की लिखी कहानी पढ़ी थी। कहानी का नायक था ब्यौंते नाम का ऐसा मानव, जिसे दुनिया के बवन्डरों से कोई सरोकार न

था और कर्म ही जिसका जीवन था। उसे भगवान ने स्वर्ग दिया। अनेकों दान पुण्य करने वाले और कीर्ति पैदा करने वालों ने जब भगवान से पूछा कि इस आदमी ने न तो बावड़ियाँ, कुयें और तालाब बनवाये है और न तीर्थ यात्रायें की है और न व्रत उपवास किये हैं। फिर आप इसे स्वर्ग क्यों दे रहे हैं। भगवान ने जवाब में कहा, "तुमने जो कुछ किया कामना के वशीभूत होकर किया और इसने जो भी कुछ किया है कर्तव्य समझ कर किया है। इसके पैर तीर्थ की ओर नही गये है किन्तु कुमार्ग पर भी तो नहीं गये। इसने दान पुण्य नहीं किये हैं किन्तु किसी का माल भी तो नही मारा है। यह व्रत उपवास नहीं रहा किन्तु इसने दूसरों का भाग भी तो नहीं खाया। इसने किया अधिक है और भोगा कम है। यह कर्म का पुजारी रहा है। ऐश आराम की चिन्ता से मुक्त रहा है। इसने दिमाग को व्यर्थ बातों में खपाया नहीं। निन्दा स्तुति से दूर रहा है। इस कर्मयोगी विदेह का स्वर्ग भेजना पूर्णत: न्याय है"। पिछली सर्दियों में एक सप्ताह गंगानगर में मैं उनके घर रहा। सत्तर वर्ष की बुढ़िया को जब मैंने चार बजे प्रातः से रात्रि के दस तक चक्र की भाँति घूमते--काम में ही लगे देखा तो मुझे अनायास वह कहानी याद आगई और मन में कहा, यह बुढ़िया निश्चय वैकुँठ वासिनी होगी। कौन है जो इसे वैकुन्ठ पाने के अधिकार से वंचित कर दे ?

बीस वर्ष की उम्र में उसने इस घर में पदार्पण किया। जीवन के पूरे पचास वर्ष, बिना चैन लिये अठारह घन्टे उसने काम किया है। इतने लम्बे समय में मशीन भी जवाब दे गई होती। हिम्मत के लोगों को हम लोह पुरुष कहते हैं किन्तु इस धैर्य और श्रम की देवी को हम किस धातु से बनी हुई मानें।

उसके श्रम पर चौधरी साहब जीवन में अनेकों बार रीझे भी हैं और झुझलाये भी हैं। कई बार नौकर रखने को भी कहा है किन्तु जवाब यही मिला कि नौकर के नखरों से मेरे कौन भुगतेगा। चौधरी साहब ने जबरदस्ती नौकर रखे भी किन्तु वे इस अलौकिक मशीन का साथ नहीं दे सके और भाग खड़े हुये।

किसान की बेटी वकील की पत्नी होकर भी खेत-मजदूर ही जिन्दगी भर रही।

उसकी जीवनचर्या भी सुनिये। प्रातः तारों के प्रकाश में उठ कर शौचादि से निवृत होती हैं। आज-कल नौहरेमें पशुओं की रक्षा के लिये सोती है वही सूर्योदय से पहले ठंडे,पानी से स्नान करके गायत्री पाठ और हवन संध्या करतीं है। फिर चक्की पीसती है उसके बाद दूध बिलोती है। पतिदेव और आगन्तुकों के लिए स्वल्पाहार तयार करती है। गाय, भैसों का चारा नीरती है। उनके गोबर को उठाती है। घर, नौहरे और गौत की सफाई करती है। फिर दोपहर का भोजन बनाती है।

परिवार के लोगों तथा आगुन्तकों को भोजन कराके स्वयं भोजन करती हैं। फिर खेत का रास्ता लेती है। चारा काटती है और लाती भी है। फिर पशुओं को खिलाना पिलाना और अवसर मिल गया तो चर्खा पर कातना। पुनः घर की सफाई। दूध दुहना, गर्म करना। रोटी बनाना। खिलाना, तब स्वयं खाकर दस बजे रात को चारपाई पकड़ना यह है उनकी संक्षिप्त दिनचर्या।

इस समय उनके दो पुत्र वधू है एक तो इंगलैंड में रहती हैं। वे गत वर्ष जब गंगानगर आईं तो जर्मन बालिका होते हुए भी अपनी सासु के परिश्रम पर रीझ गईं हालांकि जर्मन खुद बड़े परिश्रमी होते हैं। दूसरी पुत्र वधू मारवाड़ प्रदेश की है मारवाड़ की लड़कियाँ भी श्रम-शीला होती है किन्तु चौधरिन धैर्यवती ने वधुओं को यह अवसर ही नहीं दिया है कि वे कोई शिकायत सासु की कर सकें। सेवा लेना तो उनके कोष में ही नहीं है। अलग पुत्र वधू को मकान दे दिया। पुत्र श्री श्रीभगवान की कमाई का कोई हिस्सा अभी वे लेती नही। पुत्र वधू से अपना कोई काम आज्ञा पूर्वक कराती नहीं। वैसे उनकी पुत्रवधू सासु श्वसर में श्रद्धा और निष्ठा रखने वाली हैं किन्तु चौधरिन धैर्यवती का कहना है कि जब तक जीना तब तक सीना।

इस कर्मयोगिनी देवी का जन्म ढींगावाली गाँव के चौधरी रामकरण जी सहारण के यहाँ हुआ। व्याह के समय चौधरी हरिश्चन्द्र जी अपनी वधू से ११ वर्ष बड़े थे।

सास-बहू

बायें से (१) श्रीमती धैर्यवतीदेवी धर्मपत्नी चौ० हरिश्चन्द्र
(२) श्रीमती स्नेहलतादेवी धर्मपत्नी श्री वेदप्रकाश जी।

इस समय चौधरी साहब की उम्र ८१ वर्ष और चौधरिन धैर्यवती की उम्र ७० वर्ष है।

जिन किन्हीं का भी वास्ता चौधरिन जी से पड़ा है वे सभी उनके प्रशंसक हैं और सच बात तो यह है कि चौधरी हरिश्चन्द्र को सार्वजनिक सेवा का इतना सुयोग्य देवी धैर्यवती के कारण ही मिला है जिसने उन्हें जन सेवा के लिये सदैव घरेलू कामों से मुक्त रक्खा।

वे हलके फुलके डाक्टर का भी काम करती हैं। छोटे छोटे बच्चों की कोड़ी (धमनी) हँसली, काग और तलवे के रोगों को ठीक करने में वे सिद्धहस्त है। प्रतिदिन उनके पास चार छः स्त्रियां अपने बालकों को लेकर उक्त रोगों के निवारणार्थ आती हैं। जो काम इन रोगों के निवारण का हाथ से करने का होता है उसे हाथ से कर देती है और जो बताने का दवा दारू से सम्बन्धित होता है उसे बता देती हैं। प्रायः उनका इलाज अचूक होता है। चौधरी हरिश्चन्द्रजी का कहना है कि "मेरी तो वह पर्सनल डाक्टर ही हैं। मेरे भोजन की व्यवस्था तो इस भांति करती हैं कि घर में रहते हुये मै कभी भी भोजन की गड़बड़ी से रोगी नहीं हुआ।"

स्त्री शिक्षा के हिमायती होने के कारण चौधरी [illegible] ने अपनी गृहणियों को साक्षर बनाने की आरंभ से [illegible] की। पहली पत्नी को भी उन्होंने साक्षर किया। [illegible] उनके देहान्त के बाद जब धैर्यवती जी इन [illegible]

किन वनकर आईं तो चौधरी जी ने इन्हें भी साक्षर कर दिया है जिससे वे मामूली काम काज की लिखाई पढ़ाई कर लेती हैं।

व्रत उपवास करने में भी वे काफी क्षमता रखती हैं। एक वार चौधरी जी ने मलौट के चौधरी गंगाराम जी के वारे में कहा कि वह आजकल अन्न जल नहीं ले रहा तो चौधरिन जी ने कहा, यह कोई आश्चर्य की वात नहीं "मैं भी सात दिन से निर्जला व्रत किये हुये हूँ।" इस रहस्योद्‌घाटन से चौधरी साहव को अवश्य ही आश्चर्य हुआ किन्तु वे आजकल एक ही वार भोजन करती हैं रात्रि को केवल पाव भर दूध लेती हैं कभी २ उसका भी त्याग कर देती है इस स्वल्पाहार पर भी परिश्रम करने में उनकी क्षमता अभी भी वैसी ही वनी हुई है।

जहाँ तक संभव होता है वे अपने हाथ के कते सूत से वने कपड़ों का प्रयोग करती है। वे मूंज से रस्से वनाने और चारपाइयां बुनने तक के प्रायः सभी घरेलू धन्धों में स्वावलम्वी है।

वे स्वयम तो साफ सुथरी रहती हैं किन्तु चौधरी साहव के वस्त्रों की धुलाई भी अपने हाथ से करती हैं। उनके चौके चूल्हे नित साफ होते है। सभी वस्तुऐं व्यवस्थित और करीने से रक्खी जाती हैं। जूतों के रखने के लिये भी स्थान निश्चित है। यह नही कि चाहे जहां तक उनका

प्रवेश हो। इस प्रकार यह अर्द्ध शिक्षित नारी एक आदर्श गृहणी है।

उनके मातृ-हृदय में सदैव ही प्यार का चश्मा बहता रहा है। वे अपने सौतेले पुत्र श्री हरदेव को भी बहुत ही प्यार करती थीं। हरदेव की शादी के लिये जब चौधरी पोहकरराम पूरणराम ने बहुत जोर दिया तो चौधरी साहब ने चौधरिन जी से पूछा कि इन दोनों के कोई लड़का तो है नहीं अपनी लड़की की शादी हरदेव से करना चाहते हैं तो उन्होंने इस शादी के लिये इन शब्दों में नापसन्दगी जाहिर की। "थे तो ऊतिया भूतिया ढूढ़ते फिरो हो।" अर्थात् बिना पुत्रों वालो को पसन्द करते हो।" किन्तु जो होना होता है वह अवश्य होता है के अनुसार यह शादी हो ही गई और ससुराल वालों के आग्रह पर हरदेव बीकानेर में रहकर पढ़ने को विदा हुआ तो चौधरिन जी ने कहा, लड़के को इतनी दूर जाने देने में दिल दुहरा होता है अर्थात् दिल धड़कता है।

एक पवित्र हृदय वाली स्त्री होने के कारण उनके हृदय में भविष्य में होने वाले अनिष्टों का आभास भी होता है। हरदेव के मरने से पूर्व उसके चेहरे को देखकर उन्होंने पूछा था आज हरदेव का चेहरा कुछ खिलता सा नहीं दीखता। जब हिचकियाँ आती है तो वे कहती है अमुक बेटा या बेटी याद करते हैं और वे बन्द हो जाती है।

वेदप्रकाश सन् १६५५ में इंगलेंड जाने को तैयार हुआ चौधरिन जी को लगा यह शुभ लक्षण है। तुरन्त जाने की इजाजत दे दी और सन् १६५८ में जब वेदप्रकाश ने लिखा कि मैं जर्मन लड़की क्रप्टल जी से विवाह करना चाहता हूँ तो चौधरिन जी ने "बलिहारी जाऊँ" के शुभ वचन से स्वीकृति प्रदान करदी। चौधरी जी ने अपनी डायरी में इस स्वीकृति पर लिखा है। "देहात की यह जाटिनी इतने ऊँचे भाव रखती है मुझे तो इस पर आश्चर्य ही होता है।"

अनेक बातें हैं जिनका स्थानाभाव से हम यहाँ उल्लेख करने में असमर्थ हैं। वास्तव में इस प्रकार की आदर्श, परिश्रमशीला, और लोक व्यवहार तथा गृह व्यवस्था में निपुण गृहणी को पाकर चौधरी साहब सौभाग्यशाली ही सिद्ध हुए है।

धर्म बहिन पूरादेवी

धर्म का भाई—

राजस्थान के रहने वालों में चाहे वह राजस्थान में रहते है या वाहर "धर्म भाई" "धर्म वहिन" वनाने का रिवाज है। किसी त्यौहार या विवाह अथवा तीरथ स्थान पर पुरुष तो स्त्री को चूनडी उढ़ाता है। स्त्री पुरुष को पगड़ी देती है। इस रस्म के वाद दोनों धर्म के वहिन भाई वन जाते हैं। सम्वत १९७१ में जव चौधरी जी की शादी की तैयारी हो रही थी। लालगढ़ के सुथार किशनाराम व उसकी धर्मपत्नी पूरादेवी इनके पास आए। पूरा ने कहा तुम्हें मैं धर्म भाई वनाना चाहती हूँ, इन्होंने कहा कपड़े के लेने देने से क्या है। हृदय से भाई बहिन वनने चाहिये। मेरी तुम वहिन हृदय से हो चुकी। पगड़ी चुनड़ी की रस्म नहीं की। कुछ साल वाद किसनाराम वीमार पड़े इन्हें पता लगा तो मिलने गये। वह अचेत पड़े थे। पूरादेवी ने इन्हें देखकर घूंघट से मुँह ढँक लिया, इन्होंने कहा वहिन है फिर परदा कैसा तो झट घूँघट हटा दिया।

जव प्रजा परिषद में इनके साथियों ने जोर डाला कि चुनाव में खड़ा होना होगा। इनके पास पैसा था नही।

वड़े भाई के पास तीस हजार नगद उस वक्त था। उनसे कहा लोग चुनाव में खड़ा करते हैं क्या मदद दोगे? जवाव दिया एक पैसा नहीं। जव यही प्रश्न पूरा के सामने रक्खा तो विना झिझक एक हजार के नोट इनकी झोली में डाल दिये। परन्तु रतनगढ़ तहसील के मेघसिंह आर्य के प्रयत्न से सर्वसमति से चौधरी जी को तहसील का प्रधान चुन लिया गया। इनका एक पैसा नहीं लगा। १०-साल हो गये चौधरी जी विवाह, शादी, वार, त्यौहार और अपनी माता से जाई वहन जैसा व्यौहार पूरा के साथ करते हैं।
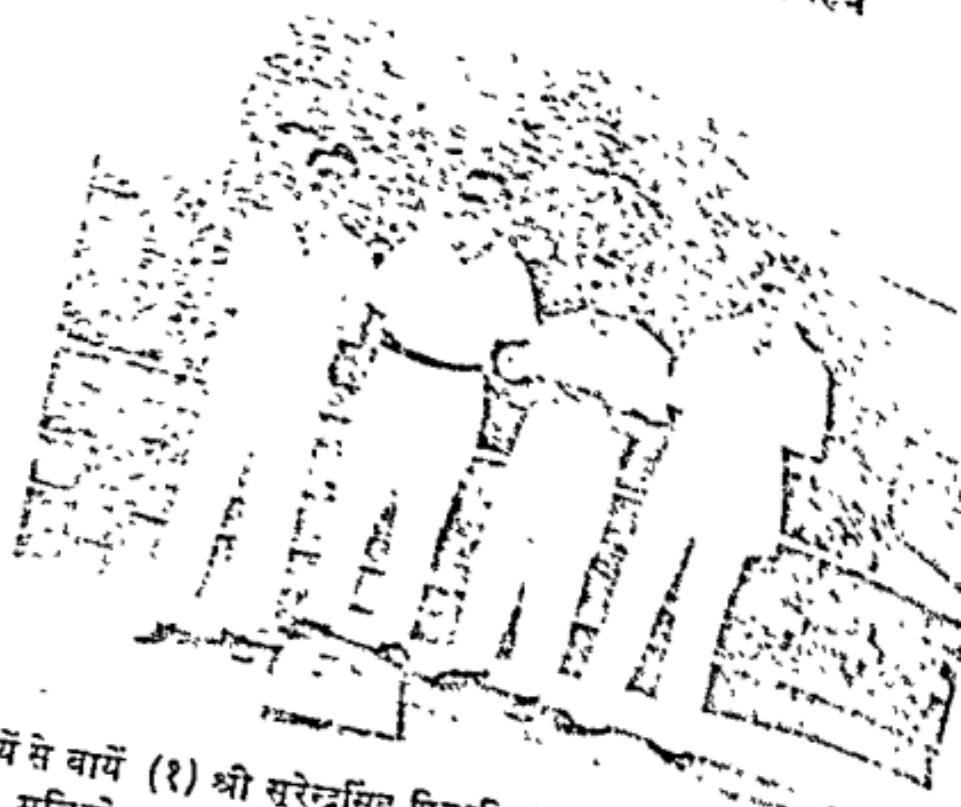
दौहित्र

श्री सुरेन्द्रसिंह पिलानियां
सुपुत्र चौ॰ बुधरामजी

दौहित्री
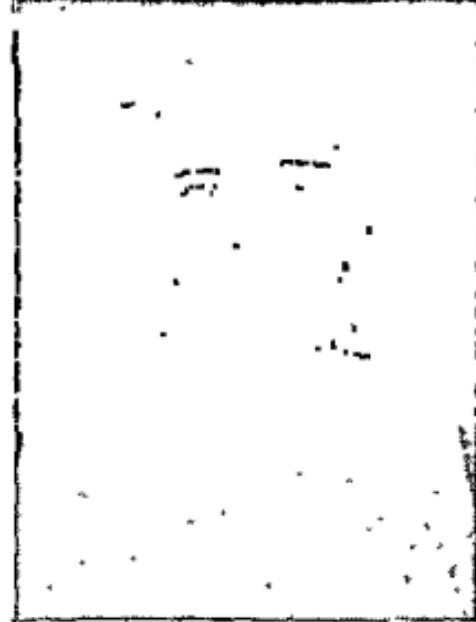
कुमारी इन्दुबाला
सुपुत्री चौ॰ बुधरामजी पिलानियां

चौ० साहब का परिवार

यह तो हम पहले लिख चुके हैं कि नैण तंवरों की एक शाखा है। तंवरों के पड़ौसी चौहानों की मुख्य भूमि राजस्थान और खास तौर से नागौर जिला है। दसवीं सदी से बारहवीं सदी तक उनकी राजधानी शाकम्भरी अथवा सांभर रही। पृथ्वीराज के दिल्ली में गोद चले जाने पर तंवर और उनके वंशज हरियाना हिसार तक फैल गये। उन्होंने अनेकों गांव आबाद किये। नैण भी उन्हीं में से एक बहादुर और बुद्धिमान पुरुष थे। उन नैण की ही अगली पीढ़ियों में चौधरी रामूराम जी के जो दो पुत्र हुये उनमें एक हमारे चरित्र नायक चौधरी हरिश्चन्द्र जी साहब हैं। उनके तीन पुत्र हुये। बड़े ही बड़े श्री हरदेव जी थे। जो बीकानेर के श्रीसम्पन्न चौ० पोहकरराम जी के भाई पूरणराम जी की सुपुत्री के साथ ब्याहे गये थे। उनका सन् १९३३ में अकस्मात स्वर्गवास हो गया। इस समय आपके दो पुत्र हैं। इनमें श्रीभगवान ज्येष्ठ हैं, श्रीभगवान का जन्म सन् १९२८ का और छोटे पुत्र वेदप्रकाश जी हैं जो सन् १९३१ में पैदा हुये हैं। श्री भगवान ने बी० ए० एल-एल० बी० किया है। और वेदप्रकाश जी ने

एम० ए०, एल-एल० बी० किया है। श्रीभगवान जी इस समय गवर्नमेन्ट कन्टैक्टर हैं और वेदप्रकाश जी लन्दन में प्रोफेसरी करते हैं। श्रीभगवान जी की शादी मारवाड़ के प्रसिद्ध किसान नेता देवता स्वरूप चौधरी गुल्लाराम जी के सुयोग्य पुत्र श्री गोरधनसिंह जी आई० ए० एस० की सुपुत्री पार्वतीदेवी के साथ हुई है। वेदप्रकाश जी ने एक जर्मन कुमारी श्री क्रष्टल (स्नेहलता) के साथ वैदिक रीत से विवाह किया है।

इस पाणिग्रहण संस्कार का विवरण इङ्गलैंड के एक प्रमुख दैनिक "कैन सिंगटन न्यूज एण्ड वैस्ट लन्दन टाइम्स" ने अपने १५ अगस्त १९५८ के अंक में इस प्रकार प्रकाशित किया है—

HINDU WEDDING IN KENSINGTON

A little fire burns in a pan on the carpet of a Kensington drawing room, incense smoke curls in the air and the soft intoning chant of a Hindu priest unites a young couple in matrimony......A house in Clarendon Road, W.11 was the scene of such a wedding when Mr. Vedprakash Varma, an Indian student of Economics at London University married Miss Christel Schmidt, of Germany.

The ceremony was presided over by a *Hindu priest*, M. Dastri. The bride and groom sat together before the holy fire. Then seven times they had to walk round the flames to symbolise the various aspects of marriage. The ritual continued for over an hour, the bride wearing a deep coral

पाणिग्रहण-संस्कार

लन्दन में वेद मंत्रों से आर्य पुरोहित श्री दस्तरीजी श्री वेदप्रकाश और विदुषी स्नेहलता का पाणिग्रहण संस्कार कराते हुये।

pink sari and bearing the scarlet cast-mark on her forehead. Miss Schmidt was formerly a Roman Catholic, but has now taken the Hindu faith.

She is the daughter of Mr. and Mrs. Schmidt, of Bonn, Germany, and her matron of honour was a friend, Miss Henelore.

The bridegroom, who is the son of Mr. and Mrs. Chaudhari Harishchandra was attended by Mr M P. Puri.

Guests at the wedding included Commander Batta, Assistant Naval Adviser to the High Commissioner for India and Surgeon Commander Grover of the Indian Army.

The honeymoon is being spent on the Continent.

अर्थात्---केन सिंगेटन के एक नगर के गलीचे बिछे हुये एक ड्राइङ्ग रूम में एक हवन कुंड से सुगन्धित धुआँ वायु को सुगन्धित करते हुये निकल रहा था और उस अग्नि को साक्षी करते हुये एक हिन्दू पण्डित ने नव दम्पत्ति का विवाह संस्कार कराया। यह मकान क्लेरिन्डन रोड डब्ल्यू ११ पर स्थित है। श्री वेदप्रकाश वर्मा भारतीय अर्थशास्त्र के विद्यार्थी हैं जो लन्दन विश्वविद्यालय में अध्ययन कर रहे है। उनका विवाह कुमारी क्रष्टल स्केमित जर्मनी के साथ हुआ। इस विवाह सस्कार के प्रधान एक हिन्दू पुरोहित श्री एम० दस्तरी थे। पति व पत्नी इस छोटे हवन कुंड के सामने साथ-साथ बैठे। और दम्पत्ति ने उस अग्नि कुंड की सात परिक्रमा करके इस संस्कार को

किया। यह कार्यक्रम लगभग एक घण्टे में सम्पन्न हुआ। उस समय वधू गहरे रंग की साड़ी पहने हुई थी और उसके मस्तक पर सुहाग की विन्दी थी। कुमारी कृष्टल पहले एक रोमन कैथोलिक ईसाई महिला थीं। परन्तु अव उन्होंने हिन्दू धर्म में दीक्षा ले ली है। यह जर्मनी के वौन शहर के श्रीमान और श्रीमती स्केमिस्ट की पुत्री हैं। उनकी धार्मिक प्रतिष्ठा का कार्य कुमारी हेनलोर ने किया। वर महोदय श्रीमान और श्रीमती चौ० हरिश्चन्द्र जी के पुत्र हैं। इस विवाह में श्री एम. पी. पुरी भी शामिल थे। इस महोत्सव में कमाण्डर वट्टा असिस्टेन्ट नेवल सलाहकार 'हाई कमिश्नर भारत' और सर्जन कमाण्डर भारतीय आर्मी भी शामिल थे। दूलह और दुलहनि की सुहागरात्रि यात्रा योरोप में हुई।

——केनसिंगटन न्यूज एण्ड वैस्ट लन्दन टाइम्स
१५ अगस्त १६५८

चौधरी जी के एक पोता श्रीभगवान का लड़का वीरेन्द्रसिंह और एक पोती वेद प्रकाश की लड़की इन्दु-रजनी है।

इन सम्बन्धों पर हम पिछले पृष्ठों में भी प्रकाश डाल चुके हैं। चौधरी साहव की तीन लड़की थीं। पहली गोरा देवी चौधरी वुधराम जी को व्याही। जिनसे श्री ज्ञानप्रकाश और जयदेवसिंह दो पुत्र हैं। दूसरी चन्द्रवती गोरां की जगह श्री चौ० वुधराम जी को व्याही गई है।

पाणिग्रहण

चौधरी जी के सुपुत्र श्री वेदप्रकाश जी लन्दन में
जर्मन युवती क्रिस्टल (स्नेहलता) का पाणिग्रहण करते हुए।

जिनसे तीन पुत्र (१) श्री सुरेन्द्रसिंह, (२) देवेन्द्रसिंह (३) वीरेन्द्रसिंह हैं। लड़कियाँ भी तीन है। १–दयावती, २–इन्दुवाला, ३–राजेश्वरी। इनमें सुरेन्द्र और दया ने बी० ए० कर लिया है इन्दुवाला जालन्धर कन्या महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त कर रही है, बाकी सभी पढ़ रहे हैं। तीसरी लड़की चौ० गोपीचन्द जी बी० ए० पूनियां पंचकोसी को व्याही गई थीं वह गुजर चुकी है।

चौ० बुधराम जी नायव तहसीलदारी से रिटायर होकर घर के काम धंधों और जमीन जायदाद की देखभाल करते है वे अपने अच्छे और परिश्रमी स्वभाव के लिये विख्यात हैं।

चौधरी साहव के भाई हिमताराम जी के इस समय रघुवीरसिंह और त्रिलोकचन्द दो लड़के हैं। जो अपने घरेलू धन्धों एवं खेती के कामों का संचालन करते हैं। दो लड़कियां थीं दोनों ही वीर श्रेष्ठ चौ० ताराचन्द जी से व्याही गई। वड़ी खीवनीदेवी का देहान्त होने पर छोटी सुलभादेवी ताराचन्दजी को व्याही गई। महावीर ताराचन्द जी के एक पुत्र श्री धर्मवीर है जो इस समय फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट है। डाकुओं के साथ युद्ध करते हुये शहीद होने पर श्री ताराचन्द जी एस०पी० साहव की तनख्वाह और पेन्शन की उतराधिकारिणी श्रीमती सुलभादेवी हैं और उनकी बच्चियों की शिक्षा का भार भी सरकार राजस्थान ने अपने ऊपर ले लिया है।

आपके मित्रों में से मुसलमानों में श्री वनेखां जी रिड़मल सरिया थे जो बहुत दिनों तक कस्टम सुप्रन्टेन्डेन्ट रहे। उनका देहान्त हो चुका है। सेठ लोगों में माहेश्वरी बन्धु श्री सेठ रामगोपाल जी मोहता और श्री सेठ शिवरत्न जी मोहता हैं जिनका भरपूर स्नेह चौधरी साहब पर रहा है। खत्रियों में मोदी ऊमाराम जी राजगढ़ हैं और जाटों में रईस आजम चौधरी हरजीराम जी मलोट है। जिनका परिचय अन्यत्र दिया जा रहा है। राजपूतों में ठाकुर मेघसिह जी पट्टेदार मेलिया, राव बहादुर ठाकुर भूरसिह जी पट्टेदार सुरनाणा, जो रेवन्यू कमिश्नर व इन्सपेक्टर जनरल पुलिस और मास्टर आफ दी हाउस होल्ड महाराजा बीकानेर के रहे हैं। तीसरे ठा० मुरलीसिंह गाँव भिरावटी जिला गुड़गांव सैटल मेन्ट आफिसर बीकानेर है जो आर्य समाज व कन्या पाठशाला गंगानगर के संचालन में चौधरी जी के साथ विशेष सहयोगी रहे। इन तीनों का स्वर्गवास हो चुका है।

चौधरी जी के दोनों जामातृ

प्रथम
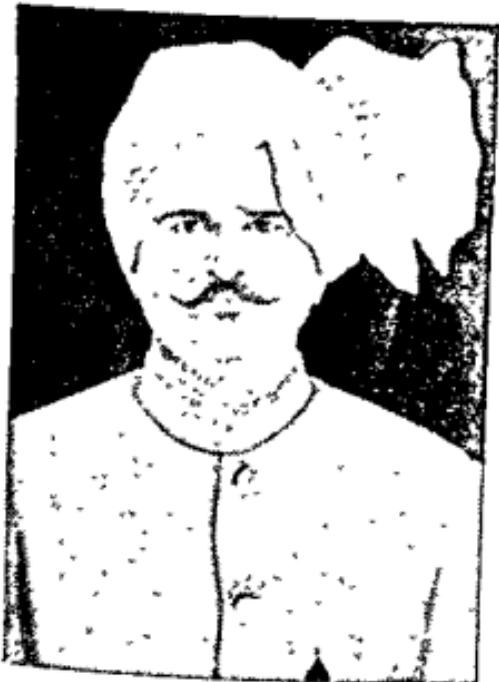
श्री बुधराम जी पिलानियां
रिटायर्ड ना० तहसीलदार

द्वितीय
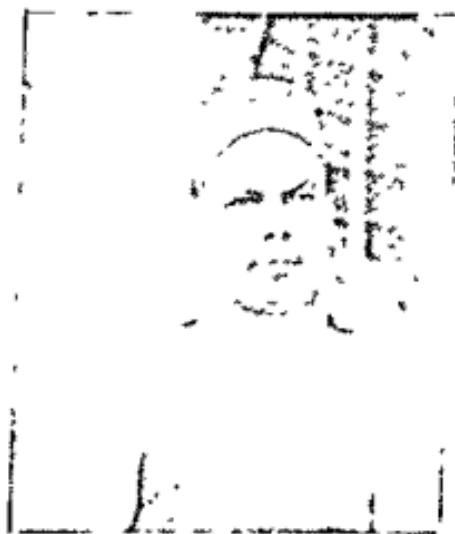
श्री गोपीचन्दजी बी. ए. पूनियां
पंचकोसी

कुछ दुखद घटनाएं

चौधरी साहब के मित्रों और सगे सम्बन्धियों में अनेक विशिष्ट जन हैं। लेकिन उनमें सभी तरह के लोग हैं जैसा कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है कि "एक मिलत दारुण दुख देंही। एक बिछुरत प्राण हर लेही।" पूर्व संस्कारों से भी इस प्रकार के मिलन और वियोग होते हैं। श्री पोहकरराम, पूरनराम ठेकेदार जो कि अपने समय के समस्त बीकानेरी जाटों में प्रथम श्रेणी के धनाढ्य-जन थे। पूर्व संस्कारों के कारण ही चौधरी हरिश्चन्द्र जी के सम्बन्धी बन गये। चौधरी साहब सम्बन्ध आरंभ होने के आरंभ में काफी झिझके, यह कहकर उन्होंने सम्बन्ध को टालना भी चाहा कि मैं एक गरीब आदमी हूँ और पोहकरराम जी कुबेर के बेटे हैं किन्तु "तुलसी जस भवितव्यता तैसी मिले सहाय" के अनुसार कुछ प्रमुख व्यक्तियों ने बीच में पड़कर उनके बड़े लड़के हरिदेव जी का पूरनराम जी की पुत्री के साथ विवाह सम्बन्ध करा ही दिया। किन्तु जैसी कि चौधरी हरिश्चन्द्र जी को आशंकायें थीं वे ठीक ही निकली। लक्ष्मीपति पोहकरराम जी के घर में चौधरी जी साहब को तो बराबरी का सन्मान प्राप्त ही नहीं हुआ

किन्तु हरिदेव जी को भी वह सन्मान प्राप्त नहीं हुआ जो दामादों को हुआ करता है। अपने मां, बाप को जो चिट्ठियां हरिदेव जी ने लिखीं तथा उनके ट्रंक में पाई गई उनसे इस पर पूर्णतः प्रकाश पड़ता है। चौधरी जी ने भी अपनी डायरी में एक जगह लिखा है। "पोहकरराम जी को अपने धन पर अभिमान है तो मुझे अपने सेवा, त्याग और उज्वल मन पर अभिमान है।"

यह सम्बन्ध सन् १९२८ मे हुआ था और सन् १९३३ में हरिदेव जी का अकस्मात देहान्त होगया। चौधरी जी इस सात साल के समय को "साड़े साती" कह कर याद करते है। उनका कहना है कि जिस दिन यह सम्बन्ध हुआ, उसी दिन से मेरे ऊपर साड़े सात साल के लिये शनिश्चर आगया और वह बेटे को लेकर ही टला। कहते हैं कि शनिश्चर के हट जाने पर भी कुछ समय खराब स्थिति में ही जाता है। आगे भी अनिष्ट होते होते बचा। चौधरी साहब के बड़े भाई हिमताराम जी ने चौधरी साहब पर दवाब डाला कि तुम पोहकरराम से कहकर हरिदेव की विधवा का नाता मेरे लड़के रघुवीर से करा दो। चौधरी साहब इस पर सहमत नहीं हुये। इसलिये नही कि उन्हें भाई और भतीजे से कोई दुश्मनी थी बल्कि इसलिये कि इतने बड़े रईस की लड़की यहां उतना सुख भोग नहीं पा सकेगी और उसकी मनोव्यथा से पास में होने के कारण हमे दुहरी मनोव्यथा का सामना करना

पड़ेगा। जब वे इस सम्बन्ध के लिये बीच में नहीं पड़े तो उनके भाई और भतीजे उनके प्राणों के गाहक हो गये।

इन व्यथाओं का वर्णन चौधरी जी ने अपनी डायरियों में बड़े मार्मिक शब्दों में किया है। इस प्रकार पूर्व संस्कारों के कारण बीकानेर के प्रसिद्ध जाट धनपति श्री पोहकर-राम, पूरनराम के साथ की यह नातेदारी उनकी जीवन की अन्य दुखदाई घटनाओं में ही स्थान पाती है। इसी प्रकार की अनेकानेक घटनायें है जिन्हें स्थानाभाव से यहां नहीं दे रहे।

सुखद मिलन

चौधरी साहब के इस लम्बे जीवन में राजा महाराजाओं सेठ साहूकारों और किसान मजदूरों सभी प्रकार के व्यक्तियों से मिलन और निकट सम्बन्ध कायम हुये किन्तु उनमें से जिन व्यक्तियों से वे प्रभावित हुये, अथवा जिन्हें उन्होंने अपना अधिक शुभचिन्तक समझा है। उनके सम्बन्ध में हम कुछ एक पर प्रकाश डालना उचित समझते हैं।

मोहता बन्धु--

श्री रामगोपालजी जिनका कि अभी दिसम्बर (१९६३) में स्वर्गवास हुआ है भारत के उन सेठों में से थे जिनकी धर्म की ओर रुचि रही है बल्कि यह भी कहा जा सकता है सेठ रामगोपालजी तो एक स्वतंत्र विचारक और दर्शन व्याख्याता पुरुष थे। गीता पर जो उनका भाष्य है वह अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है। इन्हीं सेठजी के लघुभ्राता राव बहादुर श्री शिवरत्न जी मोहता हैं। रामगोपाल जी के साथ चौ० हरिश्चन्द्र जी के श्रद्धा पूर्ण और शिवरत्न जी के साथ सखाभाव के सम्बन्ध रहे है। दोनों ही भाइयों ने चौधरी हरिश्चन्द्रजी की बात का सदैव आदर किया है। चौधरीजी साहब के आग्रह पर सन् १९५० में रामगोपालजी

संगरिया जाट स्कूल में भी पधारे और वहां की शिक्षा और वातावरण से इतने प्रभावित हुये कि शिक्षा कोष में एक रकम प्रदान करने के अलावा तीन साल के लिये योग्य छात्रों को सौ रुपया मासिक छात्र वृत्ति देने की घोषणा की साथ ही व्यायाम शिक्षक मास्टर रामलाल जी को अलग पुरस्कार दिया।

समय समय पर वे सदैव ही संगरिया स्कूल के हित के लिये कार्य करते रहे। उनकी यह भी इच्छा रही कि बीकानेर दरबार भी इस संस्था को आर्थिक सहायता दें। उन्होंने बीकानेर दरबार के मनोभावों के अनुसार संस्था के संचालकों को एक बार यह भी सलाह दी कि स्कूल का नाम बदल लो। किन्तु संचालकों ने इसे पसन्द नहीं किया।

शिवरत्न जी मोहता का बीकानेर की राजसभा में चौधरी जी से सम्पर्क हुआ और वह सम्पर्क धीरे धीरे प्रेम में परिवर्तित होता गया।

चौधरी साहब इस परिवार के उच्च आचरणों, देश-भक्ति की भावना और स्वतन्त्र विचारों से प्रभावित होकर उनकी ओर बराबर आकर्षित होते रहे और मोहता बन्धु भी चौधरी जी के शिक्षा सुधार और गरीबों की सेवा मे लगाये गये जीवन से उनके अधिकाधिक सम्पर्क और प्रभाव में आते रहे। इस प्रकार चौधरी जी अपने मित्रों और हितचिन्तकों की लिस्ट में मोहता बन्धुओं को अग्र स्थान देते हैं। चौधरी जी को श्री रामगोपाल जी मोहता का यह पद बड़ा

प्रिय लगता है और इसे समय समय पर गाकर वे आनन्द विभोर होते हैं :—

मतवारे वीरा सीधे मारग चाल,
सीधोड़े मारगीये आनन्द आवेरे वीरा।
ऊझड़ चालत पायो दुख अपार,
माया में भूलोड़ो गोता खावे रे वीरा।
माया वनमें भटके मूर्ख गँवार,
इण माया को अन्त नही आवे रे वीरा।
माया थारी वाजी समझ विचार,
इण मे भरमायो नहीं शर्मावें रे वीरा।
असल रूप तें अपणो दियो रे विसार
कोई ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शुद्र वण जावेंरे वीरा।
गुरू और पुरोहित वणरहया ठेकेदार,
वैकुन्ठारा हरिया वाग दिखावे- रे वीरा।
जाति पांति पर पंचों का अधिकार,
एह विन श्रद्धा धिगाणे धर्म करावें रे वीरा।
ओसर मोसर कर कर जीमणवार,
जोवँतणने मूवाँ लार मरावें रे वीरा।
मरणं परणे ले ले रकम उधार,
निकमी वाह वाह में टांट कुटावें रे वीरा।
मूल व्याज रो आवे अन्त न पार,
सारी उम्र पचपच कर्ज चुकावे रे वीरा।
खरी कमाई सू उतरें नहीं ऋण को भार

फिर करें कवाड़ा खोटा करम कमावे रे वीरा।
अन्त समय जब पड़सी जमरी मार,
जानि न्यातिरा कोई न आड़ा आवे रे वीरा।
मिनख जन्म नहीं मिलसी बारंबार
आयोड़ो अवसर क्यों धूड़ मिलावे रे वीरा।
चेत म्हारा मनवा सुर्ता करे रे पुकार,
तू देह अभिमान मिटावे तो सुख पावे रे वीरा।
उत्तम गुरूजी की सीख हृदय में धार
अपनो अनुभव कथ गोपाल सुनावै रे वीरा।

रामगोपालजी मोहता के लिये अपनी श्रद्धा का प्रकटीकरण उन्होंने श्री विद्यार्थी भवन रतनगढ़ (बीकानेर) के प्रथम वार्षिकोत्सव १३-१४ अप्रैल सन् १९४६ ई० को हुए उसके सभापति पद से दिये गये भाषण में किया है। पहले तो उसमें बीकानेर के महाराज और उसकी गवर्नमेन्ट की ऐसी पोल खोली कि इससे पहले बीकानेर के बसने वालों में से शायद ही किसी किसानों का प्रतिनिधित्व करने वाले ने खोली हो। उसमें उन्होंने कहा ऐ किसान ! तूही अन्न पैदा करता है, अन्नदाता है, परन्तु तू और तेरे बालक भूख से तड़प तड़प कर मरते मैंने देखे हैं। और कपास तू ही पैदा करता है परन्तु तेरी स्त्रियाँ लज्जा निवारण के लिए कपड़े को तरस रही हैं। फिर कहा तेरी दशा देख कर विश्व की विभूति महात्मा गाँधी ने लँगोट धारण कर लिया। तेरे ही दुख से विह्वल हो बीकानेर का करोड़पति सेठ रामगोपालजी

जी मोहता इस वृद्ध अवस्था में कड़ी से कड़ी धूप में सवेरे से रात के एक एक बजे तक कपड़े की तम्बोटी के नीचे बैठे बैठे कपड़ा बाँटते रहते है और कपड़े के न मिलने के कारण मातृ शक्ति को वस्त्रहीन देख कर कई बार तो रो देते हैं परन्तु दुःख से कहना पड़ता है कि प्रवन्ध करने वालों का कठोर दिल नहीं पसीजता। ऐसी स्थिति में ऐसे प्रवन्ध से प्रजा का विश्वास यदि उठ जाय तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। श्री मोहता जी पर चौधरी जी की असीम श्रद्धा का यह ज्वलन्त उदाहरण है।

बिरला बन्धु—

चौधरी साहब का कहना है कि बिरला बन्धुओं के नाम से तो मै बहुत परिचित था, किन्तु सन् १९२३ में मै जब कलकत्ते में जाट स्कूल संगरिया के लिये धन संग्रह की इच्छा से बहादुरसिंह जी के साथ उनके यहाँ गया तो उनके कार्य व्यवहार की पद्धति से बड़ी प्रसन्नता हुई। कलकत्ते के राजस्थानी सेठों के बचनों के अनुसार हमारी ग्यारह हजार की लिस्ट थी। लेकिन बसूली के समय हमें किन्ही किन्ही के पास तो चार चार पांच पांच बार हैरान होना पड़ा, किन्तु बिरलाओं के यहाँ ज्योंही पहुँचे हमें खजान्ची के पास भेज दिया गया और वृजमोहनजी ने स्वयं आकर ग्यारह सौ रुपये दिला दिये। इसके बाद सेठ जुगलकिशोरजी बिरला का सहयोग तो सदैव रहा और स्वामी केशवानन्द जी के संस्था को हाथ में लेने पर

त्रिवर्षीय शिक्षा कार्यक्रम के अन्दर सौ पाठशालाओं का संचालन बीकानेर राज्य में इन्हीं प्रवानी राजस्थानी सेठों के उदारता पूर्वक दिये गये दान से हुआ। इसमें अधिक सहयोग विरला बन्धुओं का ही था।

चौधरी हरिश्चन्द्र जी विरला बन्धुओं की दानशीलता से पूरी तौर पर कृतज्ञ और प्रभावित थे, किन्तु श्री घनश्यामदास जी की 'विखरे विचार' नामक पुस्तक में जब यह पंक्तियां पढ़ीं कि हीरा वैसे तो जाट था किन्तु अपनी जाति को छिपा कर अपने लिये राजपूत कहता था और जब उसकी यह बात खुल जाती थी तो उसे बड़ा शर्मिन्दा होना पड़ता था। चौधरी साहब पर इन पंक्तियों का यह असर पड़ा कि हिन्दू धर्म का इतना बड़ा हिमायती और गाँधीजी के निकट सम्पर्क में रहने वाला आदमी जिसे हम बहुत आदर की निगाह से देखते है, जाटों के लिये ऐसे ओछे खयाल रखता है। उनसे नहीं रहा गया और उन्होंने घनश्यामदास जी को लिखा—"आपकी 'विखरे विचार' पुस्तक की हीरा सम्बन्धी पंक्तियाँ मुझे खटकीं। इन शब्दों से मेरे विचारों को एक प्रकार की ठेस लगी। आपके भाव सदा ही बड़े ही गम्भीर और उच्च हुआ करते हैं। संभव है मेरी तुच्छ बुद्धि इन पंक्तियों के पढ़ते समय ठीक ठीक समझ न सकी हो। परन्तु मैं चाहता हूं कि इस

शंका का समाधान हो। कृपया मेरी शंका का निवारण कर कृतार्थ करें।" २२-५-४३

इस पत्र का उत्तर श्री घनश्यामदास जी विड़ला ने २०-५-४३ को इस प्रकार दिया--प्रिय महाशय, आपका पत्र मिला। मुझे समझ में नहीं आता कि आपको किस सम्वन्ध में शंका हुई और आपके विचारों को किस चीज से ठेस लगी। क्या आपको यह लगा कि मैं अमुक जाति को ऊँच और अमुक जाति को नीच मानता हूँ। वैश्य वर्ण वर्णाश्रम पद्धति में तीसरी पंक्ति में आता है। पर मेरा खयाल है कि शास्त्रकारों का यह खयाल कभी नहीं था कि कोई वर्ण ऊँच या नीच है। वर्तमान समय में लोग किसी वर्ण को 'ऊंच' मानते हैं इसलिये नीच वर्ण वाले 'ऊंच' वर्ण वाले वनने की कोशिश करते हैं यही कारण है कि हीरा को राजपूत वनने का शौक था, हालांकि राजपूत बन जाने से मनुष्यता के नाते वह कुछ बढ़ नही पाता।

भूमिहार अपने को ब्राह्मण वनाने की कोशिश करता है और नाई व खाती भी अपने आपको ब्राह्मण वतलाते हैं। कई चमार अपने आपको क्षत्रिय साबित करने की कोशिश करते हैं। यदि हम यह मानलें कि सभी वर्ण समान हैं तो फिर हास्यास्पद प्रयत्न कोई करे ही नहीं।

इस पत्र से चौधरी साहव को संतोष हो गया क्योंकि

वे घनश्यामदास जी के स्पष्टीकरण से उनके इस भाव को समझ गये कि किसी वर्ण को हम ऊंचा मान लेंगे तो ऊंचा बनने की भावना से हमें व्यर्थ उस वर्ण में शामिल होने की कोशिश करनी पड़ेगी।

इस उद्धरण के देने से हमारा अभिप्राय: इतना ही है कि चौधरी साहब की मित्रता और घनिष्टता का एक अलग मापदण्ड था और अब भी है वह यही है कि मित्र लोग ऊंचे ख्याल और अच्छे आचरण के हों। चाहे वे अमीर हों चाहे गरीब।

सूरजमल जालान

राजस्थान के सेठों में उनका सम्बन्ध रतनगढ़ के श्री सूरजमल जी से भी अच्छा रहा, और वे उनके वचन पालन के गुणों से अधिक प्रभावित हुये कहते हैं सूरजमलजी की भाँति ही उनके एक भाई वंशीधर भी अपने इरादे और वचनों के बड़े पक्के हैं। किसी व्यवहार पर उनके मुख से यह निकल गया कि मैं जिन्दगी भर रतनगढ़ में पैर नहीं रक्खूंगा। इसे अनेक कठिनाइयाँ वरदाश्त करके भी निभाया। उनकी लड़की की शादी का अवसर आया तो बजाय बरात को अपने घर रतनगढ़ बुलाने के वे वर पक्ष के घर चुरु ही मय लड़की के पहुँच गये और वहीं विवाह की सभी रस्में शान के साथ अदा कीं। इसी भाँति श्री सूरजमलजी जालान ने संगरिया जाट स्कूल को दस हजार रुपया देने का वायदा किया किन्तु उन्हें आकस्मिक बीमारी ने घेर

लिया। अन्तिम सांसें लेते हुए उन्होंने अपने लड़के से कहा—"मैंने चौधरी हरिश्चन्द्र जी से संगरिया स्कूल के लिये जो वायदा किया है। उसे पुरा करना।"

इनके साथ सन् १९३५ ई० में जबकि बीकानेर राजसभा के मेम्बर बनाये गये थे, चौधरी जी के प्रेम सम्बन्ध स्थापित हुये थे। जिसे सूरजमल जी जालान ने जीवन भर निभाया। यही कारण है कि चौधरी जी के हृदय में उनके प्रिय संस्मरण आज भी तरोताजा हैं।

चौ० हरजीरामजी गोदरा

बीकानेर के गोपलाण गांव तहसील लूनकरनसर से—देवाज और खिराज दो भाई इधर आये। देवाज जी निः संतान गुजर गये। खिराज के सन् १८३८ में एक पुत्र शेराजी हुये। शेराजी के एक पुत्र हुये नानक जी। इनके तीन पुत्र सरदारारामजी, नारायणजी, हरजीरामजी

महामना

चौ० हरजीराम जी गोदारा
रईसआजम मलोट।

तपः पूत

चौधरी हरिश्चन्द्र जी

लिया। अन्तिम सांसें लेते हुए उन्होंने अपने लड़के से कहा--"मैंने चौधरी हरिश्चन्द्र जी से संगरिया स्कूल के लिये जो वायदा किया है। उसे पुरा करना।"

इनके साथ सन् १९३५ ई० में जबकि बीकानेर राजसभा के मेम्बर बनाये गये थे, चौधरी जी के प्रेम सम्बन्ध स्थापित हुये थे। जिसे सूरजमल जी जालान ने जीवन भर निभाया। यही कारण है कि चौधरी जी के हृदय में उनके प्रिय संस्मरण आज भी तरोताजा हैं।

चौ० हरजीरामजी गोदरा

बीकानेर के गोपलाण गांव तहसील लूनकरनसर से--देवाज और खिराज दो भाई इधर आये। देवाज जी निः संतान गुजर गये। खिराज के सन् १८३८ में एक पुत्र शेराजी हुये। शेराजी के एक पुत्र हुये नानक जी। इनके तीन पुत्र सरदारारामजी, नारायणजी, हरजीरामजी हुये। सरदारारामजी का स्वर्गवास ३२ वर्ष की उम्र में हो गया उनकी मृत्यु के २-३ महीने बाद हेतरामजी उत्पन्न हुये और नारायणरामजी की २७ वर्ष की उम्र में गाड़ी के नीचे दबने से मृत्यु हो गई। उनके पुत्र सुरजारामजी हुये।

श्री हरजीरामजी के भ्रातृ प्रेम का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण यह है कि आपने भाई नारायणराम जी के फीरोजपुर में गाड़ी के नीचे दबकर मरने पर उनकी चिता में ही जलने को तयार हो गये। यह घटना ५२ वर्ष

महामना

चौ० हरजीराम जी गोदारा
रईसआजम मलोट।

तपः पूत
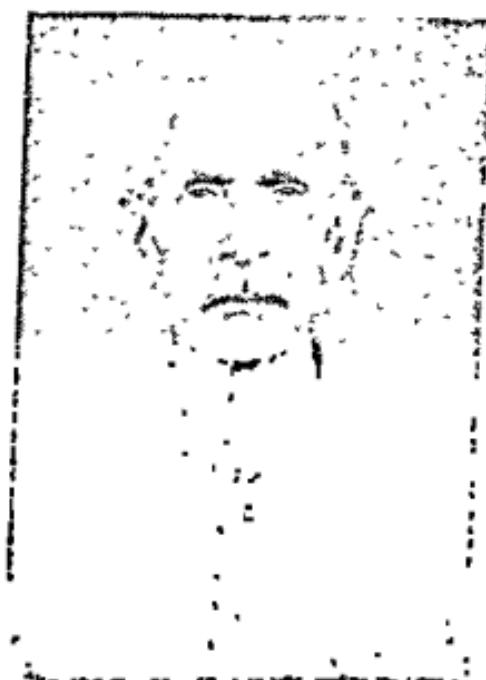
चौधरी हरिश्चन्द्र जी

पुरानी है उस समय हरजीरामजी की उम्र २०-२२ साल की थी।

सुरजाराम की मृत्यु ५२ साल की उम्र में गतवर्ष हुई। पाँच छः पीढियों तक इनके यहाँ ५० वर्ष की आयु किसी ने नहीं पकड़ी केवल हरजोरामजी ने ७४ वर्ष पकड़े है और अभी अच्छा स्वास्थ है।

१९१८-१९ में इन्होंने अपने नाम की मडी की स्थापना की। इसकी यहाँ के लोगो ने वड़ी मुखालफत की। डिप्टी कमिश्नर चौ० सिराजउद्दीन ने सव की दलीलें सुनकर इनको मंडी वनाने की इजाजत देदी। इनके समय में जव कि सिराजउद्दीन एस० डी० ओ० थे गिदड़वाहा की मंडी वन चुकी थी।

हरजीरामजी का जन्म संवत् १९४६ में चैत्र में हुआ। आपकी शादी वारेकां के चौधरी पदमारामजी की पुत्री किस्तूरी ज़ी के साथ हुई। पांचवीं तक उर्दू पढ़ी, हिन्दी घर ही सीखी। आपके तीन लड़के हैं श्री वलवन्तसिंह, श्री जसवंतसिंह और श्री धर्मवीर।

वलवंतसिंह जी वी० ए० अवोहर की हरजीराम वलवंतसिंह काटन मिल का संचालन करते है। गणेश फैक्टरी (जीनिग मिल) का जसवंतसिंह और धर्मवीर करते हैं। एक सिनेमा जसवंत थियेटर के नाम से (मलोट में ही) है। आगरे में वलवन्त सिंह धर्मवीर शू फैक्टरी है। उसका इंचार्ज चौ० हरसहाय रिटायर्ड सैनिक

अफसर है। कर्नाल में जसवंतसिंह जी का चौ० रनवीर सिंह जी वकील कर्नाल के साझे में एक कोल्ड स्टोर है।

मलोट में दो उद्यान एवं कृषि फार्म है। इन दोनों वागो की तीनों भाइयों की संपत्ति १४० वीघे अर्थात् १०० एकड है।

हेतरामजी दो गांवों के नम्बरदार हैं उनके पांच लड़के पृथ्वीसिह, ओमप्रकाश, वलवीर, साहबराम और प्यारे है।

सुरजारामजी के तीन लड़के प्रहलाद कुमार, जगदीश कुमार और अमर कुमार है। सुरजारामजी के नाम चौ० सुरजाराम मार्केट है। इनकी एक जीनिंग फैक्टरी सूरज टैक्टाइल मील और एक आदर्श नाम का सिनेमा है। एक कृषि फार्म भी है।

सन् १९१८ में आप आर्य समाजी वने और तभी से संगरिया स्कूल के काम में जुटे। जाट महासभा के कार्यों में दिलचस्पी ली। संगरिया को लगभग पन्द्रह हजार रुपया दे चुके हैं। अवोहर साहित्य सदन को भी आपने सहायता दी है और आर्य समाज मलोट को भी पूर्ण योग दिया है। एक मकान कन्या पाठशाला को दे रक्खा है।

कुंवर वलवंतसिह जी डी० ए० वी० कालेज अवोहर की प्रवन्धकारिणी के प्रेसीडेंट हैं। अवोहर के सभी प्रतिष्ठित सज्जनों से बलवंतसिह जी के प्रेम सम्वन्ध हैं।

शिक्षा प्रचार धार्मिक प्रचार में आपने जी खोलकर सहायता दी है। अब भटिन्डा के उपदेशक मण्डल पर आपका कृपाहस्त है।

आजकल आप अपने मकान में एक सत्संग चलाते हैं। जिसमें रात्रि के समय धार्मिक ग्रन्थों का पठन और सुयोग्य आदमियों के प्रवचन होते हैं।

आपके सभी पुत्र उच्च शिक्षित है। आपका एक पोता जोरावरसिंह (पुत्र बलवन्तसिंह) इस समय लदन में बिजनिस सम्बन्धी अध्ययन कर रहे हैं। और अमेरिका में अभिमन्यु, भूपेन्द्रसिंह दौहित्र हैं। अभिमन्यु तो ८०००) रुपये मासिक पर किसी संस्था में टैक्नीकल शिक्षा के लिये प्रिंसिपल हैं और भूपेन्द्र किसी औद्योगिक कार्य की ट्रेनिंग ले रहे हैं।

जाटों में वैवाहिक कुरीतियों को मिटाने के लिये बड़ा प्रयत्न किया है जो भी नियम ४५ वर्ष पूर्व बनाये गये उनका आपने पालन किया। अपनी धर्मपत्नी की मृत्यु पर आपने उनका मौसर नहीं किया। चौ० हरजीराम जी ने आर्य बनते ही तम्बाखू तक पीना छोड़ दिया और व्यक्तित्व को उच्च बनाने के लिये पूर्ण प्रयत्नशील रहे और जहां आज आपकी इज्जत सम्पन्न व्यक्ति के रूप में है वहाँ एक आदर्श व्यक्ति के रूप में भी है।

चौ० हरिश्चन्द्र जी के सामाजिक कार्यों के साथी ठा० मुरलीसिंह जी पँवार भिरावटी जिला गुड़गांव, चौधरी बहादुरसिंह जी, ठाकुर गोपालसिंह जी, बावा मनसानाथजी,

बाबा मवासीनाथ जी, सेठ सोहनलाल जी जो कि अब स्वर्गस्थ हैं और चौ० जीवणराम जी दीनगढ़, चौ० सरदारा-रामजी चौटाला, चौ० शिवकरणसिंह जी चौटाला आदि हैं। राजनीति में जिनका साथ दिया उनमें श्री चौ० कुंभा-राम जी आर्य, चौ० हरदत्तसिंह जी भादरा, चौ० रामचन्द्र जी गंगानगर, श्री चन्दनमल जी वैद्य, श्री केदारनाथ जी, सरदार अमरसिंह जी, सोहनसिंह जी, रघुवीर सिंह जी, सेठ लच्छीराम जी, सरदार गुरदयालसिंह जी, सरदार मस्तानसिंह जी, सरदार हरीसिंह जी भादरा आदि हैं।

स्वामी केशवानंदजी के लिये चौधरी हरिश्चन्द्र जी का कहना है कि स्वामी जी तो मेरे सर्वस्व हैं। मित्र भी हैं। पथ प्रदर्शक भी है। सखा भी है। स्नेह और प्रेरणा के स्रोत हैं।

पं० कन्हैयालाल जी ढंड चूरू

चौधरी जी में गुण ग्राहकता की इतनी प्रबलता है कि जिस किसी ने इनके साथ अच्छा व्यवहार किया अथवा सद्भावना दिखलाई उसको अपने हृदय-पट पर ऐसा अंकित किया कि आयु पर्यन्त भूलने में न आवे। और जिस किसी से थोड़ी सी भी अच्छी शिक्षा मिली उसे तुरंत मान लिया। इसी आदत के कारण चौधरी [illegible] कन्हैया-
जी ढंड को भी अपने गुरुओं में गिनते [illegible]
जब राजगढ़ से चौ[illegible] चूरू में [illegible]
आये, उस सम[illegible] पदोन

धर्मशाला में एक पाठशाला का संचालन करते थे। चौधरी जी का उनसे यहीं पर सम्पर्क बढ़ा। गीता जिसका कि पाठ चौधरीजी ९-१० साल की आयु से कर रहे थे, यहां पर पंडित जी से उसका अर्थ-ज्ञान प्राप्त किया। चौधरी जी का कहना है कि पं० कन्हैयालाल जी संतोषी और सद्‌गुणी एवं सरल प्रकृति के पुरुष थे। उन दिनों बीकानेर में महाराजा गंगासिंह जी का प्रबल आतंक छाया हुआ था किसी की भी हिम्मत उन दिनों सार्वजनिक संस्था कायम करने की नहीं पड़ती थी। पंडितजी ने स्वामी गोपालदास जी व मास्टर श्रीराम जी के साथ जो कि पीछे बिरलाओं के पास चले गये थे, मिल कर चुरु में एक संस्था की स्थापना की। जिसका नाम हितकारिणी सभा रक्खा। चौधरीजी भी सर्विस में होते हुये भी इस संस्था की बैठकों में शामिल होते रहे। पंडित जी ने इस संस्था से संबन्धित दो कवितायें पहली २ अगस्त सन् १९०७ को तथा दूसरी ७ अगस्त सन् १९०७ को बनाईं। जो इस प्रकार हैं––

१––ओ३म्

सब मिलके जो कीन्ही है एक सभा।
हितकारिणी नाम धरा जिसका।
सब हिलमिल दिल को करलो सफा।
यह पहला उद्देश्य जो है इसका॥
दूसरे आज्ञा को पालती है महाराज गंगासिंह का।
तीसरी आज्ञा जो है इसकी सन्मार्ग में चलना हो सबका।

बाबा मवासीनाथ जी, सेठ सोहनलाल जी जो कि अब स्वर्गस्थ है और चौ० जीवणराम जी दीनगढ़, चौ० सरदारा-रामजी चौटाला, चौ० शिवकरणसिंह जी चौटाला आदि हैं। राजनीति में जिनका साथ दिया उनमें श्री चौ० कुंभा-राम जी आर्य, चौ० हरदत्तसिंह जी भादरा, चौ० रामचन्द्र जी गंगानगर, श्री चन्दनमल जी वैद्य, श्री केदारनाथ जी, सरदार अमरसिंह जी, सोहनसिंह जी, रघुवीर सिंह जी, सेठ लच्छीराम जी, सरदार गुरदयालसिंह जी, सरदार मस्तानसिंह जी, सरदार हरीसिंह जी भादरा आदि हैं।

स्वामी केशवानंदजी के लिये चौधरी हरिश्चन्द्र जी का कहना है कि स्वामी जी तो मेरे सर्वस्व हैं। मित्र भी हैं। पथ प्रदर्शक भी है। सखा भी हैं। स्नेह और प्रेरणा के स्त्रोत हैं।

पं० कन्हैयालाल जी ढंड चूरु

चौधरी जी में गुण ग्राहकता की इतनी प्रवलता है कि जिस किसी ने इनके साथ अच्छा व्यवहार किया अथवा सद्भावना दिखलाई उसको अपने हृदय-पट पर ऐसा अंकित किया कि आयु पर्यन्त भूलने में न आवे। और जिस किसी से थोड़ी सी भी अच्छी शिक्षा मिली उसे तुरंत मान लिया। इसी आदत के कारण चौधरीजी पं० कन्हैयालाल जी ढंड को भी अपने गुरुओं में गिनते हैं। सन् १९०७ में जब राजगढ़ से चौधरी जी चूरु में जुडीशिल क्लार्क होकर आये, उस समय पण्डित जी वद्रीनारायण जी मंत्री की

धर्मशाला में एक पाठशाला का संचालन करते थे। चौधरी जी का उनसे यहीं पर सम्पर्क बढ़ा। गीता जिसका कि पाठ चौधरीजी ६-१० साल की आयु से कर रहे थे, यहां पर पंडित जी से उसका अर्थ-ज्ञान प्राप्त किया। चौधरी जी का कहना है कि पं० कन्हैयालाल जी संतोषी और सद्गुणी एवं सरल प्रकृति के पुरुष थे। उन दिनो बीकानेर में महाराजा गंगासिंह जी का प्रबल आतंक छाया हुआ था किसी की भी हिम्मत उन दिनों सार्वजनिक संस्था कायम करने की नहीं पड़ती थी। पंडितजी ने स्वामी गोपालदास जी व मास्टर श्रीराम जी के साथ जो कि पीछे बिरलाओं के पास चले गये थे, मिल कर चुरु में एक संस्था की स्थापना की। जिसका नाम हितकारिणी सभा रक्खा। चौधरीजी भी सर्विस में होते हुये भी इस संस्था की बैठकों में शामिल होते रहे। पंडित जी ने इस संस्था से संबन्धित दो कवितायें पहली २ अगस्त सन् १६०७ को तथा दूसरी ७ अगस्त सन् १६०७ को बनाई। जो इस प्रकार है—

१—ओ३म्

सब मिलके जो कीन्ही है एक सभा।
हितकारिणी नाम धरा जिसका।
सब हिलमिल दिल को करलो सफा।
यह पहला उद्देश्य जो है इसका॥

दूसरे आज्ञा को पालती है महाराज गंगासिंह का।
तीसरी आज्ञा जो है इसकी सन्मार्ग में चलना हो सबका।

तबादिला हुआ तो भी दोनों ओर से पत्र व्यवहार द्वारा प्रेम सम्बन्ध कायम रहा। यह हितकारिणी सभा भी बीकानेर के शासकों का सिंहासन हिलाने वाली जान पड़ी—जबकि इसने सारे भारत की भाँति लोकमान्य तिलक की मृत्यु पर सार्वजनिक रूप से शोक मनाया। इस समाचार को पाते ही बीकानेर से बाबू कामताप्रसादजी होम मिनिस्टर स्पेशल ट्रेन से चूरु आये और सभा की तलाशी तथा तिलक के फोटो को उतार कर आतंक जमाया, पंडित जी ने चौधरी जी को लिखा तो चौधरी जी ने बीकानेर जाकर मामले को ठंडा मीठा किया।

समय बदला, नया जमाना आया। और अब चूरु की जनता ने पंडित जी की स्मृति में एक बाजार का नाम ही ढंड बाजार कर दिया है।

मोदी श्री ऊमाराम जी खत्री राजगढ़

सन् १६०५ ई० में जब चौधरी हरिश्चन्द्र जी राजगढ़ तहसील में अहलमद थे तब मोदी ऊमाराम जी तहसील के खजांची थे। उन दिनों तक ऊमाराम जी के पिता मोदी श्री रामसुखदास जी भी जीवित थे। यहीं पर चौधरी जी और मोदीजी में मैत्री स्थापित हुई। यहां रहते हुये तो दोनों में घनिष्टता रही ही किन्तु जब चौधरी जी यहां से तब्दील होकर मिरजावाला बीकानेर आदि चले गये तब भी और जब उन्होंने सर्विस छोड़कर गंगानगर में वकालत आरम्भ

कर दी तब भी पत्र व्यवहार द्वारा अपने प्रेम स्नेह और श्रद्धा का आदान प्रदान दोनों ओर से होता रहा। अलग अलग तथा दूर दूर रहने से प्रेम सम्बन्धों में कोई भी न्यूनता नहीं हुई। वास्तव में निस्वार्थ और निश्च्छल आत्माओं के सम्बन्ध ही टिकाऊ हुआ करते हैं। यद्यपि इस समय श्री रामसुखदास और श्री ऊमाराम जी दोनों ही बाप बेटे इस संसार में नहीं हैं परन्तु उनके उत्तराधिकारी श्री चिरंजीलाल, सोहनलाल और सागरदत्त जी चौधरी साहब के प्रति पूरा प्रेम और सद्भावनायें रखते हैं।

श्री बन्नेखाँ जी

जिन दिनों चौधरी जी राजगढ़ में थे उन्हीं दिनों श्री बन्नेखां जी वहा पर कस्टम सुपरिन्टेन्डेन्ट थे। दोनों ही समस्वभाव के व्यक्ति थे इसलिये मैत्री सम्बन्ध कायम हो गये। एक हिन्दू थे दूसरे मुसलमान किन्तु मजहब इस दोस्ती में तनिक भी बाधक नहीं हुआ। दोनों का प्रेम सगे भाइयों जैसा रहा और अब भी बन्नेखां के पुत्र श्री इब्राहीम खाँ जी तहसीलदार चौधरी साहब का सन्मान अपने बुजुर्ग की भांति करते हैं।

मेघसिंह आर्य

बीकानेर राज्य की तहसील सुजानगढ़ में खारिया कनीराम जाट किसानों का एक छोटा सा गाँव है। इसी गाँव में आज से लगभग ३४, ३५ वर्ष पहले श्री मेघसिंह

जी आर्य का जन्म हुआ था। बचपन में उसने अपने भाई सुरताराम के पास रतनगढ़ में रहकर शिक्षा प्राप्त की। रतनगढ़ में सुरताराम जी ठेकेदारी करते थे। वहीं स्वामी चेतनानन्द जी एक शिक्षा संस्था चलाते थे। उनके प्रयत्न से सैकड़ों किसान और गरीब बच्चों ने शिक्षा प्राप्त की। उसके बाद तो वहाँ एक विद्यार्थी भवन की भी आसपास के उत्साही जाटों ने स्थापना की। स्वामी केशवानन्द जी ने इस संस्था की नींव रक्खी थी।

मेघसिंह जी आर्य की चौ० हरिश्चन्द्र जी में बड़ी आस्था रही। वह चौधरी साहब को पिताजी कहकर अपना स्नेह प्रकट किया करता है और इसमें सन्देह नहीं कि चौधरी साहब को वह बीकानेर का सर्वश्रेष्ठ किसान हित-चिन्तक समझता था उसने अपने गाँव में एक बार एक किसान सम्मेलन कराया जिसमें नोटों का हार पहिना कर चौधरी जी का स्वागत किया।

कांग्रेस में उसने एक उत्साही कार्यकर्ता के रूप में काम किया है। रतनगढ़ तहसील काँग्रेस के अध्यक्ष पद पर भी उसने अपने अथक परिश्रम से चौधरी जी को आसीन कराया। और जब बीकानेर में असेम्बली के चुनावों की घोषणा हुई तो समस्त तहसील में उसमें चौधरी जी के लिये असेम्बली मेम्बर चुने जाने के अपनी सरगर्मी से आसार पैदा कर दिये।

चौधरी जी का भी मेघसिंह जी से पुत्रवत स्नेह रहा है और सदैव ही उसके कार्यों और परिश्रम के वे प्रशंसक रहे हैं। इस समय श्री मेघसिंह अपनी गांव की तरक्की के लिये पंचायत में पदासीन हैं।

वंश-परिचय

यह पहले लिखा जा चुका है कि नैण गोत तँवर घराने के एक मशहूर सरदार नैणसी के नाम पर विख्यात हुआ। नैणसी का समय संवत ११५० अथवा सन् ११०० के आस-पास बैठता है क्योंकि इनके एक वंशज किशनपाल ने संवत १२६० विक्रम अर्थात् सन् १२०३ ई० में सरवरपुर नाम का एक गाँव बागपत के पास बसाया था ऐसा बही भाटों अर्थात् वंशावली रखने वाले जागाओं के लेखों में वर्णित है। सरवरपुर आजकल सरूरपुर के नाम से मशहूर है। किशनपाल, नैणसी से पांचवी पीढ़ी में है। इस प्रकार बीस वर्ष प्रत्येक पीढ़ी के हिसाब से नैणसी का समय ११५० और ११६० संवत में बैठता है और ईस्वी सन् ११०० के आसपास बनता है।

यही समय दिल्ली से तँवरों के निष्काषित होने का भी है। हमने तंवर वंश की एक तवारीख में यह पढ़ा था कि चौहानों का देहली पर आधिपत्य होते ही तँवर देहली को छोड़ गये। कुछ तंवरों के टेहरी और गढ़वाल की ओर जाने के भी वर्णन मिलते हैं। कुछ द्वावे में और फिर हरियाने में फैल गये। इतिहासकार ऐसा कहते हैं कि तंवर राजा अनंगपाल ने निःसंतान होने के कारण पृथ्वीराज चौहान को

इनमें से मान से उत्पन्न खीवा को वालासर तहसील नोहर में मार दिया गया। इस कांड का वर्णन पिछले किन्हीं पृष्ठों में आ चुका है।

मान अथवा मानवती के ज्येष्ठ पुत्र दूला से आंभल, मोती और हनुमंता नाम के तीन पुत्र उत्पन्न हुए। इनमें से आंभल के भी तीन पुत्र हुये। दल्ला, काहन और वीरू उनके नाम थे। इनमें वीरू के जो पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम अपने प्रसिद्ध बुजर्ग श्रीपाल के नाम की स्मृति में श्रीपाल ही रक्खा। इस श्रीपाल द्वितीय का जन्म संवत १३९८ अर्थात सन् १३४१ में हुआ। श्रीपाल द्वितीय के बारह पुत्र हुये। जिनके नाम राजू, दूला, मुला, कालू, रामा, हुक्मा, चुहड़, हूला, लल्ला, चतरा, फत्ता और नन्दा हैं। इनमें से संवत १४१७ अर्थात् सन् १३६० में राजू ने लद्धासर, दूला ने वछराला, कालू ने मालपुर, हुक्मा ने केऊ, लल्ला ने वींझासर और चूहड़ ने चूरू आवाद किया।

इन बारह में से दूला के तीन पुत्रों का हमें पता चलता है। राजू, नन्दा और जीवन उनके नाम थे। राजू के बुद्धा और पेमा दो पुत्र हुए। बुद्धा के हरीराम और सेवा पुत्र हुये। हरीराम ने संवत १५२५ सन १४६८ में वछराले को पुनः आवाद किया क्योंकि बीच में झगड़ों के कारण वछराला वर्वाद हो गया था। हरीराम के दो पुत्र पूला और तुलछा

गोद ले लिया था। यह घटना सन् १२०० के आस पास की है। इसका मतलब है कि नैंणसी तंवर जिसके कि नाम पर एक नये ही गोत का प्रचलन हुआ। अनंगपाल से पहले ही इन्द्रप्रस्थ अथवा ढिल्ली को छोड़कर द्वावे में कहीं बस गया था अथवा वह उधर तंवर राज्य का सीमांत सरदार रहा होगा। उसी के पांचवे वंशज किशनपाल ने सरवरपुर (अव सरूरपुर) को आवाद किया।

किशनपाल तक नैंणसी की वंशावली इस प्रकार है—

नैणसी के चूहड़ हुआ और चूहड़ के चोखा और लालू दो पुत्र हुये। चोखा के फत्ता और मूला दो लड़के थे। फत्ता के किशनपाल और माना दो लड़के हुये। इनमें फत्ता ने ही सरवरपुर एवं सरूरपुर की नींव डाली।

इस वंश में किशनपाल से पांचवीं पीढ़ी में श्रीपाल एक मशहूर व्यक्ति होता है। उसने संवत १३१० अर्थात सन् १२५३ में भिरानी गाँव वसाया। यह गाँव बीकानेर डिवीजन की भादरा तहसील में अवस्थित है। किशनपाल के दो पुत्र हूला और काहना हुये। हूला के कालू और धन्ना दो पुत्र हुये। कालू के मूंधड़ हुआ और मूंधड़ का पुत्र श्रीपाल था। श्रीपाल के दो स्त्रियाँ थीं मान और पूनाणी। मान के छः पुत्र हुए। दल्ला, पेमा, खीवा, चेतन, रतना और पूसा। पांच पुत्र उन्हें पूनाणी से हुये। रामू, काहना, अमरा, गनेश और हुक्मा उनके नाम थे।

इनमें से मान से उत्पन्न खीवा को वालासर तहसील नोहर में मार दिया गया। इस कांड का वर्णन पिछले किन्हीं पृष्ठों में आ चुका है।

मान अथवा मानवती के ज्येष्ठ पुत्र दूला से आंभल मोती और हनुमंता नाम के तीन पुत्र उत्पन्न हुए। इनमें से आंभल के भी तीन पुत्र हुये। दल्ला, काहन और वीरू उनके नाम थे। इनमें वीरू के जो पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम अपने प्रसिद्ध बुजर्ग श्रीपाल के नाम की स्मृति में श्रीपाल ही रक्खा। इस श्रीपाल द्वितीय का जन्म संवत १३९८ अर्थात सन् १३४१ में हुआ। श्रीपाल द्वितीय के बारह पुत्र हुये। जिनके नाम राजू, दूला, मुला, कालू, रामा हुक्मा, चुहड़, हूला, लल्ला, चतरा, फत्ता और नन्दा हैं। इनमें से संवत १४१७ अर्थात् सन् १३६० में राजू ने लद्धासर, दूला ने बछराला, कालू ने मालपुर, हुक्मा ने केऊ, लल्ला ने वींझासर और चूहड़ ने चूरू आबाद किया।

इन बारह में से दूला के तीन पुत्रों का हमें पता चलता है। राजू, नन्दा और जीवन उनके नाम थे। राजू के बुद्धा और पेमा दो पुत्र हुए। बुद्धा के हरीराम और सेवा पुत्र हुये। हरीराम ने संवत १५२५ सन १४६८ में बछराले को पुनः आबाद किया क्योंकि बीच में झगड़ों के कारण बछराला बर्बाद हो गया था। हरीराम के दो पुत्र पूला और तुलछा

नामक हुए । पूला के सादा और मुगला दो पुत्र हुये । मुगला ने संवत १६१० अर्थात् सन् १५५३ में बछराले में एक जोहड़ खुदवाया जिसका जिक्र ठाकुर सकतसिंह ने सन् १८३८ में अपनी उस गवाही में जो उन्होंने चौधरी हरिश्चन्द्रजी के कदीम बीकानेरी होने के सम्बन्ध में तहसील रतनगढ़ में दी थी–किया है । सादा के दो पुत्र आसा और चतरा नामी हुए । आसा के दासा और लक्ष्मन हुए । दासा के गोपाल, भूरा और पूरन तीन पुत्र हुए । गोपाल के दो पुत्र भारू और रामकरण हुये । भारू के दो स्त्रियाँ थी जाखड़ और खीचड़। यह उन स्त्रियों के गोत्र नाम है असल नाम नहीं । जाखिण से रायसल, हर्षा, हंसा और दासा नाम के चार पुत्र हुये । खीचणि से देदा, खीवां और जालू तीन पुत्र हुये । इनमें हर्षा जी के लाला नाम का लड़का हुआ । उसके दो लड़के हेमा और दामा हुये । इनमें हेमा के पूरन, किशना, हीरा और हनुमन्त नाम के चार लड़के हुये । पूरन के हनुवंत लड़के ने दो शादियां की । एक ढाकी दूसरी खैरवी । ढाकी के दूल हुआ । दूल के तेजा और कालू दो लड़के हुये । खैरवी से भागू, जीवन और ज्ञाना हुये । भागू के दूदा, जीवन के चेतन और हरजी हुये ।

हेमा के पुत्र किशना की औलाद इस प्रकार है:–किशना के खेता, उदा और लिखमा । खेता की औलाद खारिया तहसील सिरसा जिला हिसार में जावसी । खेता के दो पुत्र नाथा और फूपा हुये । नाथा के रावत, पन्ना, बहादुर, और

ढोला नाम के चार पुत्र हुये। इनमें रावत के रामकरन जो कि इस समय मौजूद हैं। इनके बड़े लड़के श्री हेतराम जी हैं जो इस समय पंचायत विभाग में इन्स्ट्रक्टर हैं।

पन्ना के जगदीश और देवीलाल हुये। यह मौजूद हैं और बहादुर जी भी जिन्दा हैं। ढोला के सुखराम हुये। यह भी मौजूद हैं। फूपा के लूणा है। यह खारिया का खानदान है। किशना की औलाद में से ऊदा की संतान रामगढ़ उर्फ चंडालिया में आबाद है जिनका विवरण इस प्रकार है। ऊदा के भारू और माला दो बेटे हुये। भारू के मामराज, लूना और मगलू तीन पुत्र। मामराज के हेतराम और शिवलाल हैं। लूणा लावल्द रहा। मगलू की संतान भी है। माला के जीसुख हुये जिनके मोती हुआ। मोती का लड़का मामन है। दौला के रावत है।

किशन के बेटे लिखमा के दो पुत्र हुये, भोजा और दौला। भोजा के जेसा, मोटा, साँवल और हरचन्द हुये।

हीरा के चेनाराम और चेनाराम के छ: बेटे चतराराम, टोड़ाराम, रामूराम, धनाराम, तेजाराम और सुक्खाराम हुये। चतराराम के रावत, मोटा, ताजा तीन लड़के हुये जो तीनों ही निस्संतान रहे। टोडाराम के बींझाराम और लूनाराम दो लड़के हुये। बीझाराम निस्संतान रहे। लूनाराम के पेमा, पोहकर, नारायण, गोधा हुये जो बछराला में आबाद हैं।

रामूराम जी के दो बेटे हिमताराम और हरिश्चन्द्र

हुये। हिमताराम जी के रघुवीरसिंह और त्रिलोक नाम के दो लड़के हैं। हिमताराम जी का स्वर्गवास हो चुका है। हरिश्चन्द्रजी इस समय इक्यासी में चल रहे हैं। आपके दो पुत्र श्री श्रीभगवान और वेदप्रकाश जी हैं इनसे बड़े हरदेवजी थे जिनका स्वर्गवास हो गया। इस समय तक श्री श्रीभगवान के एक पुत्र वीरेन्द्र है और वेदप्रकाशजी के एक पुत्री इन्दुरजनी है।

धन्नाराम जी के नन्दा, लक्ष्मन और अर्जुन तीन पुत्र हुये। तेजाराम के भानो और लालू दो पुत्र हुये। सुखराम जी के रतनाराम हुये।

केऊ तहसील डूंगरगढ़ में जो नैण आबाद हैं। उनकी कुछ आरम्भिक पीढ़ियों का पता नहीं चलता। इनमें से कोई सरदार कैऊ से जैतासर में जाकर आबाद हुआ और वहाँ से तहसील राजगढ़ मे पहाड़सर नामका गाँव बसाया। इनमें फता नाम का नैण सरदार हुआ। उसके तीन बेटे शोराम, ऊदा और आसा नाम के हुये। शोराम के चेतन और बीझा नामके दो पुत्र हुये। इनमें चेतन लावल्द रहा। बीझा के आदू, खीवा, देवा और पदमा नाम के चार पुत्र हुये। आदू के बाघा हुये जो लावल्द रहे। खीवा के सहीराम हैं। देवा के दीनदयालसिंह हुये जो लावल्द रहे। पदमा भी लावल्द रहे। शोराम ने संवत १८६६ अर्थात सन् १८४२ में धौलीपाल नामक गाँव तहसील हनुमानगढ़ में आबाद किया। उसकी संतान

चौधरी जी के द्वितीय पुत्र
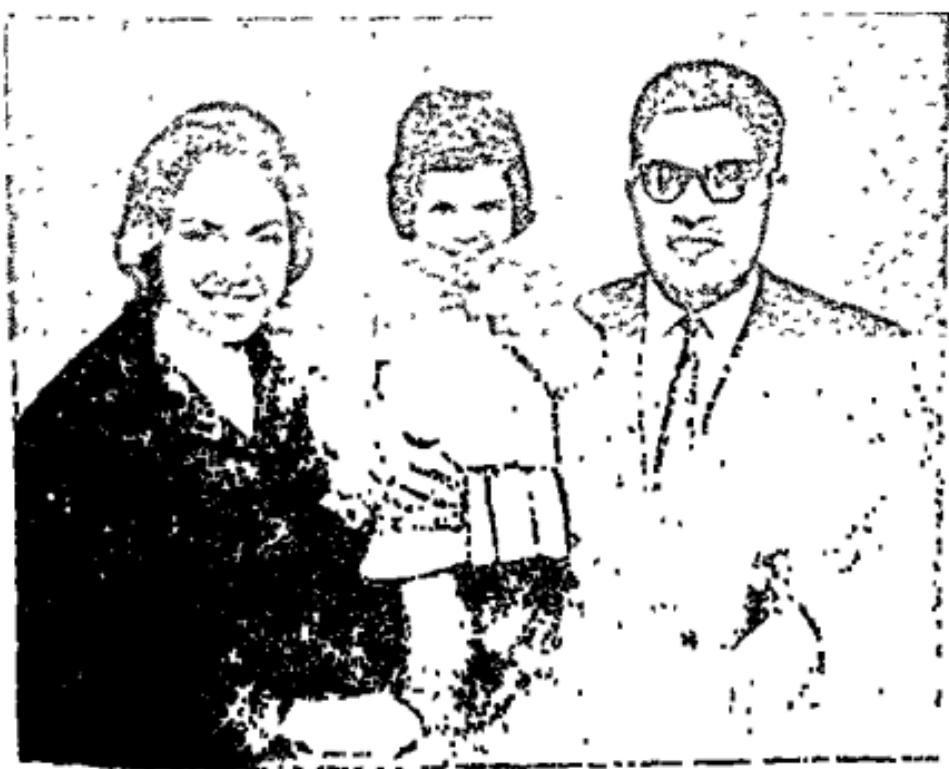
श्री वेदप्रकाश अपनी धर्मपत्नी श्रीमती स्नेहलतादेवी और बालिका इन्दुरजनी के साथ

के हीरा और भूधर हुये । भूधर के राजू, केसरा, आदिराम और राधा किशन चार पुत्र हुये । राजू के दो पुत्र वहादुर और हरदयाल हुये । वहादुर जी के बड़े लड़के श्री रामजीलाल जी इस समय पंचायत विभाग में उच्च अधिकारी हैं । हीरा के मामराज, दाना, शेरा और भानी हुये । मामराज का कुनवा खूब बड़ा और फला फूला है । इसी भाँति दाना के भी काफी वंशज हैं । शेरा लावल्द रहे और भानी के पुत्र का नाम जीसुख है । गोविन्द के रामू और रामू के पन्ना हुये । पन्ना के बेटे पोते मौजूद हैं । · · · · · के मगलू हुआ, मगलू के लेखू और दल्लू दो लड़के हुये । दल्लू लावल्द रहे । लेखू के संतान मौजूद है ।

दूसरे खेता के दो बेटे हुये चैंना और धन्ना, चैंना के लेखू, गणेशा और मेघा हुये । इनकी संतान भी खारिया में मौजूद है । धन्ना के तिलोका, गंगाराम किशना और सरवण चार बेटे हुये । तिलोका का बेटा जगमाल है । बाकी इन सबकी औलाद खारिया में फलफूल रही है । उपरोक्त सभी सज्जनों के पुत्र पौत्र हैं और शिक्षा दीक्षा भी बढ़ रही है ।

नेक और निर्भीक सलाहकार

झारखंड (विहार) के नेता श्री जयपालसिंह जी ने चौधरी जी के सम्बन्ध में अपना सन्देश भेजते हुये लिखा है "जितने दिन मैं बीकानेर राज्य में रहा वे मेरे एक नेक सलाहकार रहे।" श्री जयपालसिंहजी के इस कथन में इतना और जोड़ दिया जाय कि चौधरी हरिश्चन्द्र जी नेक सलाह कार के साथ ही निर्भीक सलाहकार भी हैं तो उनके व्यक्तित्व के इस गुण की पूर्ति हो जाती है। वे अपने मित्रों और साथियों को सदैव ही नेक सलाह तो देते ही रहे हैं किन्तु यह नेक सलाहें उन्होंने कई स्थानों पर निर्भीकता के साथ भी व्यक्ति की है। फिर चाहे वह कितना ही बड़ा, दबंग और प्रभावशाली आदमी क्यों न रहा हो जिसने उनसे सलाह मांगी। भरतपुर के महाराजा ने जब अन्य जाट नेताओं को बुलाकर अलग अलग राय उनसे मत्स्यसंघ में शामिल होने के सम्बन्ध में मांगी तो उन्होंने यही कहा, महाराज कांग्रेस की इस आँधी की लपेट में झुकना ही पड़ेगा। पटेल की बात को मानने में ही आपका हित है।

यह नहीं कि मांगने पर ही अपनी सलाह देते हों, ऐसे

मौके भी आये हैं जब उन्होंने बिना माँगे भी बड़े से बड़े आदमी को सलाह दी है। ३ अक्टूबर सन् १९४१ में जब सेठ श्री रामकृष्ण डालमियां ने महाराजा बीकानेर के आमंत्रण पर बीकानेर आकर एक विशाल सभा में महाराजा बीकानेर के गुण गाते हुए कहा कि :—मैने बीकानेर के सम्बन्ध में बहुत कुछ सुना था और मेरे सामने बहुत सी बातें थीं किन्तु यहां आकर मैंने जो कुछ देखा उससे कह सकता हूँ कि मैं सयाना होकर आया था, बावला हो गया अथवा बावला होकर आया था सयाना हो गया। प्रायः जनता में यह धारणा होती है कि रियासतों में मनमाना होता है। मेरी भी ऐसी ही धारणा थी। यह कुछ सत्य भी हैं......मैं सोचता था कि जब कभी बीकानेर में जाऊँगा तो वहाँ जाकर मुझे समालोचना करने का अवसर मिलेगा और मैं कहूँगा कि इस रियासत में कैसे धन का अपव्यय होता है किन्तु यहां आकर वह विचार बदलना पड़ा।

......जब मैं गांधी जी से मिलूंगा तो उनसे कहूँगा कि रियासतों के बारे में जो गलत फहमियाँ लेकर बाहर आन्दोलन किये जाते हैं तब तक नही होने चाहिये जब तक उनकी पूरी जांच न करली जाय।" इससे पहले सेठ डाल-मियाँ ने यह भी कहा—"महाराजा अपनी प्रजा के लिये सदा चिन्तित रहते हैं। जब कोई बात उनके पास जाती है वे उसकी स्वयम् जांच करते हैं और जहाँ तक सम्भव होता है उसको ठीक करते हैं।"

उन दिनों चौधरी जी संगरिया स्कूल के लिये चंदे के सिलसिले में कलकत्ते में थे जब उन्होंने अंग्रेजी और हिन्दी के पत्रों में यह भापण पढ़ा तो सन्न रह गये। वे सेठ डालमियाँ को गांधीवादी और निर्भीक तथा पीड़ितों के प्रति सहानुभूति रखने वाला समझते थे और अपनी इसी समझ के अनुसार उनके प्रति आदर के भाव भी रखते थे। उनके इस भापण से उनके खयालात को वड़ा धक्का लगा और नेक तथा निर्भीक सलाहकार के नाते उन्होंने सेठ डालमियाँ को लिखा—"आप वीकानेर पधारे। पत्रों में आपका भापण पढ़ा। आप सयाने हो गये या वावले यह तो आपका आगामी जीवन ही वतायेगा। जनता की धारणा के विपय में आपका वदल जाना और वह भी पहले ही दिन। इस पर मैं चाहता हूँ कि आपको वहुत कुछ वताऊँ, यदि आप कुछ जानने के लिये वीकानेर गये थे तो आप वीकानेर के अनुभवों को (गांधी जी) या और किसी से कहें इससे पहले आप मुझे मिलने और सुनने का अवसर दें क्योंकि लगातार १२ साल से वीकानेर की स्टेट असेम्वली का मेम्वर होने से मुझे वीकानेर की काफी जानकारी है। जो भी समय मेरी वातें सुनने का आप देंगे। मै अविलंव उपस्थित हूँगा।

इस पत्र का उत्तर उनके सेक्रेटरी जोहरीमल ने दिया कि सेठजी जव कलकत्ता आवें तव आप उनसे उनके नये पते डालमिया जैन हाउस २० वीडन स्ट्रीट में मिल लें।

जवाव आ गया किन्तु मिलने का सुयोग डालमियां साहव की ओर से कभी नहीं मिला। अवसर मिले या न मिले उन्होंने तो निर्भीकता से कह दिया कि वीकानेर के राजा के गुण तुमने सयानेपन में गाये हैं अथवा वावलेपन में इसे तो भविष्य ही वतायेगा किन्तु यदि वास्तव में ही सही वात जानने गये थे तो मुझे बुलाकर पूछो।

इसी प्रकार चौधरी जी ने वीकानेर राजसभा के माध्यम से वजट स्पीचों के दौरान चेतावनियाँ और नेक सलाहें दीं। हालांकि उनकी नेक सलाहों और चेतावनियों का वीकानेर के शासकों पर उसी प्रकार कुछ भी असर नहीं हुआ जिस प्रकार कि दुर्योधन पर महात्मा विदुर के उपदेशों का कोई भी असर नहीं होता था। उन्होंने राजसभा में कई वार बड़े मार्मिक और श्लेष ढंगों से जो कुछ कहा, उनमें से कुछेक सार वाक्य हम यहां देना मुनासिव समझते है :—

(१) लम्बे चौड़े वजट में जव उन्होंने देखा कि किसानों की गरीवी दूर करने, उनकी वीमारी में इलाज की सुविधायें देने और उनके वच्चों में तालीम बढाने के वजट नग्न है तो उन्होंने कहा :—"जो मूक हैं उनकी ओर भी देखिये।"

(२) एक दूसरे वजट अधिवेशन में उन्होंने कहा:— "यहाँ आने और रहने के मेरे दोही हेतु हैं 'स्त्री शिक्षा और

आम शिक्षा'। मैं देखूँगा यह कि मैं अपने इस फर्ज को कहां तक निभा पा रहा हूँ।"

(३) एक वार उन्होंने वजट में जव किसानों की हित की मदों का अभाव देखा तो कहा—

"मरजाऊँ पर माँगू नहीं तन अपने के काज।
परमारथ के कारणें तनक न आवे लाज॥"

(४) जव वार वार वजट में किसान हितों की उपेक्षा होती रही तो उन्होंने झुंझलाकर कहा :—"ए वहरे सखा दस्ते करम कुछ तो इधर भी' अर्थात् ओ समुद्र के समान (अपने को) दाता समझने वाले कुछ इधर भी तो अपनी दानशीलता का परिचय दे।"

(५) एक वार उन्होंने अशिक्षा के सम्वन्ध में वजट-स्पीच के अवसर पर कहा :—"एक तो वे हैं जो मधु मक्खियों को भी संवाद-वाहक वनाने के लिये शिक्षित कर रहे हैं और एक हम हैं जो अपने ही देश में अयोग्य एवं अनक्वालिफाइड वने हुये हैं।"

(६) उन्होंने यह भी कहा कि मोर नाचते समय अपने पँखों को देखकर खुश होता है परन्तु जव पैरों को देखता है तो रो उठता है।

(७) जव राज्य प्रजा का दमन करने के लिये कठोर कानून वनाने लगा तो उन्होंने कहा :—"दिल वदस्त आवर कि हज्जे अकवरस्त अज हजाराँ कावा इकदिल

बेहतरस्त' अर्थात् अपने दिलों को ठीक वना कर लोगों के मन के जीतो ।

(८) जिन दिनों वीकानेर में कर्नल हक्सर प्राइम मिनिस्टर थे तो आपने उन्हें वजट स्पीच में सुनायाः---

घनघोर घटायें छाई हैं, ऋतु वदलो आज जमाने की।
पी और पिलाता जा साकी हो, खैर तेरे मय खाने की।

कर्नल साहव पर चौधरी जी ने यह व्यंगात्मक चुटकी ली क्योंकि कर्नल साहव पीते भी थे।

शुद्धि पत्र

पृष्ठ	लाइन	अशुद्धि	शुद्धि
५०	८	रसू	रस्तू
५१	अन्तिम	होकद	होकर
५३	९	शाह	शाही
५४	१४	रामनाथ	नाथाराम
७८	११	श्रीरामसिंह	श्रीराम सिहाग
७९	१७	मुफ्त	मुस्त
८७	१०	दरख्यातें	दरखास्तें
९०	अन्तिम	सम न	समर्थन
९१	१	केवक	केवल
१०४	५	आज	आजतक
१०७	१८	जाय	गई
१०८	२	से हकूक	नहीं चाहिए
१०९	१३	राई	राठ
११०	१९	सकती	ती
१११	१९	फीद	मुफीद
१११	२०	वारिसा	वारिसान
११२	१६	नो	तो

पृष्ठ	लाइन	अशुद्धि	शुद्धि
११३	अन्तिम	फरीकँन	फरीकँन जानें
१२६	१६	आंपो	आपां
१४४	३	वह	रत्तू
१४६	१३	उठावणी	उढ़ावणी
१५१	६	शादे	सादे
१७४	१३	ढाला	डाला
१७६	१८	जीतराज	जीवराज
२११	१	फांगल	फांगण
२१६	१८	उनमें से दो	वह दोनों ही
२४६	११	जो	जो किराया
३१८	३	मतवारे	मनवारे
३१८	१८	जीवँतणाने	जीवतड़ाने
३२२	२	२२	१२
३२५	अन्तिम	हरसहाय	किशनसहाय